

प्रसंगची शुद्ध स्यादादरूप श्रीजैनधर्म पामी शक्यो नहीं, तेथी ते सर्व नव व्यर्थ गया हवे इण समय शुच कर्मोदयें करी मोटी पुण्यासु मनुष्य गति, आर्यदेश, उत्तम कुल, सपत्ति, नीरोगी शरीर, दीर्घायु, सुगुरुनो सयोग, इत्यादि शुच सामग्री मिली ठे, तेम ठता जो विषय कपायादिकमांहे तल्लीन दुश्ने समकित दर्शनरूप धर्मनी प्राप्ति करणमांहे प्रमाद कराला, तो प्राप्त हुवेला इष्ट स जोगको विनाश दुयने फेर घणा कालतांई ससारचक्रमांहे परिभ्रमण करणो पडसे एहवो अवसर तथा सर्व प्रकारनो सयोग वारंवार मिलणो घणो मुष्कील ठे ज्ञानसपादन करने आत्माको कल्याण करण वास्ते, पूर्वकृत दुष्कर्मनो बदलो देवण वास्ते, तथा सर्व साधर्मीजायामांहे ज्ञानको प्रसार जो (पंक्ति पुरुषापासैं सूत्रको व्याख्यान श्रवण करणासुं तथा ग्रंथ प्रसिद्ध करणासुं हुवे ठे) ये होवण वास्ते धर्मकीज पूर्ण आवश्यकता ठे, धर्म सरीखी प्रिय अने श्रेष्ठ वस्तु इण जगत्मांहे दूसरी कोइ पण नहीं ठे सांसारिक सतति अने सपत्ति केवल अनित्य ठे जिहा सुधी शुच कर्माको उदय रेवे ठे, तिहां सुधी सर्व इष्टवस्तुको सयोग आय मिले ठे, जद अशुच कर्माको उदय होवे, ते वखतें सर्व इष्ट वस्तुको वियोग दुयने अनिष्ट सयोगकी प्राप्ति हुवे ठे ससारमांहे विवाह आदि आरजिक कार्य प्रयोजनमांहे हजारों रुपिया मोठा उधरगसु खर्च कर देवाढा, सुवो तो फक्त सासारिक इणहीज नवकी यश कीर्तिको कारण ठे, अने धर्मनिमित्तें जो इच्छा खर्च होवे तो इण नवना तथा परनवना सुखको तथा मोक्षना सुखनो पण कारण ठे इण वास्ते समस्त जैन बधुका अत करणमांहे धर्मकी जागृत प्रेरणा निरंतर रेवण वास्ते तथा धर्मको उद्योत करण वास्ते प्रयत्न करने धर्मनिमित्त यथाशक्ति इच्छा अवश्य खर्च होवणो चेहीजें इतरीज हमारी सर्व जैन बधुने विनति ठे

(३) उ पुस्तक ठपायने प्रसिद्ध करतां वाचणारा सङ्कलनलोकांप्रतें
इण पुस्तकमांदे दाखल करेला ग्रंथाकी हामे किंचित् सूचना करा ठां

(४) इण पुस्तककी आदिमें आवकाने नित्य उजयकाल क
रवा योग्य ठे आवश्यककी करणीरूप प्रतिक्रमणसूत्र ठे, तिको
अर्थ सहित दाखल कीनो ठे कारण आवकाने कोइ पण शास्त्र
वाचणा नणीजणा, तिके सर्व अर्थ सहित नणीजणां चाहिजें
कारण यथार्थ अर्थ धारणामें होवे तोदिज वो ग्रंथ अनुभव स
हित नणीयां कहेवाय, नदीं जरां सुवाका पाठ प्रमाणें समज
वो उणमांदे पण पढिक्रमणादिक ठे आवश्यक तो नित्य सां
ज सवार क्रिया करती वेला काम आवे ठे इण वास्ते उणका
अर्थ तो अवश्य धारणाइज चाहिजें. जिणसुं, मात्र मूलपाठ जा
णनारा लोकाने जे कांइ क्रिया करणको अनुभव होवे, वा लोकां
सु, अर्थ सहित जाणनारा मांदे कितराक दरजे अनुभवकी वृद्धि
होवे ठे, अने उणका फल पण उत्तराज दरजे जादा होवे ठे, इण
प्रमाणें सिद्धातमांदि जगवत फुरमायो ठे

(५) ऊंर, क्रिया करणार पुरुषका आत्माका अध्यवसाय आ
श्रयी पिण फलकी अधिक न्यूनता कही ठे तथापि अर्थ धारणार
अने अर्थ न धारणार यां दोनु जिणांका आत्माका अध्यवसाय
(प्रणामकी धारा) सरीखा होय, तो पण अवश्य अर्थ न धा
रणारासु अर्थ धारणाराने अत्यंत अधिक फल प्राप्त होवे ठे इण
वास्ते अर्थकी धारणा करणी आवश्यक ठे; इण हेतुसु आवश्यक
क सूत्र तथा अन्यग्रंथ उपरसु सामायिकादि सूत्रकी पाटीया साथें
पाठका अर्थ पण दाखल कराया ठे, ए सर्व हमारा साधर्मी नाई अ
र्थसहित नणीजणको उद्यम करेल इणतरे हमे पूर्णआशा राखा ठा

(६) श्रीजैनधर्ममांदे महान् विद्वान् परम पंक्ति पूज्यश्री श्री
१००८ श्रीकानजी रिखजी माहाराजनी संप्रदायना स्वामीजी

श्री १००८ श्री अथवता रिखजी माहाराज तस शिष्य स्वामीजी
 श्री १००८ श्री तिलोकरिखजी माहाराज महाप्रान्नाविक दुवा
 माहाराजसाहेवको जन्म संवत् १९०४ की चैत्र वदि ३ के दिन दु
 वो संवत् १९१४ का माहावदि १ गुरुवारके दिन माहाराजसाहे
 व स्वामीजी श्री अथवतारिखजी माहाराज पासैं वैराग्य जाव पा
 मीने मोठा उत्साहसू दीक्षा ग्रहण कीनी संवत् १९३६ को चो
 मासो दक्षिण देश घोडनदीमाहे करीने अहमदनगर, आंबोरी,
 हिवरो, पुना, सतारा, औरंगाबाद, धुलिया वगैरे अनेक ठिकाणे
 विचरता जव्यजीवाने सम्यक्त्व प्रतिलाजी सतारसु तारिया ठे संवत्
 १९४० को चोमासो करणवास्ते आपाढगु ६ ए के दिन अहमदनग
 र शहरमाहे पधारिया, उणद्विज दिन तप चढने सावणवदि २ रवि
 वारके दिन माहाराजसाहेव देवलोक दुवा एसा उत्तम पुरुषाको
 वियोग घणा जायाने दुसह दुयने श्री जैनधर्मका महा पंमित
 पुरुष रत्नमाहेला एक अमुव्यरत्नकी स्वामी पढ गई

(४) स्वामिजी श्रीतिलोकरिखजी माहाराज अल्प आयुष्य
 माहे, जेम पृथ्वीममलमाहे सूर्य प्रकाशकरी अथ कारनो नाश करे ठे,
 एम मिथ्यात्वरूप अथ कारनो नाश करीने जव्य जीवरूप कमलने
 विकश्वर करण वास्ते, सिद्धातानुसारें मोठा मोठा ग्रथाकी रचना
 करी घणा जव्यजीवाने प्रतिषोधी परोपकार करणमाहे मोठो श्रेय
 लीनो ठे माहाराजसाहेवको स्वजाव चडनी परें शीतल, समुष्नी
 परे गनीर, मिष्टवचनी, बाजत्रह्यचारी करुणाका सागर, इत्यादिक
 गुणो करी सहित दुयने वा पुरुषामाहे कवित्वशक्ति, वाक्चातुर्य,
 समयसूचकता श्रीजैनसिद्धात तथा पदशास्त्रना पारगामी वगैरे अ
 नेक गुण प्रशसनीय हुता माहाराज साहिवका गुणाकी स्तुतिकरां
 जितरी थोडीज ठे

(८) माहाराजसाहेव निरतर साधु सवधी पढिलेहण, प्रमा

जैन त्रिकाल काउस्सग व्यान, तथा धर्मसंवधि व्याख्यानादिक कार्य करीने परिवरिया पढे जेप रहेला वखतमांहे किंचित् मात्र पण प्रमाद सेवन करता नही थां, पण जैन सिद्धांतमांहेसु आनं द श्रावकादिक महापुरुषांका चरित्रानुसारें चौढालिया, ठे ढालिया वगैरेकी रचना करतां दुतां, तथा वैराग्य जावने दर्शावनारी अनेक लावणीया, पद, सवैया, तथा श्रीजिनेश्वरस्तुतिरूप घणां स्तवन, स जाय, बढ, श्रीचङ्केवली, श्रेणिकादिकना चरित्र, रास प्रमुख अ नेक ठोटा मोठा ग्रंथाकी रचना कीनी ठे, अने वे इतरा तो रमणीय ठे, के जे ग्रंथ वांचणासु जेहवो जावार्थ वा ग्रंथामें दर सायो ठे, तेवाज जावार्थकी दुवेदुव असर वाचणवालाका मन मांहे ठसिया विना रेवेज नही, एसी खुबी माहाराजसाहेबकी क वित्ता मांहे वापरी ठे थोढाकालमांहे माहाराज साहेब इणतरे प्राकृत जापामें कवितारूपें साठ शीत्तरहजार ग्रंथकी जोढ करी जि नधर्मने दीपायो ठे

(ए) उपर लिख्या मुजब माहाराज साहेबका रचेला ग्रंथ प्र त्येक जैनधर्मी श्रावकने वाचवा जणवा योग्य जाणीने उणमा हेला केइ केइ ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया ठे, जिणने सर्व साधर्मिं जाई वाचने जणीजने जरूर धारणा करेला, इणतरेकी हमारी अनिलापा पूर्ण करणमांहे हमारा साधर्मिं जाई पढात प डसी नही जो जो ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया ठे, तिके सर्व हमारा साधर्मिं जायाने घणाज उपयोगी ठे उर दूसरा श्रावक लोका पासें माहाराजसाहेबकी जोढको ग्रंथ घणो शिलकमांहे पडियो ठे, पण हाल वे प्रसिद्ध दुवा नही सु मोटी विलगीरी मा लम पढे ठे, कारण प्रस्तुतसमयमा विद्वान् पुरुष थोढा लाधे ठे, जिणवास्ते पंक्ति पुरुषाका रचेला ग्रंथ जो प्रसिद्ध नही होसी तो ज्ञानकी वृद्धि किण तरे होसी ? इण वास्ते ज्या श्रावक लोका

पासे माहाराजसाहेबका रचेला ग्रंथ होसी वे प्रसिद्ध करणमांडे प्रमाद करेला नही, एसो हमांने जरोंसो ठे

(१०) उ पुस्तक श्रीजैन धर्मको उद्योत दुयने ज्ञानको प्रसार होवण वास्ते, तथा नव्यजनांकी समकित दृढतर होवण वास्ते, तथा श्री तिलोकरिखजी माहाराजका गुण प्रगटकरण वास्ते श्रीदेव गुरु धर्म प्र सावे उपायनु हमारा प्रिय सकल जैन वधुआगल सावर करियो ठे

(११) इण प्रतिक्रमण सत्यबोधका पुस्तकने माहाराज साहेबका अतिशयका कारणसू नीचें लिख्या मुजब ज्यां सङ्गनलोकां उदारमने करी श्रीजैनधर्मको उद्योत दुवणवास्ते आगाव मदत दी नी ठे, तीके बोद्धोत प्रशसनीय ठे जेम हस पट्टीकी चचूमांडे एहवाज कोई जातना पुजल रह्या ठे, के तेहथी तेहनी चचू सदा काल दुग्धनेज ग्रहण करणका स्वभाववाली होय ठे, तेम सजुणी जनाका अंत करणना परिणामने विपे एहवाज कोई उसमजा तिना पुजल रहेला ठे, के ते थकी तेहनी बुद्धि सदाकाल सत्कार्य करवाना विपेज प्रवर्तमानथकी रहे ठे इण प्रमाणेज सर्व जैनवधु आगासू धर्मको उद्योत करणवास्ते दरएक प्रकारकी मदत करणकी उमेद जादा राखेला, इस्तीदामे पूर्ण आशा राखावा

नाव

रूपिया

मुता नवलमलजी किसनदास अहमदनगर	२२५
साड विरवीचदजी चुनीलाल राहाता	२२१
मुता भोकमदासजी हाजारीमल्ल सातारा	२२१
गुगलिया दुकमचदजी नेमीदास अहमदनगर	११५
उस्तवाल पेमराजजी पन्नालाल अहमदनगर	१०१
गुंदेचा भाइदासजी ठोगमल अहमदनगर	६१
गुंदेचा मोतीचदजी रतनचद अहमदनगर,	६१
मुणोत पनराजजी शिवदास अहमदनगर	६१

मुता हाजार मलजी आगरचद अहमदनगर	६१
सींगी वनेचदजी दोलतराम अहमदनगर	६१
गांधी गुलाबचदजी रतनचद आंबोरी	५१
कोटेचा तिलोकचदजी आसकरण धुलिया	५१
मुता खुबचदजी लूणकरण हिवडां खानरा	५१
गांधी हिमतमलजी हामीरमल माहादपटेलकी चिचोढी	५१
गांधी वठराजजी राजमल माहादपटेलकी चिचोढी	४१
चमारी माणकचदजी मोतीचद अहमदनगर	४१
गांधी तेजमलजी राजमल अहमदनगर	३१
नाहाटा नंदरामजी बालाराम धुलिया	२५
गांधी किस्तूरचदजी निकनदास माहादपटेल चिचोढी	२५
मुता नेमीदासजी श्रेमल गुलेजगढ	२५
मुणोत डुकुमचद जवानमल हीवडा खानरा	२५
गुदेचा जितमलजी किसनदास नांदूरवारागाव	२५

हमापना

(१२) इण ग्रथमाहे कितराक शब्द हामे शास्त्रका वरावर जाण न होवणासु वे सुधारणवास्ते असमर्थद्वयां ठां पण सुज्ञविद्वान लोका इण पुस्तकमाहेला सामायिक, प्रतिक्रमण, तथा पञ्चस्काण वगेरेका पाठ अने अर्थमाहे तथा ऊर कोइ ठेकाणे चुका होइ हो सी तो वे सर्व हमाने अज्ञ जाणी हमारा उपर दोष न राखतां आप वाचने सुधारने हमाने लिखेला, एहवो सुज्ञ लोकामांहे ए क प्रकारको स्वान्नायिक गुणज होय ठे, वास्ते इण वदल जावा लिखणको कांइज कारण नही ठे, पिण छल वदल मिष्ठामि छ कडं देने हमाने आलोयणा कीवी चाहिजें इण ग्रथमाहेला मूल पाठको अगर अर्थको तथा स्तवन सजायादिक वाकी विषयको कोइ एक शब्द अगर अक्षर, न्यून, अधिक, अशुद्ध रीतें, आघो

पाठो, जाणता, अजाणतां वगैरे कोइ प्रकारें नूजथी लिखिजग
यो होसी तथा ग्रथ ठपावणमांहे कोइ प्रकारको दोष लागो हो
सी, तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणतां अजाणता हमा
री तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचनकायायें करी श्री
अरिहत सिद्ध केवली जगवतनी साखें सर्व दोषप्रत्यें हमाने मि
ष्ठामि झुक्क होजो अपराधकी दूमा होजो

(१३) उ पुस्तक ठपावणका काममांहे तथा शुद्ध करणका
काममांहे हमारा प्रिय जैन वंधु जाई जीमसिहमाणके घणी तस
दी लीनी ठे, जिण वदल उणारो आचार माना ठा श्रीजिनध
र्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा वधु निरतर श्रेय लेसी,
इसी हामे चाहना राखा ठा किं वहु विलेखनेन शुद्ध नवतु

विज्ञाप्ति

(१) इण पुस्तकका ५४ पानमे पढिक्कमणाकी विधिमांहे सजे
हणा आठारे पाप स्थानक कहीने इष्ठामि ठामि कहिजें इणतरे लि
ख्यो ठे सु केइ आवक इण मुजवज केवे ठे ने केइ सजेहणा आठारे
पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ आवक
२५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौठे स्थानकिया जीवारी आलो
यणा करीने पढी इष्ठामि ठामिनी पाटी कहे ठे सु आप आपकी
गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काठस्सग्गमांहे इरि
यावहीकी पाटी चितववी लिख्यो ठे परंतु केइ आवक लोगस्सकी
पाटी चितवे ठे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो
इण पुस्तकका झुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे “ पयाहिण करे
मि वदामि ” लिख्यो ठे सु केइ जाया इणतरे केवे ठे तथा केइ
जाया “ पयाहिण वदामि ” केवे ठे, सु आप आपकी गुरु आम
ना तथा परंपरा प्रमाणें केवणो

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका प्रारभ्य ॥

अंक	ग्रन्थनां नाम	पृष्ठांक
१	नवकार मंत्र अर्थसहित	१
२	तिखुत्तानी पाटी अर्थसहित	२
३	इरियावहिनी पाटी अर्थसहित	३
४	तस्त उत्तरीनी पाटी अर्थसहित	५
५	लोगस्सनी पाटी अर्थसहित	७
६	सामायिक लेवानी पाटी अर्थसहित	१०
७	नमोबुणनी पाटी अर्थसहित	१०
८	सामायिक पारवानी पाटी अर्थसहित	१२
९	सामायिकनी विधि सामायिक समाप्त थयु	१४

अथ प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका

१	प्रथम चोविसञ्जाविक जे कहेवु, तेनो खुजासो	१६
२	इञ्जामिण जतेनी पाटी अर्थसहित	१६
३	इञ्जामि ठामिनी पाटी अर्थसहित	१६
४	खमासमणनी पाटी अर्थसहित	२२
५	तस्त सवस्सनी पाटी अर्थसहित	२५
६	चत्तारी मगलनी पाटी अर्थसहित	२६
७	आगमे ति विहे पणुत्तेनी पाटी अर्थसहित	२७
८	दसण समकितनी पाटी अर्थसहित	२९
९	वारे व्रत अतिचार सलेपणा अर्थसहित	३०
१०	तस्त धम्मस्सनी पाटी अर्थसहित	५८
११	आचारिय उवक्कायनी पाटी अर्थसहित	६३

पाठो, जाणता, अजाणता वगैरे कोइ प्रकारें नूजथी लिखिजग
यो होसी तथा ग्रथ ठपावणमाहे कोइ प्रकारको दोष लागो हो
सी, तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणतां अजाणतां हमा
री तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचनकायायें करी श्री
अरिहत सिद्ध केवली जगवतनी साखे सर्व दोषप्रत्यें हमाने मि
ष्ठामि डुकड होजो अपराधकी दूमा होजो

(१३) उ पुस्तक ठपावणका काममाहे तथा शुद्ध करणका
काममाहे हमारा प्रिय जैन वधु जाई नीमसिद्धमाणके घणी तस
वी लीनी ठे, जिण बदल उणारो आचार माना ठा श्रीजिनध
र्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा वधु निरतर श्रेय लेसी,
इसी हामे चाहना राखा ठा किं वधु विलेखनेन शुच नवतु

विज्ञाप्ति

(१) इण पुस्तकका ५४ पानमे पढिक्रमणाकी विधिमाहे सजे
हणा आठारे पाप स्थानक कहीने इष्ठामि ठामि कहिजें इणतरे लि
ख्यो ठे सु केइ श्रावक इण मुजवज केवे ठे ने केइ सजेहणा आठारे
पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक
३५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौठे स्थानकिया जीवारी आलो
यणा करीने पठी इष्ठामि ठामिनी पाटी कहे ठे सु आप आपकी
गुरु आमना तथा परपरा प्रमाणे कहीजे

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमाहे काठस्सग्गमाहे इरि
यावहीकी पाटी चितववी लिख्यो ठे परतु केइक श्रावक लोगस्सकी
पाटी चितवे ठे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो
इण पुस्तकका दुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे “ पयाहिण करे
मि वदामि ” लिख्यो ठे सु केइ नाया इणतरे केवे ठे तथा केइ
नाया “ पयाहिण वदामि ” केवे ठे, सु आप आपकी गुरु आम
ना तथा परपरा प्रमाणें केवणो

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका प्रारभ्य ॥

अथ	अथनां नाम	पृष्ठाक
१	नवकार मत्र अर्थसहित	१
२	तिखुत्तानी पाटी अर्थसहित	२
३	इरियावहिनी पाटी अर्थसहित	३
४	तस्स उत्तरीनी पाटी अर्थसहित	५
५	लोगस्सनी पाटी अर्थसहित	४
६	सामायिक लेवानी पाटी अर्थसहित	१०
७	नमोबुणनी पाटी अर्थसहित	१०
८	सामायिक पारवानी पाटी अर्थसहित	१३
९	सामायिकनी विधि सामायिक समाप्त थयु	१४

अथ प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका

१	प्रथम चोविसञ्जादिक जे कहेवु, तेनो खुलासो	१६
२	इहामिण जतेनी पाटी अर्थसहित	१६
३	इहामि ठामिनी पाटी अर्थसहित	१६
४	खमासमणनी पाटी अर्थसहित	२२
५	तस्स सबस्सनी पाटी अर्थसहित	२५
६	चत्तारी मगलनी पाटी अर्थसहित	२६
७	आगमे तिविहे पप्पुत्तेनी पाटी अर्थसहित	२४
८	दसण समकितनी पाटी अर्थसहित	२९
९	वारे व्रत अतिचार सलेपणा अर्थसहित	३०
१०	तस्स धम्मस्सनी पाटी अर्थसहित	५८
११	आचारिय ववक्कायनी पाटी अर्थसहित	६३

पाठो, जाणता, अजाणता वगैरे कोइ प्रकारें नूनथी लिखिजग
 यो होसी तथा ग्रथ ठपावणमाहे कोइ प्रकारको दोष लागो हो
 सी, तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणता अजाणता हमा
 री तरफसुं होइ होसी, तो ते सर्व मन वचनकायायें करी श्री
 अरिहत सिद्ध केवली जगवतनी साखे सर्व दोषप्रत्यें हमाने मि
 ङ्गामि छक्कड होजो अपराधकीक्षमा होजो

(१३) उ पुस्तक ठपावणका काममाहे तथा शुद्ध करणका
 काममाहे हमारा प्रिय जैन वंधु नाई नीमसिहमाणके घणी तस
 टी लीनी ठे, जिण वदल उणारो आचार माना ठा श्रीजिनध
 र्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा वधु निरतर श्रेय लेसी,
 इसी हामे चाहना राखा ठा किं वहु विलेखनेन शुच नवतु

विज्ञाप्ति

(१) इण पुस्तकका ५४ पानमे पढिक्कमणाकी विधिमांहे सजे
 हणा आठारे पाप स्थानक कहीने इङ्गामि गमि कहिजें इणतरे लि
 ख्यो ठे सु केइ आवक इण मुजवज केवे ठे ने केइ सजेहणा आठारे
 पाप स्थानक कहीने दश प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ आवक
 ३५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौठे स्थानकिया जीवारी आलो
 यणा करीने पढी इङ्गामि गमिनी पाटी कहे ठे सु आप आपकी
 गुरु आमना तथा परंपरा प्रमाणे कहीजें

(२) तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काठस्सग्गमाहे इरि
 यावहीकी पाटी चितववी लिख्यो ठे परतु केइक आवक लोगस्सकी
 पाटी चिंतवे ठे वास्ते आप आपकी गुरु आमना प्रमाणे करवो
 इण पुस्तकका डुजा पानमें तिखुत्ताकी पाटी मांहे “ पयाहिण करे
 मि वदामि ” लिख्यो ठे सु केइ जाया इणतरे केवे ठे तथा केइ
 जाया “ पयाहिण वदामि ” केवे ठे, सु आप आपकी गुरु आम
 ना तथा परंपरा प्रमाणें केवणो

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका

॥ तत्र प्रथम सामायिक प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका प्रारब्ध ॥

अथ	ग्रन्थनां नाम	पृष्ठाक
१	नवकार मंत्र अर्थसहित	१
२	तिखुत्तानी पाटी अर्थसहित	२
३	इरियावहिनी पाटी अर्थसहित	२
४	तस्स उत्तरीनी पाटी अर्थसहित	५
५	लोगस्सनी पाटी अर्थसहित	७
६	सामायिक लेवानी पाटी अर्थसहित	१०
७	नमोबुणनी पाटी अर्थसहित	१०
८	सामायिक पारवानी पाटी अर्थसहित	१३
९	सामायिकनी विधि सामायिक समाप्त थयु	१४
	अथ प्रतिक्रमणसूत्रस्यानुक्रमणिका	
१	प्रथम चोविसञ्जादिक जे कहेवु, तेनो खुजासो	१६
२	इञ्जामिण जतेनी पाटी अर्थसहित	१६
३	इञ्जामि ठामिनी पाटी अर्थसहित	१६
४	खमासमणनी पाटी अर्थसहित	२२
५	तस्स सबस्सनी पाटी अर्थसहित	२५
६	चत्तारी भगलनी पाटी अर्थसहित	२६
७	आगमे तिविहे पप्पुत्तेनी पाटी अर्थसहित	२७
८	दंसण समकितनी पाटी अर्थसहित	२९
९	वारे व्रत अतिचार सलेपणा अर्थसहित	३०
१०	तस्स धम्मस्सनी पाटी अर्थसहित	५८
११	आयरिय उवक्कायनी पाटी अर्थसहित	६३

१२ चोरासी लाख जीवायोनि	६५
१३ स्वामेमि सबजीवेनो पाठ अर्थसहित	६५
१४ दैवसिक प्रायश्चित्तनो पाठ अर्थसहित	६६
१५ गवसहिआदिक पञ्चस्काण पाठ अर्थसहित	६७

दश पञ्चस्काणनी अनुक्रमणिका

१ नमुक्कारसहियनो पाठ अर्थसहित	६९
२ पोरिसि साठपोरिसिना पञ्चस्काणनो पाठ अर्थसहित	७१
३ पुरिमठना पञ्चस्काणनो पाठ अर्थसहित	७३
४ विगइ निविगइनुं पञ्चस्काण अर्थसहित	७४
५ एहनोज एकासण सहित पञ्चस्काण पाठ अर्थसहित	७५
५ एकासण वियासणनु पञ्चस्काण अर्थसहित	७६
६ एकलवाणानु पञ्चस्काण अर्थसहित	७७
७ आबिलना पञ्चस्काणनो पाठ अर्थसहित	७७
७ चठविहार ठपवासनु पञ्चस्काण अर्थसहित	७९
७ तिबिहार ठपवासनु पञ्चस्काण अर्थसहित	८०
१० रात्रे चोविहारनु पञ्चस्काण अर्थसहित	८१
११ गवसहिय मुत्तसहिय आदि अनिमइ पञ्चस्काण अ०	८२
१२ दिसावगासिगना पञ्चस्काण अर्थसहित	८२
१ आवकने चार सरणां खेवानो पाठ	८३
२ आवकें त्रण मनोरथ चिंतववा तेनो पाठ	८६

बदोनी अनुक्रमणिका

१ आनदमदिरनामा मंगलस्तवन	८९
२ मंगल स्तवन ठद	९१
३ परमेष्ठी परमानंद स्तवन ठंद	९३
४ जयजजन अरिहतजीनुं स्तवन ठद	९५
५ चोवीश जिनस्तोत्र ठद	९९

६ पंचपरमेष्ठी ठंद	एए
७ अतीत अनागत वर्तमान चोवीशी जिनस्तवन ठंद	१००
८ श्रीअरिहत स्तवन ठंद.	१०१
९ श्रीमहावीरजिन स्तवन ठंद	१०५
१० श्रीअरिहत स्तोत्र ठंद	१०६
११ श्रीसिद्धाष्टक ठंद	१०७
१२ आचार्यस्तोत्र ठंद	१०८
१३ उपाध्यायस्तोत्र ठंद	१०९
१४ साधुस्तोत्र ठंद	११०
१५ चतुर्विंशति जिन नमुद्गुण युक्तस्तव ठंद.	११२
१६ जिनवाणी स्तवन ठंद	११३
१ चोवीश तीर्थकरना १२५ बोलना लेखानी चोवीशी	११५
२ स्तवन आरति	१४१
३ गुरुपट्टावलि कवितामा	१४२
४ मुनिगुणमाला एकशो ने दश गायानी	१४२
५ गौतमस्वामी इन्द्रूतिजीनो रास	१५१

अथ स्तवन पदादिकनी अनुक्रमणिका

१ चोवीश जिनवरनुं स्तवन प्रातःवरी चोवीस०	१५४
२ समरले श्रीआदिनाथ, अजितनाथ जारी	१५५
३ श्रीआदिआदीश्वरू, परम परमेश्वरू.	१५५
४ समर समर जिननाथ समरले ..	१५६
५ प्रणमो नित नित चोवीश जिन सुखदाता	१५७
६ मानवजन्म मानवजन्म रत्न तेने पायो रे	१५७
७ साहिव जलें विराज्याली, चोवीशो महाराज०	१५८
८ जेलो वदणा नाथ हमारी, तुमारे चरणकी व०	१५९
९ श्रीसतगुरु संपसाय जाण्या शिवपुर धणी ..	१६०

१० श्रीश्रीअजित अरज सुणो मोरी	१६१
११ श्रीसन्नवजिन सुणो वीनति हो प्रभुजी	१६२
१२ अजिनदन वदन नित करीयें	१६३
१३ सुमति जिनराज हे प्यारा रेखतामा	१६४
१४ पद्मप्रन्न नवजल पार उतारो	१६४
१५ आशा पूरो सुपासजी, नित जावना०	१६५
१६ वदू जिनद श्रीचदप्रभु जावगु कढखानी देशी	१६६
१७ सुविधि जिनदने ध्यावो रे नविका	१६६
१८ शीतलजिनजी शीतल करो, तेरे तन	१६७
१९ श्रेयास जिनेश्वर, अरज सुनो जी०	१६८
२० प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरजन	१६८
२१ विमलजिनेसर वदो रे नविका	१६९
२२ अनतनाथ प्रभु नित्य वठी वदू	१७०
२३ धर्मजिनद सेव्याविनाजी कां६	१७०
२४ ध्यान धर ध्यान धर शांतिजिनराजको	१७१
२५ मेरे प्रभु कुंथुनाथ मन जाया	१७२
२६ श्रीअरनाथ आरति हरो रे	१७३
२७ सुण चेतन रे तु मल्लीजिणद समर छे	१७३
२८ श्रीमुनिसुव्रत साहिब साचो	१७४
२९ एकवीशमा नमिनाथ निरुपम	१७५
३० जपो नेमीसरजी मेरी जान जपो नेमीसरजी	१७५
३१ नज छे रे वाला, वामादेवी लाला	१७६
३२ अर्जी सुणजो त्रिशलानव, नवज०	१७७
३३ जयजय जयजय वोलो जिनवरकी, आरती	१७८
३४ श्रीअरिर्दंतजी वदो रे नविका, अरिर्दंतस्तवन	१८०
३५ वदू सि६ सदा अविकारी, सि६स्तवन	१८१

३६ आचारज प्रणमुं पद त्रीजे, आचार्यस्तवन	१८२
३७ सुणो नवियणजी, उपाध्याय स्तवन	१८३
३८ वदो साधु सदा सुणो ज्ञाता, साधुस्तवन कठिनशब्दना अ	१८३
३९ श्रीअरिहत गुण गावो रे नविका	१८६
४० नजो रे नविक जिनचोवीश विख्याता	१८७
४१ जे जिणद जे जिणद जे जिणद देवा	१८७
४२ प्रणमुं आदिजिनेश्वरजी, जयजजण	१८८
४३ प्रणमुं आदिजिणद, गुग्मचरणबुज०	१८९
४४ जय जय रहो प्रभु ताहरी, केरवानी देशी	१९२
४५ कृषन अजित सजव सुखकारी	१९३
४६ प्रणमुं नित पाया, तारो तारो जिन०	१९३
४७ जय जय जिनदा, जय जय जिनदा	१९४
४८ जेजो वदणा स्वामी हमारी, तुमारे०	१९४
४९ जयजय आदिजिनेसरू, महाराया रे०	१९५
५० जिनराया रे, श्रीमरुदेवी नद	१९६
५१ प्रात खी चोवीश जिनवरको, स्मरण०	१९७
५२ श्रीजिन समरो रे जाइ, दिनदिन सप०	१९७
५३ प्रणमुं आदिजिनदनेजी कांइ	१९८
५४ रिखन अजित सजव सुखकार	१९८
५५ रिखन अजित सजव नमुं, सजव नमुं०	१९९
५६ रिखन अजित सजव नमुं अनिन०	१९९
५७ रिखन अजित जिन वदीर्ये रे, सजव०	२००
५८ सादेख जलें शिराजोजी, चोवीशो महा०	२००
५९ प्रभु समरो नित्य जावणुं, रिपन अ०	२०१
६० समर समर जिननाथ समर ले, तुमरी ..	२०२
६१ प्रणमो नितनित चोवीश जिन सुखदाता	२०२

६२ समर छे श्रीआदिनाथ, अजितनाथ	२०२
६३ प्रणमुं जिनेश्वर जगपति, परमदया०	२०२
६४ जपो जिनवर रे मेरी जान, जपो जिनवर रे	२०४
६५ समर जिन नामकु प्यारा, मिटे सब०	२०५
६६ वदू चोवीश जिनद आनदशु, कडखानी देशी	२०५
६७ प्रभुजी थारा चरणको आधार, प्रभु०	२०६
६८ प्रात उठ नित जावे जी, प्रणमुं चोवी०	२०६
६९ जपो जपो जविकजिनराया, कर्मकाटके०	२०७
७० प्रणमुं आदि जिनेश्वरूजी, नयनजण०	२०८
७१ वदू चोवीश जगदीश दयाला, गुणरत्ना०	२०८
७२ एसा जिन एसा जिन एसा जिन है, देवगुणस्तवन	२०९
७३ एसा गुरु एसा गुरु एसा गुरु है, गुरुगुणस्तवन	२०९
७४ एसा धर्म एसा धर्म एसा धर्म है, धर्मवर्णन स्तवन	२१०
७५ अहो प्रभु तुम गुण अचरिज आवे, जिनगुणविस्मय०	२११
७६ समज समज गुणवत सयाणा, उपदेशस्तवन	२११
७७ गफजतमें मत रहे रे दीवाना, जीवचीडा०	२१२
७८ धिक् तेरा जीवडा न करता धर्मकु, उपदेशी फटको	२१२
७९ धन तेरा जीवडा नित करता धरमकु	२१५
८० देखि वदन गोरा क्युं तुं नूलानां	२१६
८१ एकदिन एसा बितेगा सकलमें	२१६
८२ धर्म कर्मका मरम न जाना ..	२१७
८३ नमो नमो रे जविक प्रभु चरणा चोवीस०	२१८
८४ नमो नमो रे देव अरिहता ..	२१९
८५ सतगुरुजी जपो रे मेरे नैया, गुरु आश्रयीपद	२१९
८६ धर्मरूपी वणायलो नैया, धर्म आश्रयीपद	२१९
८७ करो ज्ञान दीपक अजवालो ज्ञान आश्रयीपद	२१९

८८	कुदसम्यक्त्वत रस चाखो, सम्यक्त्व आश्रयीपद	२२०
८९	पालो पालो रे सयमकी किरिया, सयम आश्रयीपद.	२२०
९०	तुम तपस्या करो नवि प्राणी, तप आश्रयी०	२२०
९१	मेटो मेटो रे नविकजन लाली, क्रोध आश्रयी०	२२१
९२	मत करो रे चतुर अजिमाना, मान आश्रयी०	२२१
९३	ढोढो ढोढो रे कपटकी कतरणी, कपट आश्रयी०	२२१
९४	मत कहो रे चतुर माया मेरी, माया आश्रयी	२२२
९५	मानो मानो रे सुगुरुका कहेनां, उपदेशाश्रयी	२२२
९६	नइ नइ रे बटाउ जागो जागो, उपदेशाश्रयी	२२२
९७	चेतो चेतो रे चतुर जग खोटा, उपदेश	२२३
९८	काटो काटो रे कालकी फांसी, काल आश्रयी	२२३
९९	रहो रहो रे धरम धन तसीया, धर्म आश्रयी	२२३
१००	चेतो रे चेतो रे कुटुब के बिगारी, उपदेश आश्रयी...	२२३
१०१	मानो मानो रे अचलसुख गरजी, शीखामणपद	२२४
१०२	मानो मानो रे शिखामण मेरी, उपदेश पद	२२४
१०३	मत अकहे जोवनके मटके, यौवन आश्रयी	२२४
१०४	क्यों नूख्यो रे जोवनमें अकही, यौवनआश्रयी	२२५
१०५	सतगुरुजी कहे जग सपनां, संसार आश्रयी	२२५
१०६	बारवार सतगुरु समजावे, शिक्षा आश्रयी	२२५
१०७	कर्मगति हे अजब जगमाहे, कर्मआश्रयी	२२५
१०८	करो करो रे कर्मसें दगा, शूरपणा आश्रयी	२२६
१०९	पालो पालो रे नविक दयामाता, दया आश्रयी.	२२६
११०	सत्यवचन बोलो रे नवि प्राणी, सत्य वचन आ०	२२६
१११	मत लेवो रे अदत्त पर नाइ, अदत्त आश्रयी	२२७
११२	सदा पालो रे शील सुख दायी, शील विपे.	२२७
११३	त्यागो ममता परिग्रह ड खदायी, परिग्रह विपे	२२७

११४ मत करो रे नोजन निशिमांहि, रात्रिनोजन	२२८
११५ ठोढो ठोढो रे डु कृत डुखदानी, डु कृत आश्रयी	२२८
११६ चित्त चचल चपल थिर करना, मन आश्रयी	२२८
११७ दम जमका नहीं विश्वासा, आयु आश्रयी	२२८
११८ सुण सुगुणा रे तुम धर्म ध्यान नित्य कर लो	२२९
११९ मत राचे रे, हारे मत राचे रे, उपदेश विपे	२२९
१२० मानो मानो रे, हारे मानो मानो रे	२२९
१२१ करे कायकु हारे करे कायकु, धन आश्रयी	२३१
१२२ जागो जागो रे हारे जागो० उपदेशआश्रयी	२३१
१२३ चेतो रे हारे चेतो० नरकडु ख वर्णन पद	२३२

लावणीनी अनुक्रमणिका

१ दीनदयाल कृपाल, करुणा० वीशविहरमाननी	२३३
२ प्रभु तुम विण में जन्मो जगतमें, शातिनाथनी	२३४
३ नरपति सुरपति नमे जिनोकु, वदाधिनरिखनी	२३५
४ वीरजिनेश्वर नमत सुरेश्वर, धन्नाजीनी लावणी	२३६
५ चेत चेत रे चेत सयाणा, आवक उपर लावणी	२४०
६ जीव रक्षा उपदेशनी लावणी, उत्तमकुल०	२४२
७ पुण्यआश्रयी लावणी, धन्नाशेठ नवर्माय०	२४४
८ शोल स्वप्ननी लावणी शासननायक०	२४५
९ कालनी लावणी, बिनमाहे बीजे आव०	२४८
१० पाचमा आरानी लावणी, जमी नीरस हो गइ	२४९
११ चेतन कर्मकी अदालत लावणी, समरु शा०	२५३
१२ कर्मपञ्चीशीनी लावणी, कर्मकु मत बांधे०	२५४
१३ मूर्ख उपर लावणी, बालक सगत करे०	२५८
१४ ऋक्षावत्रीशी उपर लावणी, कक्षा कर्मका०	२५९
१५ केदी उपर जावदृष्टातनी लावणी, इस डुनि०	२६३

१६ मराठी जापामां लावणी, लुबे सोदे०	१६४
१७ मराठी जापामां वीजी लावणी, येउं दे०	१६५
सद्याउनी अनुक्रमणिका	
१ चोवीश तीर्थकरना गणधरनी सद्याय चौदसें वावन	१६६
२ सौधर्मस्वामीनी सद्याय, वीरजिनेसर०	१६७
३ अगीयार गणधरनी सद्याय, गणधर स०	१६८
४ अगीयार गणधरनी वीजी सद्याय	१६९
५ अगीयार गणधरनी त्रीजी सद्याय प्रातउछी०	१७०
६ अगीयार गणधरनी चोथी सद्याय समरो०	१७०
७ अगीयार गणधरनी पांचमी सद्याय वढोनित्य०	१७१
८ दशवैकालिक सूत्रना दश अध्ययननी पन्नर सद्याय	१७२
९ गुरुगुण सद्याय, प्रणमु गुरु गुणवत नगीना	१९१
१० अनित्यादिक वार नावनानी वार सद्याउं	१९२
११ तेर काठीयानी सद्याय, श्रीजिनमारग०	३०४
१२ ग्रथानुसारें एकसो वत्रीश वोळें कर्मविपाकमालानी सद्याय गाथा १०८ नी	३०९
१३ उपदेश सवैया जुदा जुदा गामोना नाम सहित	३१४
१४ चौद नियमनी सद्याय	३१८
१५ धर्मपर्व तथा लौकिकपर्व तथा अध्यात्म स्वाध्याय	३१९
१६ अध्यात्मपर्व दसहारा स्वाध्याय	३२०
१७ धनतेरश अध्यात्म स्वाध्याय	३२२
१८ रूपचौदश अध्यात्म स्वाध्याय	३२३
१९ दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय	३२३
२० वीजी दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय	३२४
२१ अनुजव संक्रातिपर्व स्वाध्याय	३२५
२२ वसतपंचमी अध्यात्म स्वाध्याय	३२५

११४ मत करो रे जोजन निशिमांहि, रात्रिजोजन	२२८
११५ ठोढो ठोढो रे डरुत डखदानी, डरुत आश्रयी	२२८
११६ चित्त चचल चपल थिरकरना, मन आश्रयी	२२८
११७ दम जमका नहीं विशवासा, आयु आश्रयी	२२८
११८ सुण सुगुणा रे तुम धर्म ध्यान नित्य कर लो	२२९
११९ मत राचे रे, हारे मत राचे रे, उपदेश विपे	२३०
१२० मानो मानो रे, हारे मानो मानो रे	२३०
१२१ करे कायकु हारे करे कायकु, धन आश्रयी	२३१
१२२ जागो जागो रे हारे जागो० उपदेशआश्रयी	२३१
१२३ चेतो रे हारे चेतो० नरकडख वर्णन पद	२३२

लावणीनी अनुक्रमणिका

१ दीनदयाल रूपाल, करुणा० वीशविहरमाननी	२३२
२ प्रभु तुम विण में नम्यो जगतमें, शातिनाथनी	२३४
३ नरपति सुरपति नमे जिनोकु, वदायिनरिखनी	२३५
४ वीरजिनेश्वर नमत सुरेश्वर, धन्नाजीनी लावणी	२३६
५ चेत चेत रे चेत सयाणा, श्रावक वपर लावणी	२४०
६ जीव रह्या उपदेशनी लावणी, वत्तमकुल०	२४२
७ पुण्यआश्रयी लावणी, धन्नाशेठ नवमाय०	२४४
८ शोल स्वप्ननी लावणी शासननायक०	२४५
९ कालनी लावणी, बिनमांहे ठीजे आठ०	२४८
१० पाचमा आरानी लावणी, जमी नीरस हो गइ	२४९
११ चेतन कर्मकी अदालत लावणी, समरु शा०	२५२
१२ कर्मपञ्चीशीनी लावणी, कर्मकु मत बांधे०	२५४
१३ मूर्ख वपर लावणी, बालक सगत करे०	२५८
१४ कक्कावत्रीशी वपर लावणी, कक्का कर्मका०	२५९
१५ केदी वपर जावदृष्टांतनी लावणी, इत डुनि०	२६२

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ एमो अरिहंताणं, एमो सिद्धाणं, एमो आयरिया
ण, एमो उववायाण, एमो लोए सवसादूण ॥ ए
सो पच एमुक्कारो, सव पावप्पणासणो ॥ मगलाण च
सवेसिं, पढम द्वइ मंगल ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ — (अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने ह
ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श
त्रुनो नाश कखो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोजित तथा
वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान
श्रीअरिहंतने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०)
जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न
गरें पढोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध
जगवानने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण
के०) जे पोतें पांच आचार पाछे अने बीजाने पलावे ठत्रीश
गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (एमो के०)
नमस्कार हो (उववायाण के०) जे शुद्ध सूत्राद्वार पोतें जणो,
अने बीजाने जणावे तथा पक्षिश गुणें करी सहित एहवा श्री
उपाध्यायजीने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (लोए के०)
अढीढीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सवसादूण के०) थिविर
कष्पादिक नेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य अने तप

૨૩ અધ્યાત્મ સ્વાધ્યાય પાઠ	૩૨૪
૨૪ શીલસપ્તમી અધ્યાત્મ સ્વાધ્યાય	૩૨૪
૨૫ અધ્યાત્મ ગિણગોર સ્વાધ્યાય	૩૨૫
૨૬ અસ્વાત્રીજ અધ્યાત્મ સ્વાધ્યાય	૩૨૭
૨૭ રાત્રીપર્વ અધ્યાત્મ સ્વાધ્યાય	૩૨૧
૨૮ વારમાસ વર્ણન સ્વાધ્યાય	૩૨૨
૨૯ પન્નરતિથિ અધ્યાત્મસ્વાધ્યાય	૩૨૩
૩૦ સાતવાર અધ્યાત્મ સ્વાધ્યાય	૩૨૪
૩૧ અધ્યાત્મ વગીચો સ્વાધ્યાય	૩૨૫
૩૨ અનુજવ સુખ શમ્યા સ્વાધ્યાય	૩૨૬
૩૩ અધ્યાત્મ જ્ઞાની સ્વાધ્યાય	૩૨૭
૩૪ મહાવીરસ્વામીની વશોદ્ધૃત કવિતા ગાથા ૮૮	૩૨૮

ચોઢાલીયાની અનુક્રમણિકા

૧ શ્રીમહાવીરસ્વામીનું ચોઢાલીયું	૩૪૪
૨ સ્વધિક મુનિનું ચોઢાલીયું	૩૫૧
૩ મેતારજમુનિનું ચોઢાલીયું	૩૫૮
૪ આનંદ શ્રાવકનું ચોઢાલીયું	૩૬૫
૫ કામદેવ શ્રાવકનું ચોઢાલીયું	૩૭૨
૬ એપણા સમિતિનું ચોઢાલીયું	૩૭૭
૭ વિનય આરાધનાનું ચોઢાલીયું	૩૮૩

ઢત્રીશીયોની અનુક્રમણિકા

૧ સમકિત ઢત્રીશી સમ્યક્ત્વનાં સ્વરૂપ દર્શાવનારી	૩૯૦
૨ શ્રાવક ઢત્રીશી શ્રાવક સ્વરૂપની વર્ણવનારી	૩૯૨
૩ જોલપ ઢત્રીશી જોલી છુનીયાનાં સ્વરૂપ દર્શાવનારી	૩૯૭
૪ વૈરાગ્ય જાવ તથા ૩૨ અસપ્તાય ઉપર સર્વેશ્વર	૩૯૯
અથ સમાપ્ત કહ્યો હે	૪૦૨

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ एमो अरिहंताणं, एमो सिद्धाणं, एमो आयरिया
ए, एमो उवझायाण, एमो लोए सबसादूण ॥ ए
सो पच एमुक्कारो, सब पावप्पणासणो ॥ मगलाणं च
सवेसिं, पढम द्वइ मंगलं ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ — (अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने ह
ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श
त्रुनो नाश कस्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोनित तथा
वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान
श्रीअरिहतने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०)
जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न
गरें पढोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध
जगवानने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण
के०) जे पोतें पांच आचार पाळे अने बीजाने पलावे ठत्रीश
गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (एमो के०)
नमस्कार हो (उवझायाण के०) जे छुट्ट सूत्राद्धर पोतें जणो,
अने बीजाने जणावे तथा पञ्चिंश गुणें करी सहित एहवा श्री
उपाध्यायजीने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (लोए के०)
अढीहीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सबसादूण के०) धिविर
कष्पाविक नेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

२३ अध्यात्म स्वाध्याय फाग	३१३
२४ शीलसप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय	३१४
२५ अध्यात्म गिणगोर स्वाध्याय	३१५
२६ अखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय	३१६
२७ राखीपर्व अध्यात्म स्वाध्याय	३१७
२८ वारमास वर्णन सद्याय	३१८
२९ पन्नरतिथि अध्यात्मस्वाध्याय	३१९
३० सातवार अध्यात्म स्वाध्याय	३२०
३१ अध्यात्म वगीचो स्वाध्याय	३२१
३२ अनुनव सुख शय्या स्वाध्याय	३२२
३३ अध्यात्म नवानी स्वाध्याय	३२३
३४ महावीरस्वामीनी दशोद्वेग कविता गाथा ८८	३२४

चोढालीयानी अनुक्रमणिका

१ श्रीमहावीरस्वामीनु चोढालीयुं	३४४
२ खयक मुनिनु चोढालीयुं	३४५
३ भेतारजमुनिनु चोढालीयुं	३४६
४ आनद आवकनु चोढालीयुं	३४७
५ कामदेव आवकनु चोढालीयुं	३४८
६ एपणा समितिनु चोढालीयुं	३४९
७ विनय आराधनानु चोढालीयुं	३५०

ढत्रीशीयोनी अनुक्रमणिका

१ समकित ढत्रीशी सम्यक्त्वनां स्वरूप दर्शविनारी	३५०
२ आवक ढत्रीशी आवक स्वरूपनी दर्शविनारी	३५१
३ जोलप ढत्रीशी जोली छुनीयानां स्वरूप दर्शविनारी	३५२
४ वैराग्य नाव तथा ३१ असजाय उपर सर्वेय्या	३५३
ग्रंथ समाप्त कछो ठे	४०२

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ एमो अरिहंताणं, एमो सिद्धाणं, एमो आयरिया
ए, एमो उवधायाण, एमो लोए सबसादूण ॥ ए
सो पच एमुक्कारो, सब पावप्पणासणो ॥ मगलाण च
सवेसिं, पढम द्वइ मंगल ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ — (अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हं
ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श
त्रुनो नाश कस्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोजित तथा
वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी विराजमान एहवा विहरमान
श्रीअरिहंतने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०)
जेणें सकल कार्य साध्या, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न
गरें पढोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध
जगवानने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण
के०) जे पोतें पाच आचार पाले अने बीजाने पलावे उत्रीश
गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (एमो के०)
नमस्कार हो (उवधायाण के०) जे छुट्ट सूत्राद्धर पोतें जणो,
अने बीजाने जणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री
उपाध्यायजीने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (लोए के०)
अढीढीपरूप मनुष्य लोकने विपे, (सबसादूण के०) धिविर
कल्पादिक नेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

२३ अध्यात्म स्वाध्याय फाग	३१४
२४ शीलसप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय	३१४
२५ अध्यात्म गिणगोर स्वाध्याय	३१५
२६ अखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय	३१५
२७ राखीपर्व अध्यात्म स्वाध्याय	३२१
२८ वारमास वर्णन सवाय	३२१
२९ पन्नरतिथि अध्यात्मस्वाध्याय	३२३
३० सातवार अध्यात्म स्वाध्याय	३२४
३१ अध्यात्म वगीचो स्वाध्याय	३२५
३२ अनुनव सुख शय्या स्वाध्याय	३२६
३३ अध्यात्म जवानी स्वाध्याय	३२८
३४ महावीरस्वामीनी दशोदण कविता गाथा ८८	३२८

चोढालीयानी अनुक्रमणिका

१ श्रीमहावीरस्वामीनु चोढालीयुं	३४४
२ खधक मुनिनु चोढालीयुं	३५१
३ मेलारजमुनिनु चोढालीयुं	३५८
४ आनद आवकनु चोढालीयुं	३६५
५ कामदेव आवकनु चोढालीयुं	३७३
६ एणणा समितिनु चोढालीयुं	३७४
७ विनय आराधनानु चोढालीयुं	३८३

ढत्रीशीपोनी अनुक्रमणिका

१ समकित ढत्रीशी सम्यक्त्वनार् स्वरूप दर्शावनारी	३९०
२ आवक ढत्रीशी आवक स्वरूपनी दर्शावनारी	३९३
३ जोलप ढत्रीशी जोली डनीयानां स्वरूप दर्शावनारी	३९७
४ वैराग्य नाव तथा ३२ असफाय ठपर सवेय्या	३९९
अथ समाप्त कखो डे	४०२

॥ श्री ॥

॥ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ अथ श्री नवकारमंत्र प्रारंभ ॥

॥ एमो अरिहंताणं, एमो सिद्धाण, एमो आयरिया
ण, एमो उववायाण, एमो लोए सबसादूण ॥ ए
सो पच एमुक्कारो, सब पावप्पणासणो ॥ मंगलाण च
सवेसिं, पढम द्वइ मगल ॥ इति नमस्कार ॥ १ ॥

अर्थ —(अरिहंताण के०) अरि एटले कर्मरूप शत्रु तेने हं
ताण एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप श
त्रुनो नाश कखो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोजित तथा
वाणीना पांत्रीश गुणोयें करी विराजमान एहवा विहरमान
श्रीअरिहंतने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (सिद्धाण के०)
जेणें सकल कार्य साध्या, अने जे आठ कर्म खपावी, मोक्ष न
गरें पढोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा सर्व श्रीसिद्ध
जगवानने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (आयरियाण
के०) जे पोतें पांच आचार पाछे अने बीजाने पलावे उत्रीश
गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने महारो (एमो के०)
नमस्कार हो (उववायाण के०) जे छद्म सूत्राक्षर पोतें जणो,
अने बीजाने जणावे तथा पश्चिम गुणें करी सहित एहवा श्री
उपाध्यायजीने महारो (एमो के०) नमस्कार हो (लोए के०)
अर्द्धीर्द्धीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सबसादूण के०) धिविर
कप्पादिक जेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप

कमणै के०) पगें करी पीछ्याथकी अथवा मसल्याथकी, घण्ट
 छु कट्टु ? (जे के०) जे कोइ, (मे के०) में (जीवा के०) जी
 वो, (विराहिया के०) विराह्या होय डु खमांदे पाछ्या होय ते
 कया जीवोने में विराह्या डु खी कीधा होय ? तेना नाम कहे ठे
 (एगिविया के०) जेहने शरीररूप एकज इडिय होय ते पृथ्वी,
 पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिना जीव, (वेइदिया के०) शरीर त
 था मुख ए दोय इडियवाला जे शख, शीप, गमोला, अलसीयां,
 एहवा जेहने पग न होय ते, (तेइदिया के०) तीन इडियवाला ते
 जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुथुवा, जू, जीख, माकड़, की
 डी प्रमुख जेहना मुख उपरें शिंग होय ते (चवरेदिया के०)
 चार इडियवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक ने आंख होय ते, मा
 खी, मझर, मांस, वींठी, नमरी, टीड, जे उडनारा जीव जेने आठ
 पग, तथा मस्तकें शिंग होय ते, (पंचिदिया के०) पांच इडिय
 वाला जेने शरीर, मुख, नाक, आख्य अने कान होय, ते जलचर,
 खेचर, ए सर्वतिर्यच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी, ए सर्व पं
 चैडिय जीव कहियें हवे ए सर्व जीवोने केवी रीतें विराह्या होय ?
 तेना प्रकार कहे ठे (अजिह्या के०) सामा आवता हएया,
 (वक्तिया के०) एक ढगले कछा तथा धूर्खें करी ढांक्या, (ले
 सिया के०) जूमियें घस्या तथा लगावेक मसल्या (सघाइया
 के०) माहोमाहें शरीरनें मेलववे करी एकठा कीधा, (सघट्टिया
 के०) थोडो स्पर्श करवे करी झह्या (परियाविया के०) समस्त
 प्रकारें परिताप पमाख्या, पीछ्या, (किलामिया के०) गाढी किलाम
 णा उपजावीने माख्या नही, पण मृतप्राय कीधा, (उहविया के०)
 त्रास पमाडीने हाली चाली शके नही एहवा कीधा, (गणाउं
 के०) एक स्थानकयकी उपाडीने (छाण के०) धीजे ठेकाणे
 (सकामिया के०) सक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाउं के०) जीवित

थकी, (विवरोविया के०) चूकाव्या, माखा, नाश कीधा (तस्स के०) ते सवधी जे अतिचार लाग्या ते (डुकढ के०) पाप कहीयें ते डुक्कत (मिहामि के०) महारुमिथ्या एटले निष्फल थाउ ॥३॥

॥ अथ तस्सवत्तरीनी पाटी प्रारब्ध ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेण, पायञ्चित्तकरणेण, विसोद्धिकरणेण, विसद्धीकरणेण, पावाण कम्माण, निग्घायण ण, ठामि काउस्सग्ग, अन्नञ्ज उस्सिएणं, निससिएण, खासिएण, ठीएण, जजाइएण, उद्दुएण, वायनिसग्गेण, जमलिए, पित्तमुब्बाए, सुदुमेहिं अगसचालेहि, सुदुमेहिं खेजसचालेहिं, सुदुमेहिं दिठिसचालेहिं, एव माइएहिं, आगारेहिं, अजग्गो, अविराहिउ, दुक्क मे काउस्सग्गो, जाव अरिहताण, जगवताण, नमुक्का रेण, न पारेमि, तावकाय, ठाणेण, मोणेण, जाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थ - (तस्स के०) ते पापनीज वली विशेष छुद्दिने अर्थे जे कांइ आगल करवु तेने उत्तरीकरण कहीयें एटले तेनेज (उत्तरीकरणेण के०) विशेषें करी वली उपर छुद्द करवु अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वे कीधु ठे, तेनी वली विशेष छुद्दिने अर्थे कायोत्सर्ग करु बु ते कायोत्सर्गतो (पायञ्चित्तकरणेण के०) छुद्द प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा करवाथकी होय ते प्रायश्चित्त पण (विसोद्धिकरणेण के०) विच्छुद्दि, निर्मलता करवे करीने होय, वली ते विच्छुद्दि पण विशल्य होय, तो थाय मार्टे (विसद्धीकरणेणं के०) मायाशल्य नियाणाशल्य मिथ्यात्वशल्य, ए तीन शल्य टालवा थकी थाय, ए उत्तरीकरणाविक चार हेतुयें करीने छुं करवु ठे ? ते

कहे ठे (पावाणकम्माण के०) संसारहेतुरूप जे पाप कर्म तेने (निग्घायणछाए के०) निर्घातन एटले उठेवन करवानें अर्थे (गमि के०) कायाने एक ठामें करु बु, (काउस्सग्ग के०) कायाने हलाववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्ये करु बु हवे इहां काया हलाववी नही एवी प्रतिज्ञा करी ठे माटे शरीरनु कांइण हानबु यवाथी प्रतिज्ञानो जग थाय तेथी काउस्सग्गमा वार आगार मोकला राख्या ठे (अन्नञ्ज के०) उह्वासादिक जे आगारो कदेशे, ते आगारो वर्जिने बीजे स्थानकें कायाने हलाववानो नियम करु बु तेनां नाम कहे ठे (उत्तसिएण के०) उचो श्वास लेवाथी, (निससिएण के०) नीचो श्वास मूकवाथी (खासिएण के०) खांसी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (ढीएण के०) ठोंक आया थकी, (जनाइएण के०) जा नली ते बगासू लेवाथकी, (उम्भुएण के०) उंमकार आयाथका, (वायनिसग्गेण के०) वायु निकलता थका, (जमेलिए के०) भ्रम रीचकी आववाथी, (पित्तमुह्वाए के०) पित्तरा कोपसू मूर्छा आया थकां, (सुद्धमेहि के०) सूद्धम थोडोक, (अगसचालेहि के०) शरीर हलाववाथी, (सुद्धमेहि के०) थोडो, (खेलसचालेहि के०) श्लेष्म तथा मूखना थूकनु चालवबु करवाथकी, कफ गलवाथकी (सुद्धमेहि के०) सूद्धम थोडी, (विठिसचालेहि के०) चक्रुर्दष्टि नो सचार यवाथी एटले चक्रु हलाववा थकी, (एवमाइएहि के०) ए आवि करीने इहा आवि पर्वे बीजा पण (आगारेहि के०) आगार लेवां पडे, ते लेता थकां महारो काउस्सग्ग (अजग्गो के०) जागे नही, खमित हुवे नही, (अविरादिउ के०) अवि राधित अखमित दानी पोहोचे नही एवो (हुक्क के०) होजो, (मे के०) महारो, (काउस्सग्गो के०) कायस्थिर राखवी ते रूप व्यापार ते (जाव के०) ज्यांसुधि, (अरिहंताण जगवताण के०) श्रीअरिहत जगवतने, (नमुकारेण के०) नमस्कार सहित

(नपारेमि के०) पारू नही, ध्यान सपूर्ण न करू, (ताव के०)
 त्यां सुत्री (कायं के०) महारी कायाने, शरीरने, (गणोण के०)
 एकविकाणें स्थिरपणे राखीने, (मोणेण के०) अबोलो रहीने,
 (जाणेण के०) एकाग्र जे ध्यान तेणें करीनें, (अप्पाण के०) महारी
 जे काया ते प्रत्ये, (वोसिरामि के०) दु वोसिरावु दु तच्छु दु आ
 पाटी कहीनें काउस्सग्ग करणो इरियावहीकी पाटी मनमांहे
 कहेणी पढी नवकार कहीनें काउस्सग्ग पारियें ॥ ४ ॥

॥ अथ लोगस्तकी पाटी लिख्यते ॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तिच्चयरे जिणे ॥ अरिहं
 ते कित्तइस्स, चजवीसपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ज मज्जि
 यं च वदे, संजव मज्जिणंदण च सुमइं च ॥ पजमप्प
 ह सुपास, जिण च चंदप्पहं वदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पु
 प्फदत्त, सीअल सिक्कस वासुपुज्जं च ॥ विमल म
 णतं च जिण, धम्मं सतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अर
 च मल्लि, वदे सुणिसुवय नमिजिण च ॥ वदामि रि
 छनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एव मए अज्जि
 युआ, विदुय रयमला पहीण जरमरणा ॥ चजवीसं
 पि जिणवरा, तिच्चयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्तिय व
 दिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आ
 रुग्ग बोहिलाज्ज, समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चदे
 सु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा ॥ साग
 रवर गजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥ इति ॥५॥

अर्थ - (लोगस्स के०) पंचास्तिकायात्मक लोकने (उज्जोय

कहे ठे (पावाणकम्माण के०) संसारहेतुरूप जे पाप कर्म तेने (नि
 ग्घायणछाए के०) निर्घातन एटले उधेदन करवानें अर्थे (गमि
 के०) कायाने एक ठामें करु बु, (काउस्सग्ग के०) कायाने हला
 ववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्ये करु बु हवे इहा काया हलाववी
 नही एवी प्रतिज्ञा करी ठे माटे शरीरनु कांइपण हालबु थवाथी
 प्रतिज्ञानो जग थाय तेथी काउस्सग्गमा वार आगार मोकला राख्या
 ठे (अन्नउ के०) उह्वासादिक जे आगारो कहेसो, ते आगारो वर्जीने
 बीजे स्थानकें कायाने हलाववानो नियम करु बु तेनां नाम कहे
 ठे (उत्तसिएण के०) उचो श्वास लेवाथी, (निससिएण के०) नीचो
 श्वास मूकवाथी (खासिएण के०) खासी आवे एटले खोखलो
 आब्या थकी, (ठीएण के०) ठोंक आया थकी, (जन्नाइएण के०) जा
 नली ते वगासू लेवाथकी, (उफुएण के०) उंमकार आयाथकी,
 (वायनिसग्गेण के०) वायु निकलता थका, (जमलिए के०) जम
 रीचक्री आववाथी, (पित्तमुह्वाए के०) पित्तरा कोपसू मूर्छा आया
 थका, (सुद्धमेहि के०) सूद्धम थोडोक, (अगसचालेहि के०)
 शरीर हलाववाथी, (सुद्धमेहि के०) थोडो, (खेलसचालेहि के०)
 श्लेष्म तथा मूखना थूकनु चालवबु करवाथकी, कफ गलवाथकी
 (सुद्धमेहि के०) सूद्धम थोडी, (विठ्ठिसचालेहि के०) चटुर्दृष्टि
 नो सचार थवाथी एटले चटु हलाववा थकी, (एवमाइएहि
 के०) ए आदि करीने इहा आदि पर्वे बीजा पण (आगारेहि
 के०) आगार लेवां पडे, ते लेता थका महारो काउस्सग्ग (अजग्गो
 के०) नागे नही, खमिंत दुवे नही, (अविराद्धिउ के०) अवि
 राधित अखंमित दानी पोहोंचे नही एवो (हुक्का के०) होजो,
 (मे के०) महारो, (काउस्सग्गो के०) कायस्थिर राखवी ते
 रूप व्यापार ते (जाव के०) ज्यासुधि, (अरिद्धताण जगवताण
 के०) श्रीअरिद्धत जगवतने, (नमुक्कारेण के०) नमस्कार सहित

श्रीश्ररिष्टनेमिजी प्रत्ये, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रत्ये,
 (तह के०) तथा, (वक्षमाण के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्ये,
 हुं वाडु बु, चकार पादपूरणार्थे ठे ॥ ४ ॥ (एव के०) ए प्रकारें
 (मए के०) महारे जीवें जे, (अनिष्टुआ के०) नाम पूर्वक स्तव्या,
 ते चोवीशे परमेश्वर केहवा ठे ? तो के (विद्वय के०) टाल्या ठे,
 (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा मल जेणें एवा ठे वली (पही
 ए के०) अतिशयें करीनें क्य कथा ठे, (जरमरणा के०) जरा तथा
 मरण जेणें एवा जे (चठवीसपि के०) चोवीश तीर्थकर तथा
 अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थकर पूर्ववत् लेवा ते सर्व (जिण
 वरा के०) जिनवर, (तिज्यरा के०) तीर्थकर ते, (मे के०)
 महारा उपर (पसीयतु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (किंचिय के०)
 कीर्तित ठे (वदिय के०) वदित ठे (महिया के०) पूज्य ठे एहवा,
 (जे के०) जे तीर्थकर, (ए के०) ए प्रत्यह (लोगस्त के०)
 लोकने विपे (उत्तमा के०) उत्तम एहवा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया
 एटले सिद्धि पाम्या निष्ठितार्थ थया एवा हे सिद्धजगवत तमे सु
 जने, (आरुग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणु जाणबु ते
 सिद्धपणु तो (बोहिलाज के०) बोधबीज जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति
 थाय तेवारें प्राप्त थाय ठे माटें श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थवाने
 अर्थे (उत्तम के०) उत्कृष्ट ते उची एहवी (समाहिवर के०) प्रधान
 समाधि ते प्रत्ये (दितु के०) दिउ आपो ॥ ६ ॥ (चवेसु के०) च
 इमार्थी (निम्मलयरा के०) अत्यंत निर्मल, (आइचेसु के०) सूर्य
 समुदायथकी पण, (अहिय के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्रका
 शना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, ठेहो स्वयंभुरमण नामा
 समुद्र तेनी पेरें, (गजीरा के०) गुणें करी गजीर, एहवा जे (सिद्धा
 के०) सिद्धो ते, (सिद्धि के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुक्त प्रत्ये,
 (विसतु के०) दिउ आपो ॥ ७ ॥ इति लोगस्त पाठ समाप्त ॥ ५ ॥

गरे के०) उद्योतना करणहार, (धम्मतिष्ठपरे के०) धर्मरूप ती
 र्यना करणार एवा, (जिणे के०) राग द्वेषना जितनार जे (अरि
 हते के०) श्री अरिहत तेनु, (किच्छस्स के०) कीर्त्तन करीश तेमां
 (चउवीसपि के०) रूपनादिक चोवीस परमेश्वरनु तो नामोच्चारण
 पूर्वक कीर्त्तन करीश अने अपिशब्दयकी अन्य जिनोनु पण कीर्त्तन
 करीश ते कहेवा ठे ? तो के (केवली के०) केवलज्ञानी ठे ते तीर्थ
 करनो दुं कीर्त्तन करीश ॥ १ ॥ हवे ते चोवीश जिनना नाम कहे ठे
 (उत्तम के०) श्रीरूपनदेवस्वामी प्रत्ये (च के०) वली (मज्झि
 के०) श्रीअजितनाथ प्रत्ये, (वदे के०) वाड बु, (सज्जव के०) श्रीस
 ज्जवनाथ प्रत्ये, (मज्झिणवण के०) श्रीअजिनवननाथ प्रत्ये (च
 के०) वली (सुमं के०) श्रीसुमतिनाथने (च के०) वली (प
 उमप्पहं के०) श्री पद्मप्रजस्वामी प्रत्ये, (सुपास के०) श्रीसुपा
 र्थनाथजीने (जिण के०) रागद्वेषना जितनार, (च के०) वली
 (चदप्पह के०) श्रीचन्द्रप्रजजीने, (वदे के०) वाड बु ॥ २ ॥ (सु
 विहिं के०) श्रीसुविधिनाथजीने (च के०) वली एमनु वीछु
 नाम (पुप्फदत्त के०) श्री पुष्पदत्तजी ठे, ते प्रत्ये, (सीयल
 के०) श्रीशीतलनाथजीने, (सिहंस के०) श्रीश्रेयासनाथजीने,
 (वासुपुक्क के०) श्रीवासुपूज्यस्वामि प्रत्ये, (च के०) वली, (वि
 मल के०) श्रीविमलनाथजीने, (मणत्त के०) श्रीअनतनाथजी
 ने, (च के०) वली, (जिण के०) रागद्वेषना जीतणार, एहवा
 (धम्म के०) श्रीधर्मनाथजीने, (सति के०) श्रीशातिनाथजीने
 (च के०) वली, (वदामि के०) वाड बु ॥ ३ ॥ (कुष्ठ के०) श्रीकुष्ठ
 नाथजीने, (अर के०) श्रीअरनाथजीने, (च के०) वली, (म
 छिं के०) श्रीमछिनाथजीने, (वदे के०) वाड बु, (सुणिसुवय
 के०) श्री सुनिसुव्रतस्वामी प्रत्ये, (नमिजिण के०) श्रीनमिजिन
 ने, (च के०) वली, (वदामि के०) वाड बु (रिठ्ठनेमि के०)

श्रीअरिष्टनेमिजी प्रत्ये, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथस्वामी प्रत्ये,
 (तह के०) तथा, (वद्धमाण के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्ये,
 हु वाडु बु, चकार पादपूर्णार्थे ठे ॥ ४ ॥ (एव के०) ए प्रकारे
 (मए के०) महारे जीवे जे, (अनिष्टुआ के०) नाम पूर्वक स्तव्या,
 ते चोवीजे परमेश्वर केहवा ठे ? तो के (विद्वय के०) टाट्या ठे,
 (रयमला के०) कर्मरूपी रज तथा मल जेणें एवा ठे वली (पही
 ए के०) अतिशयें करीनें ह्य कखा ठे, (जरमरणा के०) जरा तथा
 मरण जेणें एवा जे (चउवीसपि के०) चोवीश तीर्थकर तथा
 अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थकर पूर्ववत् लेवा ते सर्व (जिण
 वरा के०) जिनवर, (तिड्यरा के०) तीर्थकर ते, (मे के०)
 महारा उपर (पसीयंतु के०) प्रसन्न हो ॥ ५ ॥ (कित्तिय के०)
 कीर्तित ठे (वदिय के०) वदित ठे (महिया के०) पूज्य ठे एहवा,
 (जे के०) जे तीर्थकर, (ए के०) ए प्रत्यक्ष (लोगस्त के०)
 लोकने विषे (उत्तमा के०) उत्तम एहवा, (सिद्धा के०) सिद्ध थया
 एटले सिद्धि पास्या निष्ठितार्थ थया एवा हे सिद्धजगवत तमे सु
 जने, (आरुग के०) रोग रहित निर्मल एवो सिद्धपणु जाणवु ते
 सिद्धपणु तो (बोहिलाज के०) बोधबीज जे श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति
 थाय तेवारें प्राप्त थाय ठे माटें श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिनो लाज थवाने
 अर्थे (उत्तम के०) उत्कृष्ट ते उची एहवी (समाहिवर के०) प्रधान
 समाधि ते प्रत्ये (वितु के०) विउ आपो ॥ ६ ॥ (चदेसु के०) च
 ड्माथी (निम्मलयरा के०) अत्यंत निर्मल, (आश्चेसु के०) सूर्य
 समुदायथकी पण, (अहिय के०) अधिक, (पयासयरा के०) प्रका
 शना करणहार (सागरवर के०) प्रधान, ठेहो स्वयंछरमण नामा
 समुद् तेनी पेरें, (गजीरा के०) गुणें करी गजीर, एहवा जे (सिद्धा
 के०) सिद्धो ते, (सिद्धि के०) मुक्ति जे तेने, (मम के०) मुऊ प्रत्ये,
 (दिसतु के०) विउ आपो ॥ ७ ॥ इति लोगस्त पाठ समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ सामायिक छेवणकी पाटी लिख्यते ॥

करेमि नते सामाश्य, सावळं जोग पञ्चस्कामि, जाव नि
यम, पङ्गुवासामि, डविहं तिविहेण, न करेमि, न कार
वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स नते, पडिक्कमामि,
निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥१॥ इति ॥६॥

अर्थ -(नते के०) हे पूज्य ! (सामाश्य के०) समता परि
णामरूप सामायिकने, (करेमि के०) दु करू बु (सावळं के०)
अवद्य जे पाप, तेणें करी सहित एवा (जोग के०) मन वचन
कायाना योग, ते प्रत्ये (पञ्चस्कामि के०) दु निषेध करू बु, (जाव
के०) ज्यासुधि, (नियम के०) सामायिक वतना नियमने (प
ङ्गुवासामि के०) दु सेवु, रहु त्यासुधी, (डविहं के०) दोयकर
णसुं एटले करणो, करावणो ए दोयप्रकारका जो सावद्यव्या
पार ते प्रत्ये (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०) वचनें
करी, (कायसा के०) कायार्थें करी ए, (तिविहेण के०) तीन
जोगसु (नकरेमि के०) दु करू नहि, (नकारवेमि के०) दुं डजा पासें
न करावु, (तस्स के०) ते सावद्यव्यापाररूप पापने, (नते
के०) हे जगवत ! आपनी समीप दुं (पडिक्कमामि के०) पडि
क्कसु बु, (निंदामि के०) दु आत्मानो साखें निडं बु, (गरिहामि
के०) गुरुनी साखें दु गर्हं बु, एटले विशेषें निडं बुं, (अप्पाण
के०) मादरा आत्माने, ते छट क्रियायकी (वोसिरामि के०)
वोसिरावुं बु, एटले विशेषें करीनें तच्छु बुं ॥ १ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री नमुत्तुणनी पाटी लिख्यते ॥

नमुत्तुण, अरिहताणं, जगवताण, आइगराण, ति
वयराण, सयसवु-क्षाणं, पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहा

ए, पुरिसवरपुमरीयाण, पुरिसवर गधह्वीणं, लो
गुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाणं, लोगपईवा
ए, लोगपज्जोयगराणं, अन्नयदयाणं, चकुदयाण,
मग्गदयाण, सरणदयाणं, जीवदयाण, बोहिदयाण,
धम्मदयाण, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाण, धम्म
सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीण, दिवोत्ताण,
सरणगइपइठाणं, अप्पडिह्य वरणाण ढसणधरा
णं, विअट्ट वजमाण, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाण, ता
रयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताणं, मोयगाणं, सब
नूण, सबदरिसिण, सिव मयल मरुअ मणत मरुक्य
मवाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाण सं
पत्ताण, नमो जिणाण, जियन्नयाण ॥१॥ इति ॥७॥

अर्थ —(नमुबुण के०) इहां नमोस्तु एटले नमस्कार हो अने ए
कार जे ठे, ते वाक्यालकारने माटे ठे, कोने नमस्कारहो, तो के (अरिं
हताण के०) श्रीअरिहत देवने, (जगवत्ताण के०) जगवतने, (आइ
गराण के०) धर्मना आदिना करणारने (तिष्ठयराण के०) तीर्थना
स्थापनार एटले साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका, ए चार जा
तिना तीर्थना स्थापनारने, (सयसबुद्धाण के०) पोतानीमेले सम्यक्
प्रकारे तत्त्वना जाण यथा (पुरिसुत्तमाण के०) पुरुषमाहे उत्तम (पु
रिससीहाण के०) पुरुषमाहे सिद्धसमान, (पुरिसवरपुमरीयाण के०)
पुरुषमाहे पुमरीक कमल समान, (पुरिस के०) पुरुषमाहे, (वर के०)
प्रधान, (गधह्वीण के०) गधह्वी समान ठे, (लोगुत्तमाण के०)
लोकमाहे उत्तम ठे, (लोगनाहाण के०) लोकना नाथ ठे, (लोगहि
याण के०) लोकना हितकारी ठे, (लोगपईवाण के०) लोकने विपे

प्रदीप समान ठे, (लोगपङ्क्त्योगराण के०) लोकमाहे प्रकर्ष करी उद्योतना करणार ठे (अनयदयाण के०) अनयदानना देणार ठे, (चक्षुदयाण के०) ज्ञानरूप चक्षुना देणार ठे, (मग्गदयाण के०) मोक्ष मार्गना देणार ठे, (सरणदयाण के०) शरणना देणार ठे, (जीवदयाण के०) समयरूप जीवतरना देणार ठे, (बोहिदयाण के०) समकित रूप बोधना देणार ठे, (धम्मदयाण के०) धर्मना देणार ठे, (धम्मदेसियाण के०) धर्मना उपदेशना देणार ठे, (धम्मनायगाण के०) धर्मना नायक ठे, (धम्मसारहीण के०) धर्मरूप रथना सारथि ठे, (धम्म के०) धर्मने विपे, (वर के०) प्रधान (चाउरंत के०) चार गतिनो अत करवा माटे, (चक्कवट्टीण के०) चक्रवर्ती समान ठे, (दिवोत्ताण के०) सत्तारसमुद्गमा द्वीप समान, ड खना निवारण करणार ठे, (सरणगइपइछाण के०) सरणगतिना स्थानक नूत शरणागत वत्सल ठे (अप्पडिहय के०) नही हणाय एवु, (वर के०) प्रधान, (नाण के०) ज्ञान (दसण के०) दर्शन तेने (धराण के०) धरणार, (विअरट्ट के०) गयुं ठे, (ठठमाण के०) ठठस्थपणु एटले कर्मरूपी आवरण जेने एवा, (जिणाण के०) रागद्वेपनें जीत्या ठे जेणें, (जावयाण के०) बीजाने रागद्वेपथकी मूकावे ठे (तिन्नाण के०) सत्ताररूपी समुद्ग पोतें तक्षा ठे अने (तारयाण के०) बीजानें सत्तारसमुद्गथी तारनार ठे (बुद्धाण के०) पोतें तत्त्वज्ञानने समज्या ठे (बोहियाण के०) बीजानें तत्त्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताण के०) पोतें चातुर्गतिक विपाकविचित्र कर्मथकी मूकाणा ठे, तथा (मोयगाण के०) बीजाजब्ब प्राणीनें कर्मथकी मूकावणार ठे, (सव्वन्नूण के०) सर्वज्ञ ठे, (सव्ववरिसिण के०) सर्व पदार्थना देखणार ठे, (सिव के०) सर्व उपड्व रहित एवा (ममल के०) अचल (मरुय के०) अरुज रोग रहित (मणत के०) अनतज्ञानादि चतुष्टयें करी युक्त

ढे माटें अनंत ढे (मस्कय के०) सर्वकाल निश्चल (मत्वावाह के०) आवावाध एटले वाधा पीडा रहित (मपुणरावित्ति के०) जे गतिथकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी एहवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति एवु ढे (नामधेय के०) नाम जेनु एवा (छाण के०) स्थानकने (सपत्ताण के०) पाम्या ढे अर्थात् मोह नगर प्रत्ये पाम्या ढे, एहवा अरिहंत जणी (नमो के०) महारो नमस्कार हो ते जिन जगवान् केहवा ढे ? तो के (जिणाय के०) कर्मरूपी शत्रुनें जीतणार, तथा (जियजयाण के०) इहलोकादिक सात जयप्रत्ये जीतणार ढे ॥ ४ ॥

॥ अथ सामायिक पारवानी पाटी लिख्यते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न स मायरियवा तं जहा ते आलोउं, मण डण्णिहाणे, वय डण्णिहाणे, कायडण्णिहाणे, सामाइयस्स अकरणया ए, सामाइयस्स अणवुठियस्स करणयाए, तस्स मिच्छा मि डक्कड सामायिकने विषे दस मनना, दस वचनना, बार कायाना, ए वत्रीश दोष माहेलो कोई दोष लागो होय तो मिच्छामि डक्कड आहारसझा, जयसझा, मिदु एसझा, परिग्गहसझा, ए चार सझामाहेली कोई सझा करी होय तो मिच्छामि डक्कड स्त्रीकथा, राजकथा, जक्तकथा, देशकथा, ए माहेली कोई कथा करी होय तो मिच्छामि डक्कड सामायिक समकाएण, फासिय, पालिय, सोहिय, तिरिय, कित्तियं, आराहिय, आणाए अणुपालिय, न जवइ तस्स मिच्छामि डक्कड ॥ १ ॥ इति॥ ॥

अर्थ -नवमा सामायिक व्रतना (पच अश्वारा के०) पाच अ
 तिचार (जाणियवा के०) जाणवा योग्य, (नसमायरियवा के०) स
 माचरवा योग्य नही (तजहा के०) ते हवे कहे ठे तेने (आलोउ
 के०) आलोउ बु, (मण्डुप्पणिहाणे के०) मन मातु वर्त्ताव्यु होय,
 (वयडुप्पणिहाणे के०) वचन मातु वर्त्ताव्यु होय, (कायडुप्पणिहाणे
 के०) काया माती प्रवर्त्तावी होय, (सामाश्यस्स के०) सामासि
 कने (अकरण्याए के०) कीधु के नही कीधुं तेनी वरावर खबर
 न रही होय, (सामाश्यस्स के०) सामायिकने (अणवुच्छियस्सक
 रण्याए के०) पूरी थयाविना पारी होय, तो (तस्स के०) तेनुं
 (इक्कड के०) पाप ते (मिहामि के०) मारु निष्फल थाउ (आ
 हारसज्ञा के०) खावानी इज्ञा थइ होय, (जयसज्ञा के०) जयनी
 सज्ञा थइ होय (मिहुणसज्ञा के०) मैथुननी इज्ञा करी होय,
 (परिग्गहसज्ञा के०) धन इव्यनी इज्ञा करी होय, ए चार सज्ञा
 माहेली कोइ सज्ञा करी होय तो ते इष्कृत पाप (मिहामि के०) मारु
 निष्फल थाउ (सामायिकसमकाएण के०) सामायिक कायार्ये ब
 रावर रीतें (फासियं के०) स्पर्श कछु फरस्यु, अंगीकार कछु (पा
 लियं के०) तेवुज पाल्यु, (सोहियं के०) शोष्यु कछु (ति
 रियं के०) पार उतारियुं, (कित्तियं के०) कीर्त्युं (आराहिय
 के०) आराध्यु (आणाए के०) वीतराग देवनी आझार्ये करी
 (अणुपालियं के०) पालेलु, (नजवइ के०) न होय (तस्स
 मिहामिइक्कड के०) तेनु इष्कृत जे मने लागेलु होय ते मारु मिथ्या
 हो ॥ इति सामायिक पारवानी पाटीनो अर्थ संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ सामायिकविधि प्रारंभ

॥ प्रथम श्री सीमधर स्वामीजीनी आज्ञा लेइने एक न
 वकार गुणीने “ इरियावहिनी ” पाटी नणवी, पढी त

સ્સ ઉત્તરીની પાટી જણીને કાઝસ્સગ્ગ કરવો, કાઝસ્સ
ગ્ગમાહિ “શરિયાવહિયાણી” મામીને “જીવિયાઝ વવ
રોવિયા તસ્સ મિઞ્ઞામિ હ્કકહં” સુધીનો પાઠ મનમાં વો
લીને એક નવકાર મનમાં કહીને કાઝસ્સગ્ગ પારવો પ
ઠી પ્રગટ “લોગસ્સકી” પાટી કહીને સામાયિકની
આજ્ઞા લેઈને “કરેમિ જતેની” પાટી “જાવનિયમ”
સુધી કહીને આગલ સુદૂર્ત (ઘાલણો હુવે તિકે) ઘાલ
ણો, પઠી “પઙ્ગુવાસામિ” થકી “અપ્પાણ વોસિ
રામિ” સુધી પાઠ કહીને સામાયિક પચ્ચક્કવો પઠે
શ્વો ગોઢો ઝનો કરીને દોયવાર “નમુત્તુણ” ની પાટી
કેહવી હજા નમુત્તુણને બેહહે “ઠાણં સંપાવિઝ કામે
નમો જિણાણ” એમ કેહવું અને સામાયિક પારતી વે
લા “શરિયાવહી, તસ્સ ઉત્તરી” ની પાટી જણીને કા
ઝસ્સગ્ગ કરવો, પઠી કાઝસ્સગ્ગમાહે શરિયાવહિની
પાટી કહીને એક નવકાર ગુણીને કાઝસ્સગ્ગ પારવો
પઠી “લોગસ્સ” જણી “નમુત્તુણ” દોય વાર ઝ
પર લિખ્યા મુજબ કહીને નવમા સામાયિકવ્રતની પાટી
“અણુપાલિયં ન જવશ્સ તસ્સ મિઞ્ઞામિ હ્કકહં” સુ
ધી કહીને ત્રીન નવકાર ગુણીને સામાયિક પારવું

॥ ઇતિ શ્રી સામાયિક અર્થ વિધિ સપૂર્ણ ॥

॥ अथ श्री प्रतिक्रमण अर्थ विधिसहित प्रारंभ ॥

प्रथम “चोविस स्तव” कीजें वनो रहिने “तिस्कुतो” गुणीजें वेव, गुरु तथा बडा साधमींजाईनी पडिक्रमण गायवानी आझा लेइने “इष्टामिण जते” नी पाटी कहीजें ते लखीयें ठेयें

॥ अथ इष्टामिणजतेनी पाटी प्रारंभ ॥

इष्टामिण जते तुझेहिं अजणुं नायसमाणे देवसि प
डिक्रमणुं छामि देवसि नाण, दसण, चारित्त, तप अ
तिचार चितवणार्थ करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥ इति ॥

अर्थ — (इष्टामिण के०) हुं इष्टुं, (जते के०) हे जगवन् !
(तुझेहिं के०) तुमारी (अजणुनायसमाणे के०) आझा मा
गीने, (देवसि के०) दिवस सबंधी, (पडिक्रमण के०) पापनु
निवारण करवु ते प्रत्ये, (छामि के०) गउबु (देवसि के०) दि
वस सबंधी, (नाण के०) ज्ञान, (दसण के०) दर्शन सम
कित, (चारित्त के०) कर्मरूपि शत्रुको नाशकरणार, ते रूप चारित्र
तथा (तप के०) तपस्या ते सबंधी जे (अतिचार के०) व्रत
जागवाने तैयार थवु, ते रूप अतिचार लाग्यो होवे तेनी (चितव
णार्थ के०) चितवणा करवाने अर्थे, (काउस्सग के०) कायो
त्सर्ग प्रत्ये (करेमि के०) हु करु बु ॥ १ ॥

पढी “नवकार” कहीजें “तिस्कुतारा” पाठसुं पढिला आवश्य
कनी आझा मागीने “करेमि जते,” की पाटी कहीजें पढी “इ
ष्टामि छामि” नी पाटी नणीजें ते लखीयें ठेयें

अथ इष्टामि गमिनी पाटी प्रारंभ

इष्टामि गमि काउस्सग जो मे देवसिउ अइयारो
कउ काईउ, वाइउ, माणसिउ, उस्सुतो, उम्मगो, अक

प्पो, अकरणिज्जो, डुक्काउ, डुबिचित्तिउ, अणायारो, अ
णिब्बियवो, असावग पाउग्गो, नाणे तद्दं सणे, च
रित्ताचरित्ते, सुए सामाए, तिन्दु गुत्तीण, चउन्द क
सायाणं, पंचन्दमणुवयाण, तिन्दु गुणवयाणं, चउ
न्दं सिरकावयाण, बारसविहस्स सावग धम्मस्स,
ज खंमिय, ज विराहिय, तस्स मिठामि डुक्कड ॥ १ ॥

अर्थ — (तमि के०) एक ठेकाणे रहीने, जे (काउस्सग्ग के०)
कायानी स्थिरता करवी, तेने (इठामि के०) हुं इष्टु बु, (जो के०)
जे, (मे के०) महारा जीवें, (देवसिउ के०) दिवस सबधि,
(अश्यारो के०) अतिचार, (कउ के०) कीधो होय, (काईउ
के०) काया सबधि, (वाइउ के०) वचन सबधि, (माणसिउ के०)
मन सबधि, (उस्सुत्तो के०) सूत्र विरुद्ध परूपणा कीधा थकी
उपनो जे (उम्मग्गो के०) उन्मार्ग एटले जिनमार्ग उद्धरिने डुजो
मार्ग तेथकी नीपनो जे (अकप्पो के०) अकल्पनीय एटले चरण
करण व्यापारथकी रहितपणु तेनाथी उत्पन्न थयो जे (अकरणि
ज्जो के०) करवा योग्य नही एवा कार्य तेने करवें करी ए सर्वअति
चारनु स्वरूप कष्टु हवे मन सबधि अतिचारनु स्वरूप कहे ठे
(डुक्काउ के०) डुध्यानि ते आर्त्त, रौइ ध्यान ध्यावबु ते मार्टेज
(डुबिचित्तिउ के०) छष्ट अष्टुन कार्यनु मनमा चितवबु तेमार्टेज
(अणायारो के०) अनाचार कहीयें एटले जेथकी व्रतादिकनो
सर्वथा नग थाय जे मार्टे ते अनाचार आचरवा योग्य नही, ते
मार्टेज (अणिब्बियवो के०) इष्टवा योग्य नही, ते मार्टेज (अ
सावगपाउग्गो के०) आवकने उचित नथी, हवे ए सर्व अति
चार जेने विपे लगाळ्या होय ? ते कहे ठे (नाणे के०) हानने
विपे, (तद्दं के०) तेमज, (दसणे के०) समकित दर्शनने विपे,

(चरित्ताचरित्ते के०) कांश्एक चारित्रने कांश्एक नहि चारित्र एहवु जे श्रावकनु चारित्र तेने विषे, (सुए के०) सूत्र सिद्धातने विषे, (सामांश्ए के०) समतारूप सामायिकने विषे, (तिन्हं गुणीण के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए तीन गुप्ति न पालवे करी (चउन्ह कसायाण के०) क्रोध, मान, माया ने लोच, ए चार कपायने करवे करी (पचन्हमणुवयाण के०) (१) प्राणातिपात, (२) मृषावाद, (३) अदत्तादान, (४) म्हेयुन, (५) परिग्रह, ए पाच प्रकारना अणुव्रतने विषे, (तिन्हंगुणवयाण के०) ठो, सातमो ने आठमो, ए तीन प्रकारका गुणव्रत माहेथी, (चउन्ह सिक्कावयाण के०) चार प्रकारका शिक्षाव्रत, नवमो, दसमो, झ्यारमो, ने बारमो, ए माहेथी धणु सु कहियें परतु (वारसविहस्स के०) ए वारे प्रकारका व्रतरूप, (सावगधम्मस्स के०) श्रावक सबधि जे धर्मे तिणमाहेसू महारा जीवें, (जखमियं के०) जे वेशयकी जग कीधु, (जविराहियं के०) जे सर्वयकी जग कीधु (तस्स के०) तेदनुं (डुक्कड के०) पाप (मिड्डामि के०) महारु निष्फल थाउ ॥ १ ॥

पढी “तस्स उत्तरी” नी पाटी कहीने उजो रहीने काउस्सग्ग ठाईजें काउस्सग्गमाहे, १४ ग्यानका, ५ समकितका, ६० वारा व्रतका, १५ कर्मादानका, ५ सलेहणाका, एव “एए अति चार” नी चितवणा कीजें ते अतिचार आ प्रमाणें - तपस्या, अशक्तपणा वगेरे कारणसू उजो रहीने काउस्सग्ग करणकी शक्ति न होय तो नीचें बेसीने काउस्सग्ग ठाईजें

१४ ग्यानका आगमे तिविहे पन्नचे तं जहा, सुत्तागमे, अउगमे, तडुनयागमे, एहवा श्री हानने विषे जे कोई अतिचार लागा होय, ते थालोव, ज वाइई वञ्चामेलियं, हीणकरं, अञ्चस्करं, पयहीण, विनयहीण, जोगहीण, घोसहीण, सुधुविन्न, डुपुपडि

धियं, अकाले कउ सञ्जाउ, काले न कउ सञ्जाउ, असञ्जाए सञ्जाय, सञ्जाए न सञ्जाय, जणता, गुणता, चितवतां, अने विचारता, ग्यान अने ग्यानवतोनी आशातना कीनी होय ॥

(५ समकितना अतिचार) दसण समकित ॥ परमञ्च सथवो वा, सुदिठ परमञ्च सेवणावावि ॥ वावन कुदसण व, ज्ञाणा समत्त सद्धणा ॥ १ ॥ एहवा समकितना समणोवासयाण सम्मत्तस्स, पंच अश्रारा पेयाला जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते अलोउ, सका, कखा, वितिगिह्वा, परपासमी परसमा, परपासमी सधुवो ॥

(६० व्रताका अतिचार) पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतना पंच अश्रारा पेयाला जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते अलोउ वधे वहे ठविहेए, अज्ञारे नत्तपाणबुहेए ॥

वीजा थूल मृषावादविरमण व्रतना पंच अश्रारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते अलोउ, सहस्सानकाणो, रहस्सा नकाणो, सदारमतनेए, मोसोवएसे कूडलेहकरणे ॥

त्रीजा थूलअदत्तादान विरमणव्रतना पंच अश्रारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते अलोउ, तेनाहडे, तक्करप्पउगे, विरुद्धरक्काश्कमे, कूडतोले, कूडमाणो, तप्पडिरुवगववहारे ॥

चोथा थूल मेदुण विरमण व्रतना पंच अश्रारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते अलोउ, इत्तरपरिग्गहियागमणो, अपरिग्गहियागमणोअनगकीहा, परविवादकरणे, कामजोगेसु तिवाजिलासे ॥

पाचमा थूल परिग्रह परिमाण व्रतना पंच अश्रारा जाणियवा न समायरियवा तं जहा ते अलोउ खित्तवज्जुपमाणाश्कमे, हिरसु सुवसुपमाणाश्कमे धण धन्नप्पमाणाश्कमे, उपद चउपद पमाणाश्कमे, कुवियपमाणाश्कमे ॥

ठछा दिशि विरमण व्रतना पंच अश्रारा जाणियवा न समाय

रियवा तं जहा ते आलोउ, उद्धविसिपमाणाइक्कमे, अहोविसि
पमाणाइक्कमे, तिरियदिसि पमाणाइक्कमे, खित्तवुद्धी, सयंतरक्षा ॥

सातमा ववन्नोग परिन्नोग डुविदे पप्पुत्ते तं जहा, जोयणाउय,
कम्मउय, जोयणाय समणोवासयाण पंच अइयारा जाणियवा न
समायरियवा तं जहा ते आलोउं, सचित्ताहारे, सचित्तपडिवक्षा
हारे, अप्पोलसहिन्नकणया डुप्पोलसहिन्नकणया, तुब्बोसहिन्नक
णया, कम्मउण समणोवासयाण पन्नरस कम्मदाणाई, जाणियवा
न समायरियवा तं जहा ते आलोउ

(१५ कर्मादानका) इगालकम्मे, वणकम्मे, साढीकम्मे, नाढी
कम्मे, फोढीकम्मे, दत्तवाणिक्के, केसवाणिक्के, रसवाणिक्के, लक्क
वाणिक्के, विसवाणिक्के, जंतपिछणकम्मे, निछंङ्गणकम्मे, ववगिदा
वणया, सरद्धहतलायपरिसोसणया, असईजणपोसणया ॥

आठमा अनर्थदमविरमणव्रतना पंच अइयारा जाणियवा
न समायरियवा तं जहा ते आलोउ, कवप्पे, कुकुइए मोहरिए,
सज्जुताहिगरणे, ववन्नोगपरिन्नोग अइरत्ते ॥

नवमा सामायिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समा
रियवा तं जहा ते आलोउं, मणडुप्पणिहाणे, वयडुप्पणिहा
णे, कायडुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणियाए, सामाइयस्स
अणवुच्चियस्स करणयाए ॥

दशमा वेसावगासिक व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न समा
यरियवा तं जहा ते आलोउ, आणवणप्पउंगे, पेसवणप्पउंगे, स
हाणुवाइ, रुवाणुवाइ, वदियापुगलपस्सेवे ॥

अग्यारमा परिपूर्ण पोपथ व्रतना पंच अइयारा जाणियवा न
समायरियवा तं जहा ते आलोउ, अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय स
क्कासथारए, अप्पमक्किय डुप्पमक्किय सक्कासथारए, अप्पडिले
हिय डुप्पडिलेहिय वच्चारपासवणचूमि, अप्पमक्किय डुप्पमक्किय

उच्चारपासवणजूमि, पोसहस्त, सम्म अणणुपालण्या ॥

वारमा अतिथिसंविजाग व्रतना पच अश्यारा जाणियवा न
समायरियवा तं जहा ते आलोउ, सचित्त निक्केवणिया, सचित्त
पिहणिया, कालाश्कम्मे, परोवएसे मञ्जरियाए ॥

५ सजेहणारा ॥ अपञ्चिम मरणांतिक सजेहणा जुसणा आरा
हणाना पंच अश्यारा जाणियवा न समायरिवा तं जहा ते आ
लोउ, इहलोगाससप्पउंगे, परलोगाससप्पउंगे, जीवियाससप्पउंगे,
मरणाससप्पउंगे, कामजोगाससप्पउंगे ॥

१० पापस्थानक १ प्राणातिपात, २ मृपावाद, ३ अदत्तादान,
४ मैथुन, ५ परिग्रह, ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ, १०
राग, ११ द्वेष, १२ कलह, १३ अन्यायान, १४ पैशुन्य, १५
परपरिवाद, १६ रति अरति, १७ मायामोसो, १८ मिथ्यात्वदस
पाशव्य एव १९ पापस्थानकमांहेलु जे कोइ पापस्थानक मा
हारे जीवें, मनें, वचनें कायार्यें करी, सेव्युं होय, सेवरावु होय,
सेवता प्रत्ये नहुं जाण्युं होय

एम “ एए अतिचार, १९ पापस्थानक ” काठस्तगमां चित
रीने पढी “ इहामिठामि ” नी पाटी ‘ ज विरादियं ’ सुधी चित
री ‘ नवकार ’ जणीने काठस्तग पारीयें ॥ इति प्रथम ‘ सा
मायिक आवश्यक ’ संपूर्ण

विधि —पढी ‘ तिखुत्ता ’ नो पाठ कही दूजा आवश्यकनी आ
ज्ञा जेने प्रगट एक ‘ लोगस्त ’ नी पाटी कहीजें ॥ इति दूख
‘ चठविसवो ’ आवश्यक संपूर्ण

पढी तिखुत्तो गुणी त्रीजा आवश्यकनी आज्ञा जेने दोय वार
“ इहामिखमासमणा ” नी पाटी कहीजें पाटीमाहे प्रथम जि
हा ‘ निसीहियाए ’ शब्द आवे तिहा उजा गोडा करी, हाय जो
हीने वेसीजें तथा ठ आवर्त्त करियें ते आ प्रमाणें —प्रथम “ अ

होकाय काय " ए शब्द उच्चारतां तीन आवर्त्त हुवे ठे, ते कहे ठे -
 दोनु हाथ लांवा करी हाथनी दश आंगुली नूमि उपर लगावतां
 मुखसु " थ " अक्षर कहेवो, पठी तेमज दश आंगुली आपणा
 मस्तकने लगावता " हो " अक्षर कहेवो, ए दोनु अक्षर कहेतां
 १ पहेजो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसु " का " ने " य " ए बे
 अक्षर उच्चारता २ डजो आवर्त्त हुवो तथा " का " ने " य " ए
 वे अक्षर उच्चारता ३ त्रीजो आवर्त्त हुवो पठी " जत्ता, जे, जव
 णि ऊ, च, जे " ए शब्द उच्चारता ३ आवर्त्त हुवे ठे, ते कहे ठे - प्र
 थम " ज " अक्षर मवस्वरसु " ता " अक्षर मध्यमस्वरसु, ने " जे "
 अक्षर उच्चा स्वरसु उपरली रीतिसु, मस्तकें हाथ लगावता कहेवो
 एम तीन अक्षर कहेतां प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि)
 ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसु उपर मुजव उच्चारता डजो आवर्त्त
 तथा (ऊ) (च) (जे) ए पण तीन अक्षर पूर्वली रीतें कहेतां
 त्रीजो आवर्त्त होय, एव ठ आवर्त्त एक पाटीमाहे थाय एवी बे
 पाटी कहीजें तेवारें वार आवर्त्त थाय तथा " तिक्तीसन्नयराए "
 ए पाठ आवे तिहा पाठा वजा रहीजें एव ए दोय वार " खमा
 समणा " री पाटी सपूर्ण कहीजें, ते पाटी लखीयें ठैयें

अथ खमासमणारी पाटी प्रारंज

इठामि, खमासमणो, वदिउ, जावणिऊाए, निसीहिया
 ए, अणुजाणह, मे, मिउग्गह, निसीही, अहो, कार्य,
 कायसफास, खमणिऊो, जे, किलामो, अप्पकिलताण,
 बहुमुजेण, जे, दिवसो, वइकतो, जत्ता, जे, जवणिऊ, च,
 जे, खामेमि, खमासमणो, देवसिय, वइकम, आवसिया
 ए, पडिकमामि, खमासमणाण, देवसियाए, आसाय

णाए, तिस्तीसन्नयराए, ज किंचि मिन्नाए, मण्डकडाए,
वयड्कडाए, कायड्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए,
लोहाए, सब्बकालियाए, सब्बमिन्नेवयाराए, सब्बधम्मा
इकमणाए, आसायणाए, जो, मे, देवसिन्धु अइ
यारो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निं
दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ३ ॥

अर्थ —(खमासमणो के०) हे कृमाश्रमण ! (जावणिक्काए
के०) जेणें करी कालक्षेप करीयें तेवी शक्तियें करी सहित एवी
(निस्सीहिआए के०) प्राणातिपातादिकर्षी निवृत्तिरूप प्रयोजन
ठे जेमा तेने नैपेधिकी तनु एटले शरीर कहीयें तेवा शरीरें करी
तुमने (वदिउ के०) वादवाने (इहामि के०) डु इहु डु, वाहुं
डु माटें (मिउग्गह के०) मित अवग्रह एटले प्रमाण करेला
साढा व्रण हाथना अवग्रह माहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुज्ज
ने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो

पढी शिष्य (निस्सीहि के०) एक गुरुवदन विना अन्त्य क्रिया
रूप व्यापारने निपेथ्यो ठे जेणे एवो बत्तो मर्यादा करेला अवग्रह
हमाहे पेसीने गुरुप्रत्ये कहे के तुमारा (अहोकार्य के०) अध प्रवेश
नो ठेहलो जाग जे चरण ते प्रत्ये (कायसप्पास के०) महारी
काया सबधि हाथ अने मस्तकें करीने स्पर्शु ? एवी आज्ञा पामी
ने गुरुना चरणने स्पर्शी पढी उचो थइ मस्तकें वे हाथ चढावी
'खमणिक्को जे' इत्यादि पाठ कहे तेनो अर्थ लखीयें बैयें

हे पूज्य ! तुमारा चरण स्पर्शिता जे काइ (मे के०) महारे
जीवें तुमने (किलामो के०) ग्लानि एटले पीडा उपजावी होय
स्वेद उपजाव्यो होय ते (जे के०) तमोयें (खमणिक्को के०)

होकायं काय ” ए शब्द उच्चारता तीन आवर्त्त हुवे ठे, ते कहे ठे -
 दोनु हाथ लांवा करी हाथनी दश आंगुली नूमि उपर लगावता
 मुखसु “ अ ” अक्षर कहेवो, पठी तेमज दश आंगुली आपणा
 मस्तकने लगावता “ हो ” अक्षर कहेवो, ए दोनु अक्षर कहेता
 १ पहेलो आवर्त्त हुवो, इणहीज रीतिसु “ का ” ने “ यं ” ए बे
 अक्षर उच्चारता २ दुजो आवर्त्त हुवो तथा “ का ” ने “ य ” ए
 बे अक्षर उच्चारता ३ त्रीजो आवर्त्त हुवो पठी “ जत्ता, जे, जव
 णि क्का, च, जे ” ए शब्द उच्चारता ३ आवर्त्त हुवे ठे, ते कहे ठे - प्र
 थम “ ज ” अक्षर मदस्वरसु “ ता ” अक्षर मध्यमस्वरसु, ने “ जे ”
 अक्षर उच्चा म्बरसु उपरली रीतिसु, मस्तकें हाथ लगावता कहेवो
 एम तीन अक्षर कहेता प्रथम आवर्त्त, तथा (ज) (व) (णि)
 ए तीन अक्षर त्रिविध स्वरसु उपर मुजव उच्चारता दुजो आवर्त्त
 तथा (क्का) (च) (जे) ए पण तीन अक्षर पूर्वली रीतें कहेता
 त्रीजो आवर्त्त होय, एव ठ आवर्त्त एक पाटीमाहे थाय एवी बे
 पाटी कहीजें तेवारें वार आवर्त्त थाय तथा “ तिच्चीसन्नयराए ”
 ए पाठ आवे तिहा पाठा उच्चा रहीजें एव ए दोय वार “ खमा
 समणा ” री पाटी सपूर्ण कहीजें, ते पाटी लखीयें ठैयें

अथ खमासमणारी पाटी प्रारंभ

इत्तामि, खमासमणो, वदिउ, जावणिक्काए, निम्मीहिया
 ए, अणुजाणह, मे, मिउग्गह, निसीही, अहो, कायं,
 कायसफासं, खमणिक्को, जे, किलामो, अप्पकिलताणं,
 बहुसुजेण, जे, दिवसो, वइकतो, जत्ता, जे, जवणिक्का, च,
 जे, खामेमि, खमासमणो, देवसिय, वइकम, आवसिया
 ए, पडिक्कमामि, खमासमणाण, देवसियाए, आसाय

करी, (लोहाए के०) लोचरूप आशातनायें करी, (सबकाजियाए के०) अतीत, अनागत अने वर्तमान, एव सर्व कालने विपे, (स धमिच्चोवयाराए के०) सर्व, कूडकपट क्रियारूप जे मिथ्या उपचार ते रूप आशातनायें करीने, (सबधम्माइक्रमणाए के०) सर्व धर्मनी जे करणी, तेने उद्भववारूप आशातनायें करीने, ए पूर्वोक्त सर्व प्रकारनी (आसायणाए के०) आशातनायें करी, (जो के०) जे, (मे के०) महारे जीवें, (देवसिउ के०) दिवस सबधी (अ इयारो के०) अतिचार दोष, जे (कउ के०) कखो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचारने (खमासमणो के०) हे कृमाश्रमण ! तमारी समीपें, (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बु, मिच्चामि डुक्कड दउं, (निदामि के०) ते डुष्टकर्मकारी आत्मा ने हुं निडुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखे डु विशेषे निडुं (अप्पाणं के०) डुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्ये, (वोत्तिरामि के०) हुं तछु बु, वोत्तिरावुं ॥ ३ ॥ इति त्रीञ्च वदनावश्यकसंपूर्ण ॥

पढी 'तिक्कुत्तारा' पाठसू चोथा आवश्यकनी आज्ञा मागीजें, प्रथम कावस्सग्गमाहि एए अतिचार कह्या ते "आगमे तिविहे" नी पाटी थकी "इच्चामि छामि" नी पाटी सुधी प्रगटपणे केहवा, जिणमाहि प्रत्येक पाटी तथा थूलने ठेहडे "तस्स मिच्चामि डु कडं" कहेवुं पढी "तस्स सबस्स" नी पाटी कहीजें ते कहेठे -

॥ अथ तस्स सबस्सकी पाटी प्रारज ॥

तस्स सबस्स देवसियस्स अइयारस्स डुप्पा
सियं डुच्चितिय आलोयते पडिक्कमामि ॥४॥

अर्थ - (तस्स के०) ते पूर्वे चितव्या जे, (सबस्स के०) सर्व पण (देवसियस्स के०) दिवस सबधी, (अइयारस्स के०) अतिचार, तेने तथा (डुप्पासिय के०) उपयोग रहित अनिष्ट जापा बोलवा

खमवा योग्य ठे एटलु कहीने वली पण शिष्य, दिवससंवधि हेम कुगलनु स्वरूप पूज्यने पूठे, ते आवीरीतें -

(वदुसुजेण के०) वदु गुजें करीने हेमकुशल समाधिजावें करीने (जे के०) तमारो (दिवसो के०) दिवस (वझकतो के०) व्यतिक्रात थयो एटले वीत्यो ? तमें कहेवा ठो ? तो के (अत्पकिलें ताण के०) अत्पकिलामणावाला ठो एम शरीरसंवधि सुखशाता पुढीने वली तप नियमादिक सबधी वार्त्ता पूठे, ते आवी रीतें -

हे पूज्य ! (जत्ता के०) तप सयम रूप यात्रा ते (जे के०) तमारे अव्यावाध पणे वर्त्ते ठे ? (जवणिळ्ळ के०) इडियोयें करीपी हित नही एबु निरावाध शरीर (च के०) वली (जे के०) तमारु ठे ?

(खमासमणो के०) हे ह्मावत साधु ! (देवसिय के०) दिवस तवधि, (वझकम के०) व्यतिक्रम एटले अवश्य करणीय विराध नारूप माहारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खमाबु हुं हवे वली आ प्रमाणें कहे (आवसियाए के०) अवश्य करणी करता जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी (पढिकमामि के०) हुं निवृत्तु बु, (खमासमणाण के०) ह्मावत साधुनी, (देव सियाए के०) दिवसने विपे थइ एवी जे, (आसायणाए के०) आशातना, खंमना, ते आशातनायें करीने, ते केवी आशातना यें करीने ? तो के (तिचीसन्नयराए के०) तेत्रीश आशातना मांहे ली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने, (जं किचि मिष्ठा ए के०) जे कांइ कूहुं आलबन लइने मिष्याजाव वर्त्ताव्यो होय (मणझकडाए के०) मन सबधि झुळुत जे पाप तेणें करी, (व यझकडाए के०) वचनसबधी झुळुत जे पाप तेणें करी, (काय झकडाए के०) काया सबधि झुळुत जे पाप तेणें करी, (कोदाए के०) क्रोध जाव रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मान रूप आशातनायें करी, (मायाए के०) कपटरूप आशातनायें

के०) प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप, (धम्मो के०) धर्म, ते
 (मगल के०) मागलिक ठे (चत्तारि के०) चार, (लोयुत्तमा
 के०) लोकमांहे उत्तम ठे, एक (अरिहता के०) श्री अरिहत्तजी
 ठे, ते (लोयुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम ठे, बीजा (सिद्धा के०)
 सिद्ध जे ठे, ते (लोयुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम ठे, त्रीजा (साधू
 के०) साधु जे ठे, ते (लोयुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम ठे, चोथो
 (केवलपस्सुतो के०) केवली जगवानें प्ररूप्यो एवो, (धम्मो के०)
 धर्म जे ठे, ते (लोयुत्तमो के०) लोकमाहि उत्तम ठे, द्वे (चत्तारि
 के०) चारे, (सरण के०) शरणने (पवक्कामि के०) अंगीकार
 करू ठु, एक (अरिहतासरण के०) श्री अरिहत्तजीना शरणने,
 (पवक्कामि के०) अंगीकार करू ठु, बीजो (सिद्धा सरण के०)
 श्री सिद्धना शरणने, (पवक्कामि के०) अंगीकार करू ठुं, त्रीजो
 (साधू सरण के०) साधुशरण प्रत्ये, (पवक्कामि के०) अंगी
 कार करू ठु, चोथो (केवलि के०) श्री केवलिये (पस्सुत्त के०)
 जारव्यो एवो, जे (धम्म के०) धर्म तेना, (सरण के०) शरण
 प्रत्ये, (पवक्कामि के०) अंगीकार करू ठु आगलनो पाठ तथा
 छडाको अर्थ सुलज ठे निणसू इहां लिख्यो नहिं हे ॥ ५ ॥

विधि—पढी “ इष्ठा मि ठामि” तथा “इरियावहि” नी पाटी क
 दाने ‘तिरकुत्तारा’ पाठसू “व्रत, अतिचार” जेला केहवानी आझा
 मार्गीजें तिहा “आगमे तिविदे” नी पाटी कहीजें, ते आ प्रमाणें —

॥ अथ आगमे तिविदे पस्सुत्तेकी पाटी प्रारंज ॥

आगमे तिविदे पस्सुत्ते त जहा, सुत्तागमे, अत्तागमे,
 तट्टजयागमे, एहवा श्री ज्ञानने विपे जे कोई अ
 तिचार लागो होय, ते आलोज, ज वाइरुं, वच्चामे
 लिय, हीणकर अच्चरकर, पयहीण, विणयही

થકા જે થયો, વલી (હુચ્ચિંતિય કે૦) હુટકાર્ય મનમાં ચિતવવા
 થકી જે, થયો તેને (આલોપતે કે૦) આલોચવામાટે, પ્રગટપર્ષે
 કહીને, તે થકી (પઢિક્કમામિ કે૦) હુ નિવૃત્તુ હુ ॥ ૪ ॥

વિધિ -પઠી નીચેં વેસીને જિમણો ગોડો ઝજો કરીને " નવ
 કાર, તથા કરેમિજતે" ની પાટી કહીજેં તથા "ચત્તારિ મગલ"
 ની પાટી કહીજેં તે પાટી જલ્લીયેં ઠેયેં

॥ અથ ચત્તારિ મગલકી પાટી પ્રારજ ॥

ચત્તારિ મગલ, અરિહતા મગલ, સિદ્ધા મગલ, સાદૂ
 મગલ, કેવલિપણ્ણતો ધમ્મો મંગલ ચત્તારિ લોગુત્તમા,
 અરિહતા લોગુત્તમા, સિદ્ધા લોગુત્તમા, સાદૂ લોગુત્તમા,
 કેવલિપણ્ણતો ધમ્મો લોગુત્તમો ચત્તારિ સરણ પવજ્ઞા
 મિ, અરિહતા સરણ પવજ્ઞામિ, સિદ્ધા સરણ પવજ્ઞામિ,
 સાદુ સરણ પવજ્ઞામિ, કેવલિપણ્ણત ધમ્મ સરણ પવજ્ઞા
 મિ અરિહતાજીકો સરણો, સિદ્ધાજીકો સરણો, સાધુ
 જીકો સરણો, કેવલિપરૂપ્યા દયાધર્મકો સરણો ॥ હહો ॥
 ચાર સરણા હુ સ્વહરેણા, ઝર ન વીજો કોય ॥ જો જવિ
 પ્રાણી આદરે, તો અસ્વય અચલ ગતિ હોય ॥ ૫ ॥

અર્થ -(ચત્તારિ કે૦) ચાર, (મગલ કે૦) માંગલિક ઠે, તે
 માહિ એક તો, (અરિહતા કે૦) જેણેં રાગાદિક અતરગ વેરીને
 દહ્યા તે શ્રી અરિહંત (મગલ કે૦) માંગલિક ઠે, દૂજા (સિદ્ધા
 કે૦) અષ્ટકર્મને ક્ષય કરીને જે સિદ્ધ પદને પામ્યા ઠે એવા જે શ્રી
 સિદ્ધ, તે (મગલ કે૦) માંગલિક ઠે, ત્રીજા (સાદૂ કે૦) સમ્યક્
 જ્ઞાનેં કરી શિવસુખના સાધક જે સાધુ તે (મગલ કે૦) માંગ
 લિક ઠે, ચોથો (કેવલિ કે૦) શ્રી કેવલિ જગવતનો, (પણ્ણતો

के०) दश औदारिक शरीरना अने दश आकाशना एव १० अ
सवायमांहि सवाय कखो होय, (सञ्ज्ञाए न सञ्ज्ञाय के०) सवा
य करवा योग्य वेलायें सवाय न कीधो होय, (तस्समिञ्चामिड
कड के०) तेनु छुष्कत जे पाप ते मारु निष्फल थारु ॥ ६ ॥

पढी “ दसण समकित ” नी पाटी कहीजें, ते कहे ठे -
दसण समकित ॥ परमठ सथवो वा, सुदिठ परमठ से
वणावावि ॥ वावण्ण कुदंसण वळ्ळणाय एवी सम्मत्त सह
हणा ॥ एहवा समकितना समणोवासयाण सम्मत्तस्स
पंच अइयारा, पयाला, जाणियवा, न समायरियवा,
तं जहा ते आलोठं, सका कखा, वितिगिहा, परपासमी
परसंसा, परपासमीसंथवो, एवं पाच अतिचार मध्ये जे
कोइ अतिचार लागो होय तस्स मिञ्चामि ड्कडं ॥ ७ ॥ इति

अर्थ - (दसण समकित के०) समकित दर्शन तेनुं स्वरूप
कहीयें ठैयें (परमठ के०) परम अर्थ ते जीवादिक नव पदार्थनो
(सठवोवा के०) सस्तव ते परिचय करवो, तेनो समागम करवो,
तथा (सु के०) नला (विठ के०) दीठा ठे (परमठ के०) सूत्रना
अर्थ जेणें एवा गुरुनी (सेवणावावि के०) सेवना करवी अपि
शब्द निश्चय वाचक ठे (वावण्ण के०) समकित पामीने पढी
तेने बमी नाखे ते तथा (कुदंसण के०) कूड दर्शन जेनु एट
ले मूलथी समकित जेने नज होय तेने, (वळ्ळणा के०) वर्ज
वो, एटले तेनो त्याग करवो (सम्मत्त के०) ए समकितनी (स
हहणा के०) सहहणा, अक्षा, (एहवा समकितनासमणोवास
याण के०) एहवा समकितना धारक आवकने, (सम्मत्तस्स के०)
समकित सवधि, (पंच के०) पांच, (अइयारा के०) अतिचा

ए, जोगहीणं, घोसहीणं, सुधुदिन्न, डहुपडिच्चियं,
अकाले कउ सञ्ज्ञाउं, काले न कउ सञ्ज्ञाउं, अस
ज्ञाए सञ्ज्ञाय, सञ्ज्ञाए न सञ्ज्ञाय, जणता, गुणता,
चिंतवता, ने विचारता, ज्ञान अने ज्ञानवतनी आशा
तना किनी होय तो तस्स मिठामि डक्कड ॥६॥ इति॥

अर्थ — (आगमे के०) सूत्र सिद्धांत, (तिविहे के०) तीन प्रका
रका, (पसुत्ते के०) कहेला ठे, (तंजहा के०) ते कहे ठे, एक
(सुत्तागमे के०) सूत्र आगम, बीजो (अब्जागमे के०) अर्थ आ
गम ते सूत्रना अर्थ समजवा, त्रीजो (तड्जयागमे के०) सूत्र
तथा तेहनो अर्थ, ए दोय आगम जिहां होय ते त्रीजो तड्जय
आगम एहवा श्री ज्ञानने विषे जे कोइ अतिचार लागो होय ते
(आलोउ के०) आलोउ बु ते अतिचार कहे ठे (जवाइके०)
सूत्र थाया पाठां जमालीनी पेरें नण्या होय, (वञ्जामेलियं के०)
अनेरा शास्त्रनां वचन मेल्यां होय जेम कोपलादिकनी खीर तेम
पदसू मेले (हीणस्कर के०) हीनअक्षर बोळ्यो होय, (अक्ष
स्कर के०) अधिक अक्षर बोळ्यो होय, (पयहीण के०) पद
उंठु नएयु होय, (विणयहीण के०) विनय रहित नएयु होय,
(जोगहीण के०) मन वचन कायाना जोग ठाम राख्या विना
नण्यां होय, (घोसहीण के०) जारी अक्षरने हलको करी नण्यो
होय, (सुधुदिन्न के०) सिद्धांतादिकनु ज्ञान अविनीतने तथा
मूर्खमिष्यात्वीने बीधुं होय, (डहुपडिच्चियं के०) अज्ञानपणे
साचो ठतां पण माठो पाडिवो नण्यो होय, (अकाले कउ सञ्ज्ञाउं
के०) चार सध्याकाल, चार महोत्सव, चार माहापाडिवा एव १२
अकाल ते कालमां सद्याय कीधो होय, (कालेनकउ सञ्ज्ञाउं
के०) कालवेलायें सद्याय न कीधो होय, (असञ्ज्ञाए सञ्ज्ञायं

व्रतनी अपेक्षायें ठोटो व्रत, ठे जेमां केटलु एक अविरति पणु
मोकलु रहे माटे एने ('थूलान के०) थूल कहियें एवा, (पाणाइ
वायाउ के०) प्राणीयोना प्राणनी अतिपात एटले हिंसा करवी ते
थकी (वेरमण के०) निवर्त्तुं ठुं (त्रसजीव के०) त्रस जीव;
ते हालता चालता एवा, (वेइदिय के०) दोय इइयवाला, (ते
इदिय के०) तीन इइयवाला, (चउरिंदिय के०) चार इइयवा
ला, (पंचिदिय के०) पाच इइय वाला जीव, तेने (जाणी के०)
जाणीने, (प्रीङ्गी के०) ओलखायका, (विण अपराधी के०)
निरपराधी जीवने (आकुटी के०) उदेरी (सकळपी के०) स
कळप करीने, (सलेसी के०) लेश्यासहित, (हणवा निमित्त
के०) हणवानी बुद्धियें करीने, हणवानां पञ्चकाण कीधां ठे
ते आ प्रमाणें के (जावजीवाए के०) ज्या सुधी जीवु त्या
सुधी (डुविद् के०) दोय करण, अने (तिविद्देण के०) तीन जो
गसू (न करेमि के०) डु करु नहीं, (नकारवेमि के०) डुजा
पासैं डु करावु नहीं, (मणसा के०) मनें करी, (वयसा के०) व
चनें करी, (कायसा के०) कायायें करी हिंसा करु नही एहवा प
हिला थूल एटले मद्दोटा, (प्राणातिपात के०) जीवनी हिंसा करवा
थकी (विरमणव्रतना के०) निवृत्तवा रूप व्रतना (पंच अइया
रा के०) पाच अतिचार, (पयाला के०) मद्दोटा ठे ते, (जाणि
यवा के०) जाणवा, पण (न समायरियवा के०) आवरवा
नही, (तं जहा ते आलोउ के०) ते जिम ठे तिम तेनां नाम
कहीने आलोउ ठु, (वधे के०) जीवने गाढे वधणे वाध्यो दोय,
(वदे के०) गाढा घाव घाव्या होय, (ठविष्ठेए के०) शरीरना
अवयवो ठेद्या होय, (अइनारे के०) अति नार नखो होय, (नत्त
पाणुष्ठेए के०) अन्न पाणीनो व्युष्ठेव कीधो होय, (तस्स

२, (पयाला के०) मद्दोटा ठे ते (जाणियवा के०) जाणवा पण,
 (न समायरियवा के०) आदरवा नहीं, (तं जहा के०) ते जेम
 ठे तेम आगल कहीने (ते आलोउ के०) आलोउं ठु, १ (सका
 के०) जिन वचन तणो सदेह कीधो होय २ (कखा के०) मि
 थ्यात्व मतनी इच्छा कीयी होय, सद्गुना मार्ग जला जाण्या होय, ३
 (वित्तिगिष्ठा के०) धर्म करणीना फलमाहि सदेह आण्यो होय,
 धर्मक्रियानु फल होगे के नहीं? एहवो सदेह धख्यो होय साधु,
 माधवीनां मल मलीन वस्त्र देखी डुगठा कीनी होय, ४ (परपास
 मीपरससा के०) मिथ्यात्वीनी प्रजावना देखी प्रशंसा किनी होय,
 (परपासमिस्रवो के०) मिथ्यात्वना प्ररूपकनो सस्तव परिचय
 कीधो होय, एव पाच अतिचार माहेलो जे कोइ अतिचार जागो
 होय, (तस्त के०) ते सबधी, (डुकड के०) डुण्ठत जे पाप ते
 मिष्ठामि के०) मुजने निष्फल थाउं ॥ ६ ॥ इति ॥

पढी १२ वारे “ व्रत अतिचार ” कहीजें, ते कहे ठे —

(१) पहेलु अणुव्रत थूलान पाणाइवायाउं वेरमण
 असजीव वेइदिय, तेइदिय चजरिंदिय पचिंदिय,
 जाणी प्रीढी विण अपराधी आकुटी सकटपी सलेसी
 हणवानिमित्तें हणवानां पञ्चस्काण, जावजीवाए डुवि
 ह, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा,
 कायसा, एहवा पहिला थूलप्राणातिपात विरमण व्र
 तना पच अइयारा, पयाला जाणियवा, न समायरि
 यवा, त जहा ते आलोउ ॥ बंधे वहे ठविठेए, अइजा
 रे जत पाणवुठेए ॥ तस्त मिष्ठामि डुकड ॥ ७ ॥

अर्थ — (पहिलु के०) पहिलु (अणुव्रत के०) साधुना पचमहा

मृपा ते खोटो उपदेश दीधो होय, (कूडलेहकरणे के०) कूडलेखनुं करवु एटले खोटा लेख लिख्या होय, (तस्स मिळामि डकड के०) ते पाप महारुं निष्फल थाजो ॥ ९ ॥ इति ॥

(३) त्रीजुं अणुव्रत थूलाउं अदिन्नादाणाउं, वे रमणं, खातर खणी, गाठडी गोडी, तालु परकुचि ये करी, पढी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी, इत्यादिक मोटकू अदत्तादान लेवाना पञ्चस्काण, सगा सं वधी, व्यापारसवधी तथा निभ्रमी वस्तु उपरात अदत्तादान लेवानां पञ्चस्काण जावजीवाए ड विहं तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वय सा, कायसा, एहवा त्रीजा थूल अदत्तादान विरम ण व्रतना पंच अइयारा जाणियवा, न समाय रियवा, तं जहा ते आलोउ तेनाइडे, तकरप्पउं गे, विरुद्धरक्काइकमे, कूडतोले, कूडमाणे, त प्पडिरुवगववहारे, तस्स मिळामि डकडं ॥ १० ॥

अर्थ — (त्रीजु अणुव्रत के०) त्रीजु अणुव्रत (थूलाउं के०) मो होडु, (अदिन्नादाणाउं के०) अण दीधेलु लेवाथकी, एटले चोरी क रवाथकी, (वेरमण के०) निवर्तुं बु (खातरखणी के०) कोइना घरमां खातर पाढी चोरी कीधी होय, (गांठडी गोडी के०) को ईनी गांठडी गोडी होय, (तालुपरकुचियेंकरी के०) कोईनु तालु बीजी कुचीथी वघाडी होय, (पढी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी के०) कोईनी पहेली वस्तुनो, कोई धणी ठे एम जाण्यां ठतां ते लेवी, (इत्यादिक मोटकू के०) ए आदि मोटका, (अदत्तादान के०) धणीना दीधा विनानी वस्तुने (लेवानां पञ्चस्काण के०) लेवानो

मिचामि डकड के०) ते अतिचार रूप डुष्कृत जे पाप ते महारु
निष्फल थाउ ॥ ८ ॥ इति ॥

(९) वीजु अणुव्रत थूलान मोसावायन वेरमण
कन्नालिए गोवालिए, नोमालिए, थापण मोसो, मो
टकी कूडी साख, इत्यादिक मोटकू जूठ बोलवा प
ञ्चस्काण जावजीवाए, डविहं, तिविहेणं, न करेमि न
कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा बीजा थूल
मृपावादविरमण व्रतना पच अड्यारा, जाणिय
वा, न समायरिवा त जहा ते आलोउ, सहसान
स्काणे, रहस्सानस्काणे, सदारा मतनेए, मोसोवए
से, कूडलेहकरणे, तस्स मिचामि डकड ॥ ९ ॥

अर्थ - वीजु अणुव्रत, (थूलान के०) महोटा (मोसावायन
के०) मृपावादथकी, एटले जूठु बोलवाथी (वेरमण के०) डं
निवर्तुं डु (कन्नालिए के०) कन्या तथा वर सवधि जूठ, (गोवा
लिए के०) गाय, नेंप आदि ठोर सवधि जूठ, (नोमालिए के०)
जमीन सवधि जूठ, (थापणमोसो के०) कोईनी स्थापण ऊँव
बी, (मोटकी कूडी साख के०) मोटी खोटी साह्नी जरवी, (इ
त्यादिक के०) ए आर्वे करीनें, (मोटकू जूठ के०) महोदुं जूठ,
(बोलवा के०) बोलवानु (पञ्चस्काण के०) पञ्चस्काण, (जाव
जीवाए के०) जावजीव लमें, (डविहं तिविहेण के०) इत्यादिक
नो अर्थ आगज लखाइ गयो ठे, (सहसानस्काणे के०) सह
सात्कारें कोई प्रत्ये कूहं आलबीधु होय, (रहस्सानस्काणे के०)
कोईनी रहस्य ते ठानी वात प्रगट कीनी होय, (सदारामतनेए
के०) पोतानी स्त्रीना मर्म प्रकाश्या होय, (मोसोवएसे के०)

हा ते अल्लोउं, इत्तरिय परिग्गहियागमणे, अपरिग्ग
हियागमणे अनंगकीडा, परविवाहकरणे, कामजो
गेसु तिवाजिलासा, तस्स मिज्जामि डक्कडं ॥ १ ॥

अर्थ - (चोथुं अणुव्रत के०) चोथु अणुव्रत (थूलोउं के०)
महोटा (मेहुणाउं के०) मैथुन थकी (वेरमणं के०) निवर्तुं हुं,
(सदारा के०) पोतानी स्त्रीथीज (सतोसिए के०) सतोप रा
खवो, (अवसेसं के०) ते शिवाय बीजा कोइनी साथे (मे
हुणविह के०) मैथुन सेववानां (पञ्चस्काण के०) त्याग बंधी ठे,
ए पुरुष आश्रयी कसुं अने स्त्रीने (सज्जतार के०) पोताना जर्तारथी
(सतोसिए के०) सतोप राखवो (अवसेस के०) ते शिवाय
बीजा कोइनी साथे (मेहुणनु के०) मैथुन सेववानी (पञ्च
स्काण के०) बंधी, अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायार्ये करी
मेहुण सेववानु पञ्चस्काण होय एटले मैथुन सेववानी बंधी
होय, तेहने देवता मनुष्य तीर्थच संबधी (मेहुणनु के०) मैथुन
सेववानुं (पञ्चस्काण के०) त्याग, (जावजीवाए के०) ज्यांसुधी
जीवु, त्यां सुधी (देवतासबधि के०) देवतानी साथे डुविह ति
विहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा अने (म
नुष्य तीर्थच सबधि के०) माणस, तथा पणु वगेरेनी साथे (ए
गविहं के०) एक करण (एगविहेण के०) एकजोगे (नकरेमि
के०) हुं करू नही, (कायसा के०) कायार्ये करी, एहवा चोथा
(थूल मेहुणविरमणव्रतना के०) महोटा मैथुन त्यागकरवा स
बधि व्रतना (पंचअश्रयारा के०) पांच अतिचार, जाणियवा न
समायसिवा तं जहा ते (अल्लोउं के०) अल्लोउं हुं, (इत्तरिय
परिग्गहिया गमणे के०) इत्तरते स्वल्पकाल मास ठ मास पर्यंत
कोइवेइया प्रमुखने राखी तेनी साथे, गमन कीधुं होय, (अपरि

त्याग, अने पोताना सगां वाहालां सबधी कोइ चीज होय अथवा व्यापर सबधी कोइ चीज नमुना दाखल तथा सोपारीनो कटको प्रमुख जे उपाडवायकी तेना मालेकने कोइ ब्रम उपजे नही तेनी जयणा उपरांत पञ्चस्काण (जावजीवाए के०) जावजीव सुधी, इविह तिविहेणं, इत्यादिनो अर्थ सुलज ठे एना पाच अतिचार कहे ठे (तेनादहे के०) चोरीनी वस्तु लीनी होय, (तकरप्पउंगे के०) चोरने इव्य, उपगरण वगरे कोइ तहाय दीनी होय, (विरुद्धरक्काइकमे के०) राज्य विरुद्ध कार्य कीधु होय, राजानुं दाण जागु होय, तथा राजायें मना करेला गुन्हा कया होय, (कूढतोले के०) खोटां तोला कीनां होय, (कूढमासे के०) खोटां मापा कीनां होय, (तप्पडिरुवगववहारे के०) एक वस्तु मांदे ते वस्तु जेवीज बीजी वस्तुनी जेल सजेल कीनी होय, सरसी वस्तु देखाहीने नरसी वस्तु आपी होय, तो (तस्स मिडामि डुक्कड के०) तेनुं पाप महारे निप्फल थाजो ॥१०॥इति॥

(४) चोथुं अपुव्रत थूलानु मेहुणानु वेरमण, सदारा संतोसिए अवसेस, मेहुणविह पञ्चस्काण, ए पुरुषने अने स्त्रीने सजर्तारसंतोसिए, अवसेसं मेहुणनुं पञ्चस्काण, अने जे स्त्री पुरुषने मूलथकीज कायाएं करी मेहुण से ववानुं पञ्चस्काण होय, तेहने देवता मनुष्य तिर्यच संबधी मेहुणनु पञ्चस्काण, जावजीवाए देवता संबधी इविहेण तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, मनुष्य तिर्यच सबधी एगविहं एगविहेणं न करेमि, कायसा, एहवा चोथा थूलमेहुण विरमणव्रत ना पच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं ज

(यथापरिमाण के०) जेटली मर्यादा कीधी ठे, (हिरस के०) रूपु (सोवसुनु के०) सोनानी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणे मर्यादा कीधी ठे, (धण के०) मोरवधनाणु, (धासुनु के०) शाल्यादिक धान्यनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी ठे, (डुपद के०) वेपगां मनुप्यादिक (चउप्पदनु के०) चोपगां ठो राविकनी (यथापरिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी ठे (कुविय धातुनु के०) सर्व घरनी वस्तु ते घरवखरी वगेरेनी, (यथा परिमाण के०) जे प्रमाणें मर्यादा कीधी ठे, ए यथापरिमाण की धुं ठे ते उपरांत पोतानु करी परिग्रह राखवानां पञ्चस्काण (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवु त्यां सुधी, एगविह इत्यादिनो अर्थ सुगम ठे तेथी जख्यो नथी एना पाच अतिचार कहे ठे (खित्तवहुप्प माणाइक्कमे के०) उघाढी जमीन तथा ढांकी जमीननु प्रमाण, अति क्रम्युं होय, (हिरससोवसुप्पमाणाइक्कमे के०) रुपा तथा सोनानी मर्यादा उद्धधी होय, (धणधासुप्पमाणाइक्कमे के०) रोकड नाणु तथा दाणानी मर्यादा उद्धधी होय, (डुपदचउप्पदप्पमाणाइक्कमे के०) वेपगा, चोपगानी मर्यादा उद्धधी होय, (कुवियप्पमाणाइक्कमे के०) घरवखरीनी मर्यादा उद्धधी होय, (तस्त मिह्मामि डुक्कडं के०) तेनुं पाप महारो निष्फल थाजो ॥ १२ ॥ इति ॥

(६) उठुं दिशि व्रत, ऊर्ध्वदिशिनु यथापरिमाण, अधोदिशिनु यथापरिमाण, तिरियदिशिनु यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधु ठे, ते उपरांत सइच्चाये, कायाये जइने पच आश्रव सेववाना पञ्चस्काण जावजीवाए, डुविह, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा उठादिशि व्रतना पच अइयारा, जाणियवा न समायरियवा तं

गहियागमणे के०) जे परणेली न होय, एवी कुमारिका, अथवा विधवा जेनो कोइ धणी न होय जेनु कोश्यें परिग्रहण कसुं नवी तेने अपरिग्रहीता कहियें तेनी सार्थें गमन कीधु होय, (अनंग कीडा के०) अत्यासक्तियें स्वदेह परदेह अनंग जे काम तेनी चेष्टा कीधी होय हास्य, कुतूहल कीधां होय, (परविवाहकरणे के०) पोताना ठोरु टालीने परना ठोरु सबधि विवाह, नात्रु मेलवुं होय, (कामजोगेसु के०) काम जोगने विपे, (तिवाजिलासा के०) तीव्र परिणामें अत्यंत अजिलापा राखी होय, (तस्स मिच्छामि डक्कड के०) तें सबधि कीधेलु पाप महारु निष्फल थाजो ॥११॥इति॥

(५) पाचसु अणुव्रत थूलानं परिग्रहानं, वेरमण, खित्तवत्तुनु यथापरिमाण, हिरस्ससोवस्सनुं यथापरिमाण, धनधान्यनु यथापरिमाण, उपदच्चउप्पदनु यथापरिमाण, कुविय धातुनुं यथापरिमाण, ए यथापरिमाण कीधु ठे, ते उपरात पोतानुं करी परिग्रह राखवाना पच्चस्काण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं, न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा एहवा पांचमा थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतना, पच अइयारा, जाणियवा, न समायरियवा, त जहा ते आलोउं, खित्तवत्तुप्पमाणाइक्कमे, हिरस्ससोवस्सप्पमाणाइक्कमे, धनधासुप्पमाणाइक्कमे उपदच्चउप्पदप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे, तस्स मिच्छा मि डक्कड ॥१२॥इति॥

अर्थ —पांचसु अणुव्रत (थूलानं के०) मोहोदुं परिग्रह जे दोलतने वगैरे ते (वेरमण के०) तजवा विपेनु ते कहेठे (खित्त के०) खेत्रादिक ते उघाडी जमीन, (वत्तुनुं के०) घरादिक ढाकी जमीननी

पुष्पविहं, आचरणविहं, धूपविहं, पेजविहं, नरक
 एविहं, उदनविहं, सूपविहं, विगयविहं, सागविहं,
 मादुरविहं जिमणविहं, पाणीविहं मुखवासविहं,
 वाहनिविहं, वाहनविहं, सयणविहं, सचित्तविहं,
 दवविहं, इत्यादिकनुं, यथापरिमाण कीधुं ठे, ते उ
 परांत उवन्नोग परिन्नोग नोगनिमित्तं नोगववा प
 च्चरकाण जावजीवाए, एगविहं तिविहेण न करेमि
 मणसा वयसा कायसा एहवा सातमा उवन्नोग प
 रिन्नोग उविहे पन्नत्ते तं जहा, नोयणाउय, कम्मउय,
 नोयणाउ समणोवासयाणं पंच अइयारा, जाणियवा,
 न समायरियवा, तं जहा ते आलोउ, सचित्ताहा
 रे, सचित्तपडिब-हादारे, अप्पोलिउसहिन्नरकणया,
 उप्पोलिउसहिन्नरकणया, तुब्बोसहिन्नरकणया, क
 म्मउण समणोवासयाणं, पनरस कम्मादाणाइ,
 जाणियवा, न समायरियवा, त जहा ते आलोउं, इंगा
 लकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडीकम्मे, फोडीक
 म्मे, दंतवाणिऊ, लखवाणिऊ, केसवाणिऊ, रसवा
 णिऊ, विसवाणिऊ, जतपिद्धणकम्मे, निज्जणकम्मे,
 दवग्गिदावणया, सरदहत्तलायपरिसोसणया, अस
 ईजण पोसणया, तस्स मिच्चामि उक्कडं ॥१४॥ इति ॥

अर्थ - सातमुं व्रत (उवन्नोग के०) जे वस्तु एकज वार नो
 गवाय एवा जे अन्नादिक तेनो विधि प्रमुख (परिन्नोगविहं के०)

जहा ते अलोजं, उहृदिसिप्पमाणाइकमे, अहो
दिसिप्पमाणाइकमे, तिरियदिसिप्पमाणाइकमे, खि
त्तवुद्धि सयंतराए, तस्स मिठामि डक्कड ॥ ३ ॥

अर्थ - (उहु दिशिब्रत के०) उहु, दिशाना मान बांधवानुं व्रत,
ते (ऊर्ध्वदिशिनु के०) उंचीदिशानु (यथापरिमाण के०) जेम
प्रमाण कीधु ठे, (अधोदिशिनु के०) नीची दिशानुं (यथाप
रिमाण के०) जेम प्रमाण कीधु ठे, (तिरिय दिशिनु के०) तीर्हीं
जमीन, एटले उत्तर, दक्षिण, पूर्व अने पश्चिम ए चारे दिशानुं
(यथापरिमाण के०) जेम प्रमाण कीधु ठे, ए यथापरिमाण कीधुं
ठे ते उपरातनीचूमिमां स्वेच्छायें कायायें जइने पंच आश्रवसेववानां
पाप नोगववानां, पञ्चस्काण जावजीवाए डुविह् तिविहेण न करेमि
न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी रीतें कीधा ठे, एहवा उह
(दिशि व्रतना के०) करेला मानथी उपरात दिशाने तजी देवाना
व्रतना पंच अश्रयारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आ
लोउ, (उहृदिसिप्पमाणाइकमे के०) उंची दिशानुं प्रमाण अति
कम्पु होय, मर्यादा उल्लंघी होय, (अहोदिसिप्पमाणाइकमे के०)
नीची दिशानी मर्यादा उल्लंघी होय, (तिरियदिसिप्पमाणाइकमे
के०) तीर्हीं दिशानी मर्यादा उल्लंघी होय, (खित्तवुद्धि के०)
क्षेत्र जमीननी रुद्धि, एटले एक दिशा घटाहीने बीजी दिशा ब
धारी होय (सयंतराए के०) सवेह् पच्छ्यां ठतां आगल चाल्यो
होय (तस्स मिठामि डक्कड के०) तेनु पाप कीधेलु महारो
निष्फल भाजो ॥ १३ ॥ इति ॥

(७) सातसुं व्रत उवजोग परिजोगविहं पञ्चस्कायमा
णे उह्णणियाविह्, दंतणविह्, फलविह्, अप्रंगणवि
ह्, उवट्टणविह्, मरूणविह्, वज्जविह्, विजेवणविह्,

फलाणी वस्तु मारे आज आटली खावी, के पीवी तथा फ
लाणी वस्तु आज एटली नोगववी इत्यादि, (ते उपरांत के०)
जे हृद कीधी ठे ते उपरांत, (उवनोग के०) जे वस्तु एक वार
नोगवामा आवे ते, (परिजोग के०) जे वस्तु वारवार नोगववामा
आवे ते, (नोगनिमित्ते के०) नोगने कारणें, (नोगववापञ्चका
ण के०) नोगववानी वधी, (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवु
त्या सुधी, एगविह तिबिदेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ए
हवा सातमा उवनोग परिजोग, (डुविदे के०) दोय प्रकारें, (प
सुत्ते के०) प्ररूप्या ठे, (तंजहा के०) ते कहे ठे, (नोयणाउय के०)
एक नोजन संबधि, (कम्मउय के०) बीजु कर्म ते व्यापार सबधि
जाणवु, तेमांथी (नोयणाउसमणोवासयाण के०) नोजन व्रत सबं
धिना आवकने (पचअइयारा के०) पांच अतिचार ठे, ते जाणियवा
न समायरियवा (तंजहा तें आलोउ के०) ते जिम ठे तिम कहे ठे
(सचित्ताहारे के०) सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक
काजु फल खाय, (सचित्तपडिविहाहारे के०) सचित्तनी सार्थे
लागेली प्रतिबद्धित वस्तु एटले लीबडानो गुंदर इत्यादिक सचित्त
सहित वस्तु होय तेने अचित्त जाणीने खाय, (अप्पोलिउंसहि
नकणया के०) अपक्वौषधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रदेश रहि
गया होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीरोली वस्तु प्रमुख,
(डुप्पोलिउंसहिनकणिया के०) डु पक्वौषधि ते काइक काचीने
कांइक पाफी रही होय, जेने पूरुं अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्युं
एवी वस्तुनो नोग करे, (तुल्लोसहिनकणया के०) तेखावु थोड्डं अने
नारवी वेवु पणु पडे, एवी वस्तु जे सीताफल, शेलही प्रमुख ए पाच
प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अतिचार लागे, ए नोजनथी पांच
अतिचार कह्यो, इवे (कम्मउण के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं
के०) अमणोपासक एटले आवकने (पनरसकम्मादाणाइ के०) प

उपनोग वस्तु जे बारबार नोगववामा आवे एवा वस्त्र आनरुष प्रमुख तेनु (पञ्चस्कायमाणे के०) पञ्चस्काण करवु, ते कहे ठे (उष्णि याविह के०) शरीरने लुहवाना वस्त्र ते अगूठा तेना प्रकारनु, (दतणविह के०) दातणना प्रकारनु, (फलविह के०) वृहनाफल प्र मुखना प्रकारनु (अभ्रगणविह के०) तेल प्रमुख शरीरें चोपडवाना प्रकारनु, (उवट्टणविह के०) मर्दन करवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनु, (मल्लणविह के०) न्हावाना पाणी प्रमुखना प्रकारनु (वस्त्रविह के०) वस्त्रना प्रकारनु, (विलेवणविह के०) चदनादिक विलेपन करवाना तथा तिलक प्रमुख करवाना प्रकारनु (पुष्पविह के०) चपादिकना फूल प्रमुखना प्रकारनु, (आनरणविह के०) धरेणाना प्रकारनु (धूपविह के०) धूप करवाना प्रकारनु (पेजविह के०) पीवानी वस्तु प्रमुखना प्रकारनु, (नस्त्रणविह के०) सुखडी प्रमुख नोजन करवा योग्य वस्तुना प्रकारनु, (उदनविह के०) मठ प्रमुखनी दालना प्रकारनु, (सूपविह के०) शाल चावलना प्रकारनु (विगयविह के०) घृत, तेल, दूध, दही, गोल, आदि विगयना प्रकारनु (सागविह के०) नीलां पत्र, शाक, प्रमुखना प्रकारनु, (मादुरविह के०) मधुरपदार्थना प्रकारनु, (जिमणविह के०) जिमवानो विधि जे अमुक आहार जमवो तेना प्रकारनु, (पा णीविह के०) पाणी प्रमुख पीवाना प्रकारनु, (मुखवासविह के०) सो पारी, लविगाविक मुखवास वस्तुना प्रकारनु, (वाहनिविह के०) पगेपदेरवाना पगरखा प्रमुखना प्रकारनु, (वाहनविह के०) वाहनना प्रकारनु, (सयणविह के०) शय्या पलग आदि सुवानी वस्तुना प्रकारनु (सच्चित्तविह के०) सच्चित्त वस्तु तेने खावाना प्रकारनु, (वस्त्रविह के०) आज महारें अमुक अमुक आटलाज इव्य खावां उपरांत न खावा तेहना प्रकारनु, (इत्यादिकनु यथापरिमाण कीधुं ठे के०) इत्यादि वस्तुनु जेम प्रमाण कीधुं ठे, एटले

फलाणी वस्तु मारे आज आटली खावी, के पीवी तथा फ
लाणी वस्तु आज एटली नोगववी इत्यादि, (ते उपरांत के०)
जे हृद कीधी ठे ते उपरांत, (उवन्नोग के०) जे वस्तु एक बार
नोगवामां आवे ते, (परिन्नोग के०) जे वस्तु बारवार नोगववामां
आवे ते, (नोगनिमित्ते के०) नोगने कारणें, (नोगववापञ्चाका
ए के०) नोगववानी वंधी, (जावजीवाए के०) ज्यां सुधी जीवु
त्यां सुधी, एगविहं तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ए
हवा सातमा उवन्नोग परिन्नोग, (डुविहे के०) दोय प्रकारें, (प
सुत्ते के०) प्ररूप्या ठे, (तंजहा के०) ते कहे ठे, (नोयणाउय के०)
एक नोजन सबधि, (कम्मउय के०) वीज्जु कर्म ते व्यापार सबधि
जाणवु, तेमांथी (नोयणाउसमणोवासयाण के०) नोजन व्रत संव
धिना आवकने (पंचअश्रारा के०) पांच अतिचार ठे, ते जाणियवा
न समायरियवा (तंजहा तें आलोउ के०) ते जिम ठे तिम कहे ठे
(सचित्ताहारे के०) सचित्त वस्तु खावी एटले वनस्पति आदिक
काजु फल खाय, (सचित्तपडिवडाहारे के०) सचित्तनी साथे
लागेली प्रतिवद्धित वस्तु एटले लीवडानो गुंदर इत्यादिक सचित्त
लहित वस्तु होय तेने अचित्त जाणीने खाय, (अप्पोलिउंसहि
नरकणया के०) अपक्वोपधि ते जे वस्तुमां जीवना प्रवेश रहि
गया होय, एवी तत्कालनी वाटेली अथवा पीशेली वस्तु प्रमुख,
(डुप्पोलिउंसहिनरकणिया के०) डु पक्वोपधि ते काश्क काचीने
काश्क पाकी रही होय, जेने पूरु अग्नि प्रमुख शस्त्र नथी प्रणम्युं
एवी वस्तुनो नोग करे, (तुल्लोसहिनरकणया के०) तेखावु थोहुं अने
नाखी देवु घणु पडे, एवी वस्तु जे सीताफल, शेलही प्रमुख ए पांच
प्रकारनी वस्तु खाधी होय तो अतिचार लागे, ए नोजनथी पांच
अतिचार कह्यो, हवे (कम्ममण के०) व्यापारना, (समणोवासयाणं
के०) श्रमणोपासक एटले आवकने (पनरसकम्मादाणाइ के०) प

न्नर प्रकारें कर्म थाववाना स्थानकरूप पन्नर अतिचार ठे, ते जाणि
 यवानसमायसिद्धा (तजहा ते आलोउं के०) ते जेम ठे तेम आलोउं
 ठुं, (इगालकम्मे के०) अग्निनो व्यापार लोहकारादिकनु कर्म कीधुं
 होय, (वणकम्मे के०) वननां जाडवृद्ध कपावी व्यापार कीधो होय,
 (साढिकम्मे के०) गाढादिक करावीने वेच्यां होय, धरी, उध प्रमुखनो
 व्यापार कीधो होय (जाढिकम्मे के०) गाढा, धरादिक, उठ, घोडा,
 बेल प्रमुखना जाढानो व्यापार कीधो होय, (फोढिकम्मे के०)
 खाण खणाववी पन्नरा फोडाववा कर्पण करवु, इत्यादि पृथ्वीनां पेट
 फोडाववां, कूवा, वाव आदि कराववा सवधि कर्म कक्षां होय, ए
 पाच कुकर्म, आचकने अत्यंतपणें वर्जवां, (दतवाणिज्ज के०)
 आगरमा जइ हाथीदात, नखला, कस्तूरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु
 लेवी, ते दातनु वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लक्त
 वाणिज्ज के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्ज के०) म
 विरादिक रसनो व्यापार करवो, (केसवाणिज्ज के०) विपद चउ
 पदजीवोनो व्यापार करवो, (विसवाणिज्ज के०) विप जे जेर, जोख,
 हथीमार, प्रमुख जीवधातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय, ए पांच
 कुवाणिज्य आचकने वर्जवां, (जतपिन्नणकम्मे के०) घाणी, उ
 खल, मुशल, घटी प्रमुखनो व्यापार, (निद्धंढणकम्मे के०) बल
 दादिकने अंकाववा, मांज देवराववा, खासी कराववी (ववगिदाव
 णया के०) वव देवा, देवराववा, (सर के०) सरोवर, (वह के०)
 इह, कुंम (तलाय के०) तलावना पाणीने, (परिसोसणया के०)
 समस्त प्रकारें शोपावुं होय (असईजण पोसणया के०) कुकुट,
 श्वान, मांजारादिक हिंसक जीवने पोष्या होय तथा झराचारी
 दासदासी प्रमुखनु पोषण कर्तुं होय, ते असती जन पोषण
 कहियें, ए पांच सामान्य कर्म निषे वर्जवां, (तस्त मिहामि
 ड्कड के०) तेनु ड्कृत एटले पाप महारुं निष्फल याजो ॥ १४ ॥

८ आठमु अनर्थदंरु विरमण व्रत ते चउविहे, अ
एठादंरु, पसुत्ते, तं जहा, अवघाणायरिए, पमायाय
रिए, हिंसपयाणे, पावकम्मोवएसे, एहवा अनर्थदंरु
सेववा पच्चस्काण, जावजीवाए, डविहं, तिविहेणं, न क
रेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा
आठमा अनर्थदंरु विरमण व्रतना पंच अश्यारा, जा
णियवा, न समायरियवा, त जहा ते आलोज, कंद
पे, कुकुइए, मोहरिए, संजुत्तादिगरणे, उवन्नोगपरि
न्नोग अइरत्ते, तस्स मिच्चामि डुकडं ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थ - आठमुं (अनर्थदंरु के०) जे अर्थ विना कर्मवधना
कारण सेववां, कारण विना आत्मानें दमाववो ते अनर्थदंरु
कहीयें तेथकि (वीरमण के०) निवर्तवु ते अनर्थदंरु, विरमण
व्रत करीयें ते (अण्ठादरु के०) अनर्थ दंरु, (चउविहे के०)
चार प्रकारें (पसुत्ते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (तं जहा के०) ते जिम
ढे तिम कहे ढे, (अवघाणायरिए के०) अपध्यानाचरित ते
खोटु ध्यान धरवु, माठी चितवणा करवी, (पमायायरिए के०)
होह करवी, विकथा करवी, खेल कराववा, सर्व रात्रियें सुई रहेवु
धीतैजाविकनां ठाम ठघाढां राखवा ते प्रमादाचरित, (हिंसपयाणे
के०) जे थकी हिंसा थाय एहवा कोश कोवाल प्रमुख शस्त्र आपवां,
ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोवएसे के०) बलद समरावो, खेतर खेढो,
गाढी जोढो, इत्यादि पाप कर्मनो उपदेश अर्थ विना करवो, ते
हिंसप्रदान एहवा अनर्थदंरु सेववा पच्चस्काण, जावजीवाए, ड
विहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
एहवा, आठमा अनर्थदंरुविरमणव्रतना पंच अश्यारा, जाणि

न्नर प्रकारें कर्म आववाना स्थानकरूप पन्नर अतिचार ठे, ते जाणि
 यवानसमायरियवा (तंजहा ते आलोउ के०) ते जेम ठे तेम आलोउं
 ठुं, (इगालकम्मे के०) अग्निनो व्यापार लोहकारादिकनु कर्म कीधुं
 होय, (वणकम्मे के०) वननां जाडवृक्ष कपावी व्यापार कीधो होय,
 (साढिकम्मे के०) गाढादिक करावीने वेच्या होय, धरी, उध प्रमुखनो
 व्यापार कीधो होय (जाढिकम्मे के०) गाढा, घरादिक, उट, षोडा,
 बेल प्रमुखना जाढानो व्यापार कीधो होय, (फोढिकम्मे के०)
 खाण खणाववी पञ्चरा फोढाववा कर्पण करवु, इत्यादि पृथ्वीनां पेट
 फोढाववां, कूवा, वाव आदि कराववा सवधि कर्म कस्यां होय, ए
 पांच कुकर्म, आवकने अत्यंतपणें वर्जवां, (दंतवाणिज्य के०)
 आगरमां जइ हाथीदांत, नखला, कस्तूरी मृगचर्म, इत्यादि वस्तु
 लेवी, ते दातनु वाणिज्य एटले व्यापार कीधो होय, (लक्ष
 वाणिज्य के०) लाखनो व्यापार करवो, (रसवाणिज्य के०) म
 दिरादिक रसनो व्यापार करवो, (केसवाणिज्य के०) द्विपद चउ
 पदजीवोनो व्यापार करवो, (विसवाणिज्य के०) विप जे जेर, जोह,
 हथीयार, प्रमुख जीवघातक वस्तुनो व्यापार कीधो होय, ए पांच
 कुवाणिज्य आवकने वर्जवां, (जतपिहणकम्मे के०) घाणी, उ
 खल, मुशल, घंटी प्रमुखनो व्यापार, (निहंठणकम्मे के०) बल
 दादिकने अकाववा, मांज देवराववा, खासी कराववी (दवगिदाव
 णया के०) दव देवा, देवराववा, (सर के०) सरोवर, (दह के०)
 दह, कुम (तलाय के०) तलावना पाणीने, (परिसोसणया के०)
 समस्त प्रकारें शोषाव्युं होय (असईजण पोसणया के०) कुकट,
 श्वान, मांजारादिक हिंसक जीवने पोष्या होय तथा झराचारी
 दासदासी प्रमुखनु पोषण कर्णुं होय, ते असती जन पोषण
 कहियें, ए पाच सामान्य कर्म निषे वर्जवां, (तस्त मिहामि
 झकड के०) तेनु झकृत एटले पाप महारुं निष्फल याजो ॥ १४ ॥

८ आठमुं अनर्थदम विरमण व्रत. ते चउविहे, अ
 ण्णादमे, पसुत्ते, तं जहा, अवघाणायरिए, पमायाय
 रिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एहवा अनर्थदम
 सेववा पच्चस्काण, जावजीवाए, डविहं, तिविहेणं, न क
 रेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा
 आठमा अनर्थदम विरमण व्रतना पंच अइयारा, जा
 णियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोल, कंद
 पे, कुकुइए, मोहरिए, संछुत्ताहिगरणे, ठवन्नोगपरि
 जोग अइरत्ते, तस्स मिच्चामि डुकडं ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थ - आठमुं (अनर्थदम के०) जे अर्थ विना कर्मवधनां
 कारण सेववां, कारण विना आत्मानें दमाववो ते अनर्थदम
 कहीयें तेथकि (विरमण के०) निवर्त्तवुं ते अनर्थदम, विरमण
 व्रत करीयें ते (अण्णादम के०) अनर्थ दमे, (चउविहे के०)
 चार प्रकारें (पसुत्ते के०) प्ररूप्यो, कह्यो (तं जहा के०) ते जिम
 ठे तिम कहे ठे, (अवघाणायरिए के०) अपध्यानाचरित ते
 खोटुं ध्यान धरवु, माठी चितवणा करवी, (पमायायरिए के०)
 होड करवी, विकथा करवी, खेल कराववा, सर्व रात्रियें सुईं रहेवुं
 धितैलादिकनां ठाम उघाडा राखवा ते प्रमादाचरित, (हिंसप्पयाणे
 के०) जे थकी हिंसा थाय एहवा कोश कोदाल प्रमुख शस्त्र आपवां,
 ते हिंसप्रदान, (पावकम्मोवएसे के०) बलव समरावो, खेतर खेडो,
 गाढी जोडो, इत्यादि पाप कर्मनो उपदेश अर्थ विना करवो, ते
 हिंसप्रदान एहवा अनर्थदम सेववा पच्चस्काण, जावजीवाए, ड
 विहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
 एहवा, आठमा अनर्थदमविरमणव्रतना पंच अइयारा, जाणि

यद्वा न समायरियद्वा, तं जहा, ते आलोउ (कदप्पे के०) जे थकी काम
 वृद्धि थाय एद्वी वात कीधी होय, (कुक्कुइए के०) जामनी
 पेरे कुचेष्टा कीधी होय, (मोहरिए के०) मौखर्य ते वाचालपणे
 जेम तेम धोव्यो होय, पारकी तांत कीधी होय, (सल्लुत्ताहिगरणे
 के०) वखल, मुशलाविक अधिकरण एकठां करी मूक्यां होय, (उ
 वनोगपरिजोग अइस्ते के०) उपजोग परिजोगमा अतिरक्त रहे,
 एटले नोगविलासमां वडु मची रह्या होइयें, (तस्स मिज्जामि
 ड्कडं के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १५ ॥ इति ॥

नवसुं सामायिक व्रत, सावज्ज जोगनुं, वेरमणं, जावनि
 यमं, पङ्कुवासामि, इविहं, तिविहेण न करेमि, न कारवेमि,
 मणसा, वयसा, कायसा, करंत नाणु, जाणइ, वयसा, का
 यसा, एद्वी सद्वहणा, परूपणा, करियें तिवारे फरसनाये
 करी शुद्ध, एद्वी नवमा सामायिक व्रतना पंच अइया
 रा, जाणियद्वा, न समायरियद्वा, तं जहा, ते आलोउं,
 मणडप्पणिहाणे, वयडप्पणिहाणे कायडप्पणिहाणे, सा
 माइयस्स सइविदूणे अकरणियाए, सामाइयस्स, अण
 वुठियस्स करणयाए, तस्स मिज्जामि ड्कड ॥ १६ ॥ इति ॥

अर्थ - नवसुं (सामायिक व्रत के०) समतारूप सामायिकनुं
 व्रत, (सावज्ज जोगनुं के०) सावय जे पाप तेणें करी सहित
 एवा मनावि योग तेनुं (वेरमण के०) निवर्त्तेबु, (जावनियम
 के०) ज्यां सुधी सामायिकनी नियम एटले मर्यादा कीधी ठे त्यां
 सुधी, (पङ्कुवासामि के०) शुज जोगनें पर्युपासु एटले सेबु, (उ
 विहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा करंत
 नाणुजाणइ, वयसा, कायसा, एद्वी (सद्वहणा के०) अद्वा,

रुचि, प्ररूपणा, करियें त्यारें फरसनायें करीशु६, एहवा नवमा सामा
यिक व्रतना, पच अश्यारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा, ते आ
लोठ (मण्डुप्पणिहाणे के०) सामायिक कीधु ठे तेमां मन मातु व
र्त्ताव्यु होय, (वयडुप्पणिहाणे के०) वचन मातु वर्त्ताव्यु होय, (काय
डुप्पणिहाणे के०) काया माठी प्रवर्त्तावी होय, (सामाश्यस्ससइवि
हूणे अकरणियाए के०) सामायिकने वरावर कीधु के नही ? तेनी ख
वर नरही होय, तें सइविहूणे एटले स्मृतिविहीन अतिचार, (सामाश
यस्त के०) सामायिकने (अणवुच्छियस्स करणयाए के०) पूरु थया
विना पाछु होय, ते अनवस्था दोष नामे पाचमो अतिचार जाणवो
(तस्स मिच्चामि डक्कड के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १६ ॥

१० दशसु देसावगासिक व्रत, दिनप्रतें प्रजातथकी
प्रारंजनि पूर्वादिक ठदिशे जेटली जूमिका मोकली रा
खी ठे, ते उपरात, सइचाये, कायायें, जश्न, पाच आ
श्रव सेववा पच्चस्काण, जाव अहोरत्त, डविहं, तिविहेणं,
न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा करंतं
नाणुजाणिक्का, वयसा, कायसा, जेटली जूमिका मोकली
राखी ठे, तेमाहिज जे डव्यादिकनी मर्यादा कीधी ठे,
ते जोगववी ते उपरात, उवजोग, परिजोग, जोगनि
मित्तें, जोगववा पच्चस्काण, जाव अहोरत्त, एगविहं,
तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, काय
सा, एहवा दशमा देशावकाशिक व्रतना, पच अश्यारा
जाणियवा, न समायरियवा, त जहा, ते आलोठ, आण
वणप्पउंगे, पेसवणप्पउंगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, व
दिया पुग्गलपस्केवे, तस्स मिच्चामि डक्कड ॥ १७ ॥ इति॥

अर्थ — दशमुं (देसावगासिक व्रत के०) देशयकी दिशाउंनो अब काश करवो सहेपवो तेमज सर्वे व्रतोना नियम सहेपवा एटले प्रथम घणी बूट राखी होय ते प्रतिदिवसें सहेपीने थोड़ी बूट राखवी ते सबधी व्रत ते दिनप्रत्ये प्रजातथकी प्रारनीने ठविशें जेटली चूमिका मोकली राखी ठे एटले सवारमां उठीने मान कसुं ठे के आज म्हारे दरेक दिशायें अटला गाव उपरांत जावु नदी? ते उपरांत (सङ्खाइ के०) पोतानी इछायें करी कायायें जश्ने जीव हिंसादिक पांच आश्रव, सेववानां पञ्चस्काण (जाव अहो रत्त के०) यावत् दिवस ने रात्रि सुधी, इविह, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंत नाणुजाणिझा, वयसा कायसा, एवी रीतें करेला ठे तिहां जेटली चूमिका मोकली राखी ठे, तेमाही जे इब्बादिकनी मर्यादा कीधी ठे, के आज म्हारे एटला पदार्थ-उपजोगमां लेवा ते उपरांत उवजोग परिजोग एहवा वे प्रकारें जोगयोग्य वस्तुने जोगनिमित्ते जोगनी इछाए जोगववानां पञ्चस्काण (जावअहोरत्तं के०) यावत् एक दिवसरात्रि सुधी (एगविहं के०) एक करणो, अने (तिविहेण के०) प्रण जोगें, करी नकरेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एवी रीतें पञ्चस्काण कखां ठे एहवा वशमा देशवकाशिक व्रतना पंच अश्वारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा, ते आलोठं (आणवणप्पउंगे के०) प्रमाण करेली चूमिथी बाहिरली चूमियें कोइ जनार माणसनी हस्तक कोइ पदार्थेजुं आनयन एटले मगावडुं ते प्रथम आनयन प्रयोगनामा अतिचार जाणवो (पेसवणप्पउंगे के०) प्रमाण करेली चूमिथी उपरांत कोइ चाकर मोकलीने वस्तु मगाववी क्रयविक्रयनो आवेश देवो ते बीजो प्रेपवण प्रयोगातिचार (सदाणुवाइ के०) सावनो उपाय ते कोइ माणसने खुंखारोकरीने ह्द उपरांतथी वोलाववो ते शब्दानुपाति अतिचार,

(रूवाणुवाइ के०) पोतानु रूप देखाडीने कोईने बोलावे, (वहि यापुगलपस्केवे के०) निमेली नूमिकाथी बाहिर रदेजा पुरुपने कांकरादिक नाखी बोलावे, ते पांचमो पुज्जलप्रद्वेपातिचार ए पांच अतिचारमांहे कोइ अतिचार दोष लाग्यो होय तो (तस्स मिच्छा मि डक्कहं के०) तेनु पाप मने निष्फल थाजो ॥ १४ ॥ इति ॥

(११) इग्यारमुं पोषध व्रत, असणं, पाणं, खाइमं, साइमनुं पच्चस्काण, अबंजनु पच्चस्काण, अमुक मणि सुवर्णनु पच्चस्काण, मालावन्नग विलेपणनुं पच्चस्काण, सब मुसलादिक सावळ जोगनुं पच्चस्काण, जावअदोर तं पङ्गुवासामि. डविहं, तिविदेणं, न करेमि, न कार वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करतं नाणुजाणइ, वय सा, कायसा, एद्वी सदहणा, परूपणा करीधे, तेवारे फरसनाये करी शुद्ध, एद्वी इग्यारमा पडिपुन्नं पो षध व्रतना, पंच अइयारा, जाणियवा न समायरिय वा, तं जहा ते आलोउं, अण्डिलेहिय डण्डिलेहिय सिञ्जासथारए, अण्णमज्जिय डण्णमज्जिय सिञ्जा सथार ए, अण्डिलेहिय, डण्डिलेहिय उच्चारपासवणजूमि, अण्णमज्जिय डण्णमज्जिय उच्चार पासवणजूमि, पोसहस्स सम्मं अण्णुपालणया, तस्स मिच्छामि डक्कह ॥ १५ ॥ इति ॥

अर्थ - इग्यारमुं (पोषधव्रत के०) पाप रहित र्थ, संवरें करी आत्माने पोषवो ते सबधि व्रत ते चार प्रकारें ठे, (असण के०) अन्न, (पाण के०) पाणी, (खाइम के०) मेवानी जात, (सा इमनु के०) मुखवास्त सोपारी लविंग प्रमुख खावानुं (पच्चस्का

ए के०) निपेयवु ते प्रथम चार प्रकारें आधार परिहार पोसद् तथा (अवजनु पञ्चकाण के०) अन्नह्यर्चनी वधी, ते वीजुं ब्रह्मचर्यपोसद् (अमुक के०) जे आनरण सुखे उताखां न उतरे ते मूकीने उपरात, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०) सुवर्ण प्रमुखना आनरण राखवानी (पञ्चकाण के०) वंधी तथा (मालावन्न के०) गुलावना फुल आदिकनी मालानु अने वन्न एटले वर्ष्मक वस्तु ते अवीर, गुलाल, अलतादिक जाणवा (विलेपणनु के०) विलेपन करवानु पञ्चकाण ते त्रीजो शरीर सत्कारपरिहार पोसद् तथा (संज्ञ के०) शस्त्र, हथीपार (मुसलादिक के०) आधुध, लाकडी, सांवेलां वगेरे, सावळ्हा जोगनु पञ्चकाण एटले पापिष्ठ काम करवानी वंधी, ते चौथो सर्व सावद्ययोग व्यापार परिहार पोसद् एवु व्रत (जाव अहोरत्न के०) जाव रात्रि दिवस सुधी, (पङ्कवासाभि के०) दु पयुपासुं एटले सेवु आचरुं, डुविहं, ति विदेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंत ना पुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सद्दहणा के०) ए करवानी अक्षा थाय, (परूपणा करीयें के०) वात करीयें तेवारें फरसनायें करी छुइ एटले ते वखत शक्ति मुजव छुइ होजो, एहवा इयार मा (पडिपुस के०) प्रतिपूर्ण एटले आविधी अत पर्यंत स भतानावें सपूर्ण एवु (पोषधव्रतना के०) धर्मध्यानं तथा स वरें करी आत्माने पोषवानु व्रत तेना, पच अइयारा, जालियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोचं (अप्पडिलेदियडुप्पडिलेदिय सिझा सथारए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, एसबा सथाराने अप्रतिलेपित एटले बराबर प्रतिलेख्यां न होय अने प्रति लेख्यां तो कांइक प्रतिलेख्यां एटले कांइ जोयां कांइ न जोयां ते प्रथम अप्रतिलेपितहु प्रतिलेपितसथासथारातिचार (अप्पमझिय डुप्पमझिय सिझासथारए के०) सथा सथाराने प्रमाज्यो न

होय अथवा प्रमाज्यो तो कांइ पुज्यो प्रमाज्यो कांइ न पुज्यो न प्रमा
ज्यो एम यद्वा तद्वा पुजे, ते बीजो अप्रमाज्जितसु प्रमाज्जितसद्वा
सत्थार अतिचार (अप्पहिलेहिय डप्पहिलेहिय उच्चारपासवण
चूमि के०) एवी रीतेंज वढीनीत, लघुनीत परवानी चूमिका तेनो
त्रीजो अतिचार जाणवो तथा (अप्रतिलेपित ड प्रतिलेपित अ
प्पमक्षिय डप्पमक्षिय उच्चार पासवणचूमि के०) वढीनीत लघु
नीत परवानी चूमिका, पुजी नही अथवा कांइ पुजी कांइ नही
पुंजी ते चोथो अतिचार तथा (पोसदस्स के०) पोसद कीधो
वे तेने (सम्म के०) सम्यक् प्रकारें एट्ठे रुढे प्रकारें (अणणु
पालण्या के०) अनुपालना कीधी न होय पोसदमां नोजनादिक
चिता कीधी होय, जे क्यारें पोसद पूर्ण थाइ अने क्यारें डु नोजन
करीश ? इत्यादिक पाचमो अतिचार जाणवो ए पांच अतिचारमां
हेजो जे कोइ अतिचार लाग्यो होय (तस्स मिष्ठा मिड्ढ के०) तेनुं
कीधेलु पाप मने निष्फल थाजो ॥ जातां तीन वार आवस्सही
न कीधी होय, आवता तीन वार निसही न कीधी होय, थोडी
जायगा पुंजी होय, धणी जायगा न पूजी होय, काजो परवीने तीन
वार वोसिरे वोसिरे न कीधो होय, परवत्तां चूमिना धणीनी
आज्ञा न मागी होय, पोसदमा निडा विकथादिक प्रमाद सेव्यो
होय, तस्स मिष्ठा मिड्ढ ॥ १७ ॥ इति ॥

१७ बारसु अतिथि सविजागव्रत, समणे निग्गथे,
फासुअ एसणिक्केण, असण, पाणं, खाइमं, साइ
मेण, वड, पडिग्गद, कवल, पायपुवणेणं, पाडिहा
रिय, पीढ, फलग, सिक्कासंथारएणं, उंसद जेसक्के
ण, पडिजानेमाणे, विहरामि, एदवी सद्वहणा, परू
पणा, फरसनायें करी शुद्ध, एदवा वारमा अतिथि

ए के०) निपेधनु ते प्रथम चार प्रकारें आधार परिहार पोसह तथा (अवजनु पञ्चस्काण के०) अवज्ञाचर्यनी बंधी, ते वीजुं ब्रह्मचर्यपोसह (अमुक के०) जे आचरण सुखे उताखां न उतरे ते मूर्कीने उपरात, (मणि के०) हिरा प्रमुख, (सुवर्ण के०) सुवर्ण प्रमुखना आचरण राखवानी (पञ्चस्काण के०) बंधी तथा (मालावन्न के०) गुलाबनां फूल आदिकनी मालानु अने वन्नग एटले वर्सुक वस्तु ते अवीर, गुलाल, अलतादिक जाणवा (विलेपणनु के०) विलेपन करवानु पञ्चस्काण ते त्रीजो शरीर सत्कारपरिहार पोसह तथा (सज्ज के०) शस्त्र, हथियार (सुसलादिक के०) आभुष, लाकडी, सांवेलां वगैरे, सावळा जोगनु पञ्चस्काण एटले पापिष्ठ काम करवानी बंधी, ते चौथो सर्व सावद्ययोग व्यापार परिहार पोसह एवु व्रत (जाव अहोरत्न के०) जाव रात्रि दिवस सुधी, (पल्लुवात्तामि के०) दु पर्युपासुं एटले सेवु आचरुं, डुविहं, ति विहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, करंत ना एणुजाणइ, वयसा, कायसा, एहवी, (सइहणा के०) ए करवानी श्रद्धा थाय, (परूपणा करीयें के०) वात करीयें तेवारें फरसनायें करी शुद्ध एटले ते वखत शक्ति मुजव शुद्ध होजो, एहवा झ्यार मा (पढिपुसुं के०) प्रतिपूर्ण एटले आदिधी अत पर्यंत स मताजावें सपूर्ण एवु (पोषधवतना के०) धर्मध्यानें तथा स वरें करी आत्माने पोषवानु व्रत तेना, पंच अझ्यारा, जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा ते आलोच (अप्पडिलेहियडुप्पडिलेहि यं सिञ्जा सथारए के०) पाट प्रमुख शय्या तथा पथारीने, ए सथा सथाराने अप्रतिलेपित एटले बरावर प्रतिलेख्यां न होय अने प्रति लेख्यां तो कांइक प्रतिलेख्या एटले काइ जोयां काइ न जोयां ते प्रथम अप्रतिलेपितइ प्रतिलेपितसथासथारातिचार (अप्पमस्सि य डुप्पमस्सिय सिञ्जासथारए के०) सथा सथाराने प्रमाज्ज्यो न

लोठं, (सचित्तनिरकेवणिया के०) साधुनी गोचरीनी वेलायें, आपवा योग्य सृजती वस्तु होय तेने बीजी सचित्त वस्तुनी उपर राखी होय (सचित्तपिहणिया के०) आपवा योग्य अचित्त वस्तु होय, तेने सचित्त वस्तुयें करी ढांकी मूकी होय (कालाऽक्रमे के०) कालातिक्रम ते साधुने बहोरवानो वखत टालीने पढी अन्नपाननी निमत्रणा करी होय (परोवएसे के०) दान देवा योग्य वस्तु पोतानी होय तेम ठता तेने न देवानी बुद्धियें पारकी कही होय, (महारियाए के०) ईर्ष्यायी अनेरानुं दान देखी तेनी स्पर्धायें दान बीधुं होय (तस्स मिहामि डुक्कडं के०) तेनु लागेलुं पाप मने निष्फल थाजो ॥ १९ ॥ इति ॥

पीठें " सत्तेपणा " को पाठ कहीजें, ते कहे ठे -

अपड्ढिम मरणांतिय संलेहणा, फूसणा, आराहणा, पोषधसाला पूंजनि, उच्चार पासवण जूमिका, पडिले हनि, गमणागमणे पडिक्कमिने, दर्जादिक संथारो संथारिनि, दर्जादिक संथारो डुरुहिने, पूर्व तथा उत्तर दिशि, पट्यंकादिक आसणें वेसीने करयल सपरिग्ग हिय, सिरसावत्तं मण्णए अंजली ति कट्ठु, एव वयासी नमोत्तुणं, अरिहताण, जगवताण, जावसपत्ताण, एम अनता सिद्धजीने नमस्कार करीने, जयवंता वर्तमान तीर्थकरने नमस्कार करीने, पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु प्रमुख चारे तीर्थ स्वमावीने, सर्व जीवराशि स्वमावीने, पूर्वे जे व्रत आदख्या ठे, तेना जे अतिचार दोष लाग्या होय, ते सर्वने आलोइ पडिक्क

सविन्नाग व्रतना, पंच अश्वारा जाणियवा, न स
मायरियवा, त जहा ते आलोउ, सचित्तनिस्केव
णिया, सचित्तपिहणिया, कालाइक्रम, परोवएसे, म
वरियाए, तस्स मिठामि डुकडं ॥ १९ ॥ इति ॥

अर्थ - वारमुं (अतिथि के०) जेने तिथिनु तहेवारनु कांइ मुकर
नयी जे अमुक तिथियें अथवा अमुक तहेवारने दिवसें अहार लेवा
आवगे, परंतु अणचित्ता आवे एहवा साधुने वास्ते, (संविन्नाग
व्रत के०) पोताने माटें निपजावेला आहारमांथी संविन्नाग करवी
तेनुं व्रत एटले आहार करती वखत चितवणा करवी जे (समणेनि
गये के०) साधु निर्गैथने, (फासुअ के०) प्राणुक एटले अ
चित्त (एसणिकेण के०) सूनतु एटले दोष रहित साधुने कप्पे
एवु (असण के०) अन्न, (पाण के०) पाणी, (खाइम के०)
मेवो सुखही प्रमुख, (साइमेण के०) स्वादिम ते मुखवास्त, ए
चार प्रकारनो आहार तेमज बीजां पण साधुने खपवायोम्य
वस्तुनां नाम कहे ठे (वस्त्र के०) वस्त्र, (पडिग्गह के०) पात्र,
(कबल के०) कांवली, (पायपूछणेण के०) पगने लूठवानु पो
ठणुं (पाडिदारिय के०) जे वस्तु साधुने आपीने पाठी लेवाय तेवी
वस्तु ते कहे ठे, (पीढ के०) धाजोठ (फलंग के०) पाटीछुं
(सिझा के०) वस्ती, पाट, स्थानक (सथारएण के०) ठण प्रभु
खनी पथारी, (उसह के०) एक वस्तु ते औपध, (जेसकेण
के०) घणी वस्तु मलवार्थी थयेलां एवी गोली वगेरे औपधो तेने
(पडिलानेमाणे के०) प्रतिलानतां थकां, आपतां थका (विहरामि
के०) विचरछुं, (एहवी सद्धणा के०) अक्षा (परूपणा के०)
उपवेश फरसनार्यें करी छुं एहवा बारमा अतिथिसविन्नाग व्र
तना पंच अश्वारा, जाणियवा, न समायरियवा, त जहा ते आ

उगे, जीवियासंसप्यउगे, मरणासंसप्यउगे, काम जो
गाससप्यउगे तस्स मिच्चामि ड्कडं ॥ १० ॥ इति ॥

अर्थ —(अपश्चिममरणांतिय के०) अपश्चिम मरणांतिक एटले
पढी कांइ नथी करवु, एवुं जे मरण ते पंमितमरण कहिये, ते पंमि
तमरणनी अत्ते (सलेदणा के०) सलेषणा करवी अनशन करवु आ
हारकपाय पातला करवा, (फूसणा के०) आत्माने फूसीने, (आ
राहणा के०) आराधना करीने, (पोषधसाला के०) सथारो क
रीये ते स्थानकने, (पुजीने के०) पुजी पढिलेहीने, (वच्चार
के०) वढीनीत, (पासवण के०) लघुनीतनी (जूमिका के०)
जूमिका जे तेने (पढिलेहीने के०) प्रतिलेखी एटले जंतुप्रमुखने
नजरें जोइने, (गमणागमणे के०) जाता आवतां कोइ जीव चं
पाणो होय तेने, (पढिक्कमिने के०) पढिक्कमिने (वर्जादिकसथारो
के०) मान वगेरेनो सथारो, (सथारीने के०) सथारीने, (व
र्जादिक सथारो के०) मानप्रमुखनी पथारी उपर, (डुरुहिने
के०) बेसीने, (पूर्वतथाउत्तरदिशि के०) पूर्व अथवा उत्तर
दिशा तरफ, (पल्यंकादिक के०) पलोठी वगेरे जेवी पोतानी
शक्ति हुवे तेवा, (आसणेबेसीने के०) आसने बेसीने पढी (क
रयल के०) वे हाथ, (सपरिग्हियं के०) जोडीने, (सिरस्ताव
न के०) मस्तकें आवर्त्तन करीने, (मण्ण अंजली ति कट्टु के०)
माथा उपर वे हाथ जोडेला राखी, (एव वयासी के०) एम
कहे जे, (नमुहुण के०) नमस्कार हो, (अरिहंताण के०) श्री
अरिहतने, (जगवताण के०) जगवतने, (जावसपत्ताण के०)
यावत् सपत्ताण एटले मुक्तिने पाम्या त्या सुधिनो पाठ जे सामा
यिकने अत्ते ठे तेटलो कहेवो, एम अनता सिद्धजीने नमस्कार
करीने पढी पोताना धर्माचार्यने नमस्कार करीने, साधु, साधवी,

मी, निंदी, नि शल्य यश्ने, सर्व पाणाइवायं पञ्चस्कामि,
 सब मुसावाय पञ्चस्कामि, सर्व अदिन्नादाणं पञ्चस्कामि,
 सब मेदुण पञ्चस्कामि, सर्व परिग्गहं पञ्चस्कामि, सर्व
 कोह माणं जाव मिच्चा दंसण सल्ल, सब अकरणिं
 पञ्चस्कामि, जावजीवाए, तिविहं, तिविहेणं, न केरेमि,
 न कारवेमि, करतपि नाणुजाणामि, मणसा, वयसा,
 कायसा एम अढारे पाप स्थानक पञ्चस्कामि, सब अ
 सण, पाणं, खाइमं, साइमं, चउविहंपि आहारं, पञ्च
 स्कामि, जावजीवाए एम चारे आहार पञ्चस्कामि, जं
 पीय, इम सरीरं इहं, कतं, पियं, मणुन्नं, मणामं, धि
 ऊ, विसासिय, समयं, अणुमय, बहुमयं, जंमकरुस
 माण, रयणकरंमग्नूयं, माणसियं, माणं उहं, माणं
 खुदा, माण पीवासा, माणं बाला, माणं चोरा, माणं दं
 सा, माण मसगा, माणं वाहियं, पित्तियं, कप्फियं संजीमं,
 सन्निवाहिय, विवहारोगायका, परिसहा, उवसग्गा, फा
 सा फुसति, एवं पीयण चरिमेहिं, उस्सास निस्सासे
 हिं, वोसिरामि, ति कहु एम शरीर वोसिरावनि, कालं
 अणवकंखमाणे, विहरामि, एद्वी सद्धणा परूपणा क
 रिये, तिवारें फरसनार्ये करी शुद्ध, एदवा अपेत्तिम म
 रणातिय, सलेहणा, जूसणा, आराहणाना पंच अइ
 यारा, पयाला जाणियवा, न समायरियवा, तं जहा
 ते आलोउ, इहलोगाससणउगे, परलोगाससण

होय तो पोतानी भरजी माफक जेहवो करे, तेवो आंगार राखे
 (जावजीवाए के०) ज्यां सूधी जीवुं त्यां सूधी एम चारे आहार
 पच्चस्कीने, (ज के०) जे (पियं के०) प्रिय, हतुं एतु (श्म स
 रीर के०) आमारु शरीर, (इहं के०) वारं वार वांढतुं हतु मार्टे
 इष्टकारी, (कर्त के०) कांतिवत, एटले विशिष्ट वर्णादिकें करी युक्त
 (पीयं के०) प्रीतिकारी एटले इडियने हर्षतुं करणहार (मणुन्नं
 के०) मनोइ एटले मननें गमतुं, (मणाम के०) मनने सदाइ
 अत्यंत वल्लज, लागे मार्टे मणाम ए पांच शब्दनो अर्थ एकार्थ
 जाणवो, (धिक्क के०) धीरज देणार, (विस्तसियं के०) विश्वा
 सनु ठपजावनार, (समयं के०) मानवा योग्य, (अणुमयं के०)
 विशेषें मानवा योग्य, (बहुमयं के०) घणुं वारवार मानवा
 योग्य, (नमकरंमसमाण के०) आनरणना आवला समान,
 व्हालु (रयणकरंमगन्युं के०) रत्नना करमीया समान, (माणसियं
 के०) रखे मने शीत लागे, एटले टाढवाय, एम मानतो (माणं
 वन्ह के०) रखे मने ताप लागे, एम मानतो (माणं खूहा के०)
 रखे मने चूख लागे, एम मानतो (माण पिवासा के०) रखे
 मने तृषा लागे, (माणं वाला के०) रखे मुज्जे व्याल एटले
 सर्पाविक करहे, एम मानतो (माण चोरा के०) - रखे मने चो
 रनो जय ठपजे, (माण दसा के०) रखे मने मास करहे, (माणं
 मसगा के०) रखे मने मञ्जर करहे, (माण बाहियं के०) रखे
 मने व्याधि ठपजे (पित्तियं के०) रखे मने पित्त जागे, (सं
 नीम कप्पियं के०) रखे मने नयंकर श्लेष्म कफ ठपजे, (सन्नि
 वाश्यं के०) रखे मने सन्निपात ते त्रिदोष थाय, (विचहारोगायका
 के०) रखे मने विवध प्रकारनो रोग उत्पन्न थाय, (परिसहा
 ठवसगा के०) रखे मने बावीश जातिना परिसह तथा देवतादि
 कना करेला ठपसर्ग ठपजे, (फासा फुसति के०) एवी रीतना

માવક, આવિકારૂપ ચારે તીર્થને સ્વમાવીને, સર્વ જીવરાશિ સમા
 રીને, પૂર્વે જે વ્રત આદર્યા છે, તેના જે અતિચાર દોષ લાગા હોય
 તે સર્વ સજારી સજારીને ગુર્વાદિક પાસેં (આલોડ કે०) પ્રકાશી
 તેથી (પઠિક્ષમિ કે०) નિવૃત્તિને (નિદી કે०) તેની આત્માની
 સાર્થે નિદા કરીને, (નિ શલ્લયસ્ને કે०) શબ્ય રહિત થઈને (સર્વ
 પાણાશ્વાયં કે०) સર્વ પ્રકારેં જીવ હિસા કરવાનાં, (પચ્ચસ્કામિ
 કે०) પચ્ચસ્કાણ કરું હુ, (સઘ મુસાવાયં પચ્ચસ્કામિ કે०) સર્વ
 પ્રકારનુ જૂંતુ ઘોલવાના પચ્ચસ્કાણને, (સઘ અદિન્નાદાણં પચ્ચ
 સ્કામિ કે०) સર્વ પ્રકારનુ અણદીધુ લેવાના પચ્ચસ્કાણને કરું હું,
 (સઘ મેદ્ધુણ પચ્ચસ્કામિ કે०) સર્વ પ્રકારેં મેંથુંન, સેવવાનુ પચ્ચ
 સ્કાણ કરું હુ, (સઘ પરિગ્ગહ પચ્ચસ્કામિ કે०) સર્વથા નવપ્રકા
 રના પરિગ્રહ રાસવાને પચ્ચસ્કુ હુ, (સઘ કોદં કે०) સર્વ ક્રોધ
 (માણ કે०) સર્વ માનથી મામીને (જાવમિદ્ધા દસણ સઘં કે०)
 યાવત્ મિથ્યા દરિસણ શબ્ય પર્યંત ૧૦ પાપ સ્થાનક (સર્વ અ
 કરણિક્કં કે०) સર્વ નહીં કરવા યોગ્ય તેને, (પચ્ચસ્કામિ કે०)
 પચ્ચસ્કું હુ, (જાવજીવાણ કે०) જાવ જીવ સુધી, (તિવિદં
 કે०) ત્રીન કરણેં કરી, (તિવિદેણ કે०) ત્રીન જોગેં કરી, (ન
 કરેમિ કે०) હુ કરુ નહિં (ન કારવેમિ કે०) બીજા પાસેં કરાડું
 નહીં, (કરંતંપિનાણુજાણમિ કે०) કોઈ પાપ કરે તેને પણ હુ રૂઝું
 જાણુ નહીં, (મણસા કે०) મનેં કરી (વયસા કે०) વચનેં
 કરી (કાયસા કે०) કાયાર્યેં કરી એમ અદારે પાપ સ્થાનક ૫
 પચ્ચસ્કીને (સઘં કે०) સર્વ (અસણ કે०) અન્ન (પાણ કે०)
 પાણી (સ્વાશ્મ કે०) મેવો (સાશ્મ કે०) સ્વાદિમ મુલ્લવાસ એ
 (ચચવિદંપિ આહારં પચ્ચસ્કામિ કે०) ચાર પ્રકારના આહારને પ
 ચ્ચસ્કીને શ્વા નિરાગારી એટલે સાધુ અનશન કરતો હોય તો એ
 રીતેં પાઠ કહે અર્થે સાગારી એટલે આવક જો અનશન કરતો

होय, सेवराव्यो होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्यो होय,
ते अनंता सिद्ध केवलीनी साखें मिळामि डक्कडं॥२१

अर्थ - एना अर्थमां नियम लीधेली वस्तुने फरी सेवनाना दोष
चार प्रकारें ठे, ते कहे ठे १ अतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने फरी
जोगववानी इष्टा करवी, २ व्यतिक्रम ते नियम लीधेली वस्तुने लेवा
माटें चालवु, ३ अतिचार ते नियम लीधेली वस्तु जोगववा माटें
हाथमां लेवी, ४ अनाचार ते नियम लीधेली वस्तुने जोगववी॥२१॥

एम कहीने पढी १७ पाप स्थानक कहीजें; तेनो पाठ प्रथम
लखायेलो ठे, माटें अर्ही अर्थज लखीयें ठेयें १ (प्राणातिपात
के०) जीवनी हिंसा, २ (मृषावाद के०) जूतुं बोलवुं, ३ (अ
वृत्तादान के०) चोरी करवी, ४ (मैथुन के०) मैथुन सेववु,
५ (परिग्रह के०) परिग्रहनी वांढा, ६ (क्रोध के०) रोष, ७
(मान के०) अहंकार ८ (माया के०) कपट, ९ (लोभ के०
लोभ, १० (राग के०) प्रीति, ११ (द्वेष के०) द्वेषनाव, १२
(कलह के०) क्लेश, १३ (अन्यारव्यान के०) खोटु आज वेतुं,
१४ पैशुन्य के०) पारकी चाढी करवी, १५ (परपरिवाद के०)
अनेराना अवगुण बोलवा, १६ (रतिअरति के०) हर्ष शोक,
१७ (मायामोसो के०) कपट सहित जूतुं बोलवुं, १८ (मिथ्या
वंसण सद्ग के०) आनिग्रहिक अनानिग्रहिकादिक पांच प्रकारनां
जे मिथ्यात्व ठे, तेने सेवनाना जे परिणाम ते एव अढारे पाप
स्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्या होय,
ते अनता सिद्ध केवलीनी साखें मिळामि डक्कडं ॥ २१ ॥ इति ॥

विधि - पढी “इष्टामि गमि” नी पाटी कहीजें, आर्ही सुधी
जिमणो गोढो उर्चो राखीने वेसीजें, पढी खनो थड हाथ जोढी
ने “तस्त धम्मस्त” नी पाटी कहीजें, ते कहे ठे -

पूर्वोक्त स्पर्शयी माहारा शरीरनी रक्षा करतो हतो (एवपिण के०) एवु जे माहारु प्रिय एटले वाहालु, शरीर तेने (चरमेहि के०) ठेहला, (उस्तासनिस्तासेहि के०) स्वासोव्वास्त सुधि, जी वना सबध आश्रयी (वोसिरामि के०) वोसिरावु बु, तछु हुं (ति कद्रु के०) एम कदीने एम शरीर वोसिरावीने ए शरीरनो सबध तजी देइने (काल अणवकंखमाणे के०) कालने जी ववानी आशा, तथा मरणनो जय अण वांढतो थको (वि हरामि के०) विचरीश ठे एहवी सहहणा परूपणा करियें, ति वारें फरशनार्यें करी शुद्ध एहवा अपश्चिम मरणांतिय सखेह णा फूसणा आराहणाना पंच अश्वारा जाणियवा, न समाव रियवा, तं जहा ते आलोठ (इहलोगाससप्पजंगे के०) इहे लोक सबधि सुखनी वाढना करे के दु चक्रवर्त्यादिक राजा थारं, (परलोगाससप्पजंगे के०) परलोक संबधि सुखनी इहा करे के हुं देवता थारं, इड थार, (जीवियासंसप्पजंगे के०) जीवितप्पनी इहा करे के लोको महारो घणो सत्कार करे ठे, माटें जाछु जीहुं तो सारु, (मरणाससप्पजंगे के०) मरणनी इहा करे के इ ख पाहुं हुं, माटें तरत मरी जाठ तो इ खमांथी हूहुं (कामजोगाससप्प जंगे के०) काम जोगनी वाढना करे जे आ तपना प्रजावें हुं रुढा रसादि सांसारिक कामजोग प्राहुं' एवी रीतनी जे आशंता एटले वांढारूप प्रयोग एटले जे मननो व्यापार तेने कामजो गाशसप्रयोग अतिचार कदीर्यें (तस्स मिहामि डक्कड के०) तेहुं पाप मने निष्फल थारु ॥ १० ॥ इति ॥

एम समकित पूर्वक वारव्रत सलेपणा सहित एहने विपे जे कोइ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अणाचार जाणता अजाणता मन वचन कायार्यें करी सेव्यो

क्रोड केवली, उत्कृष्टा नव क्रोड केवली, केवल ज्ञान, केवल दर्श
नना धरणहार, सर्व इव्य क्षेत्रकाल जावना जाणणहार ॥ सर्वैय्या ॥
नमुं सिरि अरिहंत, करमाको कियो अत, हुवा सो केवलवत,
करुणा नमारी दे ॥ अतिसे चोतीस धार, पेंतिस वाणी उ
च्चार, समजावे नर नार, पर ठपगारी दे ॥ शरीर सुंदराकार, सूर
ज सो जल्लकार, गुण दे अनंत सार, दोष परिहारी दे ॥ केत दे
तिलोकरिक्क, मन वच काय करी, लली लली वारं वार, वदणा ह
मारी दे ॥ १ ॥ एसा अरिहंत जगवत दीन वयाल महाराजको
दिवस सबधी अविनय, आशातना, कीधी होय तो हाथ जोडी,
मान मोडी, काय सकोडी, वारं वार खमावुं बु, मण्णण वदामि
१००० वार नमस्कार करुं " तिस्कुत्तो आयाहिण, पयाहिणं
वदामि, नमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कछ्छाण, मगलं, देवय,
चेश्यं, पक्कुवासामि " आप मांगलिक ठो, वत्तम ठो, दे स्वामि
नाथ ! आपको इणनवें परजवें जवोनवें सदाकाल शरणो होजो
॥ २३ ॥ इति प्रथम पद संपूर्ण ॥

२ बीजे पदें श्री सिद्धजगवत महाराज ते पन्नर जेवें अनता
सिद्ध ठे, आठ कर्म खपावीने मोक्ष पदोता ठे, १ तीर्थ सिद्धा, २
अतीर्थ सिद्धा, ३ तीर्थकर सिद्धा, ४ अतीर्थकर सिद्धा, ५ स्वयं बु
द्ध सिद्धा, ६ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा, ७ बुद्धवोधित सिद्धा, ८ स्त्रिलि
ग सिद्धा, ९ पुरुषलिंग सिद्धा, १० नपुंसकलिंग सिद्धा, ११ स्व
लिंग सिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहस्थलिंग सिद्धा, १४
एक सिद्धा, १५ अनेक सिद्धा, जिहां जन्म नही, जरा नही, मरण
नहि, जय नही, रोग नही, सोग नही, दुख नही, वारिड नही, कर्म
नही, काया नही, मोह नही, माया नही, चाकर नही, ठाकर
नही, जूख नही, ठूपा नही, ज्योतिमें ज्योति विराजमान, सक
ल कारज सिद्ध करीने चषदे प्रकारें पन्नरे जेवें अनता सिद्ध जय

તસ્સ ધમ્મસ્સ કેવલિપણ્ણત્તસ્સ અપ્પુઠ્ઠિઝ્ઠમિ,
આરાહણાણ, વિરઝમિ વિરાહણાણ, તિવિદ્દેણ પ
હિક્કંતો, વદામિ જિણે ચઝઘીસં ॥ ૨૨ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ - (તસ્સ ધમ્મસ્સ કેવલિપણ્ણત્તસ્સ કે०) તે કેવલિના
પિત એવા શ્રાવક ધર્મને, (આરાહણાણ કે०) આરાધવાને માટે
(અપ્પુઠ્ઠિઝ્ઠમિ કે०) હું સારી રીતે પાલન કરવાને ઇચ્છો છું, અ
ને તે ધર્મની (વિરાહણાણ કે०) વિરાધના કરવાયકી (વિરઝમિ
કે०) હું વિરમ્યો છું, એટલે નિવર્ત્યો છું (તિવિદ્દેણ કે०) ત્રિવિધે ક
રી, એટલે મન, વચન અને કાયાયે કરી, (પહિક્કંતો) પ્રતિક્રાં
ત થકો એટલે અતિચાર પાપયકી નિવર્ત્યો થકો (જિણેચઝઘીસં
કે०) ચોવીશ જિન પ્રત્યે (વદામિ કે०) હું વાંહું છું ॥ ૨૨ ॥

વિધિ - પઠી “ઇદ્ધામિ સ્વમાસમણા” રી પાઠી દોય વાર વિધિ
પૂર્વક કહીજે, પઠી આજ્ઞા લઈને ઇક્કહુ આસણે વેસી થેહુ હાથ
ગોમ્તાની વચાલે રાખી ધરતીયે મસ્તક, લગાવીને “પાંચ પદા
રી વદણા” કરીયે, તે કહે છે -

ઇદ્ધાં પ્રથમ નવકાર કહેવો, પઠી ૧ પહિલે પવે શ્રીઅરિહતજી
તે જઘન્યથી વીશ તિર્થંકરજી, ઇત્તહુદ્ધા એકસો સિત્તેર દેવાધિદેવ
જી તેમાંહિ વર્તમાન કાલે વીશ વિદ્ધરમાનજી માહાવિદેહ ક્ષેત્ર
માંહિ વિચરે છે, એક હજાર આઠ લક્ષણના ધરણહાર, ચોત્રીસ
અતિશય, પેંતીસ વાણીયે કરી વિરાજમાન છે, ધાર ગુણે કરી સ
હિત, અઢાર દોષયકી રહિત, ચોસઠ ઇન્દ્રના વદનિક પૂજનિક,
અનંત જ્ઞાન, અનંત વર્ણન, અનંત ચારિત્ર, અનંત બલવીર્ય, અનં
ત સુખ, દિવ્યધ્વનિ, જામખલ, સ્ફાટિક સિદ્ધાસન, અશોકવૃક્ષ, કુ
સુમરુદિ, દેવહંડુજી, ઇત્ર ધરાય, ચામર વિંજાય, પુરુષાકાર પરાક્રમના
ધરણહાર, અદ્વાઈતીય પંદર ક્ષેત્રમાં વિચરે, તથા જઘન્ય તો દોય

१००८ वार तिकुत्ताना पाठयी मण्डण वदामि एटले नमस्कार करु बु यावत् नवोनव शरणं होजो ॥ १५॥ इति त्रींशु पद संपूर्ण ॥

४ चोथे पदे श्री उपाध्यायजी महाराज पञ्चीश गुणें करी सहित ठे, ते पञ्चीश गुण कहे ठे? इगियारा अंगना नणणहार ते अगीयार अंग कहे ठे श्री आचारगजी, सुयगडांगजी, गणांगजी, समवा यांगजी, नगवतीजी, झाताधर्मकथाजी, उपासकदसांगजी, अंतग ददसांगजी, अनुत्तरोववाईजी, प्रश्नव्याकरणजी, विपाकसूत्रजी ॥ ए इगियारा अंगनो अर्थ पाठ संपूर्ण जाणो (१२ उपांग नणो, ते) ठववाईजी, रायप्पसेणीजी, जिवाणिगमजी, पन्नवणाजी, जंबुदीपपप्पु ती, धवपप्पुती, सूरपप्पुती, निरयावलिया, कप्पविमसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वन्हिदिशा (४ मूल सूत्र) उत्तराध्ययन, दशवैकालि क, नदीसूत्र, अनुयोगहार (४ ठेव यथ) दशाश्रुत स्कंध, वृह त्कल्प, व्यवहार, निशीथ अने धत्तीसमुं आवश्यक ॥ आदि देइ अनेक यथना जाणनार, चौद पूर्वना पाठी, सात नय, निश्चय व्यव हार, चार प्रमाणाविकें करी स्वमत तथा अन्यमतका जाण मनुष्य अथवा देवता कोइ पण जेने विवावमां ठजवाने समर्थ नही, जिन नही पण जिन सरिखा, केवली नही पण केवली सरिखा ॥ सवै ज्या ॥ पढत इगियारा अंग, करमासुं करे जंग, पाखमीको मान जंग, करण हुस्यारी हे ॥ चऊद पुरवधार, जानत आगमसार, नवि नके सुखकार, भ्रमता निवारी हे ॥ पढावे नविक जन, थिर कर वेत मन, तप करी तावे तन, ममता निवारी हे ॥ केत हे तिलो करिस्क, ज्ञानज्ञानु परतिस्क, ऐसे उपाध्याय, ताकु धंदणा हमा री हे ॥ १ ॥ एसा श्री उपाध्यायजी माहाराज मिथ्यात्वरूप शंघ कारना मेटणहार, समकितरूप उद्योतना करणहार, धर्मयकी मगता प्राणीने थिर करे, सारण, वारण, धारण, इत्यादिक अनेक गुण सहित ठे, एदवा जे श्री उपाध्यायजी माहाराज आपकी दि

वंत दुवा, अनंत सुखमां जीन, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अमं
 त चारित्र, द्वायिकसमकित, निराबाध, अटल अवगाहना, अ
 मूर्ति, अगुरुजघु, अनंतवीर्य, आठ गुणें करी सहित ॥ सवेय्या ॥
 सकल करम टाल, वश कर लियो काल, मुगतिमें रह्या माल, आत
 माका तारी हे ॥ देखत सकल जाव, दुवा हे जगत राव, सबाही
 खायिक जाव, जये अविकारी हे ॥ अचल अटल रूप, आवे न
 वि जवकूप, अनुप सरूप कप, ऐसे सिद्धधारी हे ॥ केत हे ति
 लोकसिक्क, बतावो ए वास प्रष्ट, सदाही उगत सूर, वंदणा हमारी
 हे ॥ १ ॥ ऐसा सिद्ध जगवतजी माहाराज आपकी दिवस संबंधी
 अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोड़ी मान मोड़ी काब
 सकोड़ी वार वार खमावुं बु, तिरकुत्ताना पाठसुं मण्डण वदामि
 नमस्कार करुं बु जावतुं जवोजव शरणुं होजो ॥ १५ ॥ इति ॥

३ त्रीजे पदे श्रीआचारजजी ठत्तीस गुणें करी विराजमान, पां
 च माहाव्रत पाळे, पांच आचार पाळे, पांच इन्द्रिय जीते, चार
 कषाय टाळे, नव वाढ छुद्ध ब्रह्मचर्यना पालणहार, पांच समि
 तियें समित्ता, तीन गुप्तियें गुप्ता, आठ संपदा सहित ॥ सवेय्या ॥ गु
 ण हे ठत्तीस पुर, धरत धरम कर, मारत करम कूर, सुमति विचा
 री हे ॥ छुद्धसों आचारवत, सुवर हे रूप कत, जणिया सवि सि
 धंत, वांचणी सुप्पारी हे ॥ अधिक मधुरवेण, कोइ नही लोपे के
 ण, सकल जीवाका सेण, कीरत अपारी हे ॥ केत हे तिलोकरि
 स्क, हितकारी वेत सीख, ऐसा आचारज ताकू, वदणा हमारी हे
 ॥ १ ॥ ऐसा आचारज न्यायपट्टी, जड्कपरिणामी, परमपूज्य,
 कल्पनिक अचित्त वस्तुका ग्रहणहार, सचित्तका त्यागी, वैरागी,
 महागुणी, गुणका अनुरागी, सोजागी, एहवा श्री आचारजजी
 माहाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आशातना कीधी होय
 तो हाथ जोड़ी मान मोड़ी काया सकोड़ी वार वार खमावुं बुं ॥

एहवा श्री मुनिराज महाराज आपकी दिवस संबंधी अविनय आ
शातना कीधी होय तो हाथ जोड़ी, मान मोड़ी, काया सकोड़ी,
वार वार खमाबु बु १००० वार तिस्रुताना पाठसुं मन्त्रएण वदामि
एटले नमस्कार करुं बु जावत सदाकाल शरणुं होजो ॥ १४ ॥
इति पांचसुं पद सपूर्ण ॥ ५ ॥

विधि - पढी उना थइ आयरिय उवझाए कहीजें, ते कहे ठे —

आयरिय उवझाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥

जे मे केइ कसाया, सबे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सब

स्स समणसंघस्स, जगवउ अंजलिं करिय सीसे ॥

सवं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयपि ॥२॥ स

वस्स जीव रासिस्स, जावउ धम्म निहिय नियचि

तो ॥ सवं समावइत्ता, खमामि सबस्स अहयपि ॥३॥

अर्थ—पंचाचार सपन्न अथवा ठत्रीश गुणें विराजमान, अर्थ
दानना दातार, तेने (आयरिय के०) अचार्य कहीयें तथा समी
प रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना जणावनार अथ
वा पञ्चीश गुणें करी विराजमान तेने (उवझाए के०) उपाध्याय क
हीयें, तथा ग्रहण शिक्षा अने आसेवना शिक्षाने योग्य होय, तेने
(सीसे के०) शिष्य कहीयें, तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणें
करीने जे आपण सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार,
होय तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहीयें, तथा जे एक आचार्य
नो शिष्य सत्तान परिवार, तेने (कुल के०) कुल कहीयें तथा
घणा आचार्यना शिष्य सत्तान परिवार, तेने (गणे के०) गण एटले
समुदाय कहीयें (अ के०) अकार ते वली वली कहेवाने अर्थ
ठे, ए सर्वनी उपर (मे के०) महारे जीवें (जे के०) जे (केइ
के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कपाय कीधा होय,

वससवधी अविनय आशातना कीधी होय तो हाथ जोडी मान मोढी, काया सकोढी, वारं वार खमाबु हुं १००८ वार तिस्कुता नापाठ्यी मञ्जुएण वंदामि एटले नमस्कार करु हुं यावत् नवो नव शरणु होजो ॥ ३६ ॥ इति चोष्टुं पद सपूर्ण ॥ ४ ॥

(५) पांचमे पर्वे श्री साधुजी ते पोतारा धर्मा चार्यजी (आ ठेकार्णे आप आपका गुरु मादराजको नाम छेणो) आद देइने जघन्य तो दोय हजार क्रोड साधु साधवी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधु साधवी, अर्द्धाई द्वीप पन्नरे क्षेत्रमें जयवता विच रे ठे, ते साधुजी केहवा ठे ? पांच महाव्रतका पालणहार, पांच इंद्रियोका जितणहार, चार कपायका टालणहार, नाव सच्चे, कर्ण सच्चे, जोग सच्चे, कृमावत, वैराग्यवत, मन समाधारणीया, वसत माधारणीया, कायसमाधारणीया, नाण सपन्ना, दंसणसंपन्ना, चारित्तसपन्ना, वेदणीसमा अद्वियासनिया, मरणांतिसमा अद्विया सनिया, एहवा सत्तावीश गुणें करी सहित, बारें जेवें तपका करणहार, सत्तरे जेवें सयमना पालणहार, तेत्तीस आशातनाका टालणहार, बेहेंतालीश दोष टालीने आहार पाणीका छेवणहार, सत्तेतालीस दोष टालीने जोगवणहार, बावन अनाधीर्णके टालणहार, तेछ्या आवे नही, नेथ्या जिमे नही, सचिसका त्यागी, अचिसका जोगी, बावीस परिसदके जितणहार, अनेकलब्धिका धरणहार, लोचको करणो अणवाणोपणें चालणो, इत्यादिक काय क्लेशका करणहार, मोह ममता रहित ॥ सवैच्या ॥ आवरी सजम नार, करणि करे अपार, सुमति गुपतिधार, विकथा निवारी हे ॥ जयणा करे ठ काय, सावद्य न धोले वाय, बुजाइ कपाय लाय, किरिया जंमारी हे ॥ ज्ञान जणे आगे जाम, छेवे जगवत नाम, धरमको करे काम, ममताके मारी हे ॥ केत हे तिलोक रिक्क, कर माको टाले विख, एसा मुनिराज ताकू वंदणा हमारी हे ॥ १ ॥

विधि - पढी "चोराशी लाख जीवा योनि" खमाववानो पाठ
कहिये पढी "खामेमि सब जीवेनो" पाठ कहिये, ते लखीये ठेये.

अथ चोराशीलाख जीवायोनि प्रारंज ॥

॥ सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्रकाय, सात लाख तेवकाय,
सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउद लाख
साधारण वनस्पतिकाय, वे लाख वैडिय, वे लाख तेंडिय, वे लाख चौ
रिंडिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पं
चेंडिय, चौद लाख मनुष्य, एव चोराशी लाख जीवायोनिमाहे म
हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाय्यो होय, हणतां प्रत्ये
अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मने, वचने, कायार्ये करी १७, २४, १२०
आगारे लाख चोवीस हजार एकसोवीस प्रकारें तस्त मिळामि
डकड ॥ ३१ ॥ इति ॥ एनो अर्थ सुगम ठे माटे लख्यो नथी

अथ खामेमि सबजीवेनो पाठ प्रारंज ॥

॥ खामेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे
सब नूएसु, वेरं मक्षं न केणइ ॥ १ ॥ एवमहं आलो
इअ, निंदिअ गरहिअ डुगंठिअं सम्मं ॥ तिवि
हेण पडिक्कतो, वदामि जिणे चउवीसं ॥ ३२ ॥

अर्थ - (खामेमि सबजीवे के०) सर्व जीवो प्रत्ये हुं खमावुं
बु एटले अनता जवने विपे पण अज्ञान मोहावृत्तत्वे करीने जी
वोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावु बु अने (सबेजीवा के०)
ते सर्व जीवोपण (मे के०) महारा अपराध प्रत्ये, (खमंतु के०)
खमो, माफ करो, ए कृमनक्षमापनमा कारण कहे ठे के (सबनूए
सु के०) सर्व नूतोने विपे (मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रि
जाव ठे, (केणइ के०) कोइ जीवनी सार्ये (मक्ष के०) महारे

ए कारणें (सबे के०) सर्व, ते आचार्यादिक प्रत्ये (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायार्थें करी (स्वामेमि के०) हुं स्वामुं बु ॥१॥ (सबस्ससमणसपस्सजगवउ के०) सर्व श्रमण सघरूप जगवतना कीधा जे अपराध ते (अंजलीक रियसीसे के०) मस्तकनी उपर वे हाथ प्रत्ये करीने एटले स्थापीने नघीनूत यइने (सबखमावइत्ता के०) ते सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहे के (खमामि सबस्सअहयंपि के०) ते सर्वना करेला अपराध प्रत्ये दुपण खमुं बु, एटले सम्यक्प्रकारें सहन करुं बु ॥२॥ (सबस्सजीवरासिस्स के०) एकेंडियाविक सर्व जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते (जावउ के०) जावथी (सबखमावइत्ता के०) सर्व अपराध प्रत्ये खमावीने, वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समजाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेनें विपे (निहिय के०) निधित कछुं ठे एटले स्थाप्यु ठे, जावथकी आरोपण कछुं ठे, (नियचित्तो के०) निजचित्त एटले पोतानु मन जेणें एहवो (अहयंपि के०) दुपस (सबस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध, ते अपराध प्रत्ये (खमामि के०) खमुं बुं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३० ॥

पढी अट्ठाइ दीपनो पाठ कहीजें, ते कहे ठे

अट्ठाइ दीप तथा पन्नर खेत्र माहि तथा बाहेर, श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाळे, तपस्या करे, जावना जावे, संवर करे, सामायिक करे, पोसह करे, पडिक्कम णा करे, तीन मनोरथ, चउदे नियम चिंतवे, एक व्रतधारी, जाव बारेव्रतधारी थका जे जगवतकी आझामां हि विचरे, अमाराथकी मोटाने हाथ जोडी, पगें लागी ने, खमावु बु, मोटाने वार वार खमावु बु ॥३॥ इति जापा ॥

जें, सवत्सरी पढिक्रमणो (४० लोगस्स) नु ध्यान कीजें संवत्सरी सवधि चालीश लोगस्सनो काउस्सग्ग लख्यो ठे, परंतु एमां केटला एक जाइयो न्यून काउस्सग्ग पण करे ठे, माटें जेमना धर्माचार्यना आदेश उपदेश मुजव जेटला लोगस्सना काउस्सग्ग करवानी परंपरा चालती आवेली होय तेमणें तेटला लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो पढी नमो अरिहताण कही काउस्सग्ग पारीजें पढी काउस्सग्गमांहि आर्त्तध्यान, रौडध्यान ध्यायुं होय, धर्मध्यान बुद्धध्यान न ध्यायुं होय तस्स मिह्मामि डक्कड, एम कहीजें पढी प्रगटपणो (एक लोगस्स) कहीजें पढी पूर्वली पेरें “इह्मामि खमासमणायी मांमीने अप्पाण वोसिरामि’ पर्यंतनो पाठ होय वार कहीजें इति सामायिक चोविसओ, वदनक पढिक्रमणुं अने काउस्सग्ग ए पांच आवश्यक पुरां ययां

हवे ठण आवश्यकना कामी इम कही, पढी गुरु मुनिराज पा सें तथा वडेरा पासें, इणारो योग न डुवे, तो आपणी मेलें पञ्चकाण ए धारणा प्रमाणें करीयें, ते कहे ठे -

गंठीसहि, मुठीसहि, नवकारसी, पोरिसी, साह पो रिसी, आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहपि, चउ विहपि, आहारं, असणं, पाण, खाइमं, साइम, अन्नबणाओगेणं, सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सबसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥ इति ॥ ३४ ॥

विधि - सामायिक, चउविसओ, वदनक, पढिक्रमणु, काउस्सग्ग अने ठठु पञ्चकाण ए ठ आवश्यकमांहि जाणतां अजाण तां जे कांइ अतिचार वोप लाग्यो होय, तथा पाठ उच्चारतां कानो, मात्रा, मींहु, पद, अक्षर अधिको उंगो दलवो जारी आयो पाठो

(वेर के०) वैरजाव (न के०) नथी ॥ १ ॥ (एव के०) एम
 (आलोक्ष्य के०) पाप आलोच्यु प्रकाश कीजु (निदिश्य के०)
 आत्म साखें निदु, (गरहिद्य के०) गर्हु (झगठिद्य के०) झ
 ग्यु अत्यंत खोटु जाण्युं, ते माटे (सम्म के०) सम्यक् प्रकारें
 ए सम्यक् पद सर्व पदोनी सार्थे पूर्वमा योजवु (त्रिविहेण के०)
 त्रिविधें करी एटले मन वचन अने कायायें करीने (पढिक्कतो के०)
 अतिचारादिक पापयकी प्रतिकांतयको, एटले पाठो फरतो थ
 को, अर्थात् पापने पढिक्कमतो थको, एवो जे (अह के०) हुं ते
 (चउवीसजिणे के०) चोवीस जिन प्रत्ये (वदामि के०) वांड बुं ॥

विधि —पढी “ अढारे पापस्थानक ” कहीजें इति सामायि
 क, चउविसजो, वदणा, पढिक्कमणु, चार आवस्सग पूरा थयां
 हवे तिस्कुत्ताना पाठसेंति पांचमा आवस्सगनी आझा लीजें
 पढी “ वैवसिकप्रायश्चित्त ” कहिजें, ते कहे ठे —

दैवसिक प्रायश्चित्तविशुद्दनार्थं करेमि काउस्सग ॥३३॥

अर्थ —(वैवसिक के०) दिवस संबंधि, (प्रायश्चित्त के०) प्राय
 श्चित्त (विशुद्दनार्थ के०) शुद्ध करवा माटे (काउस्सग के०) कायों
 त्सर्ग एटले कायानी स्थिरता प्रत्ये (करेमि के०) हु करु बु ॥३३॥

विधि —पढी “ नमो अरिहंताणथी मामी यावत् नवकारनो संपूर्ण
 पाठ ” कहीजें, पढी “ करेमि जते सामाझ्यथी मामी (अप्पाण
 वोत्तिरामिनो पाठ कहीजें ” “ पढी इष्मामि छामि काउस्सगथी मा
 मीने यावत् “ तस्स मिष्मामि झक्कड ” पर्यंत पाठ कहीजें “ पढी त
 स्स उत्तरीकरणेण ” थो मामीने अप्पाण वोत्तिरामि ” सुधीनो पा
 ठ कहीने पढी काउस्सग करवो, तेमा मनमा देवसि, राइसि (४
 लोगस्स) नु ध्यान कीजें परकी पढिक्कमणे (१५ लोगस्स) नु
 ध्यान कीजें चोमासी पढिक्कमणे (२० लोगस्स) नु ध्यान की

जें, सवत्सरी पढिक्रमणे (४० लोगस्त) नु ध्यान कीजें सव
त्सरी सवधि चालीश लोगस्तनो काउस्तग लख्यो ठे, परंतु एमां
केटला एक जाइयो न्यून काउस्तग पण करे ठे, माटें जेमना ध
र्माचार्यना आदेश उपदेश मुजब जेटला लोगस्तना काउस्तग
करवानी परपरा चालती आवेली होय तेमणें तेटला लोग
स्तनो काउस्तग करवो पढी नमो अरिहताण कही काउस्तग
पारीजें पढी काउस्तगमाहि आर्तध्यान, रौडध्यान ध्यायुं होय,
धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्यायुं होय तस्त मिहामि डकड, एम
कहीजें पढी प्रगटपणे (एक लोगस्त) कहीजें पढी पूर्वली पेरें
“इहामि स्वमासमणार्थी मामीने अप्पाण वोसिरामि” पर्यंतनो पाठ
वोय वार कहीजें इति सामायिक चोविसठो, वदनक पढिक्रमणुं
अने काउस्तग ए पांच आवश्यक पुरां थयां

हवे ठठा आवश्यकना कामी इम कही, पढी गुरु मुनिराज पा
सैं तथा वडेरा पासैं, इणारो योग न हुवे, तो आपणी मेलें पञ्चका
ण धारणा प्रमाणें करीयें, ते कहे ठे -

गंठीसहि, सुठीसहि, नवकारसी, पोरिसी, साढ पो
रिसी, आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहपि, चउ
विहपि, आहार, असण, पाण, खाइमं, साइम,
अन्नवणानोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं,
सवसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ३४ ॥

विधि - सामायिक, चउविसठो, वदनक, पढिक्रमणु, काउस्त
ग अने ठठु पञ्चकाण ए ठ आवश्यकमांहि जाणतां अजाण
तां जे कांइ अतिचार दोष लाग्यो होय, तथा पाठ वच्चारतां कानो,
मात्रा, मीहुं, पद, अक्षर अधिको उठो दलवो ज्तारी आयो पाठो

कह्यो कहेवाणो होय, तस्स मिहामि डुकड ॥ मिथ्यात्वनुं पडिक्कम
 णु, अन्नतनु पडिक्कमणु, कपायनु पडिक्कमणु, प्रमादनु पडिक्कमणु,
 अयुज्ज जोगनु पडिक्कमणु, ए पांच पडिक्कमणामांहेलु पडिक्कमणु
 नही कीनु होय, तस्स मिहामि डुकड ॥ गया कालनुं पडिक्कमणु,
 वर्त्तमान कालना सवर, आवता कालना पञ्चस्काण, तेने विपे जे
 दोष लागो होय, तस्स मिहामि डुकड ॥ ३५ ॥ अइ शुइ मगल ॥

हवे नीचें बीसी मावो गोडो वज्रो राखीने बे वार नमोड्डुण
 कहीजें पढी वज्रो अइने श्रीसीमधरस्वामीजी प्रत्यें पाचे अंग न
 मावीने तिस्कुत्ताना पाठथी १००० वार वदना करुं एम क
 हीने नमस्कार करवो पढी पोत्ताना धर्माचार्यजीने तिस्कुत्ताना पा
 ठथी वदना करीने उपाश्रयमां जो कोइ मुनिराज होय तो तेमने
 पण तिस्कुत्ताना पाठथी वदना करीने खमावबुं पढी तिहांज र
 हेजा साधर्मिनाइउं माहेला जे तपस्या करनार होय तेमने सुख
 शाता पूढीने खमत खामणां करवा अने अन्य साधर्मिनाइउं
 सार्थें पण अविनय आशातना सबधि खमत खामणा करवां बे
 वसिपडिक्कमणामांहे मिहामि डुकडं आवे तिहां विवस संबंधि
 मिहामि डुकडं दीजें राइसीमें राइसी संबंधि, परकीमें देवसी
 परकी सबधि, चोमासीमें, देवसी चोमासी सबधि, सबहरीमें स
 वत्सरी संबंधि, मिहामि डुकड इम कहीजें ॥ ए पडिक्कमणविधि
 कह्यो, बीजो अंतर विधि वढेराथी जाणवो ॥

॥इति प्रतिक्रमण अर्थविधि सपूर्ण ॥

॥ અથ અર્થ સહિત દશ પદ્મસ્કાણ પ્રારંભ ॥

॥ તિહા પ્રથમ નમુસ્કારસહિઅનુ પદ્મસ્કાણ ॥

ઝગ્ગા સૂરે નમુસ્કારસહિઅ પદ્મસ્કામિ ચઝવિહં
પિ આહારં અસણં પાણં સ્વાહમં સાહમં અન્નઞ
ણાન્નગેણં સહસાગારેણ વોસિરામિ ॥ ૧ ॥

અર્થ — (ઝગ્ગાસૂરે કેળ) સૂર્યના ઝડપથી માંમીને બે ઘડી પ્ર
માણ એટલે રાત્રિન્નોજનનો દોષ નિવારવાને અર્થે, બે ઘડી પઢી
(નમુસ્કારસહિઅ કેળ) નવકાર કહીને પારબુ તિહા સુધી (પદ્મ
સ્કામિ કેળ) પદ્મસ્કાણ છે, એટલે નિયમ છે અહીંયાં નવકાર ક
હીને પદ્મસ્કાણ પારબુ છે, માર્ટે એ પદ્મસ્કાણનુ નામ નવકારસી
કહેવાય છે અહીંયાં ગુરુ, જે પદ્મસ્કાણનો કરાવનાર હોય તે પદ્મ
સ્કાહ કહે, તેવારેં શિષ્ય જે પદ્મસ્કાણનો કરનાર હોય તે પદ્મસ્કા
મિ કહે એમ સર્વ પદ્મસ્કાણોને વિષે જાણી લેવું તથા સંપૂર્ણ પદ્મ
સ્કાણે ગુરુ, વોસિરહ કહે, અને શિષ્ય જે પદ્મસ્કાણનો કરનાર હો
ય તે વોસિરામિ કહે એ નવકારસીનુ પદ્મસ્કાણ બે ઘડી પ્રમાણ
કાલ પર્યંત ચઝવિહારોજ હોય, એવો આજ્ઞાય છે, એટલે રાત્રિના
ચાર પહોર જે રાત્રિન્નોજનનો નિયમ કહ્યો હતો તેના તીરણ રૂ
પ એટલે શિક્ષારૂપ એ પદ્મસ્કાણ છે એ પદ્મસ્કાણમાં બે ઘડી સુધી
ચઝવિહાર હોય, માર્ટે બે ઘડી વીત્યા પઢી નવકાર ગણે, તો પહોંચે,
પણ બે ઘડી વીત્યાની અગાઉ નવકાર ગણે, તો ન પહોંચે

દવે રોનુ પદ્મસ્કાણ કરે ? તે કહે છે (ચઝવિહપિઆહારં કેળ) ચા
રે પ્રકારના જે આહાર તેનુ પદ્મસ્કાણ કરે, તે આહારના નામ કહે છે

એક (અસણ કેળ) અશન એટલે શાજિ, જ્વાર, ગોધૂમ, ઘટી
પ્રમુખ તથા સર્વ જાતિના ઝડન એટલે જાત તથા મગ, મઠ અને
તૂવર પ્રમુખ સર્વ કઠોલ તથા સાથુઆદિક સર્વ જાતિના લોટ, ત

था मोदकादिक सर्व जातिनां पक्वान्न, तथा सूरणादिक सर्व जातिना कद, तथा मामा प्रमुख सर्व जातिनी केलवेली वस्तु, ए सर्वने अशन कहिये तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ, आवे वेस्ने बीजी पण केटलिएक वस्तुउने अशनज कहिये

वीजु (पाण के०) पाणी ते काजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमुखना धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयना पाणी, ए सर्व पाणी कहिये तथा शाकरवाणी, डाकूवाणी, आंबिलवाणी अने शेजडीरस प्रमुख ए सर्व, यद्यपि पाणीमांहे आवे ठे, तथापि एने व्यवहारथी अशनज कहिये

त्रीजु (खाश्म के०) खादिम ते खारेक, वदाम, शिंगोडां, सजूर, कोपरां, डाकू, तथा अखोडादिक सर्व जातिनो मेवो, तथा काकडी, आंबा, फणस अने नाजियेर प्रमुख सर्व जातिना फल तथा शेकेला धान्य, जेवां के धाणी, पद्मआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख ए सर्वने खादिम कहिये

चोशु (साश्म के०) स्वादिम ते दतकाष्ठ, शुठ, हरडे, पोंपर, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविंग, जावत्री, सोपारी, पान, बीड जवण, आजो, अजमोद, कलिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकवाष, कचूरो, मोथ, काटासेलीयो, कपूर, सचल, वेहेडां, आमला, हिंगाष्ठक, हिंग, त्रिविंसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बाबची, बावलठाल, धवठाल, खेरठाल, खिजडाठाल, पान, पंचकूल, तुलसी, जीरु ए जीराने केटलाएक सूत्र सिद्धातोमा स्वादिम कष्टुं ठे, अने केटला एक सूत्र सिद्धातोमा स्वादिम कष्टुं ठे, तथा अजमाने पण केटला एक आचार्य स्वादिम कहे ठे तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगठी, लिंबुस्पत्र, आंधागोटली प्रमुखने स्वादिम कहिये ए चार प्रकारना आहार कष्टा

एम ए पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो नियम लेवाय हवे नियम जग थवाना जयने लीधे अहीयां नोकारसीना पञ्चकाणने विषे वे आगार मोकला भूके ठे, ते कहे ठे

१ (अन्नव्रणान्नोगेण के०) अन्यत्रानान्नोगात् एटले विसरवाथकी ते अहीयां पञ्चकाणनो उपयोग विसरवाथकी अजाणपणे अनुपयोगे कोइ वस्तु मुखमां प्रहेप कखाथी पञ्चकाणजग न थाय, परंतु वचमा पञ्चकाण सांजरे, तेवारें तरत मुखथी त्याग करे, थूकी नाखे तो पञ्चकाण न जांगे, अथवा अजाणपणे मुखथकी हेतुं उतद्या पढी कालातरें सांजखु, अथवा तरत सांजखुं, तो पञ्चकाण न जांगे, पण शुद्धव्यवहार माटें फरी नि शक न थाय तेथी यथा योग्य प्रायश्चित्त लेबु, ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेबु

२ (सहसागारेण के०) जे पञ्चकाण कयुं ठे, तेनो उपयोग तो विसरवो नथी, पण कार्य करवामा प्रवर्तता योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्वनावेज मुखमध्ये प्रवेश थाय, जेम दधि मयतां ठां टो उढी मुखमां पडे, अथवा गाय, जेश प्रमुख दोहोता थकां तथा घृतादिक मयता तथा घृतादिकनो तोल करतां अचानक ठां टो उढी मुखमा पडे, अथवा चउबिहार उपवासें वर्षाकाळें मेघ ना ठांटा मुखमा पडे, तेथी पञ्चकाण जग न थाय, ए रीतें पूर्वोक्त वे प्रकारना आगारें करी (वोसिरामि के०) वे घडी सुधी चारे आहारने वोसिराबु हुं, एटले अपञ्चकाणी आत्माने ठारुबु ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ बीज्ज पोरिसि साह्मपोरिसिन्नु मञ्चकाण ॥

॥ उग्गए सूरें पोरिसिं पञ्चकामि चउबिहपि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नव्रणान्नोगेण सहसागारेण पन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण सबसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरामि ॥ २ ॥

एव साद्वपोरिसिय पञ्चस्कामि पण कहेवु

अर्थ - (पोरिसि के०) प्रहर दिवस सुधी अने साद्वपोरिसिउं पञ्चस्काण लीये तो सार्ध पोरिसि एटले अर्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पञ्चस्कामि के०) नियम करु बुं-इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी ठाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेनें पोरिसि कहियें, अथवा पुरुष जमणे काने सूर्यनु बिंब राखीने, दक्षिणायनने प्रथम दिवसें ढीचणनी ठाया जे वखतें बं पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय तिहासुधी पञ्चस्काण करे

(अस्तणपाणखाश्मसाश्म के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करु बुं

हवे आगार कहे ठे, एक (अन्नञ्जणानोगेण के०) अनाजोणें एटले अजाणते विसरवायकी, बीजो (सहसागारेण के०) सह तात्कारें, त्रीजो (पञ्चन्नकाळेण के०) कालनी प्रहन्नता ते मेवा दि, ग्रहादि, दिग्वाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढकाइ जाय, तेणें करी वखतनी वरावर खबर न पडे. एवा अजाणपणायें करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण अइ, एवु समजीने पञ्चस्काण पारवामां आवे, तो तेथी जग नही, अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसियें जमवा वेठा एटलामां तढको जोयो, अने जाणु जे हजी सवार ठे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थ यो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीयो होय, ते राखमां परतवीने वेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पठी जमवा वेसे, तो पञ्चस्काण नागे नही

चोद्यु (दिसामोहेण के०) दिशिने मूढपणे एटले विशिविप र्यास थयाथी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणें. एम अजाणता वेहेवु पलाय तो पञ्चस्काण जग नही, अने थोड् जम्या पठी कोइना कहाथी जाणवामा आवे, तो मुखमानो को

लीयो थुंकी नाखे ए रीतें दिशिनो मोह टव्या पढी, अर्थ जम्यो वेसी रहे तो जग नहों

पांचमु (साद्रुवयणेण के०) उघाड पोरिसि एवा साधुना वचनें करी पोरिसि जणी, सांजलीने पाळे, तो पञ्चस्काण जग न हों, पढी ज्यारें जाणवामां आवे के साधु तो ठ घडीनी पोरिसि जणे ठे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज वेसी रहे, तो पञ्चस्काण जागे नहों ए पाठला वे आगार भ्रमतानां ठे

ठहु (सबसमाहिवत्तिआगारेण के०) सर्व प्रकारें शरीरमा अ समाधि ते अस्वस्थता रहे, एटले पञ्चस्काण कखा पढी तीव्र शूला दिक रोग उपने थके अथवा सप्पादिकें मश्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पढे, अथवा जेवारें अकस्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इडियोनी समाधिने अर्थे अपूर्ण पञ्चस्काणे पण पथ्य औपधा दिक लेवा पढे, तो तेथी पञ्चस्काणजग न थाय, अने समाधि यथा पढी तेमज पाठलो विधि करे इहां पण पञ्चस्काणनो आपनार, गुरु वो सिरइ कहे, अने शिष्य पञ्चस्काणनो करनार होय, ते वोसिरामि कहे

॥ अथ त्रीञ्चं पुरिमद्वन्तु पञ्चस्काण ॥

जगए सूरै पुरिमद्व पञ्चस्कामि, चञ्चिद्वपि आहार असणं पाण खाइम साइम अन्नवणानोगेण सहसा गारेण पञ्चन्नकालेण दिसामोद्वेणं साद्रुवयणेण महत्त रागारेणं सबसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरामि ॥ ३ ॥

- अर्थ - (जगए सूरै के०) सूर्यना उदयथी मामीने नवकार सहित (पुरिमद्व के०) पहेजा वे प्रहर सुधि पुरिमार्थ कहियें एटले वे प्रहर सुधी अशनादिक चारे आहारन्तु पञ्चस्काण ठे एना अन्नवणानोगेण इत्यादि आगारोना अर्थ सर्व प्रथम लखाइ गया ठे अने महत्तरागारेणनो अर्थ प्रथम नथी लखायो, तो तेनो

अर्थ (महत्तर के०) कोइ महोटा कार्ये एटले पञ्चकाणमां जेटलो कर्मनिर्झरानो लाज थाय ठे, ते करतां पण अत्यंत महोटा निर्झरानो लाज जे कार्यमां थतो होय, अर्थात् कोइ ग्लानाविकना, वे यावच्चने अर्थे कोइ बीजा पुरुषयी ते कार्य न थइ शक्तुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशयी पुरिमद्वनो वखत पूर्ण थया विना जो पालवामां आवे, तो पञ्चकाण जग न थाय अने ते कार्य पूर्ण थया पढी पाठलोज विधि समजवो ॥ ३ ॥

॥ अथ चोष्टु विगइ निविगइनु पञ्चकाण ॥

विगइउ निविगइउ पञ्चस्कामि अन्नवृणानोगेणं
सहसागारेणं लेवालेवेण गिह्वससठेणं उस्किन्न
विवेगेण पडुच्च मस्किण पारिष्ठावणियागारेण मह
त्तरागारेण सबसमाह्वित्तियागारेण वोसिरामि॥४॥

अर्थ- नोजन करतां जेयकी कामाविक वन्मादरूप विकार थाय, तेने विगइ कहियें, ते निवीनां पञ्चकाण ग्रहीने विगयना प्रमाणनी सख्या करे एटले दूध, बहिं, घृत, तेल, गोल प्रमुख विगइमार्थी एक पण विगइनुं जे पञ्चकाण करवुं, तेने विगइनुं पञ्चकाण कहियें, अने समस्त विगइनुं जे पञ्चकाण करवुं, तेने (निविगइउ पञ्चस्कामि के०) निविनु पञ्चकाण करु वु

हवे पञ्चकाण जगना नययी जे आगार मोकलां भूके ठे, ते कहे ठे एक अन्नवृणानोगेण, बीजु सहसागारेण ए वेना अर्थ लखाइ गया ठे

त्रीजु (लेवालेवेण के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइयी शुद्धस्यनो हाथ खरहायेलो होय, पढी तेने लूढो नाख्यो होय, ते

वा हाथयी अथवा खरहायेला चाटुवाने लुंढीने ते चाटुवायी व
होरावे अथवा पीरसे, तो पञ्चस्काणभग न थाय

चोथु (गिहहसंसंछेण के०) गृहस्थनु जे वाटकी प्रमुख ना जन ते विगड प्रमुखें खरहणुं होय, तेवा नाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न जमे, तो पञ्चस्काण जांगे नही

પાંચમું (ઇક્ષિતવિવેકેણ કે) ગાઢી વિગડ જે ગોલ પ્રમુખ
ઢે તેના કટકા રોટલી ઉપર નારીયી કરી પઢી ઇપાઢી પરઢા ક
સા ઢોય, તેવી રોટલી પ્રમુખ લેતા પણ પચ્ચરકાણ જગ ન થાય

ठुं (पञ्चमस्त्रिण के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुहा
ला राखवाने अर्थे मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चो
पही कीधी होय, ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुढलादिक
जेतां पञ्चाकाण जग न थाय

सातमुं पारिष्ठावणियागारेण, आत्ममु महत्तरागारेण, अने नवमुं
सर्वसमाद्विवन्तियागारेण, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा प्रथम
जस्वाइ गयेला पञ्चस्काणोयी जाणवो ॥४॥

॥ अथ एन चोथु निविगइनु एकासण सहित पञ्चस्काण ॥

॥ उग्गए सूरं निविगइ एकासण पच्चस्कामि तिवि
हंपि आदार असण खाइमं साइम अन्नढणानो
गेण सहसागारेण लेवालेवेणं गिह्ठससठेण उरि
त्त विवेगेण पडुच्चमरिएण पारिछावणियागारेण मह
त्तरागारेण सबसमाहिवत्तियागारेण वोसिरामि॥४॥

અર્થ—એમા કહેલા આગરાદિકોનો અર્થ સર્વ આગલના પંચ
સ્કાણોમા લખાઈ ગયો છે. હજી નિવીના પંચસ્કાણમાં જો પિંડ
વિગડ અને ઇચ્છવિગડ, એ વેદ્ય વિગડનું પંચસ્કાણ કરે, તો તેણે
એમા કહેલા નવે આગાર કહેવા, અને જે એકલી ઇચ્છવિગડ મા

ત્રનો નિયમ કરે તેણે ઠક્તિવિવેગેણ એ આગાર મૂકીને માકીનાં
આઠ આગાર કહેવાં ॥ ૪ ॥

॥ અથ પાચમું એકાસણંબિયાસણંતુ પચ્ચસ્કાણ ॥

જગ્ગએ સૂરે એકાસણં બિયાસણ પચ્ચસ્કામિ, હિવિહં તિ
વિહપિ આદાર અસણં સ્વાહમં સાહમ અન્નઢણાજો
ગેણ સહસાગારેણ સાગારિઆગારેણં આઝઢણ પસા
રેણ ગુરુઅપ્પુઠાણેણં પારિઠાવણિઆગારેણં મહત્તરા
ગારેણં સઘસમાહિવત્તિયાગારેણ વોસિરામિ ॥ ૫ ॥

અર્થ — જગ્ગએ સૂરે સ્ત્યાવિકનો અર્થ પ્રથમના પચ્ચસ્કાણોમાં
લખાઈ ગયો છે, જ્યાં એક વાર (અસણ કેળ) જોજન કરવું તેને
એકાસણ કહીયેં અથવા જ્યાં એકજ આસન છે, તે એકાસણ કહે
વાય છે, અને વેવાર જોજન કરવું તેને ધિઆસણ કહીયેં, તેનું (પ
ચ્ચસ્કામિ કેળ) પચ્ચસ્કાણ કરવું એકાસણ અથવા બિયાસણ કહી
પઢી જો સ્વાદિમ અને પાણીયેં વે આદાર લેવા હોય તો હિવિહં
પિ આદારં કહે એટલે અશન અને સ્વાદિમ એ વે આદારનું પચ્ચ
સ્કાણ કરે અને જો એકાસણ કરી રહ્યા પઢી એકજ પાણી મોક
લુ રાખે તો તિવિહંપિ આદાર એટલે અશન, સ્વાદિમ અને સ્વાદિ
મ, એ ત્રણે આદારનું પચ્ચસ્કાણ કરે, અને જમ્યા પઢી એક પાણી
મોકલુ રાખે, તેવારેં અસણ સ્વાહમં સાહમનો પાઠ કહીયેં હવે
એના આગાર કહે છે ત્યાં એક અન્નઢણાજોગેણ અને ધીજો સહ
સાગારેણ, એના અર્થ લખાઈ ગયા છે

ત્રીજી (સાગારિઆગારેણ કેળ) સાધુ જમવા વેળા પઢી ત્યાં
કોઈ સાગારિક જે ગૃહસ્થ તે આવ્યો, પઢી તે ચાલ્યો જતો હોય
તો ક્ષણ એક સંચૂર કરે, વેશી રહે, અને જો તેને ત્યાં સ્થિર રહે
તો જાણે, અને ગૃહસ્થની નજર પડે, તો સાધુ ત્યાંથી ધીજો

स्थानकें जइ आधार लीये केम के गृहस्थनी देखता जमे तो प्र वचनोपघातादिक माहादोष सिद्धांतमा कह्या ठे, ते लागे ए साधु आश्री कछु, अने गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा वेठा पठी जेनी दृष्टि पढता अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पढे, अथवा सर्प आवे, चोर आवे, बदीवान आवी उजो रहे, अ कस्मात् अग्नि लागे, घर पढवा मामे, तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एकासणु करता पञ्चस्काण जागे नहीं

चोथुं (आठवणपसारेण के०) जमवा वेठा पठी हाथ पग जघादिक अगोपाग पसारतां तथा सकोचतां काइ आसन चलाय मान थाय तो पञ्चस्काण जग न थाय पाचमुं (गुरुअष्टुठाणोण के०) पञ्चस्काणें जमवा वेठां ठता गुरु जे आचार्य उपाध्याय तथा साधु आवे, तेमना विनय साधवाने अर्थे बे पगने ठामें राखी ठठवु पढे, तो पञ्चस्काण जग न थाय

बहु (पारिष्ठावणियागारेण के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलु अने विधियें वेहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधिसें कछा थकां कांदि उगछु एवु पारिष्ठापनयोग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परवतां जीव विराधनादि घणा दोष उपजे ठे, एवु जाणीने तेबुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें एकासणा दिकथी मांमीने उपवास पर्यंत पञ्चस्काणवाजाने वधेजा आधार ने जमतां पञ्चस्काण जग न थाय, ए आगार यतिने होय, पण आवकने न होय, तथापि आज्ञावो त्रुटे मार्टे गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी

सातमुं भद्रतरागारेण, अने आठमुं सवसमादिवत्तियागारेणना अर्थे लखाइ गया ठे (वोसिरामि के०) वोसिराबु बु ॥५॥

૭૬

ત્રનો નિયમ
આઠ આગાર

દગાપચ્ચક્રાણ અર્થસંહિત.

॥ અ

ઝગાણ
વિદ્યપિ
મેણ સ
રેણ મુ
ગારેણ

અર્થ -

લરવાઈ ગર
एकासण
वाय ते,
चक्रामि
पढी जो
पि आह

વો

અર્થ

હુ તેના

સહસાગારેણ

ए वे आगारना अर्थ आगल लखाइ गया ते
त्रीछ (लेवालेवेण के) जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेह
लें आंगली तथा नाजनाविक खरक्या होय, तेने लेप कहियें, प
ढी तेनेज घणी सारी रीतें छुंढी नाखीने जेमां
वयव काइ पण देखाय नहीं एबु कछुं होय
एवा लेपअलेपवाजां नाजन होय, अथवा

॥ अथ वहु एकजगणुं पचस्काण ॥

ઝગાણ મૂરે ઇગલગણ પચસ્કામિ ॥ તિવિદ્યપિ આહાર

અગારનામ, સાદમ, અન્નઘણાજોગેણ સહસાગારેણ

નાનાગિદ્યાગારેણ ગુરુઅન્નઘણેણં પારિઘાવણિઆગારેણ

મહત્તરાગારેણ સવસમાદિવત્તિઆગારેણ વોસિરામિ ॥૬॥

અર્થ - અન્નજગણું પચસ્કાણ પણ એકાસણા પ્રમાણેજ તે,

ગુરુ આ દાપ પગાઈકનો સકોચ વિકોચ થાય માટેંસાત આ

ગાર તે, નેપો ત્ક આઝઘણપસારેણ એ આગાર ન કરેવું ॥૬॥

॥ અથ સાતમું આંચિનનુ પચસ્કાણ ॥

ઝગાણ મૂરે આપવિલ પચસ્કામિ તિવિદ્યપિ આહાર

ર ઇસણ, સાદમ સાદમ, અન્નઘણાજોગેણ સહસા

ગારેણ લેવાલેવેણ ગિદ્ધસસઠેણ ઊક્તિવિવેગેણ

પારિઘાવણિઆગારેણ મહત્તરાગારેણ સવસમાદિવ

તિઆગારેણ પાણસ્સ લેવેણ વા અલેવેણ વા અ

ત્તિઆગારેણ વા વહ્લેવેણ વા સસિત્તેણ સમાસ ॥૭॥

અર્થ - આઝઘણાજોગેણ અને બીજી

એક અન્નઘણાજોગેણ અને બીજી

એક અન્નઘણાજોગેણ અને બીજી

એક અન્નઘણાજોગેણ અને બીજી

એક અન્નઘણાજોગેણ અને બીજી

होय, एवा कांश् लेप अलेपवाला ज्ञानें तथा हाथे पीरसवायकी पञ्चस्काण जंग न थाय एने लेपालेप आगार कहियें

चोद्यु (गिह्मसस्येण के०) गृहस्थें पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयें करी खरच्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुआदिकें अन्न आपे, ते अन्न जमतां थकां आंविन जंग न थाय

पांचमु (उक्त्तिविवेगेण के०) गाढी विगय जे गोल प्रमुख ठे तेने रोटली उपर मूकीने फरी परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आबिलमा लेता पञ्चस्काण जंग न थाय

बहु (पारिष्ठावणियागारेण के०) परवतो आहार लेता एटले कोइ साधुयें अधिक बहोखु होय, पढी ते तेने परववानु होय, ते परवतां तेने घणीज अजयणा लागे, अने तेज विगय प्रमुखनु पोताने पञ्चस्काण पण होय, अथवा पोतें आयंविन तप कखु होय, तेम उता पण, गुरुनी आहार्यें तेवा आहारने लेवा थकी पण पञ्चस्काण जंग न थाय

सातमु (महत्तरागारेण के०) महोटी निर्झराने जागे पञ्चस्काण जागे नही आठमु (सबसमाहिवत्तियागारेण के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधियें पञ्चस्काण जागे नही, वोसिरामि एनो अर्थ सुलज ठे तथा उण्ण पाणी वावरवा माटें पाणस्स एटले पाणीना लेप अलेपादिक ठ आगार कहा ठे, तेनो अर्थ आगलतिविहार उपवासना पञ्चस्काणमा आवशे ॥ ४ ॥

॥ अथ आठमु चउविहार उपवासनु पञ्चस्काण ॥

उग्गए सुरे अन्नत्तं पञ्चस्कामि चउविहपि आहार असण पाण खाइमं साइम अन्नढणानोगेणं सहसागारेण पारिष्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

અર્થ — સૂર્યના ઉદયથી માંદીને (અનત્તઠ કે०) અનત્તાર્થે એટલે જ્ઞાત પાણી સ્વાવા નહીં તેને અર્થે (ચત્તવિદ્ધિપિઆહારં કે०) ચારે આહારનો (પચ્ચસ્કામિ કે०) નિયમ કરું તે ચાર આહારનાં નામ કહે છે એક અશન, બીજું પાન, ત્રીજું સ્વાદિમ, અને ચોથું સ્વાદિમ, હવે એનાં આગાર કહે છે એક અન્નઘ્ણાજોગેણ, બીજું સહસાગારેણ, ત્રીજું પારિઠાવણિઆગારેણ, ચોથું મહત્તરાગારેણ, અને પાંચમું સઘસમાદિવત્તિઆગારેણ, એનો અર્થ જણાઈ ગયો છે

તથાપિ પારિઠાવણિઆગારેણના અર્થમા વિશેષ એટલું છે કે, પાણી અને આહાર એ બે વાના કોઈ પરત્વતો હોય તો ગુરુની આજ્ઞાએ આહાર કીધો કલ્પે, પણ એકલો આહારજ કોઈ પરત્વતો હોય તો તે આહાર કીધો કલ્પે નહીં, કેમ કે ? ચત્તવિદ્ધારમાં પાણીનો નિયમ છે, અને પાણી વિના મુલ્ય શુદ્ધ ન થાય માટે પાણી અને આહાર એ બે વાના પરત્વતો હોય તો ચત્તવિદ્ધાર વપવાસમાં લીધા કલ્પે, અને તિવિદ્ધાર વપવાસમાં તો પાણી મોકલું છે, માટે એકલો આહાર કોઈ પરત્વતો હોય તો પણ ગુરુની આજ્ઞાએ લીધો કલ્પે ॥ ૬ ॥

॥ અથ નવમુ તિવિદ્ધાર વપવાસનુ પચ્ચસ્કાણ ॥

જગ્ગણ સૂરે અનત્તઠં પચ્ચસ્કામિ તિવિદ્ધંપિ આહાર અસણ સ્વાઈમં સાઈમ અન્નઘ્ણાજોગેણ સહસાગારેણ પારિઠાવણિ આગારેણ મહત્તરાગારેણ સઘસમાદિવત્તિઆગારેણ પાણહાર પોરિસિં પચ્ચસ્કામિ ॥ અન્નઘ્ણાજોગેણ સહસાગારેણ પચ્ચ ન્નકાલેણ દિસામોદ્દેણ સાદુવયણેણ મહત્તરાગારેણ સઘસમાદિવત્તિઆગારેણ પાણસ્સ લેવેણ વા, અલેવેણ વા, અઘ્ણેણ વા, વદુલેવેણ વા, સસિઘ્ણેણ વા, અસિઘ્ણેણ વા વોસિરામિ ૧૯

અર્થ - (સૂરેઝગ્ગે કે) સૂર્યના ઉદયથી આરજીને (અન્ત
કે) અન્તકાર્થિ એટલે ઉપવાસનુ (પન્નસ્કામિ કે) પન્નસ્કાણ કરું
હું, એ ત્રિવિહારમાં એક પાણીનો આદાર મોકલો રાખીને બાકી
ના (અસણ કે) અશન અને (સ્વાહમ કે) સ્વાદિમ, તથા
(સાહમ કે) સ્વાદિમ એ (તિવિહંપિઆદાર કે) ત્રણ આદાર
ર તેનો નિયમ કરુ હુ હવે એનાં આગાર કહે છે

એક અન્નઘ્ઘણાન્નોગેણ, વીજ્ઞુ સહસાગારેણ, ત્રીજ્ઞુ પારિઠાવણિ
આગારેણ, ચોથુ મહત્તરાગારેણ, પાંચમુ સઘસમાદિવત્તિયાગારે
ણ, એના અર્થ સર્વ પ્રથમના પન્નસ્કાણોમાં લેવાળા છે

એ પન્નસ્કાણમાં પોરિસી સાટૂપોરિસી અથવા પુરિમાર્ધ પઠી (પા
ણદાર કે) પાણીનો આદાર મોકલો છે તેના આગાર કહે છે

(પાણસ્સ કે) પાણી પીવાનાં ઠ આગાર છે, તે કહે છે,
(લેવેણવા કે) લેપજલ તે સ્વજૂરનુ તથા આઠળ, વીજ્ઞુ (અલ્લે
વેણવા કે) અલેપજલ તે ધોયણ પ્રમુલ્લ, ત્રીજ્ઞુ (અલ્લેણ વા કે)
નિર્મલ ઘણ પાણી, ચોથુ (બહુલેવેણ વા કે) મોહું તાદૂલનુ
ધોયણ પ્રમુલ્લ, પાંચમુ (સસિલ્લેણ વા કે) સીય સહિત પીવનુ
થોઅણ, ષષ્ઠુ (અસિલ્લેણ વા કે) સીય રહિત ફાસુ જલ, એ
ટલા ટાલી બાકીનાં પાણીને (વોસિરામિ કે) વોસિરાવુ હુ
॥ અથ વશમું રાતેં ચઠવિહાર કરવો, તેનુ પન્નસ્કાણ તથા નવચરિમનુ ॥

દિવસચરિમ પન્નસ્કામિ ચઠવિહપિ આદારં અસણં
પાણ સ્વાહમં સાહમ અન્નઘ્ઘણાન્નોગેણ સહસાગારેણ મ
હત્તરાગારેણ સઘસમાદિવત્તિયાગારેણ વોસિરામિ ॥ ૯ ॥

અર્થ - (દિવસચરિમ કે) દિવસના બેહેદાથી મામીને એટ
લે સધ્યા સમયથી મામીને જ્યાં લગેં નવો સૂર્ય યગે નહીં ત્યાં સુ
ધી પન્નસ્કાણ જાણવુ અને જે જાવજીવ પર્યંત સથારો કરવાની

અર્થ — સૂર્યના વદયથી માંમોને (અનત્તઠ કે०) અનકાર્થ એટલે જ્ઞાત પાણી खावा नहीं तेने अर्थे (चउव्विहंपिआहारं के०) चारे आहारनो (पञ्चस्कामि के०) नियम करु बु ते चार आहारनां नाम कहे ठे एक अशन, बीजु पान, त्रीजु खादिम, अने चोषु खादिम, हवे एनां आगार कहे ठे एक अन्नवणानोगेण, बीजु सहसागारेण, त्राजु पारिष्ठावणिआगारेण, चोषु महत्तरागारेण, अने पांचमु सबसमाह्वित्तिआगारेण, एनो अर्थ लखाइ गयो ठे

तथापि पारिष्ठावणिआगारेणना अर्थेमां विशेष एटलु ठे के, पाणी अने आहार ए वे वानां कोइ परवततो होय तो गुरुनी आहार्ये आहार कीधो कब्बे, पण एकलो आहारज कोइ परवततो होब तो ते आहार कीधो कब्बे नहीं, केम के ? चउव्विहारमां पाणीनो नियम ठे, अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय माटें पाणी अने आहार ए वे वाना परवततो होय तो चउव्विहार उपवासमां ली धा कब्बे, अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलु ठे, माटें एकलो आहार कोइ परवततो होय तो पण गुरुनी आहार्ये लीधो कब्बे ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमु तिविहार उपवास्तनु पञ्चस्काण ॥

उगगए सूरें अनत્તઠં પચ્ચસ્કામિ તિવિહંપિ આહારં અસણ
खाइम साइम अन्नवणानोगेणं सहसागारेण पारिष्ठावणि
आगारेण महत्तरागारेणं सबसमाह्वित्तियागारेण पाणहा
र पोरिसिं पञ्चस्कामि ॥ अन्नवणानोगेण सहसागारेणं पञ्च
न्नकालेण दिसामोद्वेण साद्धुवयणेणं महत्तरागारेण सबस
माह्वित्तियागारेण पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अन्नेण
वा, बहुलेवेण वा, ससिन्नेण वा, असिन्नेण वा वोसिरामि १९

॥ અથ શ્રાવકને ચાર શરણાં લેવાનો પાઠ પ્રારંભ ॥

॥ ચત્તારિ સરણ પઢિવહ્લામિ, અરિહતા સરણ પઢિવહ્લામિ, સિદ્ધા સરણ પઢિવહ્લામિ, સાદુ સરણ પઢિવહ્લામિ, કેવલિપ સુત્ત ધમ્મ સરણ પઢિવહ્લામિ ॥ પહિલુ સરણુ શ્રી અરિહત જગવતજીનુ ઉત્પન્ન વિમલ કેવલનાર્ણે કરી, સૂર્યની પરે પ્રકાશના કરણહાર, મિથ્યાત્વરૂપ તિમિર અધકારના મેટણહાર, સમકિત શુદ્ધધર્મના દયણહાર છે, અનત જ્ઞાની છે, અનતચારિત્ર, અનતલોચન, અનતગુણ, અનતજીવના રક્ષપાલ, જગજુરુ, જગત્જીવન, જગત્લોચન, પરમઆબ્દાદક, હર્ષઆનંદના વપજાવણહાર, મોક્ષમારગના દેખાડણહાર, અજયદાનના દયણહાર, શરણના દયણહાર, સયમ જીવિતવ્યના દયણહાર, જગત્ના મિત્ર, જગદીશ્વર, જે સમોસરણમા વિરાજમાન થઈને પુષ્કરાવર્ત મેઘની પેઠે ધર્મના વચનોને વરસાવીને જવિક જીવોના સદેહને જાંજતા થકા વિચરે છે એવા નિર્વિકારી જેમની શાતમુદ્રા જોવાથી કામ, ક્રોધ લોભ અને મોહાદિક અનાદિના દોષ મટે, અતરમા સવરની શૈલી પ્રગટે, સર્વ સમકેતી જીવના પ્રાણાધારક, સકલમુનિ મિનમોહન એવા શ્રીઅરિહત જગવત પાંચ જરત પાંચ ઈરવત, પાંચ માહાવિદેહ ક્ષેત્રનેવિપે અનતે કાલે અનતા અરિહત જગવત થયા અને હમણા માહાવિદેહ ક્ષેત્રને વિપે સરખ્યાતા અરિહત જગવત કેવલી ધણા જીવજીવોને તારતા વિચરે છે એવા શ્રી અરિહત જગવતજીનુ પહિલુસરણુ પઢિવહ્લુ ॥ ૬૩ ॥

॥ અથ દ્વિતીય શરણુ શ્રીસિદ્ધ જગવતજીનુ પ્રારંભ ॥

સિદ્ધ જગવતજી શક્તીસ ગુણે કરી શાશ્વત શોભે છે, તે ગુણ કહે છે, પાંચ જેવે જ્ઞાનાવરણીય કર્મને ક્ષયના કરણહાર, નવ જેવે દર્શનાવરણીય કર્મને ક્ષયના કરણહાર, બે જેવે વેદનીય કર્મ તે

વેલાયેં ચાર આદારનું પદ્ધત્કાણ કરે, તેને જવચરિમ એવો પાઠ કહીયેં જોષ “ચવદિહપિ” ઇત્યાદિનો અર્થ સુલજ છે ॥ ૧૦ ॥

॥ અથ ગદ્ધતહિયં મુદ્ધતહિયાદિ અનિયદોનું પદ્ધત્કાણ ॥

સૂરે જગ્ગાએ ગદ્ધસહિયં મુદ્ધસહિયં પદ્ધત્કામિ
ચવદિહપિ આદાર અસણં પાણ સ્વાઈમં સાઈમં
અન્નહણાનોગેણં સદ્સાગરેણં મહત્તરાગારેણ
સવ્વસમાદિવત્તિયાગારેણ વોસિરામિ ॥ ઇતિ ॥

અર્થ — ગાઠ સહિત પદ્ધત્કાણ તે કોઈ દોરા પ્રમુખની ગાંઠ બાધી રાखે તિહાં મુધી પદ્ધત્કાણ કરુ બુ, ગાંઠ ઢોઢ્યા પઢી મોકલો એમજ મૂઠ બાધી રાखે તે મુદ્ધતહિયં તથા મુઠવચ્ચે અગુઠો રાखે, તે અંગુઠ સહિયં ઇત્યાદિ અનિયદ જાણવા પાઠલો અર્થ સુલજ છે ॥ ૧૧ ॥

॥ અથ ચવદનિયમધારનારને વેસાવગાસિક અનિયદનું પદ્ધત્કાણ ॥

વેસાવગાસિઅ ઝવજોગ પરિજોગ પદ્ધ
ત્કામિ અન્નહણાનોગેણ સદ્સાગરેણ, મ
હત્તરાગારેણ વોસિરામિ ॥ ઇતિ ॥ ॥ ॥

અર્થ — (વેસાવગાસિઅ કે०) દિશિના અવકાશનું વ્રત અથ-
વા વદ્ધા નિયમ આશ્રી તો (વેસ કે०) થોઢામાં અવકાશ આણે
તેને વેસાવકાશિક વ્રત કહિયેં એટલે ઇદ્દા કોઈ એકલી દિશિનુજ પ
દ્ધત્કાણ કરે, તેવારેં ઝવજોગ પરિજોગનો પાઠ ન કહિયેં તેને વેસા
વગાસિઅ પદ્ધત્કાણ કહિયેં હવે (ઝવજોગ કે०) જે વસ્તુ એકવા
ર જોગવીયેં એવા આદાર તથા વિલેપનાવિકનું પરિમાણ કરે, તેને
ઝવજોગ કહિયેં અને (પરિજોગ કે०) વારંવાર જોગવીયેં એવી
વસ્તુ જે આનરણ, સ્ત્રી, વસ્ત્રાદિક તેનું પરિમાણ કરે, એટલે જે
ચોદ નિયમ સજારે, તેને એ ઝવજોગ પરિજોગનો પાઠ કહિયેં,
એના આગારનો અર્થ આગલ જણાઈ ગયો છે ॥ ઇતિ ॥

॥ અથ શ્રાવકને ચાર શરણાં લેવાનો પાઠ પ્રારબ્ધ ॥

॥ ચત્તારિ સરણ પઢિવજ્ઞામિ, અરિહતા સરણ પઢિવજ્ઞામિ, સિદ્ધા સરણ પઢિવજ્ઞામિ, સાદુ સરણ પઢિવજ્ઞામિ, કેવલિપ સ્મૃત્ત ધમ્મ સરણ પઢિવજ્ઞામિ ॥ પહિલું સરણુ શ્રી અરિહત જગવતજીનુ વૃત્પન્ન વિમલ કેવલનાર્યે કરી, સૂર્યની પરે પ્રકાશના કરણહાર, મિથ્યાત્વરૂપ તિમિર અધકારના મેટણહાર, સમકિત છુદ્ધધર્મના દયણહાર છે, અનત જ્ઞાની છે, અનતચારિત્ર, અનતલોચન, અનતગુણ, અનતજીવના રક્ષપાલ, જગજીરુ, જગત્જીવન, જગત્લોચન, પરમઆબ્હાવક, હર્ષઆનંદના વપજાવણહાર, મોક્ષમાર્ગના લેખાહણહાર, અન્યદાનના દયણહાર, સ્વરણના દયણહાર, સયમ જીવિતવ્યના દયણહાર, જગત્ના મિત્ર, જગદીશ્વર, જે સમોસરણમા વિરાજમાન થઈને પુષ્કરાવર્ત મેઘની પેઠે ધર્મના વચનોને વરસાવીને જીવિક જીવોના સદેહને જાંજતા થકા વિચરે છે એવા નિર્વિકારી જેમની શાતમુદ્રા જોવાથી કામ, ક્રોધ લોભ અને મોહાદિક અનાવિના દોષ મટે, અતરમાં સવરની શૈલી પ્રગટે, સર્વ સમકેતી જીવના પ્રાણાધારક, સકલમુનિ મનમોહન એવા શ્રીઅરિહત જગવત પાંચ જરત પાંચ ઐરવત, પાંચ માહાવિદેહ ક્ષેત્રનેવિપે અનતે કાલે અનતા અરિહત જગવત થયા અને હમણા માહાવિદેહ ક્ષેત્રને વિપે સચ્ચાતા અરિહત જગવત કેવલી ઘણા જીવજીવોને તારતા વિચરે છે એવા શ્રી અરિહત જગવતજીનુ પહિલુંસરણુ પઢિવજ્ઞુ ॥ ૧ ॥

॥ અથ દ્વિતીય શરણુ શ્રીસિદ્ધ જગવતજીનુ પ્રારબ્ધ ॥

સિદ્ધ જગવતજી શ્કતીસ ગુણે કરી શાશ્વત શોભે છે, તે ગુણ કહે છે, પાંચ જેવે જ્ઞાનાવરણીય કર્મને ક્ષયના કરણહાર, નવ જેવે વેદનાવરણીય કર્મને ક્ષયના કરણહાર, બે જેવે વેદનીય કર્મ તે

ने क्षयना करणहार, वेदु जेवें मोहनीय कर्म तेना क्षयना कर
 णहार, चार जेवें आयु कर्म तेना क्षयना करणहार, वे जेवें नाम
 कर्मतेना क्षयना करणहार, वेदु जेवें गोत्रकर्मना क्षयना करणहार,
 पांच जेवें अतराय कर्मना क्षयना करणहार, वली घणा अतिशयें
 करी विराजमान ते अतिशय कहीयें ठैयें ए वीहे, ए हस्से, ए वहे,
 ए तसे, ए चउरसे, ए परिममले, ए किहे, ए निहे, ए जोहिए, ए हली
 हे, ए सुकिले, ए सुरहिगघे, ए डरहिगघे, ए तित्ते, ए कहुवे, ए कसाये
 ले, ए अविसे, ए मडुरे, ए ककहे, ए मठए, ए गुरुए, ए जहुए, ए सीए,
 ए ठहे, ए सनिहे, ए जुके, ए काउ, ए रूवे, ए सगेहणे, ए इडी, ए पुं
 रिसे, ए नपुसगे, ए मोहे एहवा चवदे जेवें पनरे प्रकारे करी सिद्धज
 गवत केवलज्ञान, केवलदरिसण, आधिक समकितना धरणहार,
 अनत अतिशयें करी विराजमान, सिद्धे, बुद्धे, परपारगते, अजर,
 अमर, अस्कय, अव्याबाध, नि कलक, निराकार, निरंजन, अक्षरी
 री, जीवस्वरूपी, जिहां एकसिद्ध, तिहां अनता सिद्ध, लोकाग्र
 जागने विषे विराजी रह्या ठे, सर्व कर्म चकचूर करी खपावीने
 ज्ञानानवें करी जरपूर थका मोहनगरजु राज्य जोगवे ठे अनते
 कालें अनता मोह पडूता हवडा वर्तमान कालें संख्याता मोह
 पडूचे ठे, आगामिककालें, अणता मोह पडूचगे एहवा अतींदि
 य, अविनाशी, अनुपाधि, अवधी, अक्लेशी, अमूर्ति, शुद्धचैतन्य, ज्ञान
 दर्शन चारित्रादि अनतगुण जाजन, सखिवानव स्वरूपी एवा अन
 ता सिद्ध जगवतजु शरण पडिव हूं बु ॥ इति वीज्जु शरण समाप्त ॥

हवे त्रीज्जु शरण साधु जगवतजीजु कहे ठे साधु जगवतजी
 केहवा ठे? अनत ज्ञानी अनतदरसी जघन्य दोष क्रोड उत्कृष्टा,
 नव क्रोड केवली वली गणधर, आचार्य, उपाध्याय घट्टभुत, दाद
 शागीना जणणहार, ऋजुमति, विपुजमति, अवधिज्ञानी, वैक्रिय ल
 ब्धिना धणी, तपस्वी, महोटा माहानुजाव, ज्ञानवत, दरिसणवत,

चारित्रवत, ज्ञानवरिसणना धरणहार, वारे चेवें तप करी कर्मना
 क्यना करणहार, इरियासमिया, नासासमिया, एसणासमिया,
 आयाणजममत्त निस्केवणासमिया, उच्चारपासवण खेलसिधाण
 जलपारिछावणियासमिया, मणगुत्ता, वयगुत्ता, कायगुत्ता, गुत्ता,
 गुत्तेदिया, गुत्तवजयारी, जियकोहा, जियमाणा, जियमाया, जिय
 लोहा, जियनिदा, जियपरिसहा, जियइदिया, जीवियमरण नय
 विमुक्का, अमम्मा, अकचणा, आमोसहिपत्ता, खेलोसहिपत्ता,
 जलोसहिपत्ता, सवोसहिपत्ता, बीजसुद्धि, कोठसुद्धि, पदानुसारि
 णी, मणवलीया, वयवलीया, कायवलीया, नाणवलीया, दसणव
 लीया, चारित्रवलीया, खीरोसवा, महुसवा, सप्पिसवा, अरिक्
 णमाणसिया, चारणविजाहारा, चउञ्जत्तिया, ठठ नत्तिया, अ
 छम नत्तिया, दसमनत्तिया, डुवालस नत्तिया, चउदस नत्तिया,
 अइमासिया, मासिया, हुमासिया, तिमासिया, चउम्मासिया, पंच
 मासिया, ठमासिया, अत चरगा, पंत चरगा, लुह चरगा, सम
 दाण चरगा, अतआहारी पंतआहारी, अरसआहारी, विरस
 आहारी, लुह आहारी, तुह आहारी, अतजीवी, प्रातजीवी, लू
 हजीवी, तुहजीवी, ठवसतजीवो, पसतजीवी, आयवीलीया, पुरि
 मढीया, एगासणीया, नीविगईया, अमग्ग जमग्ग सासीणो, णो
 णीगामरसजोइ, एहवा मूल उत्तरगुणना सेवनारा, मोह्मार्गना
 साधनारा, जावनिर्घथ, समतारूपी छुजध्यानागिवहे कर्मरूपी का
 छने बालता, अनादि परिचितविजाव परिणतिने वमत्ता, जेने नही
 माया नही ममता, नवी नवी तपक्रियाना करनार, चारित्र पाल
 नरूपप्रवदणें करी ससार समुझने तरता, शत्रु मित्र समचित्त दृष्टि,
 एवा साधु जगवतजीवु त्रीज्जु शरण पडिवज्जु तुं ॥ इति त्रीज्जु शरण ॥

हवे चोथु शरण श्री केवलिनपित दया धर्मनुं जेमां प्रधान
 जावदया ठे, त्रस, यावर, सूक्ष्म, वादर अपर्याप्ता, पर्याप्ता, पृथ्वी,

અપ્, તેડ, વાઠ, વનસ્પતિ, વેડ્ડી, તેંડી, ચૌરિંડી, પંચેંડી, એ સર્વ જીવ લોકને વિષે રાખવા પણ કાંઈ જીવ વિરાધવો નહીં, એ હવો શ્રીકેવલિનાપિત દયા ધર્મ સત્ય નિત્ય શાશ્વતો સવેદરહિત છે, સસાર સમુદ્માં પડતા જીવને દ્વીપ સમાન છે, પ્રવહણ સમાન છે, તારણ શરણ ગતપ્રતિ આધાર છે, જીવાદિક પદાર્થ રાખવા નળી દીપક સમાન છે, એદિજ કલ્યાણક છે, એદિજ માંગલિક છે ધર્મ તે કિશ્તુ કહિયે ? જે ઇર્ગતિ પડતા જીવને ધરે, તેને ધર્મ કહિયે, જે ધર્મ, પાપરૂપ જલમાથી તારવાને નાવ સમાન છે, જેને પરમેશ્વરે પરમસુખનો દેતુ કહ્યો છે એહ ધર્મ અતીતકાલે અનતા તીર્થકરે કહ્યો, વર્તમાન કાલે સંસ્થાતા કહે છે, આગામિક કાલે અનતા તીર્થકર કહેશે એહવો શ્રીજિનધર્મ અતીતકાલે વિરાધીને અનતાજીવ જન્મતા ડુવા, વર્તમાન કાલે સંસ્થાતા જન્મે છે, આગામિકકાલે અનતા જીવ જન્મશે, એહવો શ્રી તીર્થકરજીનો માર્ગ આરાધીને ગયે કાલે અનતા જીવ તદ્દા, વર્તમાન કાલે સંસ્થાતા તરે છે, આગામિક કાલે અનતા જીવ આરાધીને તરશે એહવા શ્રી કેવલિપ્રરૂપિત વ્યાધર્મનુ શરણ પડિ વહ્નુ હું ॥

इति चार शरण सपूर्ण ॥

॥ અથ આવક નીચે લખેલા ત્રણ મનોરથને પિતવતો થકો માદા
 ॥ મહોટી નિર્જ્ઞા કરે, સસારનો અત કરે, તે લખિયે ઠેયે ॥

॥ તિહા પહેલો મનોરથ કહે છે અમણોપાસક આવક એમ પિતવે જે કેવારેં દુ, વાહ્ય તથા અન્યતર એવો આરંજ અને પરિગ્રહ થોડો ને ઘણો, ન્દાનો અને મહોટો, સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર, હલવો ને જારી, જે મહાપાપનુ મૂલ, ઇર્ગતિને વધારનારો, મહા કામ, ક્રોધ, માન, માયા, લોચ, વિષય અને કપાયનો સ્વામી, માદાહુલનુ કારણ, મહા અનર્થકારી, મહા ઇર્ગતિની

शिला, माठी छेद्याना अध्यवसायनो परिणामी, माहा अज्ञान, मोह, मत्सर, राग अने द्वेषनु मूल, दशविध यतिधर्मरूपकल्प वृद्ध तडूप वननो दावानल, ज्ञान, क्रिया, क्रमा, दया, सत्य, सतो पनो नाश करनारो, तथा बोधबीजरूप समकितनो नाश करना रो, समय व्रत अने ब्रह्मचर्यनो घात करनारो, माहा कुमति तथा क्लृप्तिरूप दुख दारिद्र्यनो देवावालो, सुमति अने सुबुद्धि रूप सुख सौजाग्यनो नाश करनारो, महा तप समय रूप धनने लूटनारो, महा लोच क्लेशरूप समुद्रनो वधारनारो, महा जन्म जरा अने मरण जयनो देवावालो, महा माया एटले कपटनो जमार, मिथ्यात्व दर्शनरूप शल्ये नरेलो, महा मोक्षमार्गनो विघ्नकारी, महा कढवा कर्मविपाक फलनो देवावालो, अनत सत्सारनो वधारनारो, महा पापी, पाच इन्द्रियना विषयरूप वैरीनी पुष्टिनो करनारो, महोटी चिता शोक गारव अने खेदनो करनारो, महा समारूप अगाध वह्निनो सिंचवावालो, महा कूड कपटनुं आगर, महा बध परम क्लेशनो आगर, मोहोटा गारव खेद अने कर्म बंधना मक्खिनो करावनारो, महा मदबुद्धिनो आदखो, उत्तम पुरुष साधु निर्गुणो जेनें निवो ठे, अने सर्व लोक मा सर्व जीवोने एना सरिखो बीजो कोइ विषम नथी, मोक्षरूप पाशनो प्रतिबधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करना र, महापापी, पाच आश्रवनुं आगर, महा अनत दारुण कर्कश कठोर अढता एवा दुख अने जयनो देवावालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादाननो करावनारो, माहा अग्रुव, अनित्य अशाश्वतो, असार, अत्राण, अशरण, एवो जे आरज अने परिग्रह तेने दु केवारे गामीश ! जे दिवसें गामीश, ते दिवस महारो धन्य ठे ! एवी रीते प्रथम मनोरथ आवक करे ॥ १ ॥

१ हवे दुजा मनोरथमा श्रमणोपासक आवक एम चितवे

जे केवारें दु मुम यश्ने दश प्रकारें यतिधर्म धारी, नववाहें वि
 शुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावधपरिहारी, अणगारना सत्तावीश गुण
 धारी, पांच समिति त्रण गुप्तियें विष्टुद्धविहारी, महोटा अन्नप्र
 दानो धारी, वेहेंतालीश दोपरहित विष्टुद्ध आहारी, सत्तर जेवें
 सयमधारी, बार जेवें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रात आहारी,
 अरस आहारी, विरस आहारी, लुक्क आहारी, तुष्ट आहारी,
 अतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजीवी, विरसजीवी, लुक्कजीवी, तुष्ट
 जीवी, सर्वरसत्यागी, उक्कायनो दयाल, निर्जोनी, नि स्वादी,
 कुह्नीसवल, परवी तुल्य, वायरानी पेरें अप्रतिबधविहारी, वीत
 रागनी आझासहित, एदवा गुणोनो धारक, जे अणगार ते दु के
 वारें थईश ! जे दिवस दु पूर्वोक्त गुणवान् थाइश ते दिवस धन्य
 ठे ! ए रीतें बीजो मनोरथ आवक करे ॥

३ त्रीजा मनोरथमां अमणोपासक आवक एम चितवे जे
 केवारें दु सर्व पापस्थानक आलोई, निवी, नि शल्य थइ, सर्व जीव
 राशि खमावीने, सर्व व्रत सजारीने, अढार पापस्थानकथी त्रि
 विधें त्रिविधें करी वोसिरीने, चारे आहार पञ्चस्कीने, आ इठ, कांवे,
 पीयं, माण, मणण, धीजियं, वेसासियं, समयं, अणुमय, बड्ड
 मयं, जमकरमगसमाण, रयणकरमगचूय, माणसिया, माण
 उन्हा, माण खुआ, माण पीवासा, माण वाला, माण चोरा, माण
 दसमसगा, माण वाइय, पित्तियं, सवेसन्निवाइय, विविहारोमायंका,
 परिसदा उवसग्गा, फासा फुसति एदवु महारु शरीर ठे तेने, ठे
 हेले श्वासोद्वासे वोसिरावीने, त्रण आराधना आराधतो थको,
 चार मागलिकरूप चार शरण मुखें उच्चरतो थको, सर्व ससारने
 पूव वेतो थको, एक अरिहत्त, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु अने
 चोथो केवलिप्ररूपितदयाधर्म, तेना ध्यानने ध्यावतो थको शरी
 रनी ममता रहित थयो थको, पादोपगमन सपारा सहित,

पंक्ति मरणना पांच अतिचार टालतो थको, मरणने अणवांठतो थको, एद्वु पंक्ति मरण अंतकालें मुण्ने दोजो ॥ एत्रीजो मनोरथ ॥

ए त्रण मनोरथने समणोपासक आवक, मन, वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्यावतो थको पढि जागरणमाणे करतो थको सर्व कर्मनी निर्झंटा करीने ससारनो अत करे मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्ये पामे ॥ इति तीन मनोरथ संपूर्ण ॥

॥ अथ आनंदमंदिरनाम मंगल स्तवनवंद प्रारभ ॥

॥ सफल सत्तार अवतार ए दुंगण ॥ ए देशी ॥ ॐ ह्रीं श्री नमो श्री अरिहत्त ए, टालो सकट सद्गु शत्रु दुर्दित ए ॥ घनघातिक चक्र कर्म कियो अत ए, ध्याइयो शुक्ल ध्यान महमंत ए ॥ १ ॥ पाया प्रभु विमल ज्ञान केवल सद्दी, द्वादश पर्षदा वदवा आवही ॥ करुणाके सिधु उपदेश फरमावही, सुणत जवि प्राणी मन तन डुलसावही ॥ २ ॥ अथिर जग जाणके सज्जम आदरे, केइ वा रात्रत निर्मल उच्चरे ॥ केइ विष्टुइ समकीत समाचरे, तिण दिने चतुर्विध सय स्थापन करे ॥ ३ ॥ विचरे जूममलें जविकजन ता रवा, जन्म जरा मरणना सकट वारवा ॥ प्रथम मंगल इम नित प्र तें वदियें, जवजव डुकुत दूर निकवियें ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री नमो सिद्ध कर्ध्वराजके, सिद्ध करो सर्व मनोवठित काजकें ॥ अजर अमर अविनाशी अविकारय, सुख अनत अनत गुण धारय ॥ ५ ॥ राग रंगित नदी कर्म सगत नदी, निर्जय स्थान अवगाहन अटल लदी ॥ अखम अमर प्रभु जगत शिरोमणि, अमर धर्म फुल में वडु त्रिजगधणी ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री सब साधु उमायकें, तारे ज व प्राणी उपदेश बतायकें ॥ जोग किंपाकसा जाण के त्यागीया, धन्य जे सत गुणवत सोनागिया ॥ ७ ॥ ॐ नमो जिन अवधि परमावधि, ॐ नमो केवली उग्र तपस्यानिधि ॥ ॐ नमो कोष्ठ

नमो विज बुद्धिया नणी, पदानुसारी सजिन्न सोया मुनि ॥ ७ ॥
 वदू रिक्खु मति विपुल मत्तिके, पूर्व दिशि चतुर्दश अष्ट नैमतिके ॥
 वैक्रिय लब्धि धरा जघा विद्याचरा ॥ प्रश्न श्रमण वली गगन गा
 मीधरा ॥ ८ ॥ उग्र तप घोर तप दीप्त तपस्याधरा, घोर परा
 क्रमी शीलवता ग्वरा ॥ रीश आपो नही करत कोइ निदणा, हर
 ख आपो नही जो करे वदणा ॥ ९ ॥ अनशन तप कोइ करत
 ऊणोदरी, वृत्तिसक्केप रस त्याग जिह्वाचरी ॥ काय किज्जेश सली
 नता आवरे, प्रायश्चित्त विनय वेयावच्च मनशुं करे ॥ १० ॥ सखाय
 ध्यान काउस्सग्ग छावहीं, कचन ककर एक सम जावहीं ॥ जघन्य
 पृथक्त्वशय सहस्व कोढी जती, उत्कृष्ट पर्वे रिख वदू में शुचमति ॥
 ११ ॥ ॐ नमो धर्म श्री जैन जिन जाखियो, इगति पढत जवजव धिर
 राखियो ॥ दया जगवती सब शास्त्रमें वरणवी, हिरवे अणुकपा
 सो दाख्यो जिनजी नवि ॥ १२ ॥ निज आतम सम जाण सब
 प्राणीने, पाजो दया अणुकपा चित्त आणीने ॥ जीव अनत त
 ह्या ईण प्रजावथी, जेम उदधितणो पार लहे नावथी ॥ १३ ॥
 हिंसामय धर्म सो दूर निवारजो, चोशु मगल एह धरमनु धार
 जो ॥ तन धन जोवन अथिर करि जाणजो, चारुहिं मगल उत्तम
 मानजो ॥ १४ ॥ चारेनु शरण नित्य लीजो रें पल पलें, एह प
 रजावथी सर्व सकट टले ॥ इशमन चोर धूरत कोई नहि ठले,
 सिद्ध सर्पादिक देखि दूरा टले ॥ १५ ॥ गड गुबड रोग महा कष्ट
 असाध्य सो, एह सरणाथकी लहे समाधसो ॥ ताव ते जारी तूटे
 इण ध्यावता, विघन व्यापे नही पंथमें जावता ॥ १६ ॥ नूत
 जोटिंग अरु मकणी शकणी, विघन करे नही देवी विदकणी ॥
 नरेंड सुरेंड फणिडविक देवता, सकल वश थाये चउ सरण सुख से
 वता ॥ १७ ॥ अहि जिम गरुडना शब्दथी थरहरे, तेम चउ सर
 णथी पाप आघो मरे ॥ ईणमाही शका रति मत आणजो, सशु

५ कहेण प्रमाण पीठाणजो ॥१॥ रिक्क तिलोक वे धोरु चवस
रणे, आरोग्य समकित अरु नवजलतरणने ॥ नणरो गुणरो ए
ह स्तवन जावें करी, सोहि नवि जीव लेहेरो अविचल सिरी ॥१०॥
॥ कलश ॥ हरिगीत छंद ॥ अरिहत सिद्ध, महाराज साधु, धरम
केवली, जाणीये ॥ ए चारु मंगल, चारु उत्तम, चारु सरणा, मानी
ये ॥ इह लोक संपत्ति, सुख बहुला, आगे सुख, श्रीकार हे ॥ तिलो
क रिख, कहे सुणो सरहे, होय सदा, जयकार हे ॥ ११ ॥ इति
आणद मंदिरनामा मंगलछंद एकविशी सपूर्ण ॥

॥ अथ मंगल स्तवन ढंद प्रारभ ॥

॥ देशी मंगलकी ॥ ढाल ॥ जे जे अरिहत जिणदा, सुख पूनम पूर
णचदा ॥ सेवे सुर असुर नरिंदा, प्रभु नविजनके सुखकदा ॥१॥
त्रुटक ॥ हरिगीत छंद ॥ सुख कद साद्वि नए सबके, तप सहा
झुकर कीया ॥ धनघातिके सब कर्म हण कर, ज्ञान केवल पा
इया ॥ चोतिस अतिशय प्रगट दीसे, अमृत वाणी उच्चरे ॥ प्रति
हार अष्ट विशेष जिनके, सघ चठ स्थापन करे प्रभुस ॥२॥ ढाल ॥
जग गुरु जग नायक सामी, जगतारक अतरजामी ॥ प्रभु
मुक्ति जावणके कामी, नित नित प्रणमु शिर नामी ॥ ३ ॥ त्रु
टक ॥ शिर नामि प्रणमु करुणासिधु, जघन वीश जिनेश्वरु ॥ उ
त्कृष्ट एक शत सित्तर जामें, होय तस बदण करु ॥ उपगारी इण
सम नही जगमें, मन वचन तन ध्याइये ॥ होय सपत्ति विपत्त
नासे, प्रथम मंगल गाइये ॥ नित्य ॥४॥ ढाल ॥ जे जे सिद्ध सदा
सुख कारी, अष्ट कर्म किया सब ठारी ॥ प्रभु तीनुही जोग निवारी,
पाय शिवपुरके सुख नारी ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सुख नारी जिनके
हे अनुपम, आत्मिक अविचल सदा ॥ निरंजन निराकार जि
नके, दुख नहि व्यापे कदा ॥ अजर अमर अविकार ईश्वर, अ

टल अवगाहन धणी ॥ अविकार करुणावत वंडुं, सकल लोक
 शिरोमणि ॥ ६ ॥ ढाल ॥ त्रसनालीके उपर जाणो, जहां
 मुक्ति शिला सुवखाणो ॥ चेतु ठत्र शशीने सवाणो, पैतालिख
 लक्ष्म योजन परमाणो ॥ ७ ॥ त्रूटक ॥ परमाण दलमें अष्ट यो
 जन, अधिक पतली अतसों ॥ तिण उपरें पंच दश जेवें, सीधा
 सिद्ध अनतसो ॥ सकल कारज सिद्ध जिनके, जाव नक्ति सराइ
 यें ॥ पाइयें सिद्ध पद जिणसुं, सिद्ध मंगल गाइयें ॥ नित्य ॥ १॥ ७॥
 ढाल ॥ जे जे सब साधु सोजागी, आरज परिग्रहके त्यागी ॥ तप
 जप किरिया अनुरागी, उनकी सुरता सुगति सु लागी ॥ ८ ॥ त्रू० ॥
 लागि सुरता शिवबधूछ, असजम सेवे नही ॥ माहाव्रत पाले
 डी जीते, कषाय चारु हठावहीं ॥ वैराग जावें अधिक कृम्या, जोग
 तीनु सम करे ॥ ज्ञान दरिसण चरण पूरण, रोग मरण सु नही मरे ॥
 मुनि रो ॥ १० ॥ ढाल ॥ केइ चउवे पूर्वके धारी, केइ द्वादश अंग
 जमारी ॥ केइ अवधि मन पर्यवहानी, तेजोलेख्या लब्धि करी
 ठानी ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ करी ठानी, लब्धि वैक्रिय आहारक, ध्यान शुक्ल
 ज ध्याइया ॥ घनघातिक केइ कर्म काटी, ज्ञान केवल पाइया ॥ पृथ
 क्कोही सहस्र मुनिवर, उल्लंघ जघन्य मनाइयें ॥ वदियें शुद्ध जा
 व नविका, साधु मंगल गाइयें ॥ १२ ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जे जे जैन धर्म
 जयकारी, केवल प्ररूपित हितकारी ॥ इणमें जीवदया अगवा
 नी, यातो सर्व सिद्धातें बखानी ॥ १४ ॥ त्रू० ॥ बखाणी सर्व
 सिद्धातमाही, शका नही इणमें रति ॥ निज प्राण सम सब प्रा
 णी जाणो, सोचो इम निर्मलमती ॥ शाश्वतो त्रिद्रु कालमाही,
 सकल जिन वारख्यो सही ॥ ए शुद्ध शरधा धारिया विण, करणी
 छेखामें नही ॥ १५ ॥ ढाल ॥ जाके जीव दयारुचि जागी, सो
 जाणो हलुकर्मों सोजागी ॥ निरवय शुद्ध करणीधारी, इणसु त
 रिया अनत ससारी ॥ १६ ॥ त्रू० ॥ ससारी तरिया अनत इणसु,

आदरो इम जाणीने ॥ लही अविचल सुख सपत, ड ख द्यो मत
प्राणीने ॥ ज्ञान दरिसण चरणमांही, धर्म हिरवे लाइये ॥ सरव
आगम सार चउथो, धर्म मंगल गाइये ॥ नित्य धर्म ॥ ४ ॥ १ ६ ॥ ढाल ॥
अरिहत सिद्ध साधु धर्म ए चारी, लोकोत्तम एह विचारी ॥ शर
णागत ए चउमानो, इणमें शका मत आणो ॥ १ ७ ॥ त्रूण ॥ मत
आणो शंका शरण लेतां, ड ख नही व्यापे कदा ॥ चोर दुश्मन
रोग नासे, लहो अविचल सपदा ॥ कहे रिक्त तिलोक मुजने, स
रण होजो सर्वही ॥ सुणो सरवे तेहि जनने, दोशे सुख शाता स
ही ॥ सदा दोशे ॥ १ ८ ॥ इति चार मंगल स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ परमेष्ठिपरमानंदस्तव वंद प्रारभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो अरिहताण, इम पावु पदमांय ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्री ह्रीं
स्वाहा, जपतां ह्रीं श्री थाय ॥ १ ० ८ ॥ १ ॥ अ० सि० आ० उ० सा० ॥

॥ वद त्रिजगी ॥

॥ प्रणमु सरसती, दोय वरमति, चित्त दुलसे अति, गुण शु
णवो ॥ बुद्धजावे ध्यावे, सो सुख पावे, एकचित्त चावे, यश सुणवा ॥
जयजय परमेष्ठी, जगमें श्रेष्ठी, वे पद ज्येष्ठी, जगधार ॥ त्रीजग मजार,
नाम वदार, जयसुखकारं, नवकारं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वारे गुणवता, श्रीअ
रिहंता, लोग महता, गुणगहेरा ॥ घनघातिक कर्म, मिथ्याजर्म, त्याग
अधर्म, विष लहेरा ॥ बुकल मन धाया, केवल पाया, इंदर आया,
तिणवारं ॥ त्रि० ॥ १ ॥ वर प्रषदा वारे, हर्ष अपारे, सुणि अ
धारे, जिनवाणी ॥ अमृतसू प्यारी, जगहितकारी, सुरनर नारी,
पहेचाणी ॥ केइ सजम धारे, केइ व्रत धारे, कर्म विदारे, शिव
त्यारी ॥ त्रि० ॥ २ ॥ इतिय पद ध्यावो, सिद्धगुण गावो, फिर
नही आवो, जिहां जाइ ॥ जे अलख निरजन, जविमन रंजन,

कर्मके नजन, शिव सांइ ॥ पुजलदा फंदा, दूर निकंदा, परमान
 दा, अविकार ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अठगुणके धारे, जगत निहारे, का
 ल न मारे, उनतांइ ॥ जिहां सुख अनता, केवलवता, गुण उच
 रंता, ठे नाई ॥ निजवास बताइ, यो मुक्त तांइ, तुमसा नांइ, वा
 तारं ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, सेवा कीजे,
 हय धरी ॥ पंच महाव्रत पाले, दूषण टाले, गज जिम माले, शूर
 दरी ॥ पांचु वश करते, पंच उचरते, पांचुइ हरते, छ खकारं ॥ त्रि०
 ॥ ६ ॥ शीतल जिम चदा, अचल गिरिदा, गनपति इदा, शिरदा
 र ॥ सागर जिम गदेरा, हान लदेरा, मिथ्या अघेरा, परिहारं ॥
 सपद वसु पावे, न्याय बढावे, पाले पलावे, आचारं ॥ त्रि० ॥ ७ ॥
 गुरुसेवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधि, हान नणे ॥ बा
 रे अग वाणी, पेटी समाणी, पूरव नाणी, सरोहणे ॥ निरवद्य
 सत नाखे, शास्तर साखे, गुण अजिलाखे, निजसार ॥ त्रि० ॥ ८ ॥
 ववषाया स्वामी, अतर जामी, शिवगतिगामी, हितकारी ॥ शीख
 एने आवे, जोग शिखावे, न्याय बतावे, उपगारी ॥ कुंतिमां
 पढतो, कादव गढतो, धित करे चढतो, तिण वारं ॥ त्रि० ॥ ९ ॥
 कबुक अदि त्यागे, दूरै नागे, तिम वेरागे, पाप हरे ॥ जूगपर
 ठदा, मोहनी फदा, प्रभुका बंदा, जोग धरे ॥ सब माल खजीना,
 त्यागन कीना, माहाव्रत लीना, अणगारं ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले
 शुद्ध करणी, नवजल तरणी, आपद हरणी, दृष्टि रखे ॥ बोले स
 तवाणी, गुप्ति ठाणी, जगका प्राणी, सम्म लखे ॥ शिव मारग ध्या
 वे, पाप हठावे, धर्म बढावे, सत सारं ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे
 नावें, विघन हठावे, अरि हरि जावे, दूर सही ॥ जे तपतेजारी,
 छ ख विमारी, सोग सवारी, आत नही ॥ अहपीडा नागे, दृष्टि
 न लागे, शत्रु न जागे, लीगार ॥ त्रि० ॥ १२ ॥ एह मतर नीको,
 तारक जीको, त्रिजग टीको, सुखदाता ॥ ए मत्र करारी, महिमा

नारी, लहे नर नारी, सुख शाता ॥ सरजी वनवेली, दे धन ठेली,
नवनव केली, यह सार ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रग नि
हाली, आरत टाली, ध्यान धरे ॥ तिलोक परंपे, नावसु जपे, रुद्र
सिद्ध सपे, जेह धरे ॥ एह ठद त्रिजगी, गावे उमगी, नवनवसगी,
जयकारं ॥ त्रि० ॥ १४ ॥ इति परमेष्ठिपद आराधनस्तवनं ॥ १ ॥

॥ अथ नयनजण अरिहतजिको स्तवन ठद प्रारज ॥

॥ चोपाइ ॥ जे जे विश्वनाथ जसवत, प्रणमुं श्री अरिहत
महत ॥ कृशलवेजि जलपुष्कर धार, डुरित तिमिर नानु ससार
॥ १ ॥ चित्रवेल चितामणि पास, कल्पवृक्ष जिम पूरण आश ॥
आरत हरण करण सुखसत, चरण सरण धारो मनखत ॥ २ ॥
क्रोध मान ठल लोन निवार, नए केवल पद तुम ससार ॥ इइ
नरिंद सुरासुर देव, मन वच काय करे तुम सेव ॥ ३ ॥ लिपटे
सर्व चदनतरु जाल, गरुडशब्द सुणि नासत व्याल ॥ जतुवृक्ष कर्म
अहि जाण, तुम समरणतें होत प्रयाण ॥ ४ ॥ कोटि वृंद
नारी जणे पुन, तुमसो अवर न प्रसवे सुत ॥ उगे नक्षत्र चवदिशि
माय, दिनकर पूरव दिशि प्रगटाय ॥ ५ ॥ तुम निर्मल गुण आ
गर देव, कृमासागर आप अठेव ॥ धर्मधुरधर सारथवाह, धर्मच
की प्रभु त्रिजगनाह ॥ ६ ॥ अविनाशी अविकारी अरूप, निर्नय
करण परमसुखनूप ॥ जगगुरु जगवधव जगईश, त्रिकरण वृद्ध
नमाबु शीश ॥ ७ ॥ जनम जरा मरण डुख सोग, एह अनादि
लग्यो नवरोग, तुम सुमरण उषध जो छेत, नवनय व्याधि रंच
न रेत ॥ ८ ॥ तुम जग वञ्चल करुणावत, शांतिकारक श्री जग
वत ॥ में मतिदीण अलप मोय बोध, तुम गुण कैसें वरणबु
शोध ॥ ९ ॥ केइक हरि हर जपत मदेश, केइक सरस्वति गौरी
गणेश ॥ केइक रवि शशि नव ग्रह देव, केइक जल थल अगनी

सेव ॥ १० ॥ केइक ईम् -
 में मन निश्चै
 ॥ ११ ॥

ह
 जे
 दूध
 पुण्य
 जूव त
 घाती क
 सुखकार,
 प्यासा नीर,
 तिम तुम ना
 हेत, हस सरोव
 कोयल चकवी अ
 कर मालति अधिक
 समरु प्रभु आप ॥

ग्रह क्रोध अनाद ॥ मा
 प्रसिद्ध ॥ १९ ॥ आल

नरपूर ॥ विषयकपाय रत।

जाण ॥ २० ॥ कपट स

रणी आब्दाद ॥ करण कराद

विरोध ॥ २१ ॥ इणविध करि

समां ड ख पूर ॥ परमाधामी दीनी प्राप्त, नही मानी किंचित अ

रदास ॥ २२ ॥ तिरियंच वेदन सागर रूप, जगम थावर पडियो

कूप ॥ वेदन जेदन कष्ट महत्त, जनम मरण ड ख सह्या अनत

॥ २३ ॥ नर नव नीच जाति कुल कीन, ड खी इरिडि नयो अति

य्या मत क
 ॥ २४ ॥ पाप अठारा

करम करूर, यह तो नरक

किंचित अ

पडियो

अनत

अति

दीन ॥ जन जन आगें जोछ्या हाथ, पूरण नहि मिलियो जल
 नात ॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, जयो में करी सुरनी
 सेव ॥ पाछ्यां नाटक तोही तान, करम उदे में जयो हेरान
 ॥ २५ ॥ चउगतिभ्रमण महा दुख लीन, तुम शरणा विण नव
 नव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, जरियो दु अवगुण चंमार
 ॥ २६ ॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म जर्म जंजा
 ल ॥ सर्प अधारे जेवही जेम, डीपखंम रूपु ग्रहे तेम ॥ २७ ॥
 मृगमरीचिका जाणत तोय, प्यास बुजावण हिरणां सोय ॥ यावत
 यावत बोढे प्राण, तेसे में जमियो अन्नाण ॥ २८ ॥ जेसें ज्वर
 तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहि व्यापे सोय ॥ तेसें कुकर्म उदय
 गत जीव, धर्म रुचि नहि आवत ईव ॥ २९ ॥ जब तन ज्व
 रको मिटत विकार, तव सोइ वढ्या करत आहार ॥ अष्टुन
 कर्म जब होत प्रयाण, तव तुम सरण ग्रहे नवियाण ॥
 ॥ ३० ॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार
 ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नही मुज दुख पवित्र ॥ ३१ ॥
 पण एक चरण शरणकी आश, धारी में अवे हीये विमास ॥
 आश निराश करण नही रीत, तुमसु जागी पूरण प्रीत ॥ ३२ ॥
 तुम सम उर न कोइ रुपाल, अधम उधारण दीन दयाल ॥ तु
 म विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन नविक सुखदाय ॥
 ॥ ३३ ॥ गज मववत माहा विकराल, सन्मुख आवे न नरकू
 चाल ॥ मारण आवे जरतो फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल
 ॥ ३४ ॥ कलपत काल समीर अदम, जले दावानल धूम्र
 प्रचम ॥ ऐसे कष्ट जजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय
 ॥ ३५ ॥ श्याम रंग जगलाल कराल, क्रोध उरत आवे विकराल ॥
 नाग दमण तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नही व्याल ॥ ३६ ॥
 चूपसु चूप करे सयाम, रक्त खाल बहे तिण ठाम ॥ ऐसें सकट

सेव ॥ १० ॥ केइक ईसा पेगवर पीर, केइक देवी जैरव वीर ॥
 में मन निश्चै कियो निरधार, तुम सम उर न को संसार ॥ ११ ॥
 किर्यां सरशव किहां मेरु उत्तग, किहां केशरी बलवत
 कुरंग ॥ राधामणि वैभूर्य फेर, जेसैं अमृत अतर जहेर ॥ १२ ॥
 जेसैं वसंतर कवल हीर, निशिदन अतर कायर वीर, आक
 दूध किहा घेनु खीर, खीरसागर किहा खारुं नीर ॥ १३ ॥
 पुण्य पाप फल रक ने राय, परगट डब्य सुपनकी माय ॥ सत्य
 जूठ तस्कर साहुकार, आगियातेज रविजलकार ॥ १४ ॥ जेसैं कर्म
 घाती कर्मवत, प्रत्यक्ष अतर नासे अनत ॥ विश्व विख्यात सब
 सुखकार, ज्यु छदधिमें दीप आधार ॥ १५ ॥ नूरुखा ॥ नोजन
 प्यासा नीर, रोगी औषधधि मन धीर ॥ पंखी नज नट वश विचार,
 तिम तुम नाम तणो आधार ॥ १६ ॥ बालक जननी गठ बड
 हेत, हस सरोवर आशरे रेत ॥ ज्यों हस्ती कल्ललवन प्रीत, अंब
 कोयल चकवी आदीत ॥ १७ ॥ सति जरतार वपैया मेह, मधु
 कर मालति अधिक सनेह ॥ जोनी मनमें धनको जाप, तैसें हुं
 समरु प्रष्टु आप ॥ १८ ॥ हिंसा जूठ चोरी उन्माद, सेव्यो परि
 ग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया प्रसना अति कीध, राग द्वेषने ब्रेश
 प्रसिद्ध ॥ १९ ॥ आल दीया करि चाही कूड, परअपवाद किया
 जगपूर ॥ विषयकषाय रतारत आण, धांध्या निकाचित कर्म अ
 जाण ॥ २० ॥ कपट सहित कही मरपावाद, मिथ्या मत क
 रणी आब्दाव ॥ करण करावण करी में मोद, पाप अढारा धर्म
 विरोध ॥ २१ ॥ इणविध करियां करम करूर, यह तो नरक
 समां डख धूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास, नही मानी किंचित अ
 रदास ॥ २२ ॥ तिरियंच वेदन सागर रूप, जगम थावर पडियो
 कूप ॥ वेदन जेदन कष्ट मईत, जनम मरण डख सह्यां अनत
 ॥ २३ ॥ नर नव नीच जाति कुज कीन, डखी हरिधि नयो अति

दीन ॥ जन जन आगे जोछ्या हाथ, पूरण नहि मिलियो जल
 जात ॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, जयो में करी सुरनी
 सेव ॥ पाछ्या नाटक तोही तान, करम उदे में जयो हेरान
 ॥ २५ ॥ चउगतिभ्रमण महा डुख लीन, तुम शरणा विण नव
 नव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, जरियो दु अवगुण नंमार
 ॥ २६ ॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म नर्म नंजा
 ल ॥ सर्प अंधारे जेवही जेम, हीपरखम रुपु ग्रहे तेम ॥ २७ ॥
 सुगमरीचिका जाणत तोय, प्यास बुजावण हिरणां सोय ॥ वावत
 धावत ठोढे प्राण, तेसे में नमियो अन्नाण ॥ २८ ॥ जैसे ज्वर
 तन प्रबलता होय, अन्नरुचि नहि व्यापे सोय ॥ तेसें कुकर्म उदय
 गत जीव, धर्म रुचि नहि आवत ईव ॥ २९ ॥ जब तन ज्व
 रको मिटत विकार, तब सोइ वढ्या करत आहार ॥ अछुज
 कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम सरण ग्रहे नवियाण ॥
 ॥ ३० ॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार
 ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नही मुज बुद्ध पवित्र ॥ ३१ ॥
 पण एक चरण शरणकी आश, धारी में अन्व हीये विमास ॥
 आश निराश करण नही रीत, तुमसु लागी पूरण प्रीत ॥ ३२ ॥
 तुम सम उर न कोइ कृपाल, अधम उदारण दीन दयाल ॥ तु
 म विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन नविक सुखदाय ॥
 ॥ ३३ ॥ गज भदवत माहा विकराल, सन्मुख आवे न नरक
 जाल ॥ मारण आवे जरतो फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल
 ॥ ३४ ॥ कलपत काल समीर अदम, जले दावानल धूम्र
 प्रचम ॥ ऐसे कष्ट नजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय
 ॥ ३५ ॥ श्याम रंग हगलाल कराल, क्रोध सक्त आवे विकराल ॥
 नाग दमण तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नही ब्याल ॥ ३६ ॥
 चूपसु चूप करे सधाम, रक्त खाल बहे तिण गम ॥ ऐसे सकट

ध्यावे आप, लहे रण विजय टले सताप ॥ ३४ ॥ अथाग जल बहे
 वाय कुवाय, उठे किछोल बाहण कपाय ॥ एसी विपत ध्यान क
 रनार, सो सहि पावे सागर पार ॥ ३५ ॥ सास खास ज्वर गुब
 ड दाह, कुष्ठ जगदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमे नाव निःशक,
 ततक्षण प्रलय होत आतंक ॥ ३६ ॥ पावन वेडी हथकडी हाथ,
 रोके नारखसी रुधे जात ॥ एसी आपदा समरे आप, बधण बूट
 टले सताप ॥ ३७ ॥ तुम रणमोचन गरिब निवाज, बधण गोडे
 श्रीजिनराज ॥ तुम त्रिहु लोकमें तिलक समान, तुम नामें दिन
 दिन कल्याण ॥ ३८ ॥ वै ह्रीं श्री नमो नमो अरिहत, कछि सिद्धि
 वृद्धि सुख सत ॥ देजो दीनदयानिधि मोय, जब जब सरणो वहुं
 तोय ॥ ३९ ॥ हय गय रथ दल प्रबलता पूर, वेरी दुश्मन नासे
 दूर ॥ पूत सपूत कलत्र गुणवत, मिले सजोग रहे सुख जत ॥
 ॥ ४० ॥ दुश्मन बल नहिं लागे दाव, वैर मीठी होय सखन
 नाव ॥ जहां जावे तिहां आदर हो, मोहनी मंत्र नाम तुम जो
 य ॥ ४१ ॥ जड मूरख नर जे मतिहीण, पण तुम समरणमें रहे
 लीण ॥ बुद्धि प्रबल सो पंथित-थाय, जगमें पूजा होत सवाय ॥
 ॥ ४२ ॥ आज्ञाको कागद मशी सब नीर, लेखणी लेवे सुदर्शन
 गीर ॥ जो लिखे सरस्वति गुण विस्तार, सागर कोहि लहे नहिं
 पार ॥ ४३ ॥ अल्पमति हु प्रमादी जीव, कैसें तुम गुण कहूं
 अतीव ॥ तुम बालेश्वर जीवन प्राण, राज राजेश्वर गुणनिधि
 खाण ॥ ४४ ॥ तिलोक रिक्त करे अरदास, अतरजामी तुम गुण
 रास ॥ आपके पास न मायु लेश, मोय वतावो निज प्रदेश ॥ ४५ ॥
 एतिक अरजी लीजो मान, कबहु न चूखु तुम एसान ॥ नीठ
 नीठ जाण्वा तुम देव, जब जब दीजो आदरी सेव ॥ सब
 त उगणीशें घनिस मान, ज्येष्ठ रुग्ण तिथि पूज ॥
 शनी सिद्धि जोग विचार, जयजयन-स्तव किया ॥

शहेर शाहजापुर मालव देश, सुखशाता चउ तीर्थ हमेश ॥ जणे
गणे सुणे जे नर नार, तस घर वर्त्ते मगल चार ॥ ५१ ॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश जिनस्तोत्रबंद प्रारंभ ॥

॥ ढद त्रिजगी ॥ श्रीआदिजिनंदं, समरसकंदं, अजितविनद,
नज प्राणी ॥ सनवजगत्राता, शिवमगराता, द्यो सुखशाता, हित
आणी ॥ अजिनदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नितमेवा, रिपुघा
ता ॥ चोविश जिनराया, मनवचकाया, प्रणमुं पाया, द्यो शाता
॥ १ ॥ श्रीपद्मसुपास, शशिगुणरास, सुविधि सुवास, हितकारी ॥ श्री
शीतलसामी, अतरजामी, शिवगतिगामी, उपकारी ॥ श्रेयांसदया
ला, परमरुपाजा, नवजनवाला, जगदाता ॥ चो० ॥ २ ॥ वासु
पूज्य सुकर्त, विमल अनंत, धर्म श्रीसंत, सतकारी ॥ कुधु अरना
थ, तज जगसाथ, मल्लीसुआथ, सग धारी ॥ मुनिसुव्रत सुनमी,
आतमाने दमी, दुर्मतिने वमी, तप राता ॥ चो० ॥ ३ ॥ रिष्ट नेमि व
डाई, नार न व्याही, तोरण जाई, ठटकाई ॥ नाग नागण ताई,
दिया वचाई, पारस साई, सुखदायी ॥ जय जय वर्द्धमान, गुणनि
धिवान, त्रिजग जान, शुद्ध आता ॥ चो० ॥ ४ ॥ ससारका फदा, दूर
निकदा, धर्मका ढदा, जिण जीना ॥ प्रभु केवल पाया, धर्म सुना
या, नव समजाया, मुनि कीना ॥ कहे रिक्त तिलोक, सदा तस धो
क, द्यो सुखथोक, चित्त चाता ॥ चो० ॥ ५ ॥ इति सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठि षड ॥

॥ अर्थनाराच षड ॥ त्रिलोक्य सत श्रेष्ठिक, नमामि पारमेष्ठि
क ॥ नजे नजे उदगल, नवामि सदा मगल ॥ १ ॥ सर्वांग अग सु
वर, मारंत मार दुर्धर ॥ सद्दस अष्ट लङ्घन, समस्त शुद्ध स्वङ्घनं
॥ २ ॥ तितिकु जे चतुष्टक, हणत कर्म दुष्टक ॥ तपश्र्या सपुष्टक,
धरंत ध्यान सुष्टक ॥ ३ ॥ सुज्ञान पूर्ण धारक, अज्ञान मर्म वारक ॥

सुश्रष्ट प्रातिहारकं, सुजव्यजीव तारक ॥ ४ ॥ प्रमादवाद खनितं,
 अनतगुण ममितं ॥ अष्टौज योग दमितं, नमामि परम पमितं ॥ ५ ॥
 सुजानु कोटि नास्करं, नवाब्धि तारकं पर ॥ विकारदृष्टि मोचन
 नमामि शतिलोचन ॥ ६ ॥ सर्वत्र पाप खननं, सुजैनधर्म मम
 न ॥ अनतसुख दायक, नमामि सधनायक ॥ ७ ॥ विशिष्टगुण
 अष्टक, समस्त शत्रु नष्टकं ॥ अरूपरूप रासक, सर्वैव स्थीरवासकं
 ॥ ८ ॥ अनत सुख सुस्थितं, रहत सद्मनिर्मितं ॥ नवौघसर्व वार
 कं, नमामि निर्विकारकं ॥ ९ ॥ षट्शीश गुण शोणितं, कपाय च उ अ
 ह्मोणितं ॥ सुसपदाष्ट माचक, नमामि नित्य वाचकं ॥ १० ॥ प्रमा
 ए नय सञ्चुतं, पचीश गुण संयुतं ॥ सुज्ञान अन्य दायण, नमामि
 उपाध्यायण ॥ ११ ॥ तर्जंत जगतजालकं, परप्राण रक्षपालकं ॥
 वर्जित पाप कारणं, गर्जित धर्मधारण ॥ १२ ॥ तर्जित काम क्रोधकं,
 लर्जित सो विरोधक ॥ वितराग आण शोधक, नमामि संत जोधकं
 ॥ १३ ॥ अज्ञानता प्रहारण, अखील सुखकारण ॥ दणत मोद
 फेणतं, नमामि जिनवैणत ॥ १४ ॥ मिथ्याधकार नजण, ददामि
 ज्ञान अजण ॥ प्रमाद ड ख चूरण, नमामि सत्यगुरुण ॥ १५ ॥ ति
 लोकरिक्क सस्तवे, शरण सदा नवोचवे ॥ कृपार्णव मया करी, सर्वैव
 द्यो हिरी सिरि ॥ १६ ॥ कलश ॥ दोहो ॥ जयजय श्रीपरमेष्ठिने, जयजय
 श्रीजिनवेण ॥ जय जय श्रीगुरुकी रदो, दियो सुमारग जेण ॥ १७ ॥

॥ अथ अतीत अनागत वर्त्तमान चतुर्विंशति

जिन स्तवन षट् प्रारभ्यते ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥ प्रणमु परमेष्टीगौतमस्वाम, जिनवाणी स
 रस्वती सुखधाम ॥ गुरुचरणानुज प्रणमु नाव, कहु त्रिदुकाल चो
 वीशी नाव ॥ १ ॥ अतीत चोवीशी नइ हे अनत, ते वहुं मे
 शिवपुरकत ॥ पण एक वर्त्तमानथी अतीत, नाम कहुं तस मन

धरि प्रीत ॥ ३ ॥ प्रथम केवलज्ञानी जिनराज, निर्वाणी सागर
 तारणी जाऊ ॥ महाजस विमलजिणव सुखकार, सर्वानुनूति
 श्रीधर उद्धार ॥ ३ ॥ दत्त दामोदर जपु जिनदेव, सुतेज
 स्वामी हरि कर्मखेव ॥ मुनिसुव्रत सुमतिजिन ईश, शिवगति
 स्वामी नमु निश दीस ॥ ४ ॥ अस्तंगजी नेमीश्वर जाण, अनल
 नम्या होवे जन्म प्रमाण ॥ जसोधर कृतारथ दोइ जिनराज,
 जनेश्वरजी ठो गरिव निवाज ॥ ५ ॥ शुद्धमतिजी शिवकर नमुं, नव
 नव सचित पातक गमुं ॥ स्पंदन चदन जेम सुनाव, सप्रतिजी प्र
 णमुं चित चाव ॥ ६ ॥ अतितचोवीशी नाम ए जाण, प्रातें
 नित जपजो नवियाण ॥ अथ कहु वर्त्तमान जिन मान, इणहिज
 नरत क्षेत्र जये स्वाम ॥ ७ ॥ कृष्ण अजित संजव अजिनद, सु
 मति कुमति करि दूर निकंद ॥ पदम सुपारस जिन सुखकंद, चड
 प्रन पारतिख जीम चड ॥ ८ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सुधीर, वासुपू
 ज्य विमल जगपीर ॥ अनत धरम शांति कृष्टु दयाल, अर मद्धि
 मुनिसुव्रत कृपाल ॥ ९ ॥ एकविंशमा नमिनाथ उद्धार, रिष्टनेमी
 तजि राञ्जुल नार ॥ पार्श्वप्रनू वदू वर्द्धमान, ए वर्त्तमान चोविशी
 जाण ॥ १० ॥ कर्म दृष्टी केवलपद पाय, चोविंशजिन पद्भुता शिव
 माय ॥ महेर करो मुकु पर अरिहंत, रविशशिसागर उपमावत
 ॥ ११ ॥ तुम दरिसणकी मुकु चित चाय, पल पल वदू शीश न
 माय ॥ अनागत चोविशी नरत मजार, तेदना नाम सुणो नर
 नार ॥ १२ ॥ पदमनाज सुरदेव सुपास, स्वयंप्रन शिव करजो वास ॥
 सर्वानुनूति देवश्रुत जिणेश, उदय करम नही राखजो रेस
 ॥ १३ ॥ पेढाल पोटिल सत्यकीरति जाण, सुव्रत अमम होजो जग
 जाण ॥ तेरमा नि कपाय खुलास, चउदमा जिणवर तो निष्पुलाक
 ॥ १४ ॥ निर्मम चित्रगुप्त समाधि, तरजो नवजल जेह अगाध ॥
 सवर जिनेश अठारम जोय, यशोधर विजय मद्धि जिन होय ॥ १५ ॥

देव जिन अनतविरज सुचग, जइकृत इव्य जाव उत्तग ॥
 अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥ १६ ॥ ते
 पण थापशे तीरथ चार, तरशे कई जवियण नर नार ॥ अतीत अ
 नागत ने वर्त्तमान, बहोतेर तीर्थकर ए प्रमाण ॥ १७ ॥
 आगमग्रंथ तणे अनुसार, सवत् उगणीशें प्रीस मजार ॥ जणतां
 गुणतां सुखसुविशाल, तिलोकरिख कहे मंगल माल ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंतजिनस्तवनछंद प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं जे मुनींइ जिनेंइ जणी, जस सेवे नरेंइ सुरेंइ फणी
 ॥ कीर्ति अनत सत स्वामी तणी, त्रिद्व लोकमें सादेव आप धणी
 ॥ १ ॥ गृहवास्त तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप दुताशणी कर्मधरी ॥
 शुद्धजाव धमण करि मेल हरी, प्रभु केवल कमला वेग वरी ॥ २ ॥
 ॥ जेद दीपे अतिशय चोतिस करी, नैरोम्य महादिव्य वेद धरी ॥ स
 घेण सगण प्रथम पावे, जलमेल कलक जो नहिं थावे ॥ ३ ॥
 निजेंप निदोप शरीर रहे, तनुकांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर
 अगर कुंड आकार विसे, निध कङ्कालकुंचिय केश शिर्शें ॥ ४ ॥ वा
 डिम फूल तवणिज केशनूमी, सचित पुण्य पूरण नांही कूमी ॥ नि
 लाड दीपे अधचड टीको, उद्धुपति पूरण सो मुख नीको ॥ ५ ॥ प
 रमाणुपेत श्रवण सोदे, जमुह तणु निर्धे मन मोहे ॥ नयनाबुज
 विकस्वर ज्वेत जला, उत्तग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधरारुण
 विडुम रग दीपें, दतत्रेणी धवल शशि तेज जीपे ॥ रसनारत अमृत
 जल वरपे, दाढीमुठ सुंदर केश इसे ॥ ७ ॥ गिरुवा खध छुज
 जस पुष्टवली, फणीजिम प्रभुवाहा बीसे जली ॥ अतिइ सकोमल
 गुन पाणी, पुष्टागुलि ताम्र रंग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशीविक रें
 खा करमाही, सव एक सहस्र अठ दरसाई ॥ उत्तरता पासा उस
 उदरी, गगावृत विकस्वर नाजि खरी ॥ ९ ॥ सिंहकटि वृत्ताकार स

ही, छुटादंम ठरुपिनी शोन रही ॥ कूरम सम पृष्ठ चरण दोइ, अं
गुली नखमें कहु खोड नही ॥ १० ॥ पगथलीमें पद्म कमल सो
दे, प्रभु निरखत सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगे तेज मद दिनकरका,
मर्यादिक केश नख जिनवरका ॥ ११ ॥ लोहि मांस उजल गव खीर
करी, केतकी जिम स्वासा सुगध नरी ॥ आधार निहार अदृष्ट स
दा, नही देख सके चर्म दृष्टि कदा ॥ १२ ॥ धर्मचक्र त्रिहु बत्र आका
श चले, दिव्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन
ननमांही, सोरतन फिटकवर ठवि ठाई ॥ १३ ॥ सहस्रध्वजा परिवार
करी, सो इध्वजा लहकंत खरी ॥ डय कृतु अशोक तरु सम वरते,
अंधकार नाममल नीवरते ॥ १४ ॥ सम नूम दुवे प्रभु जिहा वि
चरे, कटककी अणिया उलट करे ॥ जोजन लगे ठ कृतु सुखकारी,
अचेत वायुरज परिहारि ॥ १५ ॥ वरसे जलममल रङ्गजमे, वरसे
फुलकापुज अनेक गमे ॥ दुर्गध टले गुन वास रमे, अर्धमागधी
जापा लोक गमे ॥ १६ ॥ वारे प्रपदा मध धर्म कहै, निज निज जा
पा सब अर्थ गहे ॥ वैरजाव न जागत सिंह अजा, वादी जन वा
द करत नजा ॥ १७ ॥ ईति होवे नहीसो कोश लगे, मरि मारीसो
सब दूर नगे ॥ स्वपरचक्री डख देत नही, सो कोश डुष्काल न
आवे कही ॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नही वरसे, थोडो पण न
ही ज्यु जन तरसे ॥ १९ ॥ आतंक जिरण सब टल जावे, नूतन
वेदन नहि सतावे ॥ प्रभु चोतिश अतिशय करी ठाजे, वाणी पेंतिस
जिम धनगाजे ॥ २० ॥ चोसछड़ो जिननक्ति करे, सुर नर सेवा मन
हरप धरे ॥ पाखरुमत खरुण मान नणी, त्रिगढो रचे करवामहि
मा घणी ॥ २१ ॥ प्रथम प्राकार सो रूपा तणो, कचन कोसीसा
पीत नणी ॥ तोरण मणि रत्नमें चग कह्यो, पावडी दश सहस्र प्र
माण लह्यो ॥ २२ ॥ डुजो गढ सोवनके माहि, रतन कोशीसा
ठवि ठाही ॥ रतनगढ प्रीजो प्रवर घणो, कोशीसा मणीके मा

ही नणो ॥ २३ ॥ पावढीया चारुहि पोलतणी, पांच पांच हजा
 र रसाल बणी ॥ नितिया तिनुही कोटिगणी, अर्धसहस्र धनुष ठर
 तंग नणी ॥ २४ ॥ धनुष तेत्रीश बतीस अगुली, उपर बली ग्रंथाका
 खुली ॥ पावढीया उचा चोडापणो, एक रयणीके परमाण बने
 ॥ २५ ॥ लवां तो धनुष पंचाशी सही, पीठकामथ्य जागे शोज रही ॥
 आयाम विष्कन ठविश तणी, दोयर्जे बली धनुष उचाई नणी ॥ २६ ॥
 कोट कोटको अतर सो तेरे, जोजन ममल परकाश करे ॥ पीठिका
 पर स्फाटिकरतन केरो, सिहासण सोहे अधकेरो ॥ २७ ॥ तिण उप
 र विराजी धर्मकहे, वारे पर्यदाकी वेठक कहे ॥ आवक आविका
 देश विरितिधणी, कल्पवासिक देव इशाण अणी ॥ २८ ॥ विमाणि
 क सुरि साधु समणी, ए तीनुंही अगनिकूण नणी ॥ वितर ज्योतिषी
 अरु नवणपति, नैरीत कूण वेठत देव अति ॥ २९ ॥ देवीबली तीनु
 ही देवतणी, वाव्य कुणमें वेठत सेव नणी ॥ ३० ॥ इणविध बे
 ठी उपदेश सुणो, शुद्धनावथकी अधमेल धुणो ॥ एक जोजन लगे
 अमृतधारा, वैरागपणो ग्रहेव्रत सारा ॥ ३१ ॥ ग्रहगण ठगे नित
 दिशचारी, एकविश प्रगटे रवि हृद धारी ॥ प्रसवे नवन केई जम
 नारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥ ३२ ॥ जे रवि शशी मेरु
 उपमा सिधु, गुणकहि न शकू मुजमति धिंडु ॥ जिनगुण मदिमा
 पार न पावे, सुरगुरु सरस्वति स्वयगुण गावे ॥ ३३ ॥ प्रभु समरण
 जो करे जाव पके, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जल
 ण जलोदर रोग हठे, वध वधण परवश डु ख कटे ॥ ३४ ॥ रीदिसि
 दि जरपूर नमार घणो, परताप ते प्रभुजी नाम तणो ॥ प्रथमपव
 मगल अतिनारी, तिलोक कहे सेवाद्यो चरणारी ॥ ३५ ॥ सब
 उगणीगें सबत्सर त्रिर्गें, ए ठव स्तवना करी जगीर्गें ॥ शुद्धना
 वें नणो गुणो नर नारी, ते पावे नवजल निधि पारी ॥ ३६ ॥ कलश ॥
 इमदेव अरिहत सेव कीरति, करिये एक चित्त चावसू ॥ तरियें न

वज्रल ड खसागर, वेठ कर जिमनावसुं॥ तुम नाम मगल टले वदंगल,
करुणा मुऊपर कीजीयें चरणसरणकी सेव साहेव, अचल पद
वी दीजिये, प्रभु अब तो महेर करिजीयें ॥१॥ इति अर्हंतस्तोत्र ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनवृद्ध प्रारभ ॥

॥ त्रिजगीहृद ॥ जिनसासन स्वामी, अतरजामी, शिवगतगा
मी, सुखकारी ॥ जगमें जसवता, श्रीजगवता, सुगुण अनता, उप
गारी ॥ सिद्धार्थकुल आया, जगत सुहाया, छनपल जाया, गुण
धारी ॥ धन त्रिसलानदन, कुलध्वज स्पंदन, जिनचरननकी वलि
हारी ॥ १ ॥ आसण कपाया, सुरपति आया, सीस नमाया, छ
जनावें ॥ वैक्रियकी पासैं, मेलि दुलासैं, छे जिन तासैं, गिरि आवे ॥
तीहां प्रभुजीनो, महोच्च कीनो, फिर मुक दीनो, ज्यां महता
री ॥ ध० ॥ २ ॥ शुभवदणा करकैं, निडा हरकैं, स्तवन वच्चरकैं,
घर जावे ॥ जइ रवि ठगाइ, नूधव ताइ, दासी वधाइ, दरसावे ॥
नृप मोच्च कीयो, वानज दीयो, हर्षत ह्यो, नीहारी ॥ ध०
॥ ३ ॥ यौवन वयमाही, नारी व्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहे,
तपस्या तन तावे, शम दम जावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु
कुमासागर, ज्ञान उजागर, गुणरत्नाकर, अधवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥
छुटसजम पाले, दूषण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध
मान ने माया, लोच दगाया, मोह जगाया, अरिघाता ॥ शूकल
मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिण वारी ॥ ध० ॥ ५ ॥
सुणि नाथ वढाइ, मन अकढाइ, आया चलाइ, प्रभु पासैं ॥ विस्म
य अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु नर्म
मिटाया, जिनमग आया, सजम गाय, तिण सारी ॥ ध० ॥ ६ ॥
परथम इडनूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपदी सश्रुति, फरमाया ॥ गण
धरपद जीना, परम प्रवीना, शम दम जीना, तन ताया ॥ बुमा

હી નળી ॥ ૨૩ ॥ પાવહીયા ચારુદિ પોલતણી, પાંચ પાંચ હજાર
 ર રસાલ વળી ॥ નિતિયાં તિનુદી કોટિગણી, અર્ધસહસ્ર ધનુષ ઝર
 તંગ નળી ॥ ૨૪ ॥ ધનુષ તેત્રીશ વતીસ અગુલી, ઉપર વલી મંથાકા
 સુલી ॥ પાવહીયા ઠર્ચાં ચોઢાપણે, એક રચણીકે પરમાણ બને
 ॥ ૨૫ ॥ લવા તો ધનુષ પંચાશી સહી, પીઠકામથ્ય નાગે શોજ રહી ॥
 આયામ વિષ્કન્ન ઠવિશ તણી, વોયર્જોં વલી ધનુષ ઠંચાઈ નળી ॥ ૨૬ ॥
 કોટ કોટકો અતર સો તેરે, જોજન મમલ પરકાશ કરે ॥ પીઠિકા
 પર સ્ફાટિકરતન કેરો, સિદ્ધાસણ સોદે અધકેરો ॥ ૨૭ ॥ તિણ ઠપ
 ર વિરાજી ધર્મકહે, વારે પર્યદાકી વેઠક કહે ॥ આવક આવિકા
 દેશ વિરિતિધણી, કલ્પવાસિક દેવ ડશાણ અળી ॥ ૨૮ ॥ વિમાણી
 ક સુરિ સાધુ સમણી, એ તીનુદી અગનિકૂળ નળી ॥ વિંતર જ્યોતિષી
 અરુ નવણપતિ, નૈરીત કૂળ વેઠત દેવ અતિ ॥ ૨૯ ॥ દેવીવલી તીનુ
 દી દેવતણી, વાઘ્ય કુળમેં વેઠત સેવ નળી ॥ ૩૦ ॥ ડણવિધ બે
 ઠી ઠપવેશ સુણે, શુદ્ધનાવયકી અઘમેલ ધુણે ॥ એક જોજન જગે
 અમૃતધારા, વૈરાગપણે ઘહેવત સારા ॥ ૩૧ ॥ ગ્રહગણ ઠગે નિત
 દિશચારી, એકવિશ પ્રગટે રવિ હવ ધારી ॥ પ્રસવે નવન કેઈ જગ
 નારી, ધન ધન જિન ધન મહેતારી ॥ ૩૨ ॥ જે રવિ શશી મેરુ
 ઠપમા સિધુ, ગુણકહિ ન શકૂ મુજમતિ ધિંડુ ॥ જિનગુણ મહિમા
 પાર ન પાવે, સુરગુરુ સરસ્વતિ સ્વયગુણ ગાવે ॥ ૩૩ ॥ પ્રછ સમરણ
 જો કરે નાવ પકે, અરિ કરિ હરિ જોર ન લાગ સકે ॥ જલ જલ
 ણ જલોદર રોગ હઠે, વધ વધણ પરવશ ડુલ્લ કટે ॥ ૩૪ ॥ રીઢિસિ
 ઢિ જરપૂર જમાર ઘણો, પરતાપ તે પ્રછજી નામ તણો ॥ પ્રથમપદ
 મગલ અતિનારી, તિલોક કહે સેવાદ્યો ચરણારી ॥ ૩૫ ॥ સવત્
 ડગણીર્જોં સવત્સર ત્રિર્જોં, એ ઠવ સ્તવના કરી જગીર્જોં ॥ શુદ્ધના
 વેં નળે ગુણે નર નારી, તે પાવે નવજલ નિધિ પારી ॥ ૩૬ ॥ કલશ ॥
 ડમદેવ અરિહત સેવ કીરતિ, કરિયે એક ચિત્ત ચાવસ ॥ તરિયેં જ

वज्रल ड खसागर, वेठ कर जिमनावसुं॥ तुम नाम मंगल टले वदंगल,
करुणा मुऊपर कीजीयें चरणसरणकी सेव साहेव, अचल पद
वी दीजिये, प्रभु अव तो महेर करिजीयें ॥१॥ इति अर्हतस्तोत्र ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनचंद प्रारंभ ॥

॥ त्रिनेत्रीध्वज ॥ जिनसासन स्वामी, अंतरजामी, शिवगतगा
मी, सुखकारी ॥ जगमें जसवता, श्रीजगवता, सुगुण अनंता, उप
गारी ॥ सिद्धार्थकुल आया, जगत सुहाया, सुजपल जाया, गुण
धारी ॥ धन त्रिसलानदन, कुलध्वज स्पंदन, जिनचरननकी वलि
हारी ॥ १ ॥ आसण कपाया, सुरपति आया, सीस नमाया, सु
जनावें ॥ वैक्रियकी पासैं, मेलि दुलासैं, ले जिनतासैं, गिरि आवे ॥
तीहां प्रभुजीनो, महोच्चव कीनो, फिर मुक दीनो, ज्यां महता
री ॥ ध० ॥ २ ॥ युगवदणा करकैं, निडा दरकैं, स्तवन वच्चरकैं,
घर जावे ॥ नइ रवि ठगाइ, नूधव ताइ, दासी बधाइ, दरसावे ॥
नृप मोच्चव कीयो, वानज दीयो, दर्पत हीयो, नीहारी ॥ ध०
॥ ३ ॥ यौवन वयमांही, नारी ब्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहे,
तपस्या तन तावे, शम दम जावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु
कुमासागर, ज्ञान वजागर, गुणरत्नाकर, अधवारी ॥ ध० ॥ ४ ॥
सुहसजम पाले, दूषण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध
मान ने माया, लोचन दगाया, मोह जगाया, अरिघाता ॥ शूल
मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जिण वारी ॥ ध० ॥ ५ ॥
सुणि नाथ बहाइ, मन अकहाइ, आया चलाइ, प्रभु पासैं ॥ विस्म
य अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु नर्म
मिटाया, जिनमग आया, सजम ठाया, तिण सारी ॥ ध० ॥ ६ ॥
परथम इड्जूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपदी सयुति, फरमाया ॥ गण
धरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम जीना, तन ताया ॥ जुमा

लीशें लारा, गणधर ग्यारा, नय अणगारा, व्रतधारी ॥ ध० ॥ ७ ॥
 चार तीरथ थाप्पां, पाप उथाप्पां, सुव्रत आप्यां, नर नारी ॥ केई
 स्वर्ग सिधाया, केई शिव पाया, श्रीजिनराया, हितकारी ॥ शैले
 शी नावें, प्रभुशिव पावे, जगमें नावे, अविकारी ॥ ध० ॥ ८ ॥
 प्रभु अलख निरंजन, नवहु ख नजन, नवजन रंजण, कृपाला ॥
 जे हृदमन ध्यावे, हु ख पलावे, सुख उपावे, प्रतिपाला ॥ कहे री
 ख तिलोका, नीरत धोका, विजो शिवथोका, नव पारी ॥ ध० ॥ ९ ॥

अथ अरिहतस्तोत्र चंद प्रारभ ॥

॥ मोतीवाम ढद ॥ सदा जगनायकें स्दायक दस, सुंकायकबा
 यक लायक वस ॥ सुभ्रेष्ठ विशेष सुज्येष्ठ कहंत, अहो अरिहत करो
 सुखसंत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुप्रात सुजात, सुगात सुवात सुपा
 त सुआत ॥ लबन सुअष्ट सदस्र कहंत ॥ अहो ॥ २ ॥ विशाल
 सुनाल सुवाल अवाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सु
 लाल नवीक इहत ॥ अहो ॥ ३ ॥ अखरु अमरु अचरु अतंरु,
 अगरु अवरु असरु सुसरु ॥ अफरुण ठरु नये गुणवत ॥ अ
 ॥ ४ ॥ माहावीर गजीर ध्यान सुस्थीर, अचीर विचीर अगीर सुगी
 र ॥ अपीर सुपीर सुबोध कहंत ॥ अहो ॥ ५ ॥ अरीश विरीश
 शत्रुदल पीस, जगीश मगीश गुणीश वरीश ॥ अखेह अगेह अजेह
 रहंत ॥ अहो ॥ ६ ॥ अथापक पाप तीर्थकर आप, जपंत जिनद
 वधत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्रीनगवत ॥ अहो ॥ ७ ॥ अने
 ह विनेह अगेह सुगेह, अमेह विमेह अवेह विवेह ॥ अलेप सुले
 प सदा दरसत ॥ अहो ॥ ८ ॥ न कर्म न नर्म न गर्म उछाह,
 अक्रोध अमान अमाय अदाह ॥ अरोग असोग अजोग तरंत ॥ अ
 हो ॥ ९ ॥ सुग्यान अराध समाधि प्रणाम, विहार करत नवी हि
 तकाम ॥ नजत सुरासुर स्वामि महंत ॥ अहो ॥ १० ॥ कहंत स

दा उपदेश रसाल, हवत मिथ्यातम वधन जाल ॥ आराधक होय
तिरंत अनत ॥ अहो० ॥ ११ ॥ रटत कटत झुरीत समस्त, लह
त सुखामृत ववित वस्त ॥ उद्धारक वृद्ध सहित हितवत ॥ अहो०
॥ १२ ॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक, चरणांबुज धोक, ते रिक्त ति
लोक ॥ विलोक सुदेव जपोजग कत ॥ अहो० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाष्टक ढंद प्रारंभ ॥

॥ नाराच ढंद ॥ प्रसिद्ध सिद्ध शिव कंत, सत श्रेष्ठ देव हो ॥
ऊट्टक दी सक्कल पाप, खेव नीरखेव हो ॥ कलंक वक मक अक,
रच त्व न मवरं ॥ कृपाकरो दया निधी, रिद्धि वृद्धि सिद्धि करं
॥ १ ॥ अरूप रूप स्वअनूप, नूपधू अखम हो ॥ अफम नम
मम गम, ठमके प्रचम हो ॥ अनत ग्यान रूप तोय, पाप मेज
सहरं ॥ कृपा० ॥ २ ॥ प्रमाद क्रोध मानमाय, लोचलेशसो नही ॥
अनंत कालस्थित हे, अनत सुख रासही ॥ अष्ट माहायुण मूल,
त्व सदा सुसवरं ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल, राग द्वेष
सहसा ॥ अगाध जो नवोधि सो, धर्मपोतथी तखा ॥ प्रत्येक ए
कमेक आप, व्याप हो गुणागरं ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप
नाही, पाप फदवध सो ॥ आहार नार दास्य त्रास, नाशकाम धध
सो ॥ अर्जंग ज्ञान संग चंग, गुप्त ना उजागर ॥ कृपा० ॥ ५ ॥
अलोक लोक इव्य क्षेत्र, काल नाव जाण हो ॥ त्रिलोकनाथ त्रात
त्रात, मड चड जाण हो ॥ विनाश किया रोग शोग, जोग नाव न
गुर ॥ कृपा० ॥ ६ ॥ जर्पत जाप आगनाग, सिद्ध चोर सो हटे ॥
कटत वध इव्य नाव, रोग डुख जे मिटे ॥ विषय कपाय लाय
जाय, आय सुख सागर ॥ कृ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिक्त हस्त जोड,
कर्त नित्य वदना ॥ निरोगवोध लाज चहाय, कर्मकी निकदना
॥ नहि जक्तमाहि उर, आपसो विश्वनरं ॥ कृपा० ॥ ८ ॥ नित्य मेव

ए सिद्धाष्टकं, पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्तिसुखदम्भ, नाव
 होत नागरं ॥ नान्यत्र वेवलोक मांहि, सिद्धस्थान उपरं ॥ कृपा०
 ॥ ए ॥ इहो ॥ अजर अमर अविकार हो, सिद्ध निरंजन वेव ॥
 किकर पर करुणा करो, दीजो अविचल सेव ॥ इति सिद्धाष्ट
 कस्तोत्र ढद संपूर्ण ॥

॥ अथ आचार्यस्तोत्र ढद प्रारभ ॥

॥ ढद मरदृष्टार्मे ॥ जे ज्ञान मर्हता, समकितवता, चारित रत
 पतधार ॥ छत्कृष्टी करणी, नवजल तरणी, पंचम वीर्य आचार ॥
 स्वय पाजे पलावे, पाप ह्वावे, उपवेशे नर नार ॥ गणिवर पद त्री
 जे, नित्य नमीजे, कीजे सफल जमार ॥ १ ॥ सव हिंसा टाले,
 दया सो पाजे, निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह
 टारी, पंच जाम शुद्धधार ॥ सुरत चकुनासा, रसना फासा, इडि
 य जितणहार ॥ गणि० ॥ २ ॥ पद्य पद्मग नारी, धानक टारी,
 नारिकथा परिहार ॥ अंग निरखवां वारे, आसन टारे, करे नही
 अधिको आहार ॥ गणि० ॥ ३ ॥ अगशोना टाले, वाढ ए पाजे, क्रोध
 न करे लगार ॥ अजिमान तर्जता, कपट तजता, ममतादी सब
 मार ॥ कपाय एह चारी, महा ड खकारी, जरमावे ससार ॥ ग
 णि० ॥ ४ ॥ कर्मनका फदा, दूर निकदा, चाले ईयां विहार ॥ नि
 रवद्य मुख वाणी, ले छुद्ध अन्न पाणी, दोष धयालीस टार ॥ जय
 णा करि लेवे, विधिसु परठेवे, समितिए सुखकार ॥ गणि० ॥ ५ ॥
 मन वचन काया, गुप्ति त्रिदु माया, गुण ठत्तीस उदार ॥ शुध
 किरियाधारी, ज्ञान जंमारी, करता पर छपगार ॥ उपवेश सुणावे,
 जर्म उढावे, तारे जवि नर नार ॥ गणि० ॥ ६ ॥ वर रूप दीपता,
 महावज्रवता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुध बोले, साद नय खो
 ले, मोले नही लगार ॥ विद्यानिधाना, गुणप्रधाना, गुणगण रत्नाकार

। गणि० ॥ ४ ॥ कृपकृ नदी ताणे, सव मत जाणे, अन्यमतको
परिहार ॥ शीतल शशि जीपे, रवि जिम दीपे, सार्थे बहु अणगा
र ॥ पार्वम हठावे, जैन विपावे, पाले सजम चार ॥ ग० ॥ ७ ॥
आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार ॥ सुमरण
सुखकारी, महिमा चारी, अरिकरी जय परिहार ॥ ड ख जावे दूरें,
संकट चूरे, पूरण रहे जंमार ॥ ग० ॥ ८ ॥ आचारज स्वामी, अं
तरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पा
वे, रसना रचे हजार ॥ अजप गुण गुया, मन समजाया, ति
लोक करे नमस्कार ॥ ग० ॥ १० ॥ सवत् कगणीशें, वर्षे चो
तीशें, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे जावें, सोही सुख पा
वे, ठंड मरहछाधार ॥ प्रातें ठठवदे, डुरित निकदे, रिध सिध जय
जय कार ॥ ग० ॥ ११ ॥ इति ॥ १४३ ॥

॥ अथ उपाध्यायचंद प्रारंभ ॥

॥ हाटकीठंड ॥ ससारसागर, ड खआगर, जाणे नागर, धीर
ए ॥ ततकाल त्यागे, दूर जागे, शूर सागे, वीर ए ॥ मुनिराज पा
सैं, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चवथे पद ठवजाय सुख
करे, कीजें नित्यप्रत्ये जाप ए ॥ १ ॥ आचारग चंग, अंग सुयंगड,
गणायंग, सुखकार ए ॥ चवथो समवा, यंगनीको, जगवड हाता,
सार ए ॥ उपासगअत, गड अंग अष्टम, अनुत्तरोववाई, आप ए
॥ चव० ॥ २ ॥ प्रश्न व्याकरण, जण्यापूरण, अंगविपाक, रसाल ए ॥
गुरुदेवपासैं, अर्थ धाखा, चवदे दूपण, टाल ए ॥ ग्यारा अंगसगो,
पांग शीख्या, अति चित्त, चाल ए ॥ चव० ॥ ३ ॥ उत्पातअग्नी, वी
र्ये तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त, जाणीएं ॥ आत्म प्रवाद, अरु कर्म
पूरव, प्रत्याख्यान, वखाणीयें ॥ विद्या अवध, प्रवाद पूरव, धारत
तोहि, न धाप ए ॥ च० ॥ ४ ॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव, लोकविंड,

सार ए ॥ चतुर्विंश पुरव, अग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुंधार ए ॥ अ
 निमान तज कहे, वेण चारू, नहि करत कूडी, थाप ए ॥ च० ॥ ५५ ॥
 नविकजन जो, प्रश्न पूछे, नव पदारथ, जाव ए ॥ सूक्ष्म वावर, इच्छ
 खटनो, पूछे कोइ, प्रस्ताव ए ॥ तव वेत उत्तर, शोध सुत्तर, वे जिना
 गम, ठाप ए ॥ च० ॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्मराता, बोले निरवध,
 वेण ए ॥ मिथ्यातखमण, जैनमण, पाले जिनवर, केण ए ॥
 गणपदने, जोग सोहे, नामकर्म, आताप ए ॥ च० ॥ ७ ॥ महाव्रत
 पाले, दोष टाले, चाले इरजा, शोध ए ॥ कर्मरूपी, शत्रुघातक, परम
 शूरा, जोध ए ॥ मनवचन काया, करण तीव्र, करत नही, सो पाप
 ए ॥ च० ॥ ८ ॥ उपाध्यायजक्ति, करतजुक्ति, ज्ञानगर, जीवत ए ॥
 मिथ्यात जावे, बोध आवे, थावे शिवपुरकत ए ॥ जैनमार्ग, तरण
 तारण, अवर सब, कलाप ए ॥ च० ॥ ९ ॥ जिन नही, जिनराज
 सरखा, वेण सत, सुखकार ए ॥ देशजिनपद, माहि विचरे, करता
 पर, उपगार ए ॥ मिथ्यात्वअधा, कर्मफदा, ज्ञान असिकर, काप ए
 ॥ च० ॥ १० ॥ नवप्राणी तारे, सज्ञे टारे, बहु सूत्र, विस्तार ए ॥ उच्च
 राव्ययन, इगियार मांसें, कह्यो वर्णव, जहार ए ॥ तिलोक रिख,
 कर जोडि वदे, सवापुण्य प्रताप ए ॥ च० ॥ ११ ॥

॥ अथ साधुस्तोत्रवृद्ध प्रारंभ ॥

॥ कामनी मोहनानी वेशी ॥ साधु निग्रथने वदणा किजीयें,
 मानवको नव सफल करीजीयें ॥ धन जे सत गुणवत्त सोनागि
 या, जोग किंपाकसा जाणके त्यागीया ॥ १ ॥ पंच माहाव्रंत सम
 कित पालता, चार कपाय दावानल टालता ॥ जावसचे मुनि वं
 दू में निज ए ॥ कर्ण सचे जोग सचे सुकित ए ॥ २ ॥ धन जे क्षमा
 वैरागमें राचिया, इच्छ ठ नव पदारथ जाचिया ॥ मन वचने
 काया सम धारता, ज्ञानदर्शन चरण छुड सारता ॥ ३ ॥ समजा

वें करी वेदनी खमता, मरण आयाथकी जे करे समता ॥ गुण
सत्तावीश सज्जम जे धरे, राग अने द्वेष जे किंचित् नहि करे ॥ ४ ॥
तिनहिं शय्यसों मूल निकदिया, मोहनी कर्मसू ते नही फदिया
॥ नही करे विकथा धर्म सुध्यावता, शुक्लध्यान धरकर्म खपावता
॥ ५ ॥ दया ब्रह्मायकी पालता जे मुनि, क्रियाजेद मद सो नही
करे महागुणी ॥ नववाढ मुनिधर्म पाले अखम ए, सकल मिथ्या
तको ब्रह्मयोअ फम ए ॥ ६ ॥ बावीस परिसह जितिया ते सही,
धावन प्राणरक्षक विचरे मही ॥ धावन अन्ना चीरण टालता,
चोराशी कपमा युक्त वै चालता ॥ ७ ॥ एक एक चवथादि षष्ठ
मासी करे, एकावली रतनावली आदरे ॥ गुणरतन सबहु धा
रता, प्रतिमादिक सल्लेषणा जहारता ॥ ८ ॥ तप ऊणोदरी ठे अ
ति मोटको, निह्वाचरी रस त्याग नही ढोटको ॥ काय किलेशने
पिंसलीनता ॥ षष्ठ तप धारके तन करे झीणता ॥ ९ ॥ प्राश्चि
त्त विनय वैयावच्च जे करे, सञ्ज्ञाय ध्यान कावसगग आदरे ॥ प्र
ष्ठन्न खट तप साथे अणगार ए, टाले सहीजिके कर्मको खार ए
॥ १० ॥ चड ज्यू सोमदृष्टे करी दीपता, तप तेजे रवि किरणने जी
पता ॥ सागर जेम गजीर कहीजीए, कुजर जेम धीरजता लीजी
ए ॥ ११ ॥ लब्धि पाया जली प्रगट तपस्या फली, खेलोसही ज
लोसही प्रसिद्ध प्रगटी जली ॥ वप्पोसही केही आम्मोसही पत्ति
या, सव्वोसही कोठबुधि केइ मत्तिया ॥ १२ ॥ विजबुद्धी वली प
वानुसारिया, एकेक मुनिवर वैक्रिय धारिया ॥ चारणा विक्कहरा मुं
निराजिया, ऋद्धविपुलमति सशय नांजिया ॥ १३ ॥ एकेक मति
श्रुति अवधि धणी, मन पर्यव केवल शोना घणी ॥ केवली दोय
कोही सुखकार ए, नवकोही उत्कृष्ट विचार ए ॥ १४ ॥ जघन्य दो
य सहस्र कोही जती, सहस्र प्रत्येक उत्कृष्ट पर्वे सजती ॥ आज्ञा
जिणवकी पालता जे सदा, धन जे जगतमें सकल ठोढे अदा

॥ १५ ॥ डुरित टले मुनि जावछुं जपता, तम दलित होवे जिम
रवि तपतां ॥ कर्म शत्रु जीके करत निकंदना, रिख तिलोकजी
करेतस वदना ॥ १६ ॥ सवत् उंगणीरें तीस मजारए, ज्येष्ठ आदि
ठठ सूरज वार ए ॥ कामनीमोहना बढमें जाणी ए, सुखवेली ज
ले पुष्कर मानीरें ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुद्रि वृद्धि, समृद्धि कां
रण, जपो मुनिवर, जावछुं ॥ धर्मदेव, महंत प्रणमुं, थूण्या सुगुरु,
पसावसू ॥ एम जाणी, सेवो प्राणी, सुसाधू, मनखंत ए ॥ ते जहें
शिवपद, रूप निश्चे, निर्नयशिव सुख, सत ए ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिननामनमोच्चुणं

युक्त स्तवन वद प्रारज ॥

॥ जय जय आदीश्वरजी अजित जणी, सजव अजिनदण
मोक्ष धणी ॥ सुमति पवम सुपासमणी, चंदाप्रजकी जग महिम
धणी ॥ १ ॥ पुष्पदंत शीतल हृष्या कर्म अरी, श्रेयास वासुपूज्य
आर्तिहरी ॥ श्रीविमल अनंत धर्मजितकरी, शातिनाथ प्रह
हृष्यो रोग मरी ॥ २ ॥ कुंभु अर महि जिनसुखदाता, मुनिसुव्रत
नमीश्वर जगताता, रिष्टनेमी करुणारस माता, पारस पारस
सम विरव्याता ॥ ३ ॥ वर्द्धमान जिणद सासणराया, अतिहृमा कर
केवल पाया ॥ चोविश जिनेश्वर मन जाया, प्रणमु बंदू मन
वच काया ॥ ४ ॥ अरिहंत धर्म आवित्तिर्यकरे, स्वयमेव बोध शुद्ध
ध्यान धरे ॥ पुरपोत्तम हरी जिम नांदि मरे, पुरपोत्तम पुंमरीक
पंकसिरे ॥ ५ ॥ पुरुपोत्तम प्रचूगधदस्ति जलें, जिन विचरे जहा
पाखमी गले ॥ लोकोत्तम नाथ हितकार फले, दीपक ज्यो मिथ्या
तम सर्व दले ॥ ६ ॥ उद्योत करे नविलोक हिये, अजयज्ञानरूपी
प्रभु नेत्र दिये ॥ शुद्धमारग चूले जग जे प्राणी, मोक्षपंथ बतावे
सुखदाणी ॥ ७ ॥ कर्मशत्रुशु त्रास्या नव आवे, तिनकू जिणस

रणगत थावे ॥ संघमजित वदायक स्वामी, बोध बीजदाता नमुं
 शिर नामी ॥ ७ ॥ धर्मदायक वेशक नायगाण, धम्मसारही जिन
 चक्रवर्त्ती जाण ॥ अरिहत अपडिहय वरनाण, दसणधरा वियट्ठव
 माण ॥ ८ ॥ रागद्वेष जिज्ञाण जावयाण, नवउध तिन्नाण तार
 याण ॥ धन जिन बुद्धाण बोधकाण, अठकर्म मुत्ताण मोयगाण
 ॥ ९ ॥ सब नाणदसणशिव अचल थया, आरोग अणत अखय
 अथाय रह्या ॥ आवे नहि फिर इण जगमार्ह, सिद्धगति नामधेयं
 कहाई ॥ १० ॥ जिण थानक प्रभु संप्राप्त थया, निजगुण संपूरण आ
 उ कया, असुर सुर गरुड छयंग देवा, इड चड करे प्रभुकी सेवा ॥ ११ ॥
 कल्पवृक्ष चितामणिथी जारी, जिनवर महिमा अपरमपारी ॥ नरक
 निगोद गतिका ताला, जिननामथकी मंगलमाला ॥ १२ ॥ करि केस
 री सावज डुष्ट जिके, वली उदक अगनि जय ड ख तिके ॥ दुर्जन ठल
 बले नहिं चालि शके, जो प्रभु समरण करे जाव पके ॥ १३ ॥ वध
 बंधण परवश ड ख कटे, वली चोर चरड जय दूर हटे ॥ गड युवड
 ज्वरादिक रोग मिटे, जो एक चित्त जिन नाम रटे ॥ १४ ॥ कूडि सिद्धि
 परिवार जंमार अति, तत्त आवर वे सुरराज पती ॥ जिन समरण
 थी प्रशस्त मती, दिन दिन वधे महिमा पुण्यरती ॥ १५ ॥ आज
 कागद लेखिणी मेरु तणी, उदधि जल जेति मसी आणी ॥ सुर गुरु
 गुण गावे प्रेम जणी, अनंत गुणातम त्रिजग धणी ॥ १६ ॥ तिलोक
 रिख कहे शिर नामी, मुज दरिसण द्यो अतरजामी ॥ नव
 नव सरणुं आप तणु, जख लग नहिं द्यो मुज सिद्धपणु ॥ १७ ॥
 सवत् उंगणीशें वर्षे त्रिशें, जिनस्तवन कियो चित्त जगीशें ॥ पढे
 सुणे जो नर नारी, तस घर वरते मंगल चारी ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ जिनवाणिस्तवन षट् ॥

॥ त्रिजंगी षट् ॥ जय जय जिनराया, सूत्र सुणाया, धर्म धता
 या, हितकारी ॥ गणधरजी जीजी, सधि सुमेली, नयरस केजी,

विस्तारी ॥ रचे द्वादश अंग, जंग तरंग, ध्रुव अजग, अतिजारी
 ॥ धन धन प्रभुवाणी, सब सुखदानी, नवजन प्राणी, उर धारी ॥
 ए टेक ॥ १ ॥ यदां नहि तीर्थकर, केवल गणधर, अवधिमुनिवर,
 मनज्ञानी ॥ जघाविद्याचारी, पूरवधारी, आधारक सारी, माहा
 ध्यानी ॥ नहि गणगमणी, पद अनुसरणी, वैक्रिय करणी, परिहारी
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ देवहि स्वमासमण, तारण जवियण, उद्यम लेखण, जिण
 कीनो ॥ इणहिज आधारें, पंचम आरे, धर्मज धारे, जिनजीनो ॥
 आलवण महोठो, सूत्रको उठो, रच न खोठो, हितकारी ॥ ध० ॥ ३ ॥
 शुद्ध सम्यक्तरुवर, अतिदृढ परवर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥
 या दया वधारण, हिंसा वारण, शिवसुख कारण, नवप्पारी ॥ ए बुद्धि
 वढावे, नर्म कढावे, पाप बुढावे, शुभचारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जे बिं
 तो उच्चाटण, मोहणी वाटण, त्रिशल्यकाटण, कातरणी ॥ अरिकं
 व कुवाली, बधण पाली, सुरतरु माली, सुत जरणी ॥ नवोदधिके
 माई, जाण कडाई, वेगो जाइ, नर नारी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सक्षय विप
 र्थाय, अने अथ्यवसाय, तिदुअणमांय, होय नही ॥ त्रिदोष र
 हितं, त्रिगुणसहितं, त्रिपदीरीतं, जेद सही ॥ शुद्ध न्याय आराधी,
 शिववधू साधी, कर्म उपाधि, जिण वारी ॥ ध० ॥ ६ ॥ या विर
 धन करकें, यहासैं भरकें, उपज्या नरकें, डख पाया ॥ बलि गर्भमें
 लटक्या, चौगति नटक्या, जकमें अटक्या, जय जारी ॥ ध० ॥ ७ ॥
 जिण हितकर जाणी, श्रीजिनवाणी, सो जवि प्राणी, सुख पाया ॥
 समकित शुंध करणे, मिथ्या हरणे, नवजल तरणे, शिव पाया ॥
 तिलोकरिख जाची, शारदा साची, मन तन राची, जयकारी ॥ ध०
 ॥ ८ ॥ कलश ॥ दोहा ॥ जिनवाणी जयकार हे, अनुनवरसको
 सार ॥ नय प्रमाण विचारजो, पद्मपात परिहार ॥ ए ॥ क्षम दम उ
 पशम जावहुं, जे साधे नर नार ॥ तिलोकरिख तिणने सदा, प्रणमे
 वारं वार ॥ १० ॥ इति जिनवाणीस्तवनढंद सपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ चोवीश तीर्थकरका लेखाकी चोवीशी प्रारंभ ॥

॥ तेमां प्रथम एकसो पञ्चीश बोल सख्याकी गाथा ॥ श्री वीर
जिणद सासण धनी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ए देशी ॥ प्रणमु नि
रंतर नित्य, जिनचोविशी वर्तमानो ॥ नाम १ बोध नव सख्या, २
द्वीप ३ क्षेत्र ४ दिशा ५ पद्विचानो ॥ विजय ६ पूर्वजनवनाम ७, ८
द्वी ९ तिहां ज्ञान १० जणावं ॥ सेव्या स्थानक सख्या १०, सर्ग गति
११ तिथि बताव ॥ अवन तिथि १२ नक्षत्र १३ समे ए १४, सुं
पन १५ सख्या १६ विचार १७ ॥ जनमतिथि १८ वेला जली १९, उंगणी
२० बोल विचार ॥ ११ ॥ विशमामें जन्म देश, २० नगर २१ माता २२
पिता २३ गति २४ २५ ॥ विशा कुमारी २६ इन्द्र संख्या २७, गोत्र २८
वशकी रीती २९ ॥ नाम स्थापन ३० प्रभु चिन्ह ३१, देहका लक्षण
३२ दाखु ॥ वर्ष ३३ बल ३४ अवगाहना ३५, उद्देद आत्मांगु
ल ३६ जाखू ॥ प्रथम आहार ३७ विवाहनो ३८ ए, लोकांतिक ३९
दान सुधार ४० ॥ कुमार पद स्थिति ४१ राजनी ४२, शिविका नाम
विचार ४३ ॥ २ ॥ दीक्षातिथि ४४ वय ४५ तप ४६, दीक्षा
परिवार ४७ पुर जाणो ४८ ॥ वन ४९ तरु ५० दीक्षा समय, ५१
लोच मुष्टि परमाणो ५२ ॥ सजम ज्ञान ५३ इष्यमोल ५४,
थिति ५५ बलि प्रथम आहारो ५६ ॥ पारणा काल ५७ पुर नाम,
५८ बली परथम वातारो ५९ ॥ वातार गति ६० वृष्टि दिव्यक ६१
द्वय, वसुधारा सख्या ६२ जाण ॥ विहार जूमि ६३ तपस्या ६४
परम, पैसठमो अजिग्रह परिमाण ६५ ॥ ३ ॥ उपसर्ग ६६ प्रमा
दको काल ६७, उद्यस्थको काल ६८ जे आणु ॥ गुणसित्तेरमे
केवल, तिथि ६९ केवल पुर ७० वन वखाणु ७१ ॥ केवल तप ७२
वृद्ध नाम ७३ मान, ७४ वेला ७५ तीर्थ ७६ तीर्थविशेदो ७७ ॥

वर्जित दोष ४८ अतिशय ४९ वाणी, ८० प्रातिहार्य ८१ सुर
 सेव ८२ उमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ बली साधवी ८४ ए, नक्तिवत
 नृप नाम ८५ ॥ सासणाधिष्ठ जह्नु ८६ जह्नुणी, ८७ गणधर ८८
 संख्याजिराम ॥ ४ ॥ साधु ८९ साधवी ९० आवक, ९१ आविका
 ९२ केवल झानी ९३ ॥ मन परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व
 धारक ९६ पहिठानी ॥ वैक्रियवत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९
 प्रकीर्ण सख्या १०० परिमाणो ॥ माहाव्रत १०१ सजम १०२
 आवसग, १०३ सर्व आयु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोह
 नह्नुत्र १०६ स्थानक १०७ बली ए, मोह आसण १०८ तप धार
 १०९ ॥ मोहवेला ११० परिवार तस, १११ युगांतरुत नूमि
 ११२ विचार ॥ ५ ॥ पर्यायांतरुत नूमि, ११३ मुनि प्रकृति ११४
 वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नह्नुत्र ११८
 आवक व्रत ठाणो ११९ ॥ आचार १२० आरो उत्पत्ति, १२१
 धर्म नेद १२२ सजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण धिति
 १२५ इम धोल, एकसो पञ्चीश सारो ॥ केष्क चोथा अगथी ए,
 केष्क मथ विचार ॥ ओता ते अवधारजो, जिम टले कर्म
 विकार ॥ वरते मगल चार ॥ ६ ॥

॥ हवे एकदो पञ्चीश बोलमार्थी प्रथम बोलें
 चोवीशे जिनना नाम कहे ठे ॥

॥ जय जय आवि जिणव, अजित सजव सुखकारी ॥ श्री
 अजिनवन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चदप्रज श्रीसुविधि,
 शीतल श्रेयांस दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, अनत जिन धर्म
 रुपाला ॥ शांति कुशु अर मल्ली नमु ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥
 पार्थ्वनाथ वर्द्धमानजी, प्रणमु मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ हवे समकित प्राप्त थया पढी चोविशो जिननी
नवसंख्या कहे ठे

॥ रिखन जिणद नव तेरा, चव प्रभु सात लहीजें ॥ डुवावश
शांति जिणद, मुनि सुव्रत नव लीजें ॥ रिष्टनेमि नव पार्थ्व, नाथ
वश नव अधिकारो ॥ सत्तोवीस वर्द्धमान, महोटा नवतणो वि
स्तारो ॥ शेष जिन त्रिहु त्रिहुं नणो ए, ग्रथमाहे अधिकार ॥
समकित पाया तिहांथकी, नव संख्या सुविचार ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ हवे चोविश तीर्थकरना पूर्वजव दीपना नाम कहे ठे ॥

॥ प्रथम चार बली सोलमासु, चरम जिनवर लग जाणो ॥
जंबुद्वीपके मांय, तीर्थकर गोत्र बधाणो ॥ नवमासुं बारमा जाण,
अर्थ पुष्करके मांही ॥ शेष सात जिनराज, धातकी खम लहार्ह
॥ तृतीय बोल इम द्वीपनो ए, आगममें अधिकार ॥ सुगुणा ज
न हिय धारजो, अर्जुनव दृष्टि विचार ॥ ८ ॥ ३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनां जन्मक्षेत्रना नाम कहे ठे ॥

॥ पदेलासु बारमा सुधी, पूर्व विवेद क्षेत्र कहीजें ॥ विमल
धर्मजिन जरत, धातकी खम ग्रहीजें ॥ जंबु पूर्व विवेद क्षेत्र, शांति
कुंथु अर जाण ॥ जंबु पश्चिम विवेद, महि जिनराज बरवाण ॥
अनत ऐरवय धातकी ए, जंबु जरत मजार ॥ विशमासु ठेला लगें,
सर्वहो क्षेत्र सुमार ॥ ९ ॥ ४ ॥

॥ पूर्वोक्त क्षेत्रमा चोवीश तीर्थकरनी जन्म दिशा कहे ठे ॥

॥ रिखन सुमति सुविधि, शांति कुंथु जिनराया ॥ ए सितांशु उत्तर
महि, सितोदा दक्षिण पाया ॥ विमल धर्म विशमाथी, ठेला मेरु
दक्षिण माई ॥ मेरुथी उत्तर दिशा, अनतजिन रुद्रि ठपाई ॥ शो
प दिशी जगदीशजी ए, सीताथी दक्षिण माय ॥ वर करणी पर
जावथी, गोत्र तीर्थकर पाय ॥ १० ॥ ५ ॥

वर्जित दोष ४८ अतिशय ४९ वाणी, ८० प्रातिहार्य ८१ सुर
 सेव ८२ वमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ वली साधवी ८४ ए, नक्तिवत
 नृप नाम ८५ ॥ सासणाधिष्ठ जह्नु ८६ जह्नुणी, ८७ गणधर ८८
 संख्यानिराम ॥४॥ साधु ८९ साधवी ९० आवक, ९१ आविका
 ९२ केवल ज्ञानी ९३ ॥ मन परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व
 धारक ९६ पहिठानी ॥ वैक्रियवत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९
 प्रकीर्ण सख्या १०० परिमाणो ॥ माहाव्रत १०१ सजम १०२
 आवसग्न, १०३ सर्व आधु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोह
 नह्नुत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोह आसण १०८ तप धार
 १०९ ॥ मोहवेला ११० परिवार तत्स, १११ युगांतकृत जूमि
 ११२ विचार ॥ ५ ॥ पर्यायांतकृत जूमि, ११३ मुनि प्रकृति ११४
 वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नह्नुत्र ११८
 आवक व्रत ठाणो ११९ ॥ आचार १२० आरो उत्पत्ति, १२१
 धर्म नेद १२२ सजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण यिति
 १२५ इम बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोया अगशी ए,
 केइक ग्रथ विचार ॥ श्रोता ते अवधारजो, जिम टले कर्म
 विकार ॥ वरते मंगल चार ॥ ६ ॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमार्थी प्रथम बोलें
 चोवीशो जिनना नाम कहे ठे ॥

॥ जय जय आदि जिणद, अजित सजव सुखकारी ॥ श्री
 अजिनवन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चवप्रज श्रीसुविधि,
 शीतल श्रेयास दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, अनंत जिन धर्म
 रूपाला ॥ शांति कुंथु अर मल्ली नमु ए, मुनिमुवत नमि नेम ॥
 पार्थ्वनाथ वर्द्धमानजी, प्रणमु मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ अञ्जु ११ प्राण १२ सहस्रार १३, प्राणत १४ वलि विजय १५ वि
माणो ॥ शांति १६ कुशु १७ अर सर्वार्थ १८ सिद्ध, १९ मल्ली जयंत
प्रमाणो ॥ अपराजित २० प्राणत बली २१ ए, अपराजित २२ रित नेम
॥ पार्श्व २३ वीर प्राणतसुरें, २४ उत्कृष्टस्थिति सुख स्वम ॥ १५ ॥ ११
हवे चोवीशे तीर्थकरनी च्यवन कल्याणतिथि कहे ठे

॥ आपाढमास वदि चोथ १, वैशाख शुद्ध तेरश जाणो २ ॥ फा
गुण आठम शुद्ध, ३ वैशाख शुद्ध चोथ प्रमाणो ४ ॥ आवण ठजली
बीज, ५ माघ वदि ठठ कहीजें ६ ॥ अष्टमी जादव कृष्ण, ७ कृष्णचै
त्र पंचमी लीजें ८ ॥ वदि फागुन नौमी तिथि ए ए, वदि ठठ वै
शाख १० तिम ज्येष्ठ ११ ॥ वासुपूज्य च्यवन कल्याणसों, ज्येष्ठ शुद्धि
नवमी विशिष्ट ॥ १२ ॥ १३ ॥ ठजली वारस वैशाख, १४ आवण वदि
सातम १५ आर्ष ॥ वैशाख शुद्धि १५ नाडवरुण, १६ दोईमें तिथि
सातम ठार्ष ॥ नौमी आवण कृष्ण, १७ फागुण शुद्धि बीज ठजाली
१८ ॥ फागुण आवण १९ शुद्धि, चोथ २० पूनम सुविशाली ॥ चव
दश ठजल आसोज नी २१ ए, कात्तिक वदि वारस २२ जाण ॥ चौथ
चैत्र वदि २३ अशाढशुद्धि, ठठ तिथि २४ च्यवन कल्याण ॥ १४ ॥ १२ ॥

हवे चोवीशे तीर्थकरना च्यवन नक्षत्रना नाम कहे ठे

॥ उत्तराषाढा १ रोहिणी नक्षत्र २, मृगशीर ३ पुनर्वसु ४ आ
श्विनी ५ चित्रा ६ विशाखा, ७ अनुराधा ८ मूल ए वतायो ॥
पूर्वाषाढा १० अवण ११, शनिपा १२ नाडपद उत्तरा १३ ॥
अनत रेवती १४ पुष्य, १५ ज्येष्ठा १६ शांति जिनें कहि सुतरा ॥
कृत्तिका १७ रेवती १८ अश्विनी १९ ए, अवण २० अश्विनी २१
धार ॥ चित्रा २२ विशाखा २३ हस्तोत्तरा, २४ च्यवन जिन नक्ष
त्र विचार ॥ १८ ॥ १३ ॥

॥ ते पूर्वोक्त दिशामा पण चोवीश तीर्थकरना जन्म
संवंधि विजयनां नाम कहे ठे

पुखलावती वज्रा रमणिजा, मगलावती बिचारो ॥ पंचमासु
आतमा सुधि, चार एहि नाम उच्चारो ॥ वली चारे एही रीत, नव
मासु धारमा धारो ॥ माहापुरी रिछा नदिल, पुमरिक गणि स्वगपुरी
सारो ॥ सुसमा वीतसोगा चपापुरि ए, कोसवी राजगृही जाण ॥
अयोध्या अदिहत्ता चर्म जिन, विजयपुरी नाम प्रमाण ॥ ११ ॥ १॥

हवे चोवीश तीर्थकरोना पूर्व जवना नाम कहे ठे.

॥ वज्रनाभ १ विमलवाहन, २ विपुलवज्र ३ माहाबल ४ नामें ॥
अतिवल ५ अपराजित, ६ नदि ७ पदम ८ गुणधामो ॥ महाप
दम ९ पवन, १० नलिणी शुक्ल ११ पद्मोत्तर १२ ॥ पद्मसेन १३
पद्मरथ, १४ दृढरथ १५ मेघरथ १६ नरवर ॥ सिद्धावह १७ धन
पति १८ वेश्रमणजी १९ ए, श्रीवर्म २० सिद्धारथ २१ सुप्रतिष्ठ
२२ ॥ आनंद २३ नंदन २४ नामयी, करणी कीनी विशिष्ट ॥ ११ ॥ १॥

हवे चोवीश तीर्थकरनी पूर्वजव पदवी तथा पूर्वजव ज्ञान
तथा विशास्थानकमें कितरा सेवन कीनां १ ते कहे ठे

॥ पुरव जव जिनरिखन, एकठत्र पदवी पाया ॥ जणीया चवथा
पूर्व, करणी करि मन वच काया ॥ शेष तेवीश भमलीक, जण्या सहु
अग झयारा ॥ पेला ठेला प्रभु वीश, धोल सेवन किया सारा ॥
वावीश जिन एक दोय त्रिहु ए, सेव्या स्थानक सार ॥ गोत्र तीर्थ
कर वाधियु, धन धन कृपावतार ॥ १४ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

हवे ते चोवीश तीर्थकरनी सर्गगति कहे ठे

॥ सर्वार्थ सिद्ध १ विजय २ मेवेयक, ३ जयत ४ अजिनदन ५ सु
मति ॥ नमो ठछे ६ मेवेयक, ७ विजय ८ आण ९ अश्रुत १० उत्पत्ती ॥

अ प्रसिद्धो १५ ॥ शक्ति १६ कुंशु १७ अरनाथ, जन्म कुरु
१८ देशमें लीधो ॥ विवेह १९ मगध २० विवेहमें २१ ए,
कुशावर्त्त २२ काशी २३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विपे, ज
न्या दीनदयाल ॥ २२ ॥ २० ॥

॥ ह्वे चोवीशो तीर्थकरनी नगरी कहे ठे.

॥ इकागनूमि १ अयोध्या २ जाण, सावन्ति ३ अयोध्या
४ कहीयें ॥ कचनपुर ५ कोसबी, ६ वणारसी ७ चवपुरी ८ लही
यें ॥ काकनी ए नदिलपुर १०, सिद्धपुर ११ चंपा १२ जाणो ॥ कपि
लपुर १३ अयोजाय १४, रत्नपुर १५ नाम वखाणो ॥ हथिणापुर
१६ गज १७ नाग ए, १८ मिथिला १९ राजगृहि २० ठाम ॥
मथुरा २१ सोरीपुर २२ वाराणसी, २३ कुमलपुर २४ जन्म
धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम ॥ २३ ॥ २१ ॥

॥ ह्वे चोवीशो तीर्थकरनी मातानां नाम कहे ठे ॥

॥ मरुदेवी १ विजया २ सेना, ३ सिद्धार्थी ४ नामें देवी ॥
मगला ५ सुसीमा ६ पृथिवी, ७ लखमणा ८ रामा ए केवी ॥
नदा १० विष्णु ११ जया, १२ श्यामा १३ सुजस्ता १४ जाणी ॥
सुव्रता १५ अचिरा १६ श्रीनाम, १७ देवी माता १८ गुणखाणी ॥
प्रनावती १९ पद्मावती २० ए, वप्रा २१ शिवा २२ सुखकार ॥ वामा
२३ त्रिशला २४ जाणीयें, प्रभु जननी सुविचार ॥ २४ ॥ २३ ॥

॥ ह्वे चोवीश तीर्थकरना पिताना नाम कहे ठे

॥ नानि १ जितशत्रु २ जितारि, ३ सवर ४ मेघ ५ श्रीधर ६
राया ॥ प्रतिष्ठ ७ महासेन ८ सुग्रीव ए, दृढरथ १० विष्णु ११
कदाया ॥ वासुपूज्य १२ कृतवर्म, १३ सिद्धसेन १४ जानु कहीयें ॥
१५ ॥ विश्वसेन १६ सुरराय १७ स्रवर्शन १८ कुनसु लहीयें १९ ॥

हवे चोवीशो तीर्थकरना च्यवन समय तथा स्वप्न तथा स्वप्न
सरख्या तथा स्वप्न संबंधि विचार केने पूठयो ? ते कहे ठे

॥ सद्धु जिनवरनु च्यवन, थयुं आधीनिशि विरियां ॥ सद्धु दिनां
चउदे स्वप्न, उत्तम उत्कृष्ट उच्चरियां ॥ निजपतिसू कहर्यां स्वप्न,
नानि कह्यो इडनी आगे ॥ स्वप्न पाठकसुं तेवीस, नूप परसन
विधि थागे ॥ दान मान वेई जेजिया ए, आनद अग अपार ॥ पुण
दशा परजावथी, सुखें रह्या गर्जमजार ॥ १ ए ॥ १ ४ ॥ १ ५ ॥ १ ६ ॥ १ ७ ॥

॥ चोवीश तीर्थकरनी जन्म तिथि तथा जन्मवेला कहे ठे

॥ चैत्र वदि १ महा शुद्ध, २ दोईमें अष्टमी सारो ॥ महा
शुद्ध चउदश ३ दूज, ४ मास पद्ध सोदि विचारो ॥ अष्टमी शु
कल वैशाख, ५ कार्तिक वदि ६ वारस धारो ॥ वारस उजाली
ज्येष्ठ, ७ पोष वदि वारसज हारो ८ ॥ मगशिर ए माहा वदि
१० पंचमी वारस ए, वारस फागुण वदि ११ जाण ॥ चउदश
फागुण वदि १२ शुद्ध त्रीज माहा, १३ वैशाख वदि तेरश १४ प्र
माण ॥ १० ॥ त्रीज माहा शुद्ध १५ ज्येष्ठ, वदि तेरश १६ दर
साई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगशिर शुद्ध दशमी १८ ठाई ॥
मृगशिर शुद्ध झ्यारस १९, ज्येष्ठ वदि अष्टमी ठाणो २० ॥ अ
ष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्ध पंचमी २२ जाणो ॥ पोष
वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रवदि तेरश मांय २४, अर्धरात
ढलीया सद्धु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरना जन्मदेशना नाम कहे ठे

॥ पहेलासु पंचमा लगे, देश कोशल १ १ २ ३ ४ ५ ॥ वड
६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ९, मलय १० बलीश्र प्रसिद्ध
११ विमासी ॥ अगदेश १२ पाचाल १३, कोशल १४ धर्मजिन

खन कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्जमांय जिनराय, पा
सा रमतां राय राणी ॥ राणी जीत विचार, अजित जिन नाम पहि
ठानी ॥ प्रभुजी गर्जमें आविया ए, दुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धा
न्यसज्जव थयो ते जणी, सज्जव नाम उदार ॥ ३९ ॥ गर्जमांय
जिण वार, ५५ जयकार उच्चाखो ॥ उपनो आनद ताम, नाम
अजिनदन धाखो ॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सुकी
नो ॥ जाणी गर्ज प्रजाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम
ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो आय ॥ नाम पद्मप्रभुजी तणु,
थयुं प्रसिद्ध जगमाय ॥ ४० ॥ पासा खरधरा मात, सुदर थयां
गर्ज प्रजावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चड पिवण उमावे ॥
चडलह्वन चडवर्ण, चडप्रज नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स
हेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ नूप दाहज्वर जाण, राणी
कर फरसथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमरसु ए, नाम दियो हित
धार ॥ डव्य जाव शीतल प्रभु, नामथकी निस्तार ॥ ४१ ॥ कू
रवेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिही खेलण ॥ जावतां श्रेय
थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, व
सण दोहलो थयो माई ॥ वसतां पूज्यां सो सुरें, वासुपूज्य नाम
थपाई ॥ तन मति विमल थई मातनी ए, दियो विमल सुत नाम ॥
मात बेखी अनतमणिमालथी, अनत अनत गुणधाम ॥ ४२ ॥
धर्म इष्टा गर्जपरजाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर
मांय, शांति प्रभु नामज दीधो ॥ अरि थया कंठुआ जेम, कुठु
प्रभु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम
कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥
मुनि जिम माता जावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ ४३ ॥ शत्रु न
मादघा सर्व, नमी जगमाही कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र,
अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कल्ल सर्प विंटी सेज, माता निज हाथे

सुमित्र २० विजय नरपति २१ कहा ए, समुद्रविजय २२ सुविस्थात ॥
अश्वसेन २३ सिद्धारथ जी, २४ ए चोवीश जिन तात ॥ २५ ॥ २६ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरना पितानी गति कहे ठे

॥ रिखन जिनेश्वर तात, नागकुमारनी माई ॥ ईशान कल्पनी
मांय, डुजासु आवमा ताई ॥ नवमासुं सोलमा जाण, गया
कल्प सनत्कुमारो ॥ सत्तरमासुं तेवीसमा तणा, गया महेंद्र म
जारो ॥ सिद्धारथ सर्ग बारमा ए, रिखनदत्त शिववास ॥ अजर
अमर सुख पाइया, प्रणमुं नित्य वल्लास ॥ २६ ॥ २७ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनी मातानी गति कहे ठे ॥

॥ प्रथमसु अष्टमा लगें, वरजिन नदा माई ॥ पद्मोती मुक्ति म
जार, नवमासु सोलमा ताइ ॥ पद्मोती सनत्कुमार, त्रिशला अडु
सर्गमजारो ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनदजननी सुविचारो ॥
महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सुख श्रेयकार ॥ केइ हवे
जाइ शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मजार ॥ २८ ॥ २९ ॥

हवे चोवीशो तीर्थकरना जन्म कल्याणकमा दिक्कुमा

रिका तथा इजो आव्या ते तथा चोवीशो तीर्थ

करना गोत्र, अने वंश कहे ठे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म, वपन्न कुमारी आई ॥ सद्गुना चोसठ ३६,
मोक्षव मेरु गिरि कियो जाई ॥ मुनि सुव्रत रिष्ट नेमि, गात्रवर
गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतंस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप
गोत्री शेष जिन सद्गु ए, इहवाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुज
जातमें, जन्म लियो जगजाण ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

हवे चोवीश जिनना यथागुण विशेषनाम कहे ठे

॥ प्रथम वृषजन्तु स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिण्णी रि

खन कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्जमांय जिनराय, पा
सा रमतां राय राणी ॥ राणी जीत विचार, अजित जिन नाम पहि
ठानी ॥ प्रभुजी गर्जमें आविया ए, इष्काल टख्यो तिण वार ॥ धा
न्यसजव थयो ते जणी, सजव नाम उदार ॥ १९ ॥ गर्जमांय
जिण वार, इइ जयकार उच्चाखो ॥ उपनो आनद ताम, नाम
अजिनदन धाखो ॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सुकी
नो ॥ जाणी गर्ज प्रजाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम
ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रभुजी तणु,
थयुं प्रसिद्ध जगमांय ॥ २० ॥ पासा खरधरा मात, सुदर थयां
गर्ज प्रजावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चड पिवण उमावे ॥
चडलहन चडवर्ण, चंडप्रन नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स
हेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ जूप दाहज्वर जाण, राणी
कर फरसेथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमारसु ए, नाम दियो हित
धार ॥ इव्य नाव शीतल प्रभु, नामथकी निस्तार ॥ २१ ॥ कू
रवेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिही खेलण ॥ जावतां श्रेय
थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवघर वास, व
सण दोहलो थयो मार्फ ॥ वसतां पूज्यां सो सुरें, वासुपूज्य नाम
थपार्फ ॥ तन मति विमल थई मातनी ए, दियो विमल सुत नाम ॥
मात देखी अनतमणिमालथी, अनत अनत गुणधाम ॥ २२ ॥
धर्म इष्टा गर्जपरजाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर
माय, शांति प्रभु नामज दीधो ॥ अरि थया कथुआ जेम, कथु
प्रभु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम
कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥
मुनि जिम माता जावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ २३ ॥ शत्रु न
माहया सर्व, नमी जगमाही कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र,
अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सर्प विंटी सेज, माता निज हाथे

सुमित्र १० विजय नरपति ११ कहा ए, समुद्रविजय १२ सुविस्मयात ॥
अश्वसेन १३ सिद्धारथ जी, १४ ए चोवीश जिन तात ॥ १५ ॥ १३ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरना पितानी गति कहे ठे

॥ रिखन जिनेश्वर तात, नागकुमारनी माई ॥ ईशान कल्पनी
मांय, इजासू आठमा ताई ॥ नवमासु सोलमा जाण, गया
कल्प सनत्कुमारो ॥ सत्तरमासुं तेवीसमा तणा, गया महेंद्र म
जारी ॥ सिद्धारथ सर्ग वारमा ए, रिखनवत्त शिववास ॥ अजर
अमर सुख पाइया, प्रणमुं नित्य वदनास ॥ १६ ॥ १४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरनी मातानी गति कहे ठे ॥

॥ प्रथमसुं अष्टमा लगे, वरजिन नवा माई ॥ पद्मोती मुक्ति म
जारी, नवमासु सोलमा ताई ॥ पद्मोती सनत्कुमार, त्रिशला अशु
सर्गमजारी ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनवजननी सुविचारो ॥
महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सुख श्रेयकार ॥ केइ हवे
जाशे शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मजारी ॥ १७ ॥ १५ ॥

हवे चोवीशे तीर्थकरना जन्म कल्याणकमा दिक्कुमा

रिका तथा ईशो आख्या ते तथा चोवीशे तीर्थ

करनां गोत्र, अने वंश कहे ठे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म, उपन्न कुमारी आई ॥ सद्गुना चोसठ इइ,
मोक्षव मेरु गिरि कियो जाई ॥ मुनि सुव्रत रिष्ट नेमि, गोत्रवर
गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतंस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप
गोत्री शेष जिन सद्गु ए, इहवाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल
जातमें, जन्म लियो जगजाण ॥ १८ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

हवे चोवीश जिनना यथागुण विशेषनाम कहे ठे

॥ प्रथम वृषजन्तु स्वपन, देखि जननी दरखाणी ॥ तिण्णी रि

खन कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्जमांय जिनराय, पा
सा रमता राय राणी ॥ राणी जीत बिचार, अजित जिन नाम पहि
ठानी ॥ प्रभुजी गर्जमें आविया ए, झुझाल टल्यो तिण वार ॥ धा
न्यसजव थयो ते जणी, सजव नाम उदार ॥ ३९ ॥ गर्जमांय
जिण वार, इइ जयकार उच्चाखो ॥ उपनो आनद ताम, नाम
अजिनदन धाखो ॥ सुमति उपनी मात, शोष्यपुत्र न्याय सुकी
नो ॥ जाणी गर्ज प्रजाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कम
ल शय्यापर ए, सुवर्णनो दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रभुजी तण,
थयुं प्रसिद्ध जगमांय ॥ ४० ॥ पासा खरधरा मात, सुदर थयां
गर्ज प्रजावें ॥ दियो सुपारस नाम, मात चड पिवण ठमावे ॥
चडलहन चडवर्ण, चडप्रज नाम कहावे ॥ सुविधि थपाणो स
हेर, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ नूप दाहज्वर जाण, राणी
कर फरसेथी शाता ॥ तिणथी शीतल कुमारसु ए, नाम दियो हित
धार ॥ इव्य जाव शीतल प्रभु, नामथकी निस्तार ॥ ४१ ॥ कू
रदेव मणिपीठ, जननि दोहलो तिही खेलण ॥ जावतां श्रेय
थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ विकट देवधर वास, व
सण दोहलो थयो मार्फ ॥ वसतां पूज्या सो सुरें, वासुपूज्य नाम
थपार्फ ॥ तन मति विमल थई मातनी ए, दियो विमल सुत नाम ॥
मात देखी अनतमणिमालथी, अनत अनंत गुणधाम ॥ ४२ ॥
धर्म इच्छा गर्जपरजाव, धर्म जिन नाम प्रसिद्धो ॥ शांति करी पुर
माय, शांति प्रभु नामज दीधो ॥ अरि थया कंधुआ जेम, कुधु
प्रभु नाम थपाणो ॥ रत्नमय आरो दिख्यो, अरह जिन नाम
कहाणो ॥ फूलसेजें सोवण दोहलो ए, मल्ली सुनाम उदार ॥
मुनि जिम माता जावथी, मुनि सुव्रत सुविचार ॥ ४३ ॥ शत्रु न
मादघा सर्व, नमी जगमाही कहाया ॥ अरिष्ट रत्न देख्यो चक्र,
अरिष्टनेमिनाथ सुहाया ॥ कल्ल सर्प विंटी सेज, माता निज हाथे

हूया ॥ पार्श्वनाथ पुरिसावाणी, प्रसिद्ध खट मतमें गाया ॥ वृद्धि
थई रुद्धि सपदा ए, तिण कारण वर्धमान ॥ इइ वियो महावीर,
जय जय जय जगनान ॥ ३४ ॥ ३० ॥

हवे चोवीश तीर्थकरना चिन्ह तथा लछन कहे ठे

॥ वृषज १ गज २ हय ३ कपी ४, नारंगपंखी ५ चिन्ह सोहे ॥
पद्म ६ सार्थीयो ७ चंड ८, मकर ९ श्रीवह्म १० मन मोहे ॥
गैमो ११ महिष १२ वाराह, १३ सिचाणो १४ वज्र १५ कहीजें ॥
हरिण १६ वकरो १७ नवावर्त्त, १८ कलश १९ काठबो २० सुय
हीजें ॥ नीलोत्पल २१ शख २२ सर्प २३ ऐ, सिद्ध २४ चिन्हथी ऊँ
खाण ॥ एक सहस्र अष्ट लछन जलां, सद्गु जिननु परिमाण ॥ २५ ॥

हवे चोवीश जिनना वर्ण तथा बल कहे ठे ॥

॥ चंद्रप्रज्जी ने सुविधि, दोय जिन शुक्ल सुहावे ॥ पद्मप्र
न वासुपूज्य, वेदद्युति रक्त कहावे ॥ महिनाथ श्रीपार्श्व, नीलव
र्ण दमके काया ॥ मुनिसुव्रत रिष्ट ज्याम, रंगें अधिक सुहाया ॥
शेष शोल जिनवर सद्गु ए, कचन वर्ण शरीर ॥ अनतबल सद्गु जिन
तणु, धन धन साहस धीर ॥ २६ ॥ २३ ॥ २४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी अवगाहना उछेदागुल
तथा आत्मागुलें कहे ठे

॥ धनुष पांचसे १ उछेदागुल, साढी चारसो २ जाणो ॥ चारसैं
३ साढीतिनसैं, ४ तिनसैं ५ अढिसैं षवखानो ॥ दोयसैं ७ वेढसैं ८
सोय ९, नेठ एशी कहा ईसो ॥ सिपेर साठ पचास, पेंतालीस
चालीस पेंतीसो ॥ तिस पच्चीस विस पंनरा वश ए, हस्त नव सा
त विचार ॥ एकसो बीश आत्मागुलें, जाणो जग किरतार ॥ २७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरने आधार, तथा विवाह, तथा
लोकातिके देवोनी स्तुति तथा दान दीधुं, ते कहे ठे.

॥ प्रथम कल्पतरु आधार, शेष विशिष्टज लीनो ॥ मछी रिष्ट
नेमि वर्जि, शेष सद्गु व्याहज कीनो ॥ सद्गुने लोकातिक देव,
कष्टु प्रष्टु नविजन तारो ॥ जाण्यो सजम समय, प्रष्टु दियो दान उ
वारो ॥ सोनईयो सोल मासानो ए, तिनसें अठ्ठाशी कोड ॥ एशी
लाख ठपर बली, एक सवहर जोड ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी कुमारस्थिति कहे ठे ॥

॥ पूरव विश लख १ अठार २, पनरा ३ साढीबारा ४ दशो ५ ॥
साढिसात ६ पंच ७ अठ्ठी ८, पूरव सहस्र पञ्चासो ९ ॥ पूर्वसहस्र
पञ्चीस १०, वर्षे एकविश ११ लक्ष जाणो ॥ अठारे १२ पनरा
१३ साढी सात १४, अठ्ठीलक्ष १५ धर्म बखाणो ॥ सहस्र पची
श १६ तेवीस १७ एकवीस १८ ए, सो १९ साढि सात २० ह
जार ॥ अठ्ठाई सहस्र २१ तीनशें २२ त्रीश २३ त्रीश २४, वर
स रहिया स्वामि कुमार ॥ ३९ ॥ ४१ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी राजस्थिति कहे ठे

॥ पूरव त्रेसठ लाख १ त्रेपन २, चुमालीश ३ साढी ठत्रीशो ४ ॥
गुणतिस ५ साढी एकवीश ६ चठवें ७, खट ८ एक ए एक १० जगी
शो ॥ पूरव पचास हजार ११ बरस, बयालीस लाखो १२ ॥ वासुपू
ज्य वर्जित त्रिश १३, वीश १४ पडा १५ पंच १६ दाखो ॥ पचास सह
स्र १७ साढिसहेंतालीस १८, बड्यालीस १९ ए १९, मुनिसुव्रत पं
डा हजार २० ॥ नमी पंच २१ शेष तिहु मेली २२ २३ २४,
राजपदनो परिहार ॥ ४० ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी शिविकानां नाम कहे ठे ॥

॥ सुदंतणा १ सुप्रना, २ सिद्धार्थी ३ अर्थ सिद्धा ४ कहीयें ॥
अनपंकरा ५ निवृत्तिकरा ६, मनोहरा ७ मनोरमा लहियें ८ ॥
सुरप्रना ९ शुक्लप्रना १०, विमल प्रना ११ नाम वखानी ॥ एषि
विनाथा १२ देवदिक्षा १३, सागरदत्ता १४ नागदत्ता १५ जासी ॥
सर्वार्थी १६ विजया १७ विजयंतीका ए १८, जयंती १९ अपरा
जिता २० धार ॥ देवकुरा २१ धारावती २२, विशाला २३ सु
चंद्रप्रना २४ शिविका सार ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी दीक्षातिथिना ताम कहे ठे ॥

॥ चैत्र वदि आत्म १ नोम, महा २ पूनम मार्गशिरकी ३ ॥
महा शुद्ध द्वादशी ४ शुद्ध, वैशाख नौमी ५ जिनवरकी ॥ का
र्तिक वदि ६ जेठ शुद्धि ७ पोष वदि ८, त्रिदू तेरश तिथि जाणो ॥
मार्गशिर वदि तिथि ठठ, माघ ए वदि वारस १० ठाणो ॥ फागण
वदि तेरश तिथि ए ११, फागण अमावस १२ जाण ॥ माघ शुक्ल
ल तिथि चतुरथी १३, विमल जिन दीक्षा कल्याण ॥ ४३ ॥
वैशाख कृष्ण चठदश १४, माघ शुद्ध तेरश धारो १५ ॥ ज्येष्ठ
वदि चठदश १६, वैशाख शुद्ध पंचमी १७ सारो ॥ झ्यारस १८
शुद्ध माघ, १९ मछिजिन एह तिथि आई ॥ फागण शुद्ध द्वाद
शी, २० आषाढ वदि नौमी २१ कहार् ॥ आवणशुद्ध ठठ २२
नेमजी ए, पोष वदि दशमी २३ जाण ॥ मार्गशिर वदि दशमी
२४ इम, जिन दीक्षा कल्याण ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना वय तथा दीक्षा तप कहे ठे ॥

॥ वासुपूज्य मछि नमी, नेमी पारस वर्धमानो ॥ प्रथमवष
ली दीक्षा, शेष जिन अत वय मानो ॥ वासुपूज्य तप चोय, अ

उम तप मछि जिन पासो ॥ सुमति जिन कर आहार, दीक्षा
जिनी सुवल्हासो ॥ शेष वीश जिनेश्वरू ए, ठठ तप सजम धार ॥
दीक्षा ली जगदीश जी, धन धन प्रभु अवतार ॥ ४४॥४५॥४६॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनो परिवार कहे ठे ॥

॥ चार सहस्र नर साथ, रिखन प्रभु दीक्षा धारी ॥ ठरौ श्री
वासुपूज्य, मछि तिनरौ परिवारी ॥ तिनरौ पारस नाथ, चरम जि
न एकलविहारी ॥ शेष उगणीश जिनराज, एक एक सहस्र ठ
झारी ॥ इणविध चोवीश जगदीशने ए, दीक्षासमय परिवार ॥ तप
जप करी जिए शिव वरी, प्रणमुं वारं वार ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना दीक्षापुर दीक्षावन कहे ठे ॥

॥ रिखन अयोध्या नेम द्वारका, शेष जन्म पुरमें धारी ॥ आ
दि जिनद सिद्धार्थ, वनमें नये अणगारी ॥ दूजाथी ग्यारमा लगें,
सहस्रात्र वन विचारी ॥ विहार गृह द्योय सहस्रात्रवप्र, शातिथी
मछि उझारी ॥ ए चिहू सहसावन कहाँ ए, नील गुहान सह
सावन जाण ॥ आश्रमपद ज्ञात खरुमें, दीक्षावन पदिचान ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीश जिनना दीक्षातरु, तथा दीक्षावेला, दीक्षा
लेती वखत कया तीर्थकरें केटली मुष्टिनो लोच कख्यो ते,
तथा तेमनु सयमज्ञान, डुप्यमोल, डुप्यस्थिति कहे ठे ॥

॥ सर्व अशोक तरुतलें, संयम समे ज्ञानज चारो ॥ रिखन
जिनद चउमुष्टि, शेष पंच मुष्टि उझारो ॥ सुमति श्रेयांस नेमी
पार्श्व, पूर्वान्हें दीक्षा कालो ॥ शेष पश्चिमान्ह समे, दीक्षा लीनी ठ
जमालो ॥ प्रथमसु त्रेविशमा लगें ए, देव डुप्य सदा जाण ॥ वर्ष जा
जेरो वीरने, लेखामें परिमाण ॥ ४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरमां कया तीर्थकरें शेनो दिव्य आहार
कस्यो तथा कया तीर्थकरनो केटलो पारणाकाल ? ते कहे ॥

॥ रिखज जिनवे आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जि
नदने खीर तणो, जोजनवर लीयो ॥ रिखज जिनदनो पारणो, आ
यो वारे मासी ॥ शेष जिनदनो पारणो, आयो छजे दिन विमा
सी ॥ धन धन दीन दयालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम
खपशम सागरू, वदू में निश दीश ॥ प्रणमु में ॥ ४८ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना पारणानां नगर कहे ठे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावञ्चि ३, अयोध्या ४ विजय ५
पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पामली ७, पद्म खम ८ श्वेतपुर ९ की
नो ॥ रिष्ट १० सिधञ्च ११ महापुर, १२ धनक १३ वर्धमान पुरमांश
१४ ॥ सोमणस १५ ग्राममदिर १६, चक्रराज १७ पुरताई १८ ॥ मिथि
ला १९ राजगृहि २० वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३
॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणा पुर धाम ॥ ४९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना प्रथम दातार कहे ठे

॥ सिक्कस १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंदत्त ३ इन्द्रदत्त ४ व
खाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ मर्हिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो
॥ पुष्प ९ पुनर्वसु १० नव ११, सुनव १२ जय १३ जसधारी ॥
विजय १४ धर्म सिद्ध १५ सुमित्र १६, व्याघ्रसिद्धनाम १७ विचारी
॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १९ ए, ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ खदार
॥ वरदिन्न २२ धन २३ बडुल २४ कहा, प्रथम दान दातार ॥ ५० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा
पचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे ठे ॥

॥ पहेलासु आत्मा तणा दातार, तिणजव शिव पाई ॥ नव

मासुं ठेला लगें, मुक्ति त्रीजा नव मांइ ॥ पंच दिव्य सद्गुने जाण,
साढी वारा कोढी वसुधारो ॥ रिखन ठेला जिन तीन, आर्ज अ
नार्ज विहारो ॥ शेष वीश जिन राजजी ए, आरज देश मजार ॥
विचखा दीनदयाल जी, करवा पर उपगार ॥ ५१ ॥ ६० थी ६३ ॥
॥ हवे चोवीश तीर्थकरना, उत्कृष्ट तप, तथा अग्निग्रह,
उपसर्ग अने प्रमाद काल कहे ठे ॥

॥ रिखन जिनद शासन उत्कृष्ट, तप बारें मासी ॥ बिजासुं त्रे
विशमा लगें, तप अछमासी विमासी ॥ वर्धमान खटमासी सर्व,
अग्निग्रह इत्यादिक चारो ॥ उपसर्ग पारस वीर, शेष सद्गुने परि
हारो ॥ प्रमाद काल श्रीरिखनने ए, एक अहोरात्र उच्चार ॥ अं
तर मुहूर्त श्रीवीरने, शेष सद्गुने परिहार ॥ ५२ ॥ ६४ थी ६७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनो ठगस्थकाल कहे ठे ॥

॥ सहस्र वर्ष १ वारा २ चण्डा, ३ अठारा ४ वीश विवेको ५
॥ मास ६ ठ ७ नव ८ चार ए तीन, १० दोहने ११ एक १२ एको १३
॥ तिन १४ दोय १५ एक १६ एक १७ नव, १८ मछ्री जिनने
एक १९ पहेरो ॥ झ्यारा मास २० नव जाण, २१ चोपन दिन
नेमजी हेरो २२ ॥ रात्रि ज्याशी पारस प्रभु २३ ए, साढीवारा वर
स विचार ॥ उपर पंदरा दिन चरम २४, ठगस्थकाल सुमार ॥ ५३ ॥

हवे चोवीश तीर्थकरनी केवलज्ञाननी तिथि कहे ठे

॥ फागण वदि १ पोष शुद्ध, तिथि झ्यारस २ आइ ॥ पंचमी
कार्तिक कृष्ण २, पोष शुद्धि चौदश ४ गर्ग ॥ चैत्र शुद्ध झ्यारस,
५ चैत्रकी पूनम ६ कहीयें ॥ फागण वदि ठठ सातम ७८, कार्ति
क शुद्ध तीज सुगहियें ए ॥ पौष वदी चण्डवश १० माघ अमावास
११ ए, विज माघ शुक्ल वखाण १२ ॥ शुद्ध पौष ठठ १३ श्रीविम

॥ हवे चोवीश तीर्थकरमां कया तीर्थकरें शेनो दिव्य आहार
कस्यो तथा कया तीर्थकरनो केटलो पारणाकाल ? ते कहे ॥

॥ रिखन जिनवे आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जि
नदने खीर तणो, जोजनवर लीयो ॥ रिखन जिनवनो पारणो, आ
यो वारे मासी ॥ शेष जिनवनो पारणो, आयो छजे दिन विमा
सी ॥ धन धन दीन व्यालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम
वपशम सागरू, वदू में निश दीश ॥ प्रणमुं में ॥ ४८ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना पारणाना नगर कहे ठे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावधि ३, अयोध्या ४ विजय ५
पुर चीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पामली ७, पद्म खंभ ८ श्वेतपुर ९ की
नो ॥ रिष्ट १० सिधु ११ महापुर, १२ धनक १३ वर्धमान पुरमां
१४ ॥ सोमणस १५ ग्राममंदिर १६, चक्रराज १७ पुरवाई १८ ॥ मिथि
ला १९ राजगृहि २० वीरपुर २१ ए, छारिका २२ कोष कटग्राम २३
॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर श्म, पारणा तणा पुर धाम ॥ ४९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना प्रथम दातार कहे ठे

॥ सिद्धांत १ ब्रह्मवत्त २ नाम, सुरिवत्त ३ इन्द्रवत्त ४ व
खाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ मर्हिंद ७ सोमवत्त ८ सो जाणो
॥ पुष्प ९ पुनर्वसु १० नव ११, सुनव १२ जय १३ जसधारी ॥
विजय १४ धर्म सिद्ध १५ सुमित्र १६, व्याघ्रसिद्धनाम १७ विचारी
॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १९ ए, ब्रह्मवत्त २० विन्न २१ उदार
॥ वरदिन्न २२ धन २३ वहुल २४ कह्या, प्रथम दान दातार ॥ ५० ॥
॥ हवे चोवीश तीर्थकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा
पचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे ठे ॥

॥ पहेलासु आठमा तणा दातार, तिणजव शिव पाई ॥ नव

कहावे ॥ पामल १२ जबू १३ अश्वत्थ १४, दहीवन १५ नंदि
१६ जिलककी ठाया १७ ॥ आम्र १८ अशोक १९ चपक २०,
वकुल २१ वेढस तल्ले आया २२ ॥ धातकी २३ शाली २४ उंच
पणो ए, देहूयी वार गुणा जाण ॥ शासनपति श्रीवीरने, एक
विश धनुष्य प्रमाण ॥ ५७ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

हवे चोवीश तीर्थकरनी केवलज्ञाननी वेला, तथा प्रथम स
मवसरणमे तीर्थ स्थापन तथा जिनातरे तीर्थविच्छेद कहे ठे

॥ रिखज जिनदसें पार्श्व लगे, केवल पूर्वान्हे ॥ महावीर गुण
धीर, केवलवेला पश्चिमान्हे ॥ प्रथम समोसरण मांय, तीर्थ था
प्यां तेवीशो ॥ ठेला दूजा मांय, तीर्थ थाप्या जगदीशो ॥ नव
मासुं सोलमा विचें ए, सात अतरा मांय ॥ तीर्थविच्छेद ययो ति
हा, जांख्यो श्रीजिनराय ॥ ५९ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरने दोष वर्जितपणु तथा अतिशय
तथा वाणी तथा प्रातिहार्य तथा देवसेवा कहे ठे

॥ अतरा दोष वर्जित, सकल जिनवर सुखदाता ॥ चोवीश
अतिशयधार, पेंतिस वाणी सुविख्याता ॥ सद्गुने प्रातिहार्य थाव,
ठाठ माहा पुण्यसें पाया ॥ एक कोटी सद्गुने देव, सेव करे तनम
न उलसाया ॥ धन धन दीन दयानिधि ए, अनंत गुणातम देव ॥
मन वच काय करी सदा, यो प्रभु अविचल सेव ॥ ६० ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना प्रथम गणधर कहे ठे ॥

॥ पुमरिक १ सिद्धसेन २, चारु ३ वज्रनाज ४ कहीजे ॥ व
रम ५ प्रद्योतन ६ विदर्ज ७, दीन ८ वराहक ९ गहिजे ॥ नद १०
कष्टप ११ सुनूम १२, मंदर १३ जस १४ अरिष्ट १५ गुणवता
॥ चक्रायुध १६ साव १७ कुंज १८, अजिह्मक १९ मद्धि २० म

લજિન, જાણો મુકેવલ કલ્યાણ ॥ ૫૪ ॥ વૈશાખ વદિ ચત્વરશી
 ૧૪, પૌષ શુદ્ધ પૂનમ ૧૫ સારો ॥ પૌષ ૧૬ ચૈત્ર શુદ્ધ નૌમી ૧૭,
 તેજ અનુકર્મે વિચારો ૧૮ ॥ કાર્તિક શુદ્ધ દ્વાદશી ૧૯, માઘ શુદ્ધ
 ગ્યારસ ધારો ૨૦ ॥ ફાગણ દ્વાદશી કૃષ્ણ ૨૧, માઘ શુદ્ધ સ્મ્યારસ
 જહારો ॥ અમાવાસ આસોજની ૨૨, ચૈત્ર ચોથ વદિ ૨૩ ઠાણ ॥
 વીર વૈશાખ શુદ્ધ વરમી ૨૪, જાણો કેવલ કલ્યાણ ॥ ૫૫ ॥ ૬૯ ॥
 ॥ હવે ચોવીશ તીર્થકરના કેવલજ્ઞાનના નગર કહે છે ॥

॥ પુરિમતાલ ૧ અયોધ્યા ૨ સાવજી ૩, દોય વલિ અયોધ્યા
 સ્થાનો ૪ ૫ ॥ કોસલી ૬ વાણરસી, ૭ ચંદ્રપુરી ૮ કાંતિપુર ૯
 માનો ॥ નહિલ ૧૦ સિદ્ધપુર ૧૧ ચંપા, ૧૨ કપિલપુર ૧૩ અયોધ્યા
 ઠાણો ૧૪ ॥ રતનપુર ૧૫ શાંતિ ૧૬ કુશુ ૧૭, અરહ ૧૮ ગજપુર પહિ
 ચાનો ॥ મિથિલા ૧૯ રાજગૃહિ ૨૦ મિથિલા ૨૧, રેવતકાચલ ૨૨
 જાણ ॥ વાણરસી ૨૩ જંનિક ગ્રામમે ૨૪, પાયા કેવલ નાણ ॥ ૫૬ ॥

॥ હવે ચોવીશે તીર્થકરનાં કેવલજ્ઞાન પામવાના સ્થાન
 તથા કેટલે તપે કેવલજ્ઞાન ઉત્પન્ન થયુ ? તે કહે છે ॥

॥ આદિ જિનદ શકટ મુખ, હજાસુ સ્યારમા તાર્ક ॥ સહસ્રાબ્ધ
 વિહારગૃહ જાણ, વિમલજીસે પાર્શ્વ લહાઈ ॥ આશ્રમ પદ કણ
 સ્થાન, સલીલા રજુ વાલુકા આઈ ॥ કેવલ વન વિચાર, રિલ્લ
 તપ અષ્ટમ માંડ ॥ વાસુપૂજ્ય મહી નેમજી ૯, પાર્શ્વ ચોથ તપ માંચા ॥
 શ્રેષ્ઠ ઝંગળીશ ઠઠ તપવિપે, જ્ઞાન કેવલ પ્રગટાય ॥ ૫૭ ॥ ૭૧ ॥ ૭૨ ॥

॥ હવે ચોવીશ તીર્થકરોને જે વૃદ્ધની નીચે કેવલજ્ઞાન ઉપનું
 તે વૃદ્ધના નામ, તથા આશોક વૃદ્ધોની ડાહ્ય કહે છે ॥

॥ વઢ ૧ સપ્તવણ ૨ શાલી, ૩ રાજાવની ૪ પ્રિયંશુ સુદાવે ૫ ॥
 ઠાહના ૬ સરસ ૭ નાગ ૮, મહિકા ૯ ॥ ૬૦ ॥ ૬૧ ॥ ૬૨ ॥

में ए, सासणाधिष्ठ यद्द जाण ॥ प्रच्छ समरण करे जावयं, हरे
सकट दित आण ॥ ६४ ॥ ७६ ॥

हवे चोवीश तीर्थकरनी अधिष्ठायिका यद्दणी कहे ठे

॥ चक्रेश्वरी १ अजितबला २, डुरितारि ३ कालिका देवी ४
॥ माहाकाली ५ श्यामा ६ शांति, ७ नृकुटी ८ सुतारिका एलेवी
॥ अशोका १० मानवी ११ चमा १२, विदिता १३ अंकुशा १४ जद्दणी
॥ कंदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७, धणा १८ धरणी प्रिया १९ प्रच्छ
यद्दणी ॥ नरदत्ता २० गधारी २१ अंबिका ए २२, पद्मावती २३ सि
द्धायिका २४ नाम ॥ सासणाधिष्ठ ए जद्दणी, सारे वडित काम ॥ ६५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना गणधरनी संख्या कहे ठे ॥

॥ चोरासी १ पचाण २ जाण, एकसो दोय ३ सुझानी ॥ एक
सो झ्यारा ४ सोय, ५ एकसो सात ६ पिठानी ॥ पचाण ७ त्राण
८ गिणत, अठ्याशी ९ बैयासी १० सामी ॥ सचोतेर ११ गुण
सितेर १२ सत्तावन १३, पचास १४ सो ते नमु शिर नामी ॥
बैतालीस १५ ठत्तीस १६ पेंतीस १७ बली ए, तेंतिस १८ अ
ठाविश १९ अठार २० ॥ सतरे २१ झ्यारे २२ वश २३ झ्यारे
२४ ते, प्रणमुं प्रच्छ गुणधार ॥ ६६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे तीर्थकरना साधुनी संख्या कहे ठे

॥ सहस्र चोराशी १ एकलक्ष २, दोय ३ तिनलक्ष ४ विचारो ॥
तिनलख पर सहस्र वीश ५, तीनलक्ष तीस हजारो ६ ॥ लक्ष
तिन ७ अठो ८ दोय ए एक १०, चोरासी सहस्र ११ अणगारो ॥
वहोत्तर १२ अठसठ १३ ठासठ १४, चोसठ १५ वासठ १६ रिख
धारो ॥ साठ १७ पचास १८ चालीस १९ बली ए, त्रीश २०

हता ॥ शुज ११ वरदत्त १२ आर्यदिन्न १३ ए, इन्द्रूति १४ गण
धार ॥ ए चोवीश जिनना प्रथम, प्रणमुं नित अणगार ॥ ६१ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनी प्रथम साधवी कहे ठे ॥

॥ ब्राह्मी १ फल्गुणी २ श्यामा, ३ अजिता ४ काश्यपी ५ जा
णो ॥ रति ६ सोमा ७ सुमना, ८ वारुणी ९ सुजसा १० वखाणो
॥ वारणी ११ धरणी १२ धरा १३, पद्मा १४ आर्यशिवा १५ स
ती ॥ सूचि १६ दामिनी १७ रक्षिता, १८ बंडु बधुमती १९
पुष्पवती २० ॥ अनिला २१ जह्नुदिन्ना २२ पुष्पचुला २३ ए, च
वन वाला २४ नाम ॥ ए चोविश बडि समणीने, नित नित
होजो प्रणाम ॥ ६२ ॥ ७४ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरना नक्तिवत राजा कहे ठे ॥

॥ नरत १ सगर २ अमितसेन ३, मित्रवर्य नृप ४ सारो ॥
शतवीर्य ५ अजितसेन, ६ दानवीर्य ७ मधवा ८ धारो ॥ बुद्धिवीर्य ९
सिमधर १०, त्रिष्टु ११ द्विष्ट १२ नृप जाणो ॥ स्वयंछु १३ पुरुषोत्त
म नाम १४, पुरुषसिद्ध १५ कोणाल १६ वखाणो ॥ कुवेर १७ स्रष्ट
मजी १८ जित १९ विजय २० ए, हरिपेण २१ कृष्ण २२
उदार ॥ प्रसेनजित २३ श्रेणिक २४ चरम, नक्तिवता नृप धार ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना शासनना यद्द कहे ठे ॥

॥ गोमुख १ महायद्द, २ त्रिमुख ३ नायकमुख ४ कहियें ॥ तु
बुरु ५ कुसुम ६ मातंग ७, विजय ८ जित ९ ब्रह्मा १० लदी
यें ॥ जह्नुट ११ कुमार १२ पण्मुख, १३ पाताल १४ किंनर १५
गरुड १६ धारो ॥ गधर्व १७ यद्दट १८ कुवेर, १९ वरुण यद्द
२० नृकुटि २१ विचारो ॥ गोमेद २२ पार्श्व २३ मातंग २४ ना

लीश, ठतीस चोविस चउदे विमासी ॥ तेरे त्राणुं झ्यासी व
होत्तेर ए,सित्तेर पचास अढतालीश ॥ ठत्रीस गुणचालीस अठारा,
सहस्र, आविका कहि जगदीश ॥ ४० ॥ ११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरने केवलीनो परिवार कहे ठे

॥ सहस्र बीस १ बावीस, २ पंदरा ३ चउदा ४ तेरा ५ ॥ वारे
६ झ्यारे ७ दश, ८ सहस्र साढीसात ९ जलेरा ॥ सात १० साढी
६ ११ खट १२, साढीपंच १३ पच १४ साढीचारो १५ ॥ त्रेता
लीशें १६ बत्तिशें १७, अछाविशशें १८ बावीससैं १९ धारो ॥
अठारासैं २० सोलासैं २१ पंझासैं ए २२, पारस एक हजा
र २३ ॥ सातशें २४ केवली वीरने, प्रणमूं ते सुखकार ॥ ४१ ॥

हवे चोवीश तीर्थकरना मन पर्यव ज्ञानीनी सख्या कहे ठे

॥ पुनि तेरा १ हजार वार २ सहस्र, पर पाचशे पचासों ॥
वारा ३ सहस्र पर नेढसो, झ्यारा ४ सहस्र साढी ठशें विमा
सो ॥ दश ५ सहस्र साढी चारशें, सहस्र दश ६ तिनशें उपर ॥
एकाणुसैं ७ पचास, एसीसैं ८ शत पंचोत्तर ९ ॥ पिचतर १०
सात ११ पैंतठ १२ बली ए, पंचावनशें १३ जाण ॥ पचा
स १४ पैंतालीस १५ सैंकडा, मुनि मन परजव नाण ॥ ४२ ॥
शाति जिनद सहस्र चार, १६ तेत्रीशसैं चालीस १७ उपर ॥ प
चीसशें एकावन, १८ साढीसत्तरशें १९ मुनिवर ॥ पंझासैं २०
साढीवारासैं २१, नेमि प्रभु एक हजारो २२ ॥ पार्श्वप्रभुके जाण,
साढी सातशें अणगारो २३ ॥ वर्धमानजीके पाचशें २४ ए, अढार्ह
दीप मजार ॥ जाणे सद्ध मन बारता, प्रणमूं ते अणगार ॥ ४३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना अवधिज्ञानी साधु कहे ठे

॥ सैंकडा नेउ १ चोराणु २, ठनु ३ अछाणु ४ जाणी ॥ सहस्र

वीश २१ अष्टार २२ ॥ सोला २३ चवदा २४ सहस्र सव, वडू
प्रभु अणगार ॥ ६७ ॥ ८९ ॥

हवे तीर्थकरनी साधवीनी संख्या कहे ठे ॥

॥ तिन १ लक्ष तिन २ तिन ३ खट ४ पाच ५, चउ ६ षउ ७
तिन ८ एक ९ एक १० एको ११ ॥ झुजासु ग्यारमा लगे, सहस्र अनु
क्रमे विवेको ॥ त्रीश २ ठत्रीश ३ त्रीश ४ त्रीश ५, वीश ६ त्रीश
७ अशी ८ वीशो ॥ ए खट १० तिन ११ सहस्र एक लाख १२,
एकलख १३ आठसें अमणीसो ॥ वासठ १४ वासठ सहस्रपरचा
रुं १५, इगसठ १६ सठ १७ ठठरुं धार ॥ साठ १८ पचा
वन १९ पचास, २० इगतालीश २१ चालीस २२ कही, अढति
स २३ ठत्तीस २४ धार ॥ प्रभु अमणी परिवार ॥ ६८ ॥ ९०

हवे चोवीश तीर्थकरना श्रावकोनी संख्या कहे ठे

॥ आदिनाथ तिन लाख, झुजासु पंदरमा ताई ॥ श्रावक
दोय दोय लाख, (१६ मासु २४ मा लगे एक लाख ठे) ठ
पर एक एक लाख कहाई ॥ सहस्र पच्चाश अठाणु, त्राणु अ
ठ्याशी इक्याशी ॥ ठिहतर सतावन पचास, गुनतिश नेव्याशी ठ
गल्यासी ॥ पन्नर आठ ठ चार नेउ ए, नेव्याशी चोरासी धार ॥
ज्यासी बहोत्तर सिन्नर गुणसितरा, चोसठ गुणसठ सार ॥ समजो
उपर हजार ॥ ६९ ॥ ९१

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी श्राविकानो परिवार कहे ठे ॥

॥ लक्ष पंच पंच ठ पंच, पंच पंच उपरंत चारो ॥ (सोल
मासु २४ मा ताई त्रण लाख उपरात हजार ठे) सोलमासु
तिन तिन लक्ष, उपरंत संख्या चोपन हजारो ॥ पेंतालीस ठत्तिस स
चावीस, सोला पच त्राणु नेव्याशी ॥ एकोतेर अगवन अढता

हवे चोवीश तीर्थकरना वादी मुनिनी संख्या कहे ठे ॥

॥ वारा सहस्र साहीठ्ठों, चार सत वारा हजारो ॥ वारा इग्या
रा सहस्र दश, उपर शत चारो ॥ बन्नु शत चोराशी, बहोत्तर साठ
अछावन ॥ पचास सेंतालीश बत्तीश, घतिश अठविश चोवीश न
न ॥ विश सोला चउदा वारे दश ए, आठ्ठों ठ्ठों सत चार ॥ ठ्ठों
कहा सख्या समजीयें, जिनवादी अणगार ॥ ४८ ॥ एण ॥

हवे चोवीश तीर्थकरने प्रत्येक बुधमुनि, तथा प्रकीर्ण,
तथा माहाव्रत, तथा चारित्र, तथा पडिकमण कहे ठे

॥ साधुसख्या प्रत्येक बुध, तेता प्रकीर्ण विचारो ॥ आदि अंत
पच जाम, शेष माहाव्रत कहे चारो ॥ प्रथम चरम के पच, चारित्र
करे अगीकारो ॥ दूजो त्रीजो चारित्रसो, मध्यजिनने परिहारो ॥
प्रथम चरम जिनसासणें ए, पडिकमणु उजयकाल ॥ शेष बावीश
प्रायश्चित्त समे, करे आवश्यक उजमाल ॥ ४९ ॥ एण थी १०३

हवे चोवीश तीर्थकरनु सर्वायु कहे ठे

॥ पूर्वचोराशी १ लाख, बहोत्तर २ साठ ३ पचासो ४ ॥ चालि
श ५ तिश ६ विश ७ दश, णवोयण एक १० पूर्व विमासो ॥ वर्षे चौ
राशी ११ लाख, बहोत्तर १२ साठ १३ वलि त्रीशो १४ ॥ दश १५
एक १६ लक्ष कुथु, पचाणु १७ सहस्र गद्दीसो ॥ चोराशी १८
पचावन १९ तिश २० वलि ए, दश २१ नेमी एक हजार २२ ॥
सो २३ वलि बहोत्तर २४ वर्षेनु, प्रभु आउखु सुविचार ॥ ५० ॥

हवे चोवीश तीर्थकरनी निर्वाण तिथि कहे ठे

॥ माघ वदि तेरश १ चैत्र, उजे शुद्ध २ पंचमी ३ आई ॥ शुद्ध अ
ष्टमी वैशाख ४, शुक्ल चैत्र नौमी ५ कहाई ॥ इग्यारस मार्गशिर्षवदि,
६ फागण वदि सातम ७ आई ॥ जाइवा वदि सातम, ८ नोम

इग्यारा ५ दश ६ नव ७, आठ ८ अवधि नाणी ॥ सेंकडा चोराक्षी
 वोहोतेर, १० साठ ११ चोपन १२ अढतालीसो १३ ॥ त्रेतालीस १४
 ठत्तीस १५ तीस १६, वली पञ्चीश १७ ठवीशो १८ ॥ बावीस
 १९ अठारा २० पोढश ए २१, पडा २२ दश २३ सत सात २४
 ॥ अवधि नाणी जिनवर तणा, वडू उठि परजात ॥ ७४ ॥ ए५ ॥

द्वे चोवीश तीर्थकरना पूर्वधरोनी सरूया कहे ठे.

॥ ठेंतालीसर्जे पचास १, सेंतिसर्से वीश २ विचारो ॥ इक बि
 शर्जे पचास ३, पंडेसर्से ४ चोविशर्जे ५ धारो ॥ तेविशर्जे ६ विशर्जे
 परत्रीश ७, चदा प्रभु दोय द्जारो ८ ॥ सेंकडा पडा ए चवदा १०,
 तेरा ११ बारा १२ इग्यारो १३ ॥ दश १४ नव १५ आठ १६ ठर्जे
 सित्तर १७ ए, ठर्जे दश १८ ठर्जे अढसठ १९ ॥ पाचर्जे २० साढी
 चार २१ चारर्जे, २२ साढी तिनर्जे २३ तिनर्जे विशिष्ट २४ ॥ पू
 रव धारक श्रेष्ठ ॥ ७५ ॥ ए६ ॥

द्वे चोवीश तीर्थकरना वैक्रिय लब्धिवत मुनि कहे ठे.

॥ ठर्जे वीश सहस्र, चारर्जे वीश द्जारो ॥ उगणीश सहस्र स
 त आठ, उगणीश सहस्र वैक्रिय धारो ॥ अठारा सहस्र सत चा
 र, सोला सहस्र एक शत आठो ॥ पंडा सहस्र शत तीन, सहस्र
 चवदा तेरे पाठो ॥ धारा इग्यारा दश सहस्र ए, नव आठ सात
 जाण ॥ खट सहस्र एकावनर्जे, वैक्रियधारी प्रमाण ॥ ७६ त्रहोत्तरर्जे
 गुणतिसर्से, सहस्र दो पच विचारो ॥ पंडार्जे इग्यारासैं जाण, सा
 तर्जे वीर प्रभु धारो ॥ महा तपस्या परजाव, वैक्रिय लब्धि जिण
 पाइ ॥ गोपवी राखी तेह लोकने खबर न काइ ॥ इम मुनि चोवी
 श जिन तणा ए, सत्ताविश गुण धार ॥ प्रणमु मन तन कामसूँ,
 नित्यप्रत्ये वार वार ॥ ७७ ॥ ए७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्ष आसन तथा
मोक्ष वेला कहे ठे

॥ रिखज जिणव रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनंदा ॥ पल्यंक आ
सण सथारो, शेष काउसगमें करदा ॥ त्रीजा ठछ नवमा वार
मा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अछ, जिन पूर्वान्हें वि
चारो ॥ धर्म कुथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष
आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगजाण ॥ ७५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥
हवे चोवीश तीर्थकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे ठे ॥

॥ आदिजिनद दश सहस्र, पद्म प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सु
पारस सग, वासुपूज्य ठशें पाठो ॥ विमलसगें खट सहस्र, अ
नंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचा
रो ॥ पाचशें ठत्रिश मछि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु जार ॥ मा
हावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु साथें अणसण
धार ॥ प्रणमु ते वारं वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी युगांतकृत नूमि तथा
पर्यायांतकृत नूमि कहे ठे ॥

॥ रिखज जिनंद असख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ
चठ पार्श्व, चरम जिन तीन वताया ॥ शेष जिनद सरख्यात, युगांत
र नूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अतरमुहूरत जगें लहीयें ॥
नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहूं ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनात
रें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ७७ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
॥ हवे चोवीश तीर्थकरनामुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र
रग, तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्ष
त्र तथा केटलाश्रावक व्रत, पचाचार, ते सर्व कहे ठे
॥ आदिजिणव मुनिराज, प्रकृति रक्षु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका

जाइवा शुद्ध ए माई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज मा
वण वदि ११ जाण ॥ आपाढ शुद्ध चउदश १२ वारमा, वाखी ति
थि निर्वाण ॥ ८१ ॥ सातम आपाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ
शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख
वदि पढिवा १७ ठानी ॥ भागसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ वारस
१९ कहीयें ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु
गहीयें ॥ आपाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए, नेमी पार्श्व २२ २३ जिन
जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४, पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरनां निर्वाण नह्नुत्र कहे ठे

॥ अजित १ मृगशिर २ आर्द्रा ३, पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आश्लेष ६
चित्रा ७ अनुराधा ८ ज्येष्ठा, ९ मूल ए पूर्वाषाढा १० गायो ११
धनिष्ठा १२ उत्तराषाढा, १३ द्यौयके रेवती १४ जाणो ॥ १५
पुष्य १६ ज्येष्ठा १७ कृत्तिका १८, रेवती १९ ज्येष्ठा २०
खाणो ॥ श्रावण २१ अश्विनी २२ चित्रा २३ वज्री ए, विशाखा
२४ स्वाति २५ विचार ॥ इन नह्नुत्र निर्वाणपद, पाया शिव सु
खसार ॥ प्रणमू वार वार ॥ ८३ ॥ १०६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्षस्थान तथा
अणसण तप कहे ठे

॥ रिखन अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चपा जाणो ॥ नेमि नाथ
गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ जेप समेत शिखर, गीरि पर अ
णसण लीना ॥ ठ दिन रिखन जिणद, वीर ठछम तप चीना ॥ जेप
जिनद एकमासनो ए, गायो अणसण सार ॥ द्यौय अजोगी मुक्ति
गया, प्रणमू वार वार ॥ जय जय परम दातार ॥ ८४ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्ष आसन तथा
मोक्ष वेला कहे ठे

॥ रिखन जिणद रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनदा ॥ पव्यंक आ
सण सथारो, शेष काउसगमें करंदा ॥ त्रीजा ठछ नवमा वार
मा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अछ, जिन पूर्वान्हें वि
चारो ॥ धर्म कृष्टु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष
आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगनाण ॥ ८५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥
हवे चोवीश तीर्थकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे ठे ॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र, पद्य प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सु
पारस सग, वासुपूज्य ठशें पाठो ॥ विमलसगें खट सहस्र, अ
नतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचा
रो ॥ पाचशें ठत्रिश मछि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ मा
हावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु साथे अणसण
धार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनी युगांतकृत जूमि तथा
पर्यायांतकृत जूमि कहे ठे ॥

॥ रिखन जिनद असख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ
चठ पार्श्व, चरम जिन तीन वताया ॥ शेष जिनद सख्यात, युगांत
र जूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अतरमुहूरत लगें लहीयें ॥
नेमि वर्ष दोय पारस त्रिदू ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनात
रें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वार वार ॥ ८७ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनामुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र
रग, तेमज जन्म नद्धत्र, दीक्षानद्धत्र, केवल ज्ञान नद्ध
त्र तथा केटलाश्रावक व्रत, पचाचार, ते सर्व कहे ठे
॥ आदिजिणद मुनिराज, प्रकृति रद्धु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका

जाइवा शुद्ध ए माई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज भा
वण वदि ११ जाण ॥ आपाढ शुद्ध चउदश १२ वारमा, वासी ति
थि निर्वाण ॥ ८१ ॥ सातम आपाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ
शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख
वदि पडिवा १७ तानी ॥ मागसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ वारस
१९ कह्यै ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु
गह्यै ॥ आपाढ आवण शुद्ध अष्टमी ए, नेमी पार्श्व २२ २३ जिन
जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४, पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरनां निर्वाण नद्धत्र कहे ठे

॥ अजिजित १ मृगशिर २ आर्द्ररा३, पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आषाढ
चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥
धनिष्ठा ११ उत्तराषाढ, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४
पुष्य १५ जरणी १६ रुतिका १७, रेवती १८ जरणी १९ व
खाणो ॥ अवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विज्ञास्वा
२३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नद्धत्र निर्वाणपद, पाया शिव सु,
खतार ॥ प्रणमु वार वार ॥ ८३ ॥ १०६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्षस्थान तथा
अणसण तप कहे ठे

॥ रिखज अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चपा जाणो ॥ नेमि ना
गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अ
णसण लीना ॥ ठ दिन रिखज जिणद, वीर ठछम तप चीना ॥ शेष
जिनद एकमासनो ए, गायो अणसण सार ॥ दोय अजोगी मुक्ति
गया, प्रणमू वार वार ॥ जय जय परम दातार ॥ ८४ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्ष आसन तथा
मोक्ष वेला कहे ठे

॥ रिखन जिणद रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनदा ॥ पल्यंक आ
सण सथारो, शेष कावसगमें करदा ॥ त्रीजा ठछा नवमा वार
मा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अछ, जिन पूर्वान्हें वि
चारो ॥ धर्म कुशु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष
आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगजाण ॥ ७५ ॥ १०ए ॥ ११० ॥
॥ हवे चोवीश तीर्थकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे ठे ॥

॥ आदिजिनंद दश सहस्र, पद्म प्रभु तिनगें आठो ॥ पांचगें सु
पारस सग, वासुपूज्य ठगें पाठो ॥ विमलसगें खट सहस्र, अ
नंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवगें सात विचा
रो ॥ पाचगें ठत्रिश मखि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ मा
हावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु सार्थे अणसण
धार ॥ प्रणमुं ते वार वार ॥ ७६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनी युगांतकृत जूमि तथा
पर्यायांतकृत जूमि कहे ठे ॥

॥ रिखन जिनद असख्यात, पाठ मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ
चठ पार्श्व, चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनद सख्यात, युगांत
र जूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अतरमुहूरत लगें लहीयें ॥
नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहू ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनात
रें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ७७ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥
॥ हवे चोवीशो तीर्थकरनामुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र
रग, तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्ष
त्र तथा केटलाश्रावक व्रत, पचाचार, ते सर्व कहे ठे
॥ आदिजिणद मुनिराज, प्रकृति रक्षु जह जाणो ॥ चरम प्रभुका

जाइवा शुद्ध ए माई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसुं ए, तिज आ
वण वदि ११ जाण ॥ आपाढ शुद्ध चउदश १२ वारमा, वास्वी ति
थि निर्वाण ॥ ८१ ॥ सातम आपाढ वदि १३, चैत्र १४ जेठ
शुद्ध पचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ठ वदि तेरश तिथि, १६ वैशाख
वदि पहिवा १७ तानी ॥ मागसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ वारस
१९ कहीर्ये ॥ ज्येष्ठ वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सु
गहीर्ये ॥ आपाढ आवण शुद्ध अष्टमी ए, नेमी पार्श्व २२ २३ जिन
जाण ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४, पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरना निर्वाण नद्धत्र कहे ठे

॥ अनिजित १ मृगशिर २ आर्द्ररा३, पुष्य ४ पुनर्वसु ५ आश्लेष
चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्ठा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० मघा ११
धनिष्ठा १२ उत्तराषाढा, १३ दोयके रेवती १४ जाणो ॥ १५
पुष्य १६ जरणी १७ रूतिका १८, रेवती १९ जरणी २० व
खाणो ॥ श्रवण २१ अश्विनी २२ चित्रा २३ वली ए, विशाखा
२४ स्वाति २५ विचार ॥ इन नद्धत्र निर्वाणपद, पाया शिव सु
खसार ॥ प्रणमु वार वार ॥ ८३ ॥ १०६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्षस्थान तथा
अणसण तप कहे ठे

॥ रिखन अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चपा जाणो ॥ नेमि नाथ
गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अ
णसण लीना ॥ ठ दिन रिखन जिणद, वीर ठछम तप चीना ॥ शेष
जिनद एकमासनो ए, गयो अणसण सार ॥ होय अजोगी मुक्ति
गया, प्रणमु वारं वार ॥ जय जय परम दातार ॥ ८४ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनुं मोक्ष आसन तथा
मोक्ष वेला कहे ठे

॥ रिखन जिणद रिष्ट नेमि, चोविशमा वीर जिनदा ॥ पल्यंक आ
सण सथारो, शेष काउसगमें करदा ॥ त्रीजा ठण नवमा वार
मा, अपरान्हें धारो ॥ तिण विचला जे अछ, जिन पूर्वान्हें वि
चारो ॥ धर्म कृष्टु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष
आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगनाण ॥ ८५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥
हवे चोवीश तीर्थकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे ठे ॥

॥ आदिजिनंद वश सहस्र, पद्म प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सु
पारस सग, वामुपूज्य ठशें पाठो ॥ विमलसंगें खट सहस्र, अ
नंतजिके सात हजारो ॥ धर्म एकसो आठ, नवशें सात विचा
रो ॥ पाचशें ठत्रिश महि नेमी ए, तेत्रीश पार्श्वप्रभु जार ॥ मा
हावीर एका एकी, शेष सहस्र परिवार ॥ प्रभु सार्ये अणसण
धार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनी युगांतकृत जूमि तथा
पर्यायांतकृत जूमि कहे ठे ॥

॥ रिखन जिनंद असख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ
चव पार्श्व, चरम जिन तीन बताया ॥ शेष जिनद सख्यात, युगांत
र जूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अतरमुहूरत लगे लहीयें ॥
नेमि वर्ष दोय पारस त्रिहू ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनांत
रें, मुक्ति गया अणगार ॥ प्रणमुं ते वारं वार ॥ ८७ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरनामुनियोनी केवी प्रकृति, तथा वस्त्र
रग, तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्ष
त्र तथा केटलाश्रावक व्रत, पचाचार, ते सर्व कहे ठे

॥ आदिजिणद मुनिराज, प्रकृति रक्षु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका

वक्रजड, शेष कृच्छु सरल बखाणो ॥ आदि अंत श्वेतवस्त्र, शेष
पचरगा ठाणो ॥ ज्यवन नक्षत्र जेह, तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ स
हुने आवक व्रत झुवावश ए, सहुने पच आचार ॥ जे पाली शिव
पुर गया, प्रणमुं ते वार वार ॥ ८८ ॥ ११४ थी १२०

हवे चोवीश तीर्थीकरनी उत्पत्तिना आरानो समय, धर्म
जेद तथा संयमजेद अने मुनिउना गुण कहे बे .

॥ त्रीजा आरानी अतें, रिखन जिनवर प्रगटाया ॥ चोथा आर
मध्य अजित, शेष अतें बरसाया ॥ श्रुत अरु चारित्रधर्म, सकल वं
जेद बताया ॥ संजम सतरा प्रकार, पाले सहु जिन मुनिराया ।
गुण सत्तावीश धारणा ए, तारण तरण मुनिव ॥ ते प्रणमुं मन
च करी, आणी अधिक आनंद ॥ ८९ ॥ १२१ थी १२४

हवे चोवीश तीर्थीकरनुं केटलो काल शासन रह्युं ते कहे बे.

॥ सागर पचास लक्ष कोड १, आदिजिन सासण कह्यें ॥
इम त्रिश २ दश ३ नव ४ लाख, कोडी सागर सर्व्हियें ॥ हजार
र नेव ५ नव ६ जाण, नवरीं कोडी सुपासो ७ ॥ नेव ८ नव
कोड एसागर, शीतल एक १० कोडि विमासो ॥ तिणमें सो साग
र ग्रहो ए, वर्ष ठासठ लक्ष जाण ॥ सहस्र ठवीश कमती कह्यो,
दशमा सासण प्रमाण ॥ ९० ॥ सागर चोपन ११ त्रीश, १२ नव
१३ चव १४ धरम तिहु सागर १५ ॥ तिणमें पूणो पल घाट, शांति
अर्थ पल १६ ठळागर ॥ कृष्ण जिन पाव पल, १७ कमति वर्षकोडि
हजारो ॥ अरह कोडि हजार १८, चोपन लक्ष १९ मल्लि विचा
रो ॥ पट २० पंच २१ लक्ष पोणी २२, चोरासी सहस्रज ए, अ
ढाईरीं २३ एकविश हजार २४ ॥ समण समणी शासन प्रभु, प्रण
मु ते वारं वार ॥ ललि ललि वारं वार ॥ ९१ ॥ १२५ ॥

॥ अथ स्तवन आरति प्रारंभ ॥

॥ जे जे श्री जगदीश, रोप अरु तोष मिटाई ॥ जे जे श्री जगदीश, कर्म कण पीसे साई ॥ जे जे श्री जगदीश, ध्यायो प्रभु शुक्ल ध्यानो ॥ जे जे श्री जगदीश, पाया सब केवल ज्ञानो ॥ जे जे श्री जगदीशजी ए, करवा पर उपगार ॥ दीधि महा धर्म देशना, ताखां बहु नर नार ॥ ९० ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ सम दृष्टि करि या ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ श्रावक वदरिया ॥ जे जे श्री जगदीश, केई कीना अणगारो ॥ जे जे श्री जगदीश, केइ कीना केवल धारो ॥ जे जे श्री जगदीशजी ए, आप तखा परतार ॥ शिव सुख अविचल सपदा, पाया पद अविकार ॥ ९३ ॥ जो समरे एक चित्त, वित्त नित वडित आवे ॥ जो समरे एक मन, जन तन रोग मिटावे ॥ जो समरे चित्त चाव, जाव तस निर्मल आवे ॥ जो समरे एक ध्यान, ज्ञान केवल प्रगटावे ॥ इन कारण नवियन सहु ए, नाम ठाम चुन काम ॥ गुणग्राम छेवा विधि, रचि रुचि शुचि हितधाम ॥ ९४ ॥ अल्पश्रुति प्रमादी, आलसी में अति नारी ॥ श्रीगुरुने परसाव, नक्ति वश शक्ति सुधारी ॥ बाल ख्याल जिम ग्रथ, निजमति लायक वणायो ॥ हीण अधिक विपरीत, जोहमें शब्द जो आयो ॥ मिष्ठामि झुक्कड सब साखसु ए, श्रीजिन वाणी तेत ॥ अछु-ऊ जो देखो बुधजना, छु-ऊ कर लीजो सुहेत ॥ ९५ ॥ सवत उगणीशर्षे चालीस, मास मधु नाम विचारो ॥ छु-ऊ पक्ष पचमी तिथि, वार गुरु जोग उदारो ॥ देश दक्षिण प्रसिद्ध, अहमद नगर मजारो ॥ किनो यह महास्तवन, सवागें बोल विस्तारो ॥ अनुक्रमे समकित दृढ जणी ए, बोल तोल अमोल ॥ धारो नविजन जावछु, गाथा सधिछु खोल ॥ ९६ ॥

॥ हवे पट्टावली लिख्यते ॥

॥ पूज्यश्री कान्हजी रिखि, बीज शशि जेम परतापी ॥ वीपायो दयार्धम, कुमतिमति दूर उष्ठापी, तस पाटोधर पूज्य, तारा रिख जी जस धारक ॥ काला रिखजी तस शिष्य, वक रिखजी सुबिचारक ॥ तस शिष्य पूज्यगुण आगला ए, धनजी रिखजी महाराय ॥ तस शिष्य श्रीगुरु मम तणा, श्रीयवताजी रिखराय ॥ तास तणोजी सुपसाय ॥ ९४ ॥ शिष्ट सम थो हू अहानी, गुरु उपगारज कीनो ॥ दीनो धर्मको बोध, शोध हिरदे लय लीनो ॥ जाणी किंचित रीत, प्रीत हित निज पर कारण ॥ तिलोकरिख कहे जैन, येन नवजलनिधि तारण ॥ जो समरे जगगुरु नणी ए, यथा जोग विधि धार ॥ जगगुरु पद पावे सही, वरते मंगल चार ॥ ९५ ॥

॥ कलश ॥ जे जे जिनव, सुखकद साहेव, जक्तपति जग, रंजण ॥ अजर अमर, अविकार निर्जय, करम रिपुदल, गजण ॥ तिलो करिख कहे, परम पति तुम, विघन सब, दूरें दूरो ॥ हित सुख स्वेम, कल्याण शिवपद, तास छुक्ति दो, जय करो ॥ प्रभु नव नव सरणो आपरो ॥ ९६ ॥ इति चोविश जिनराज, गरीबनिवाज तरण तारण जाजको एकशो पच्चीश बोल नामादिक लेखागर्जित महास्तवन समाप्त ॥

॥ अथ सुनिगुण मंगलमाला प्रारंभ ॥

॥ आदर जीव हूमा गुण आदर ॥ अथवा धन धन सप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ समरू श्रीश्रिर्दंत सिद्ध साधु, धर्मजिण आण मजार जी ॥ चारुहि मंगल उत्तम सरणो, दोजो सदा सुखकार जी ॥ प्रणमू ते गुणवत त्रिकालें, त्रिकरण मन वचकाय जी ॥ इदि सिद्धि सुखसपत्ति शाता, नित नित देवे सवाय जी ॥ प्र० ॥ ॥ १ ॥ अतित अनंत चोवीशी वट्ट, केवली अनंत अपार जी ॥ व

र्तमान चोविशी साहेव, नाम कट्टु सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥
 रूपन अजित सजव अजिनदन, सुमति पदम सुपासजी ॥ चदा
 प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥
 श्रीश्रेयांस वासुपूज्य वट्टू, विमल अनत धर्मदेव जी ॥ शाति कुशु
 अर मद्धि मुनिसुव्रत, नमि नेमी करुं सेव जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पा
 रस अने वर्धमान जिनेश्वर, ए चोविश जिनराय जी ॥ कर्म ख
 पाई केवल पाया, मुक्ति विराज्या जाय जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जय
 वता सीमधर स्वामी, युगमधर सुखकार जी ॥ वाड्डु सुवाड्डु ए
 चठ विचरे, जंबुद्वीप मजार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सुजात स्वयंप्रज
 ने रूपज्ञानन, अनतवीरज जगन्नाथ जी ॥ सूरप्रभु विशाल
 वज्रधर, चज्ञानन गुणखाण जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ पूरव पश्चिम चार
 चार जिन, धातकीखन मजार जी ॥ विचरे गाम नगर पुर पाट
 ण, करता पर ठपगार जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ चड्वाड्डु सुजग ईश्वर
 जी, नेमीश्वर शिवकत जी ॥ वीरसेनने श्रीमहान्द जी, देवजस
 जी जसवत जी ॥ प्र० ॥ १० ॥ विशमा अजितवीरज जगनाय
 क, चार चार जिन राय जी ॥ पुष्करार्धमें विचरे साहिब, नामें
 नवनिधि थाय जी ॥ प्र० ॥ ११ ॥ ठळ्ळुटे पदें एक
 सो सितेर, जघन्य केवली कोडी दोय जी ॥ ठळ्ळुटे पदें ष
 थकत्व कोडी तिनमें, वर्तमान जे होय जी ॥ प्र० ॥ १२ ॥
 अष्ट गुणातम पंढरा जेदें, सिद्ध सदा सुखकार जी ॥ अलख निरं
 जन नवछ ख जंजण, समरता सुखकार जी ॥ प्र० ॥ १३ ॥ आचा
 रज अष्ट सपदा धारक, चारक मिथ्या नर्म जी ॥ गुण ठत्रिश ईश
 चठ तीरथ, दीपावे जैनधर्म जी ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इच्छूति अग्नि
 चूति वट्टू, वासुचूति गुणवत जी ॥ चौथा व्यक्त सुधर्मा स्वामी, ममि
 तजी जसवत जी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ मौर्यपुत्र अकपित अचल जी, मे
 तारज गुणधार जी ॥ इग्यारमा परजासजी वट्टू, बुम्माजिशर्गो परि

वारजी ॥ प्र० ॥ १६ ॥ चोविश जिनना गणधर वरुं, चउदशें बा
 वन जाण जी ॥ चउदा पूरव धारक सारा, पढूता सद्गु निर्वान
 जी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ रूपन सेनादिक सदस्त्र चोराशी, मुनिवर गु
 ण नमार जी ॥ धीर वीर गंजीर गुणातम, नमता जयजयकार जी
 ॥ प्र० ॥ १८ ॥ अरिसानवनमें श्रीनरतेश्वर, पाया केवल ज्ञान
 जी ॥ अनुक्रमें आठ पढोधर इणविध, पाया पद निर्वान जी
 ॥ प्र० ॥ १९ ॥ बाहुबल मुनिवर मदा वलीया, धार मासी तप
 ध्यान जी ॥ मान मेलिने पग उठायो, पाया केवल ज्ञान जी ॥
 प्र० ॥ २० ॥ जूऊ करतां पुत्र अछाणुं, श्रीआदीश्वर स्वामि जी ॥
 समजाई दियो सजम तेहने, पढोता ते शिवधाम जी ॥ प्र० ॥ २१ ॥
 सागर मधवाखट खरु त्यागी, चक्री सनत्कुमार जी ॥ रूप वैखवा
 सुर बल कीधो, जीधो सजम नार जी ॥ प्र० ॥ २२ ॥ पदम हरी
 खेण जयनामें रिख, चक्री दश रुद्रि ठोड जी ॥ शम दम उपस
 म धीर गुणागर, कर्मवधण दिया तोड जी ॥ प्र० ॥ २३ ॥ अचल
 विजय नहरिख वढू, सुनइमुनी रिख राय जी ॥ सुदर्शन आनदन
 नदन, राम गया शिवमाय जी ॥ प्र० ॥ २४ ॥ हलधर बलिनइ
 जी पढोता, पंचम सर्ग मजार जी ॥ उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी,
 वली कहु अगनुसार जी ॥ प्र० ॥ २५ ॥ आर्द्रकुमार माहाबुधि
 वता, जीत्या मदा पचवाद जी ॥ सयम पाली शिवपद पाया,
 जिन आणा भरजाव जी ॥ प्र० ॥ २६ ॥ उदय पेढालपुत्रें करी च
 र्चा, गौतमस्वामीसु जाय जी ॥ कुमारपुतिया नाम लेइने, सूत्र
 सुयगढागनीमाय जी ॥ प्र० ॥ २७ ॥ दश दशांग त्रीजे अग वा
 व्या, कद्या तिहा मुनिवर नाम जी ॥ ते सद्गु शिवगामी गुणधा
 मी, कीना उत्तम काम जी ॥ प्र० ॥ २८ ॥ सूत्रसमवायाग भा
 ही प्रकाश्या, नाम केई प्रसिद्ध जी ॥ गणधर मुनिवर चउद पूर्व
 धर, नाम लिया रुद्रिसिद्ध जी ॥ प्र० ॥ २९ ॥ पिंगल नाम

नियंठे पूढ्या, प्रश्न पंच रसाल जी ॥ खधक सन्यासी सुणिके तत
 कृण, वीर पासें गया चाल जी ॥ प्र० ॥ ३० ॥ सशय निवर्त्या
 सजम लीनो, कीनो तप श्रीकार जी ॥ अणसणधारी स्वर्ग वार
 मे, थया एका अवतार जी ॥ प्र० ॥ ३१ ॥ वीर जिनेश्वर तात
 वखाणु, रिखनदत्त गुणधार जी ॥ श्रेष्ठ सुदर्शन राज कृपीश्वर, धन
 गणियो अणगार जी ॥ ३२ ॥ ए चारे कृपि मुगर्ते पढोता, धन
 धन जगवत मात जी ॥ देवानदा धन सति जयवती, पूढ्या प्रश्न
 विख्यात जी ॥ प्र० ॥ ३३ ॥ वीर प्रभुजीनी नदिनी वदू, सती
 सुदर्शना जाण जी ॥ दीक्षाधारी कर्म निवारी, पाई पद निर्वाण
 जी ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ पंचमी पहिमा कार्तिक श्रेष्ठें, धारी तिण सो
 वार जी ॥ तापस खीर जम्यो मोरा पर, जाण्यो अथिर ससार
 जी ॥ प्र० ॥ ३५ ॥ सद्दत्त अष्टोत्तर गुमास्ता सार्यें, आदखो स
 जमनार जी ॥ श्रेष्ठ थया शकेंड सौधमें, जाशे मोक्ष मजार जी
 ॥ प्र० ॥ ३६ ॥ शोला देश तजि सजम लीयो, दियो नाणेजने
 राज जी ॥ करी क्षमा धनराय उदाई, साखां आतम काज जी ॥
 प्र० ॥ ३७ ॥ गगदत्त आणंद कोसल रिखरोदा, सुनद्धत्र नाम
 अणगार जी ॥ अवणजूति आराधक थईने, पढोता स्वर्ग मजार
 जी ॥ प्र० ॥ ३८ ॥ तिर्हायी चवीने मुक्ति सिधाशे, इत्यादिक अण
 गार जी ॥ नाम ठाम तप जपको वर्णव, विवहारपन्नति मजार
 जी ॥ प्र० ॥ ३९ ॥ धारणीमुत श्रेणिक नृपनदन, धन धन मेघ
 कुमार जी ॥ आठ अतेउर णिनमें ठोडी, त्याग दियो ससार
 जी ॥ प्र० ॥ ४० ॥ गुणरतन निष्कु पहिमा तप, अतें अणसण
 कीध जी ॥ विजयविमानमें जाय विराज्या, होशे विदेहमें सिद्ध
 जी ॥ प्र० ॥ ४१ ॥ वत्रीश नार तजी रंजासी, धन थावच्चा
 कुमार जी ॥ नेम प्रभुयें सजम लीधो, सद्दत्त पुरुष परिवार जी
 ॥ प्र० ॥ ४२ ॥ थावच्चा मुनिखू चर्चा कीनी, शुकदेव सन्यासी

जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य सार्थें सजम, लीधो गुणनिधि सा
 ए जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पंथकादिक परधान पांचरों, श्रेणिक राख
 नी लार जी ॥ अढाई सहस्र पुंमरीकगिरि सिद्धा ॥ धन जिणरो
 अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रत्नही
 पसू आय जी ॥ सजम लीनो चपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी
 ॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धनार्यें धाखो सजम, सुगुरु थिविरनी पास
 जी ॥ तीनु परथम स्वर्गे सिधाया, माहाविदेह शिववास जी ॥ प्र०
 ॥ ४६ ॥ ठए मित्र मल्लि जिनवरना, महावलादिक गुणवत जी ॥
 गणधर पद ग्रही मुक्ति विराज्या, थया सिद्ध जगवत जी ॥ प्र० ॥
 ॥ ४७ ॥ सुबुधि प्रधानजीयें जलि विषें, पाणी परचो वताय जी ॥
 जितशत्रु नृपको नर्म मिटायो, दोई गया शिवमांय जी ॥ प्र०
 ॥ ४८ ॥ तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोष्टिला दियो प्रतिबोध
 जी ॥ केवल पामी मुक्ति विराज्या, तजियो सकल विरोध जी
 ॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्ठिर अर्जुन अने नीमजी, सहदेव नकुल अ
 एगार जी ॥ मास मास तप अनियद् कीनो, नेम वदण सुविद्या
 र जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करतां, नेम तणु नि
 र्वाण जी ॥ सुणिने पामव पाच शत्रुजे, सथारो लियो जाण जी
 ॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास सलेपणा सिद्धा, अमणी झोपदी सो
 य जी ॥ सजम पाली स्वर्ग पचमे, एकावतारी होय जी ॥ प्र०
 ॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, किछ्यां पर करुणा आण
 जी ॥ कडवा तुवानो आहारज कीधो, खीर खाम सम जाण जी
 ॥ प्र० ॥ ५३ ॥ ऋण अतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार
 जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय विराज्या, ब्यवि गया मुक्ति मजार जी
 ॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुमरिक नार्हने रुगियो जाणी, पुमरिक सजम धा
 र जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमें, धन जिणरो अवतार
 जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुवतादिक अमणी महासतियो, पाली प्रबु

नी आण जी ॥ ते वर्णन निन्न निन्न करि देखो, ज्ञाता अग प्र
माण जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ गौतम समुद्र सागर अने गजीर, शि
मितने अचल कुमार जी ॥ कपिल अक्षोज प्रश्रसेन ने विष्णु,
अक्षोज सागर जसधार जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ सागर समुद्र हेमवत
नामैं, अचलधरण गुणवत जी ॥ पूरण अनिचद्र एह अगारा, प्रा
ता जाणो सद्गु सत जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ अधिक वृष्णिमुत धार
णी अगज, आठ अतेउर मेल जी ॥ नेम समीपैं जीनो सजम,
करि मुगतिमें सहेल जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ वसुदेवमुत देवकी जाया,
अणियसेण अनतसेण जी ॥ अजितसेण अणिहय रिपुनामैं, देव
सेण शत्रुसेण जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ सुलसाधर वधिया ठे वधव,
वत्रीश वत्रीश नारि जी ॥ तजिने नेम प्रभुपैं सजम, लेइने ठठ
ठठ धार जी ॥ प्र० ॥ ६१ ॥ पूरवधारी कर्म निवारी, पहोता मो
क्ष मजार जी ॥ वसुदेवमुत धारणी अगज, सारण थया अवि
कार जी ॥ ६२ ॥ गजतालव जिम कोमल काया, धन धन गज
सुकुमाल जी ॥ वसुदेवमुत देवकी अगज, ठोछ्यो जग जजाल
जी ॥ प्र० ॥ ६३ ॥ एकाकी समशानमें जाइ, उन्ना ध्यान लगाय
जी ॥ ससरो देखी रीपैं जराणो, माटीकी पाल बणाय जी ॥ प्र०
॥ ६४ ॥ धग धगता खेराना खीरा, मेल्या रिखने शीश जी ॥
महावेदना सहि सम परिणामैं, मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ प्र०
॥ ६५ ॥ सुमुख दुर्मुख वली उवय कुवर, दारुण अनाधिष्ठ जा
ण जी ॥ जाली मयाली उवयाली कृपि, पुरुषसेन वखाण जी ॥
॥ प्र० ॥ ६६ ॥ वारिपेण प्रद्युम्न कृपि सब, अनिरुद्ध वैदर्जिनद
जी ॥ सत्यनेमी दृढनेमी ए सब, पाम्या शिवसुखकद जी ॥ प्र०
॥ ६७ ॥ पद्मावती गौरी गाधारी, लखमणा सुसमा नार जी ॥
जांजुवती सत्यनामा रुक्मिणी, कृष्णरामा सुविचार जी ॥ प्र०
॥ ६८ ॥ मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी, सावकुमरनी नार जी ॥

ए दशो संजम केवल छेई, पद्मोती मुक्ति मजार जी ॥ प्र० ॥ ४९ ॥
 मक्काई किंकम रिख महोटा, धन अर्जुन अणगार जी ॥ संजम
 लेई कृमा हृदधारी, ठठ ठठ तप लियु धार जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥
 ठ मासामें कर्म खपाई, मुक्ति गया गुणवत जी ॥ कासब हेम
 धितिधर हितकर, कैलास हरिचंद सत जी ॥ प्र० ॥ ५१ ॥ वा
 रत सुदसण पूरणनदर, सुमननइ सुप्रतिष्ठ जी ॥ मेघ ऐमता अ
 लख एशोला, पाया पदवी श्रेष्ठ जी ॥ प्र० ॥ ५२ ॥ नदाविक
 तेरे पहराणी, वीर जिनद उपदेश जी ॥ केवल पाई मुक्ति सिंघा
 इ, पाई अविचल यश जी ॥ प्र० ॥ ५३ ॥ कालीयाविक दश श्रेणि
 क राणी, सुणियो पुत्र विजोग जी ॥ माहातपधारी कर्म निवारी,
 मेट दिया सब रोग जी ॥ प्र० ॥ ५४ ॥ ए नेअं सद्गु अतगढ सि
 ङ्हा, अतसमे केवल पाय जी ॥ अतगढसूत्रमें वर्णव जाणो,
 जपता सुक सवाय जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ श्रेणिकसुत धन जाली
 मयाली, उवयाली पुरुषसेन जी ॥ वारीसेण दीर्घसेण लवदंत जी,
 गूढदत्त सब जगसेन जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ विहल कुमार अनयाविक
 त्रेविश, श्रेणिकसुत गुणधाम जी ॥ अनुत्तर विमान गया सद्गु
 रिखजी, चवि जाओ शिवराम जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ वत्रीश रजा
 तजि धन कोढी, धन धनो अणगार जी ॥ ठठ ठठ तप निरंतर
 करणी, आयविल उज्जित आधार जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ चौद सब
 स्र मुनीश्वरमाही, श्रेणिक आर्गे, स्वाम जी ॥ कहे डुकर डुकर
 तप धारी, शम दम उपशम धाम जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ सुनद्वार
 इसीदासजी पेढग, रामपुत चदिमा नाम जी ॥ मूढमाई पेढाल
 पुतर रिख, पोटिल विहल अनिराम जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ धनानी
 रीतें ए नवही, करि करणी श्रीकार जी ॥ अनुत्तरोववाई सूत्रके
 माही, दाख्यो ठे विस्तार जी ॥ प्र० ॥ ६१ ॥ धन सुबाहु जइ नवी,
 रिख, सुजात सुवासव धीर जी ॥ जिनदास धनपति माहावल जी,

जङ्गनदी गजीर जी ॥ प्र० ॥ ८२ ॥ महचद वरदत्त ए दश मु
 निवर, पूरव दान प्रजाव जी ॥ कृदि सपत्ति पाया अति सुदर,
 संजम लियो चित्त चाव जी ॥ प्र० ॥ ८३ ॥ केष्क तिण नव मुग
 ति सिधाया, केइ पंडा नव धार जी ॥ मुगतिसिरी वरज्ञो वडजागी,
 सुखविपाक अधिकार जी ॥ ८४ ॥ पठमादिक दश श्रेणिक पौत्रा,
 वीर जिनेश्वर पास जी ॥ दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया, पामज्ञो अ
 विचल वास जी ॥ प्र० ॥ ८५ ॥ निखडादिक बलनइजीका नद
 न, बाराही गुणवत जी ॥ पाच पाचसें त्यागि अतेवर, सर्वार्थसि
 ष्ट पोहत जी ॥ प्र० ॥ ८६ ॥ सूत्र निरावलियानीमांही, नारव्या
 नाव जिनद जी ॥ एकावतारी ठे रिख सारा, टालज्ञो नवडु ख
 फद जी ॥ प्र० ॥ ८७ ॥ दो मासा सुवर्णकी इष्टा, आई तृष्णा अ
 पार जी ॥ समताथी केवल पद पाया, धन कपिल अणगारजी ॥
 ॥ प्र० ॥ ८८ ॥ धन बलि नेमी राजरूपीश्वर, त्यागी रमणी हजा
 र जी ॥ इदरसू प्रति उत्तर कीना, पाया नवजल पार जी ॥ प्र०
 ॥ ८९ ॥ हरिकेशी चित्तमुनि गुणसागर, सजयति कृपिराय जी ॥
 गर्दनाली कृत्री राजरूपि धन, वशारण नइ कहाय जी ॥ ९० ॥
 केरकमू डमुद नमी राजा, निगार्ई एह चार जी ॥ एक समय चठ
 सयम धाखो, एक समे नवपार जी ॥ ९१ ॥ माहाबल मृगापुत्र मुनी
 श्वर, मुनि अनाथी जाण जी ॥ समुद्रपाल प्रतिपाल क्यानिधि, रहे
 नेमी वजमाल जी ॥ प्र० ॥ ९२ ॥ केशी गौतम चर्चा कीनी, जय वि
 जय घोष रसाल जी ॥ गर्गाचार्य उत्तराध्ययने, मेढ्यो शिष्य जंजाल
 जी ॥ प्र० ॥ ९३ ॥ धन्ना शालिनइ रिख जोढी, तढके तोढ्यो नेह
 जी ॥ मास मास तप धारण कीनो, त्यागी ममता देह जी ॥ प्र०
 ॥ ९४ ॥ आव अतेवर रातें परण्या, सोनैया नन्याव कोड जी ॥ दिन
 णा लियो सजम नावें, पाचर्षो सत्त्यावीश जोड जी ॥ प्र० ॥ ९५ ॥
 ढढणरूपि लियो अजिग्रह ह कर, चूखां कर्म करूर जी ॥ स्वधक

रुपिनी खाल उतारी, दूमा करी नरपूर जी ॥ प्र० ॥ ९६ ॥ सं
 धक रुपिना शिष्य पांचरों, पीढ्या घाणी मांय जी ॥ दूमा करि
 केवल पद पाया, मुगति गया मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ९७ ॥ शूलि
 नइ अरणिक सिक्कनव, श्रीजिन आझा मांय जी ॥ वरत्या वरते
 ते सद्ध मुनिवर, शूणतां पातक जाय जी ॥ प्र० ॥ ९८ ॥ मरुवे
 वी गज हौवे पाम्यां, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ ब्राह्मी सुंदरी बं
 दनवाला, ध्यायु शूकल ध्यान जी ॥ प्र० ॥ ९९ ॥ राजिमती डोंप
 दी सुनडा, सीता कौशल्या जाण जी ॥ मृगावती अजना मृग
 लेखा, मलया शीलनी खाण जी ॥ प्र० ॥ १०० ॥ चेलणा सु
 ज्येष्ठा शिवा कुती, मयणरेदादिक जेह जी ॥ सकट पडिया झी
 लज राख्यु, आण्यो सजम नेह जी ॥ प्र० ॥ १०१ ॥ इण चो
 वीशी माही जिनना, मुनिवरनो परिवार जी ॥ लाख अछाविस्त
 पर जाणो, अढतालोश हजार जी ॥ प्र० ॥ १०२ ॥ श्रीजिनवर
 ना शासनमांही, केवली थया अपार जी ॥ साधु साधवी थया
 अस्तरया, नामथकी जयकार जी ॥ प्र० ॥ १०३ ॥ जघन्यपदे दोब
 सहस्र कोढी, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोढ जी ॥ वर्तमान जे वर्त
 मुनिवर, जग माया सब ठोढ जी ॥ प्र० ॥ १०४ ॥ पंच नरत पं
 च ऐरवय जाणो, पंच महाविदेह मजार जी ॥ अढाड द्वीपके मां
 ही वरते, सत्ताविश गुण धार जी ॥ प्र० ॥ १०५ ॥ तप जप साधे
 धर्म आराधे, बालक बलि वृद्ध सत जी ॥ ममता टाळे समता जा
 ले, पाले सजम खत जी ॥ प्र० ॥ १०६ ॥ एहवा मुनिना जे गुण
 गावे, मुख जयणा सुविचार जी ॥ पाप पलावे सपत आवे, कटे
 कर्मको खार जी ॥ प्र० ॥ १०७ ॥ इम जाणी नवियण नित न
 एजो, थावे शुद्ध परिणाम जी ॥ उगणीशें सेंतीस माहावदि आ
 वम, तिलोकरिख कीया गुणग्राम जी ॥ प्र० ॥ १०८ ॥ अधि
 को उंगो जो जोडाणो, मिष्टामि डुकड मोय जी ॥ पंच परमेष्ठी स

रणो मुज्जने, मनवन्ति फल जोय जी ॥ प्र० ॥ १०ए ॥ कलश ॥
अरिहत सिद्ध आचार्य त्रीजा, उपाध्याय अणगार ए ॥ मति श्रु
त रिख अवधि ज्ञानी, मनपर्यव सुखकार ए ॥ केवलज्ञानी ल
ब्धि धारक, चारित्र पंच प्रकार ए ॥ तिलोकरिख कहे वत्प्या वत्ते,
वटू वारं वार ए ॥ सदा देजो शिवसुख सार ए ॥ ॥ इति तिलो
करिखजी कृत मुनि गुण मंगलमाला संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामि इन्द्रजुतिजीको रास प्रारभ ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे जविका ॥ ए देशी ॥ प्रणमू श्रीवर्धमा
न सुद्धकर, सतगुरु शीश नमाउ ॥ ज्येष्ठ शिष्य श्रीगौतम स्वामी,
सुधनावें गुण गाउ रे ॥ जविका, गोयम गुणधर वदो, जव जव
हु ख निकदो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १ ॥ गोवर गाम आराम मनो
हर, वसुजुति विप्र जाणो ॥ तस घर प्रथ्वी नारि सुलक्षण, शीलगुणों
मृड वाणो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ २ ॥ एकदिन सुखसिद्धामांहे
सूती, इन्द्रवन जलकतो ॥ दीर्ग स्वप्न हरष अति पामी, कतसु
कह्यो विरतंतो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३ ॥ सवा नवमास पूरण थया
जनम्या, दान मान वट्ट कीनो ॥ इन्द्रवन देख्यो तिण कारण,
इन्द्रजुति नाम दीनो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ४ ॥ रूप अनुपम कनक
सी काया, जलक जलक तन दमके ॥ पच धावें करि बध्या दिन
दिन सो, दुश्मन देखीने चमके रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ५ ॥ चार वेद
ठ शास्त्र सो जणीया, अरथ तरक विधि सारी ॥ चठदे विद्या नि
धान सो पंक्ति, विस्तरी महिमा सो जारी रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ६ ॥
मध्य पापापुर सोमल ब्राह्मण, यज्ञ करण सो बुलाया ॥ अग्निजु
ति वायुजुति सर्गे, अति आर्म्बरें आया रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ७ ॥
विद्या पात्र ठात्र नर सर्गे, एक एकने लारें ॥ पाच पांचगें आ
या विचक्षण, यज्ञ मान्यो तिणवारें रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ८ ॥ श्री म

हावीर अति धीर गुणात्म, तप कियो डु कर कारी ॥ रुद्रबाहु
 का नदि तीर बछ तपस्या, गोछुज आसण करारी रे ॥ ज०॥गो०
 ॥९॥ वैशाख शुद्ध दशमी दिन जाणो, ध्यान झुकल मन ध्यायो ॥
 परम नरम पणो करम जरमकू, टालि केवल पद पायों रे ॥ ज०॥
 गो०॥१०॥ मध्य पापापुरि बाहिर पधाखा, केवल महोत्सव काजें ॥
 इड् चोसत मिल आया उमगसू, त्रिगढा तणी विधि साजे रे ॥ ज०॥
 ॥ गो० ॥ ११ ॥ तिण अवसर चार जातिना आवे, देव देवी केश
 कोडी ॥ अमर विमाणसू अंबर ढायो, सेवा करे कर जोडी रे ॥
 ज० ॥ गो० ॥ १२ ॥ यज्ञ उपर थई देवता जावे, इड् नूति तब
 बोले ॥ यज्ञ लगे थई किहा जावे, कियो पाख्या सुर नोले रे ॥
 ज० ॥ गो० ॥ १३ ॥ एटले कोई कहे पुर वारे, आया ठे दीनद
 थाला ॥ त्रिसलानद जिनद दिवाकर, खटकाया प्रतिपाला रे ॥
 ज० ॥ गो० ॥ १४ ॥ तेहना दरिण काजें असुर सुर, आया ठे
 इहां चलाई ॥ इड् नूति इम सुणि जन वाणी, आयो मान अकडई
 रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १५ ॥ मुजसू कवण अधिक जगमाई, विद्या
 गुण बलधारी ॥ इड् जालसू सुर वश कीधा, आरुवर रच्यो नारी
 रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १६ ॥ मुज आगल सो कदि नही ठेरे, इम
 सोची तिण वारें ॥ वेठा पालखी मान धरीने, पांचशे ढात्र प
 रिवारें रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १७ ॥ समोसरण तणी देखी रचना,
 मनमांही ताम विचारे ॥ ए सकलाइ नहि मुजमाहि, वश किम
 आवशो म्हारे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १८ ॥ पाबो फिरू तो निवना
 थावे, पगपग शोच घणोरो ॥ देख्या श्री जिनराज नयणसू, बि
 स्मय थयावहुतेरा रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १९ ॥ हरिहर ब्रह्मा नहि
 रवि इंदर, दिखे प्रताप सवायो ॥ इणसू विवाद करी नहि जीवू
 नादक में चल आयो रे ॥ ज०॥गो०॥२०॥ सादामा कजा अण
 बोला रह्या तब, श्रीजगदीश उच्चारें ॥ इड् नूति सुखे आया चला

ई, तव मनमें सो विचारे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ११ ॥ दिनकरने
सब जाणो जगतमें, तिम मुऊ नाम ए जाणो ॥ पण मुऊ मन
शंका जो निवारे, तो सवि जाव पिठाणो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १२ ॥
परमेश्वर कहे तुऊ चित्त शंका, वेदमें तीन दकारो ॥ दया दान
दमणो इडिय मन, तत्त्व गुन एह विचारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १३ ॥
जीव ठे निश्चै ए त्रिदु पदसें, वेद साह्मी इण न्यावे ॥ इम सुणी
पंचसयां परिवारें, सजमको पद ठावे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ १४ ॥
अग्निनूति वायुनूति पण आया, सजम लियो त्रिदु जाई ॥ त्रिप
दी ज्ञान लब्धि थइ परगट, गुणधर पदवी पाई रे ॥ ज० ॥ गो० ॥
१५ ॥ ठठ ठठ तप निरंतर करणी, वरणनी सूत्र मजारो ॥ चार
ज्ञान चउदे पूरवधर, उकडु आसण धारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥
१६ ॥ रात दिवस प्रभु सेवना कीधी, पूढ्या प्रभ अपारो ॥ चर्चा
वाद विपे अति करडा, कीनो अति उपगारो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥
१७ ॥ एक दिवस श्री गोयम शोचे, प्रथम में दीक्षा धारी ॥ सु
जने केवल ज्ञान न उपनो, थया चितातुर जारी रे ॥ ज० ॥ गो०
॥ १८ ॥ वीर प्रभु कहे गोयमसेंती, आगें आपण रह्या जेला ॥
लड्डुढ वडाईकी रीतज होती, इहां पण थया तुमें चेला रे ॥ ज० ॥
१९ ॥ अब इण जवके आंतरे आपण, थास्यां वरोवरी दोई ॥ मो
हनी किछो जित लेवो थें, कमी रहे नहि कोइ रे ॥ ज० ॥ गो०
॥ २० ॥ एम सुणी हिय हर्ष घणोरो, इडनूति मन आयो ॥ धन
धन अतरजामी दयानिधि, मुऊ पर प्रेम सवायो रे ॥ ज० ॥ गो०
॥ २१ ॥ लब्धिनिधि श्री गौतमस्वामी, गृहवासें रह्या पचासो ॥
प्रीस वरस ठगस्थपणामें, प्रभु सेव्या उद्गासो रे ॥ ज० ॥
गो० ॥ २२ ॥ कार्तिक वदि अमावासनी रात्रे, श्री जिन मुक्ति सी
धाया ॥ गौतमस्वामीने केवल उपनो, इइ मोछव जणी आया रे
ज० ॥ गो० ॥ २३ ॥ वारा वरप केवल पदमांही, श्री जिनधर्म

दीपायो ॥ होइ अजोगी मुक्ति सिधाया, परम मंगल पद पायो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३४ ॥ वाणुं वर्षको सर्व आउखो, जगमें कीर्षि सवाई ॥ गोतमनामथी रोग न व्यापे, सोग न आवे कदाइ रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३५ ॥ बधबंधन खच्चाटण कामण, जंत्र मंत्र नही चाले ॥ अरि करि हरि जय जागे नामथी, दुःशमनको गर्व गाछे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३६ ॥ गौतम नामसु विधन विनासे, चोर चरढ नहि गजे ॥ गौतमनामसुं ताव तेजारी, दुःख विमारी सो जजे रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३७ ॥ गौतम नामसु हिरि सिरि सपति, रिख सिख बद्ध आवे ॥ पुत्र परिवार सज्जन सुख शाता, जो समरे छुट जावें रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३८ ॥ गंगा गो कामधेनु सुखदायी, तत्ता सुरतरु जाणो ॥ मम्मा मणि चितामणिसैती, गोतम नाम वखाणो रे ॥ ज० ॥ गो० ॥ ३९ ॥ उगणीशैं अढतिश मृगशिर छुटकी, पंचमी तिथि रविवारो ॥ तिलोक रिखजी कहे गोयम प्र छुने, होजो सदा नमस्कारो रे ॥ ज० ॥ ४० ॥ इति गोतम स्तव मिको रास सपूर्ण ॥

॥ अथ चोविश जीनवरका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें जाव धरी ॥ प्रा० ॥ रिखन अजित सजव अजिनवन, सुमति क मति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चदा प्रभु ध्यावो, पुष्पवत दृष्ट्या कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनत धर्म श्री शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुशु अर महि मुनि सुप्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल लक्ष्यो नव उध तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम निशे मनमाहे घरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्तिथी दो प्रभु महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय पदं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ समर ले श्री आदिनाथ, अजितनाथ नारी ॥ संचव नाथ जगत तात, चरण बलिहारि ॥ उठि प्राजात समरु नाथ, बंदण नित म्हारी ॥ बोधबीज आथ साथ, सेवा दिजो थारी ॥ उ० ॥ स० ॥ १ ॥ अजिनंदन दुख निकदन, सुमति सुमति धारी ॥ पदम सुपास चदा प्रभु, आशा पुरो सारी ॥ उ० ॥ स० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ, वासुपूज्य जहारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेढो सब विमारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुथु अरह मछि नाथ, कर्म किया ठारी ॥ मुनिसुव्रत वीशमा प्रभु, करुणाके न मारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ४ ॥ एकविशमा नमिनाथ बद्ध, सदा सुसकारि ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राज्जल नारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ५ ॥ बचाया नाग नागिणी प्रभु, परमेष्ठी उच्चारि ॥ परचा पूरण पारस नाथ, परकपगारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ६ ॥ महावीर धीर धार, कर्मकू विदारी ॥ केवल ज्ञान जान जया, थाप्यां तीर्थ चारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ७ ॥ तारि नव्यजीव गया, मुक्तिके मजारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु, वीनती ब्यो धारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय पद प्रारंभ ॥

॥ गौतम समुद्र, सागर सुगनीर ॥ ए देशी ॥ श्री आदिआदीश्वरु, परम परमेश्वरु, नमत सुरेश्वरु, दित धरी ए ॥ अजित रिपुजित ए, जगत आवित ए, प्रसिद्ध जसकीर्त, शिवबधु वरी ए ॥ १ ॥ श्री संचव साम ए, सकलगुणधाम ए, प्रणमं शिर नाम, सेवा करु ए ॥ अजिनंदन ईश ए, जय जगदीश ए, रिपुदल पीस, केवलवरु ए ॥ २ ॥ सुमति कुमति हरो, कोशसुरुत नरो, तुम तणो आशरो, मुज नणी ए ॥ पद्म प्रभु पद्म ए, सुमन सुपद्म ए, द्यो शिव सद्म, प्रभे शिवधणी ए ॥ ३ ॥ बद्ध सुपास ए, अनतगुणरास ए, पुरो प्रभु

आश, सेवक तणी ए ॥ चदप्रभु बंदिऐं, झुठत निकंदिऐं, काटिमोह
 फदी, शिरोमणी ए ॥ ४ ॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्ति जगमें घषी,
 सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरे, नामथी निस्तरे,
 हरे सकट करे, सपदा ए ॥ ५ ॥ श्रेयांस दयाल ए, परमरूपा ए,
 नक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मगलका
 रणा, नविक उदारणा, दुख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल
 मति, करो सुखसपति, परमपती जती, गुण घणा ए ॥ अनतजि
 नद ए, अनतगुण कद ए, टाले नव फंद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥
 धर्म धुरंधरा, राजराजेश्वरा, मेढो मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति
 शांति करो, रोग दूरित हरो, नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥ ८ ॥
 कुंथु कुंथु करी, कर्म कुरग हरी, निम यइ शिव वरी, जगगुरु ए ॥
 अरह गुणसागरू, परम उजागरू, धन करुणागरू, नागरू ए
 ॥ ९ ॥ मद्धी मद्धमारणा, जगतजन तारणा, नक्तसुख कारणा,
 स्वामीजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणाचमार ए, अमर अ
 विकार, गुणधामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उ
 दारणा, विघनविदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, प
 रमकरुणा मती, त्यागी राजकुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पा
 रस खारस द्वय, ना वारस वारसजय, पंचमीगतिगय, जस
 घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो नवतीर,
 द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हुं प्रभुदास ए, करु अरदास ए, द्यो
 सिद्धदास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए,
 अविचल थोक द्यो, हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति सपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारंभ ॥

॥ राग तुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि छे, नविजन ज
 नम सुधारक हे ॥ वारी न० ॥ १ ॥ रिखन अजित सजव अजि
 नदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद

न सुखम चंदा प्रभु, नयःपुण्यताप निवारक दे ॥ वारी म० ॥ ७ ॥
 सुविधि धीतल श्रेयांग वासुपुत्र्य, न कायके जीव अवारक दे ॥
 वारी म० ॥ ८ ॥ निमल अनंत धर्म धाति नाथजी, सुगुणपति
 दिनकारक दे ॥ वारी म० ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ सुप्र सति सुनि
 सुप्रनजी, धर्मका मार्ग अवारक दे ॥ वारी म० ॥ १० ॥ नमी
 नमी पारम सदासीसी, नृह ज्ञसा प्रभु धारक दे ॥ वारी
 म० ॥ ११ ॥ केवल लोह प्रभु सुक्ति विराज्या, अजर अमर अवि
 कारक दे ॥ वारी म० ॥ १२ ॥ तिलोक्तमि कळे तार जगतामक,
 सुम विना नहि कोठ अवारक दे ॥ वारी म० ॥ १३ ॥ इति ॥ ॥ ॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभः ॥

॥ श्रेष्ठी कामनी ॥ प्रणमो नित नित पाविषजिन सुगदाता ॥
 ॥ १ ॥ ॥ गिम्न अजिन गेनर अनिनंदन, तौडिया माद
 नीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुखम चंदा प्रभु, विपन ट
 ले ज्यांग गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ ॥ सुविधि धीतल श्रेयांग वासु
 पुत्र्य, नोड दिया सुदृयका ताता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ॥ निमल अनंत
 धर्म धातिनाथ जी, सगिरी भेट दिती सुगुणाना ॥ प्र० ॥ ४ ॥ ॥
 सुप्र अर सति सुनि सुप्रनजी, जनम मरणक मिटाया गाता ॥
 प्र० ॥ ५ ॥ ॥ नमी नमी पारम सदासीसी, धामननायक जग
 दाना ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ॥ पाविष जगदीश दयाता, शिवप्रभु सु
 गुण सदाय गाता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ ॥ तिलोक्तमि कळे तारो माय
 वेगार, अचल नहि विजा मदि बाहना ॥ प्र० ॥ ८ ॥ ॥ अमर्तीर्ज
 अमणयासीध पामळदि अमण्डल, दियामदीर्ग गुण किया अता
 गाता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभः ॥

॥ मानव ज्ञान माय ज्ञान स्तन श्रेष्ठ पायो रे, सतप्रभु

आश, सेवक तणी ए ॥ चदप्रभु वंदियें, झुठत निकंदियें, काटिमोह
 फंदी, शिरोमणी ए ॥ ४ ॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें वषी,
 सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तारे,
 हरे संकट करे, संपदा ए ॥ ५ ॥ श्रेयांस दयाल ए, परमकृपाल ए,
 नक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मंगलका
 रणा, नविक उद्धारणा, दुख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल
 मति, करो सुखसपति, परम पती जती, गुण घणा ए ॥ अनतजि
 नव ए, अनतगुण कद ए, टाले नव फद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥
 धर्म धुरधरा, राजराजेश्वरा, मेढो मरण जरा, जगपति ए ॥ शान्ति
 शान्ति करो, रोग दूरित हरो, नाथ द्यो आशरो, सिद्धगति ए ॥ ८ ॥
 कुंष्टु कुंष्टु करी, कर्म कुरग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरु ए ॥
 अरह गुणसागर, परम उजागर, धन करुणागर, नागर ए
 ॥ ९ ॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, नक्तसुख कारणा,
 स्वामीजी ए ॥ मुनिसुव्रत तार ए, करुणाचमार ए, अमर अ
 विकार, गुणधामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उ
 द्धारणा, विघनविदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जती, प
 रमकरुणा मती, त्यागी राज्जल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पा
 रल खारस ह्य, ना वारस वारसजय, पंचमीगतिगय, जस
 घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो नवतीर,
 द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ दु प्रभुदास ए, करु अरदास ए, द्यो
 सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक ए, सुदृष्टिविलोक ए,
 अविचल थोक द्यो, हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारंभ ॥

॥ राग तुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, नविजन ज
 नम सुधारक हे ॥ वारी न० ॥ १ ॥ रिखन अजित सजव अजि
 नदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पद

म सुपास चदा प्रभु, जवडु खताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥ ३ ॥
 सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, ठ कायके जीव उगारक हे ॥
 वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुखसपति
 हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मछि मुनि
 सुव्रतजी, धर्मको मार्ग उच्चारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी
 नेमी पारस महावीरजी, हृद ह्रमा प्रभु धारक हे ॥ वारी
 स० ॥ ७ ॥ केवल छेइ प्रभु मुक्ति विराज्या, अजर अमर अवि
 कारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक,
 तुम विना नहि कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभ ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥
 ॥ ए टेक ॥ रिखन अजित सजव अजिनदन, तोडदिया मोह
 नीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपास चदा प्रभु, विघन ट
 छे ज्यारा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासु
 पूज्य, ठोड दिया कटुवका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत
 धर्म शातिनाथ जी, मरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥
 कुथु अर मछि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया स्वाता ॥
 प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस माहावीरजी, शासननायक जग
 घाता ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सु
 खमें सदाय माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय
 वेगसु, अचल नक्ति विजो एहि चाहता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उगणीजें
 उगणचालीश पोसगुदि चवदश, दियावढीमें गुण किया उल
 साता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद प्रारंभ ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु

समजायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित बडु नित बंडु चोविश जिन
 देवा रे, चाहु चरणकी सेवा ॥ नि० ॥ ए टेक ॥ रिखन अजित सं
 नव सुखकारी, अजिनदनजी जसधारी रे ॥ प्रभु परम दयाला, का
 ठ्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति
 पदम सुपारस जसवता, चडवर्ण चदाप्रभु सोदता रे ॥ नवतापनि
 वारी, सब शत्रुविदारी, केवलपदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधिही
 तल श्रेयांस जिनदा, वासुपूज्य मेळ्या नवफदा रे ॥ जगजीवन
 सामी, प्रभु अतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि० ॥ ३ ॥ विमल
 अनत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शांति वरताई रे ॥ नया प
 रम सोजागी, चक्रीपद रुद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि०
 ॥ ४ ॥ कुशु अरह मल्ली मल घाया, सुनिमुव्रतजी व्रत ठाया रे
 ॥ नविजन समजाया, त्रिजक्तका राया, अविचलपद पाया ॥ नि०
 ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पतिग
 नी रे ॥ हृद कृमा प्रभुधारी, घातिककर्म निवारी, आप्यां तीरथ च
 री ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महंता, सुण लीजो अरत्रि
 कृपावतारे ॥ तुम सरण न आयो, तिणयी डुख पायो, जयो
 में अति कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ निरर्थ काल अनत गमायो, अब
 दु तुम शरणे आयो रे ॥ सुधन्याए पिठाणी, जगतारक जाणी, इ
 ढता मन आणी ॥ नि० ॥ ८ ॥ तिलोकरिखजी कहे तिलोकर
 कृपद दिजो, सेवकपर महेर करीजो रे ॥ निज वरुदविचारो, सुन
 जर निहालो, नवपार उतारो ॥ नित० ॥ ९ ॥ इति सपूर्ण ॥ ६॥

॥ अथ सप्तम पद प्रारंभ ॥

॥ गकुर नलें विराज्या जी ॥ ए देशी ॥ आरतिमा ठे ॥ सा
 हिव नलें विराज्या जी, चोवीजो महाराज, मुक्तिमें नलें विराज्या
 जी ॥ ए टेक ॥ रिखन अजित सनव अजिनदन, सुमति पदम

सुपास ॥ चदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास
 ॥ सा० ॥ १ ॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य समरो, विमल विमल म
 तिवत ॥ अनतनाथ प्रभुधर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीसत ॥
 सा० ॥ २ ॥ कुशुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरहनाथ जगदीश ॥
 महिनाथ श्रीमुनिसुव्रतजी, नित्य नमाव शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए
 कविशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पा
 ठा फिखा प्रभु, शिवरमणी नरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस
 सरिखा प्रभु, निरवारसका नाथ ॥ बर्द्धमान सासणका सामी,
 प्रणमू जोड़ी हाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम बिन पाये डुख अनता,
 जनम मरण जजाल ॥ तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने, ता
 रो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति सपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद प्रारंभ ॥

॥ राग वसंत ॥ शांति चरणारी जाव बलिहारी ॥ शा० ॥ ए देशी ॥
 जेजो वदना नाथ हमारी, तुमारे चरणकी बलिहारी ॥ ए टेक ॥ रि
 खन अजित सजव अजिनवन, सुमतिपदमसुखकारी ॥ श्रीसुपा
 र्थ चदाप्रभु समरो, जगनायक जसधारी, प्रभुजी पूरण उपगारी ॥
 जे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनत धर्म धारी ॥
 शांतिजिनद सुख कद जगतमें, मेढ दीनी सब मारी, हरो मेरी वि
 पत विमारी ॥ जे० ॥ २ ॥ कुंथू अर महि मुनिसुव्रत जी, नमी
 नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाठा फिर आया, ठोडिकें राज डु
 लारी, नाथ तुम करुणाजमारी ॥ जे० ॥ ३ ॥ वेवारसके वारस
 पारस, पचपरमेष्ठी उच्चारि ॥ नागनागिणी जलत वचाया, कीना
 सुर अवतारी, महिमा जगमें अति थारी ॥ जे० ॥ ४ ॥ शासन
 नायक वीर जिनेश्वर, हवहमाप्रभुधारी ॥ केवल छे प्रभु धर्म
 वतायो, सूत्र चारितर सारी, तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ जे० ॥
 ॥ ५ ॥ अणसण छे प्रभुजोग त्याग कर, पढूता हे मुक्तिमकारी

॥ अनंत सुखमांही जाय विराज्यातो, नीरंजननीराकारी, रक्षा
 लोकालोक निहारी ॥ जे० ॥ ६ ॥ मोहमायामांही उलज रह्यो में,
 पायो दुःख अपारी ॥ तुम शरणाविन चरगति नटक्यो, धर्मकी
 बुद्धि विसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ जे० ॥ ७ ॥ अशुनकर्म
 कबु दूर नयासू, बाणी लगी प्रहृ प्यारी ॥ अधम उद्धारण बिरु
 द सुणिने, सरणो लियो सुविचारी, सार करजो प्रजु म्हारी ॥ जे०
 ॥ ८ ॥ मुज सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥
 जिम तिम करि नवपार उतारो, या मांगु रिजवारी, अरज लीजो
 अवधारी ॥ जे० ॥ ९ ॥ उंगणीजें अढतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीब
 तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेटमें, जोड करी हित
 कारी, तिलोख रिख कहे सुविचारी ॥ जे० ॥ १० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ चोविंशतिर्थकर स्तवन प्रारंभ ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रिखनजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ इण सरवरियारी पाल, उनी दोय नागरी ॥ मारा जाल ॥ उनी
 दोयनागरी ॥ ए देशी ॥ श्री सतगुरु सुपसाय, जाण्या शिवपुर धणी मा
 राराज ॥ जाण्या ० ॥ श्री मरुदेवीना नद, नानि कुल गुणमणी ॥
 मा० ॥ ना० ॥ त्रिभुवन नायक देव, पायकनी वीनती ॥ मा० ॥
 पा० ॥ मोह रिपु नय आण, सरण ग्रह्यो शुनमति ॥ मा० ॥ स० ॥
 ॥ १ ॥ तार तार मुज तात, वात कहु मनतणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ जन
 म मरण जजाल, आवे गजरामणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ताच्या जीव
 अनंत, शांति सुगुणा घणा ॥ मा० ॥ शां० ॥ उद्दरिया अपराधि,
 माहा अवगुण तणा ॥ मा० ॥ मा० ॥ २ ॥ तुम बिरुद दीन दयाल,
 दुःख दयामणी ॥ मा० ॥ दुः० ॥ क्यों न करो मुज सार, बि
 साख्यो किम घणो ॥ मा० ॥ वि० ॥ जो तारो गुणवत, अचरिज
 वे नही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जो मुज सरिखो दीन, उद्दारा जस

सही ॥ मा० ॥ उ० ॥ ३ ॥ आपद पहियो आज, आयो शरणें व
ही ॥ मा० ॥ आ० ॥ ऊँ न तारणहार, ते माटें में कही ॥ मा०
॥ ते० ॥ मुज सरिखो कोइ दीन, प्रभु तुज सारिखो ॥ मा० ॥
५० ॥ लार्थे नहिं जगमाय, कियो में पारखो ॥ मा० ॥ कि० ॥ ४ ॥
तुहिज तारशे नेट, पहिला पार्थे सही ॥ मा० ॥ ५० ॥ सेवक
करे पोकार, बाहिर शोना नही ॥ मा० ॥ वा० ॥ समर्थ ठो तुमें
स्वामि, जगत तारण जणी ॥ मा० ॥ ज० ॥ हवे मुज बेला केम,
आना कानी घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ जावे तार म तार, म
हारुं छु जावशे ॥ मा० ॥ म० ॥ पण तुम तारक विरुद, किणी
विष आवशे ॥ मा० ॥ कि० ॥ कहेशे ए ठे अजाण, आवे न
हि वीनती ॥ मा० ॥ आ० ॥ मावित्र विना कहो कोण, शिखा
वे ते रीती ॥ मा० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिखावो मुज सोय, रुपा क
रि नाथ जी ॥ मा० ॥ रु० ॥ विण मनाया नही ठोडुं, तुमारो
साथ जी ॥ मा० ॥ तु० ॥ करुणा करी मुज काढ्यो, नरक निगो
दछु ॥ मा० ॥ न० ॥ आव्यो आप द्जूर, तारो हवे मोदछु ॥
मा० ॥ ता० ॥ ७ ॥ गजहोवे निज मात, मुगति मेली खरी ॥
मा० ॥ मु० ॥ नरतने अरिस्ता नवनें, दीनी केवल सिरी ॥ मा० ॥
दि० ॥ अछाणु निज पुत्र, जूजता वारिया ॥ मा० ॥ जू० ॥ वा
हुवल गजमान, थकी ते क्तारीया ॥ मा० ॥ थ० ॥ ८ ॥ वी
तराग समजाव, ठो समतासागरु ॥ मा० ॥ ठो० ॥ माहरो थारो
नही आप तो, तारो उजागरु ॥ मा० ॥ ता० ॥ मातपिताथी जेम,
बालक आढो करे ॥ मा० ॥ वा० ॥ रिखज जिनदसु तेम, तिलोक
रिख उच्चरे ॥ मा० ॥ तिलो० ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ मेरी मेरी करता जन्म गयो रे ॥ ए वेशी ॥ श्री श्री अजित

अरज सुणो मेरी, टालो ड खदायक अष्ट वेरी ॥ श्री० ॥ ए आ
 कणी ॥ जिहां जाउ तिहा सगज आवे, निज गुण सपति दूर न
 गावे ॥ श्री० ॥ ज्ञान ग्रहू तव आलस आवे, जणीयो सो बिनये
 विसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ निद आवे धर्म कारजमांदी, सुख दुःख
 वेदनासु मर पाइ ॥ श्री० ॥ देव गुरु छुड़ दाय न आवे, मिथ्यामो
 हनी अधिक जमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष्य वधण बिन बिन बी
 जे, अटल अवगाहन केम लहीजें ॥ श्री० ॥ किहाइक उच्च नाम
 पद आपे, किहांइक नीच नाम करि आपे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 क छुज सोजाग बढावे, किहांइक अपजस नाम फेलावे ॥ श्री० ॥
 अमूर्तिक पदकी करे हाणी, विपत्ति इम मुजने अधिकाणी ॥
 श्री० ॥ ४ ॥ किहाइक उच्चगोत्रमांदी मेले, किहांइक नीच गोत्र
 चिपे ठेले ॥ श्री० ॥ अगुरु अलघु रूप करे दूरो, कायर मास
 कियो जरपुरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दान लाज अतराय दे जारी, जो
 गोपज्ञोग वीरज परिहारी ॥ श्री० ॥ शक्ति अनत सो दीनी लुकाइ
 ड ख देवे मुज चउगति माई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जितशत्रुसुत विजया
 वेके नदा, तुम शरणो आयो गुणहुदा ॥ श्री० ॥ शत्रु सकल सो
 करियो निकदा, तिलोकरिख जव जव तुम वंदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीय सजवजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ श्री सीमधर पाय नमुहो प्रभु जी ॥ ए देशी ॥ सजव जिन
 सुणो वीनती हो प्रभुजी, उपगारी जगधार ॥ कियो उपगार बें
 लोकमें हो ॥ प्र० ॥ सुखी किया नर नारि ॥ साद्विमानजो हो,
 प्रभुजी सेवकनी अरदास ॥ १ ॥ ए टेक ॥ ज्ञान ध्यान तप
 जप किया हो ॥ प्र० ॥ सजम मारग बुद्ध ॥ असजव कर्म काल
 छु हो ॥ प्र० ॥ सो करो सजव छुद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम बिन
 सजव कुण करे हो ॥ प्र० ॥ कुण कतारे पार ॥ दीनदयाल

दया करो हो ॥ प्र० ॥ तुम ठो जगदाधार ॥ सा० ॥ ३ ॥ शर
 रों आयो आपके हो ॥ प्र० ॥ पतित उद्धारण आप ॥ जाणो
 घट घट वातही हो ॥ प्र० ॥ दिजो कर्मबध काप ॥ सा० ॥
 ॥ ४ ॥ तु अतर धन माहिरो हो ॥ प्र० ॥ नव जल तारण ऊहा
 ज ॥ मुऊ अवगुण मत जाखजो हो ॥ प्र० ॥ बांहे ग्रह्याकी ला
 ज ॥ सा० ॥ ५ ॥ एक गामनो अधिपति हो ॥ प्र० ॥ करे प्रजा
 नी सार ॥ तुम त्रीजगना ईश्वरु हो ॥ प्र० ॥ क्यों न करो नवपा
 र ॥ सा० ॥ ६ ॥ नृप जितारथ कुलतिलो हो ॥ प्र० ॥ सेना दे
 वीना नद ॥ तिलोकरिख करे विनती हो ॥ प्र० ॥ देजो शिव
 सुख कद ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ अजिनंदनजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ कौलव मारग माये धिक धिक ॥ ए देशी ॥ अजिनदन वदन
 नित करियें, धरियें आतम ध्यान हो ॥ मरियें मिथ्या देव सक
 लयी, जे वश पडिया तोफान हो ॥ अ० ॥ १ ॥ शख चक्र
 धनुष कर धारी, माता विषय कषाय हो ॥ नित रहे राता
 शमा रमणमें, तस शरणे छुं थाय हो ॥ अ० ॥ २ ॥ कोइक दम
 कमल धारी, निज धी सुइ घरवास हो ॥ मृगशाला माला मो
 जीयुत, ते किम दे शिववास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ हस्त कपाल
 ध्याल नूषण युत, रुढमाल गलमांय हो ॥ गिरिजा जोग मगन
 निशिवासर, ते किम आवे दाय हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक मद्दि
 प अजा नख मागे, कोइक मदिरा पान हो ॥ राग द्वेष मद मो
 हमें लीना, ते किम दे निर्वाण हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आप तरे नहि
 नवसागरयी, ते नहिं तारणहार हो ॥ पाण नाव तरे किण
 विध करि, साचो हिरदे विचार हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ सवरराय सि
 ष्कारय नदन, परम अदोषी देव हो ॥ तिलोकरिखअलि गुण

रस लीनो, प्रभु चरणांबुज सेव हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम सुमतिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ कुष्ठु जिनराज तूं एसो ॥ ए देशी ॥ रेखतामें ॥ सुमति जिन
राज दे प्यारा, खलकमां सुर मोहनगारा ॥ एता दिन जर्ममें चू
ला, चतुर्गति हिमोलमें जूला ॥ सु० ॥ १ ॥ बावल में बोषा
आम जानी, काचटुक लिया रत्न मानी ॥ जहेर के पिया अमृत
जेसा, रत्नकु देखा ककर तेसा ॥ सु० ॥ २ ॥ एसी जर्म बुधि रहि
मेरी, प्रतित नहि रखी दिख तेरी ॥ किया मेने कर्म खुब सोटा,
सह्या में नर्क विच सोटा ॥ सु० ॥ ३ ॥ चढी मोहे बागीकी
मस्ती, ठस्सें मेरि रही अकल खस्ती ॥ पस्ती विन पाया में
तस्ती, जहान मेरी लही पुर कस्ती ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेरा बिल
बहोत गनराया, तुमारे आसरे आया ॥ तकसिरी माफ कर के
मेरी, देख तु लायकी तेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्जकी मर्ज तुम
जाणो, प्रभु अब कायकू ताणो ॥ अब तो महेरवानगी करणां,
मिटा दो जन्म उर मरणां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मेघरथ नूप फरजवा, मं
गला मातके नदा ॥ तिलोकरिख सेव चित्त चहाता, अचल मोह
देना सुखशाता ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ पष्ठ पद्मप्रजजिन स्तवन प्रारंभ ॥

पदकी राह ॥ श्री जिन मुज्जे पार उतारो ॥ ए देशी ॥ पद्य
प्रभु नवजल पार उतारो, में सरणो लियो चरणारो ॥ ए टेक
॥ पद्य लघन प्रभु पगमाहि जलके, वपमा पदम उच्चारो ॥ ७
त्पन्न होवे पंकथकी पंकज, जलसु लहे विस्तारो ॥ प० ॥ १ ॥
कामनोग सो कादव सरिखा, फरमाया सूत्र मजारो ॥ कर्मजर्ज
वृद्धि पाया प्रभुजी, गोत्रतीर्थकर सारो ॥ प० ॥ २ ॥ दोनु
ठोढ तोढ सब बधन, बरी शिवबधु सुखकारो ॥ तिम तुम किं

कर पर करो करुणा, जुगमें ए दोइ निवारो ॥ प० ॥ ३ ॥ तुमबिन
कोई दूसरो जगमें, दिसे नहि तारणहारो ॥ नक्तवत्सल जगवत
दयानिधि, अविनाशी अविकारो ॥ प० ॥ ४ ॥ चूख्याने जोजन
जल तर्याने, रोगी औपध उपचारो ॥ तिम मुऊ मनमां निश्चे
निरतर, आप तणो आधारो ॥ प० ॥ ५ ॥ आशनिराश करे नहि
दाता, मगण जो आवे द्वारो ॥ वलित दायक नक्तसहायक,
तुम ठो परम दातारो ॥ प० ॥ ६ ॥ श्रीधर नराधिप सुसमा
त्तनय प्रभु, जीवन प्राण आधारो ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम
मुज्जे, यो निज पद गुण थारो ॥ प० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आशा पुरो सुपासजी,
नित जावना जाउ हो ॥ चरण कमल मेवा सदा, दरिअण चित
चाउ हो ॥ सुपारस आश पुरो हो ॥ १ ॥ तुम गुण जो अवणो सुणु,
तो पण दरखाउ हो ॥ तुम जय जजन साहेबा, शरणागतमें
बोलाउ हो ॥ सु० ॥ १ ॥ पुष्करावर्त घन धार जू, सुखवेलि
वढाउ हो ॥ मोहणी अंधकार अनादिके, रवि तेम नसाउ हो ॥
सु० ॥ २ ॥ शिवपंथ बतावन तु प्रभु, जिम नेत्र अगाउ हो ॥
कर्म सघन बन काटवा, फरशी जिम घाव हो ॥ सु० ॥ ३ ॥
सकट शिला जजन जणी, जिम वज्र सराउ हो ॥ आशा पूरण
सुरतरु, चितामणि जिम जाउ हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ नवजल ता
रण तु प्रभु, निर्यामक नाक हो ॥ आधि व्याधिने निवारवा,
घनतर तिम गाउ हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ विष्णुपिता नदा मायना, अं
गजने मनाऊ हो ॥ तिलोकरिख कहे इष्टा पूरजो, नित्य शिश
नमाउ हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंदप्रज्ञ स्तवन प्रारम्भः ॥

॥ कहखानी देशीमां ॥ वडु जिनंद श्री चंद प्रज्ञ जावहुं, चरण
 अरविंद सुख कद सेवा ॥ गुण मकरद मन अलि रली गहगहे, ल
 खमणा नद देवाधिदेवा ॥ व० ॥ १ ॥ ठम जगरद कुधध निकदके,
 तोह मोह फद सो केवल पाया ॥ इइ नरेंइ सुरेंइ फणींझाविक, अ
 नदधर सेव करिने उमाया ॥ व० ॥ २ ॥ चइपुरी जन्म चइ
 लह्वन चरणमें, वरण पण चइ इव्य जाव चदा ॥ पूरण चद सो
 वदन जगमग करे, बाणी शीतल सुख अमृत ऊरदा ॥ व० ॥ ३ ॥
 विषय कपायको ताप महा प्रवजता, उपशमे जो शुद्ध जाव आ
 वे ॥ कपमा देश अविशेष पक्ष शोधतां, सपूर्ण उपमा केम आवे
 ॥ व० ॥ ४ ॥ चइ सकलक तस राहु प्रति शत्रुसग, दिवसें पला
 श दल जेम दीसे ॥ तुम निकलंक कर्म राहु दूरें किया, सदा स
 काति गुण विश्वावीर्षो ॥ व० ॥ ५ ॥ नक्तके सहायक धायक क
 र्मके, त्रिभुवन नायक ड रूक हरता ॥ करुणाके सागरु गुण रतना
 गरु, जगत कजागरु सुख करता ॥ व० ॥ ६ ॥ माहासेन राजिंद
 के नदखु वदना, तिलोकरिख कहे कर जोडि दोई ॥ एक समे
 मात्र मुज मया करी दर्शयो, अपर नहि वाढना रच कोई ॥ व० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम सुविधिजिन स्तवन प्रारम्भः ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे नविका ॥ ए देशी ॥ सुविधि जिन
 ने ध्यावो रे नविका, अजर अमर पद पावो ॥ ए आकणी ॥ क
 रम हणी केवल पद पाया, थाप्या तीरथ चउ खती ॥ सयमेव
 बोध ते पुरुषमें उत्तम, सिद्ध पुरीक गध दती रे ॥ ज० ॥ १ ॥
 ॥ सु० ॥ लोक उत्तम नाथ सो हितकारक, दीपक रवि जिम जा
 णो ॥ अन्नय चखु मारग शरण दाता, जितवबोध चखाणु रे ॥
 ॥ ज० ॥ २ ॥ सु० ॥ धर्म अने धर्मदेशना दायक, नायक सार

धी सोइ ॥ धरम प्रधान धर्म चक्री सम, जवोदधि दीप ज्युं जोइ
 रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ सु० ॥ शरणागतने राखण समरथ, ज्ञान दरिसण
 थिर सेरी ॥ नीवरत्या बद्धस्थपणाथी, जीते जीतावे वैरी रे ॥ ज०
 ॥ ४ ॥ सु० ॥ तरे तरावे समजे समजावे, पापने ढोढे ढोढावे ॥
 पूरण ज्ञान दरिसण शिव अचल, रोगरहित सो कहावे ॥ ज०
 ॥ ५ ॥ सु० ॥ अनत अक्षय पद बाधा नहिं जिनके, बलि ससारमें
 नावे ॥ सिद्धगति नाम शाश्वत स्थानके, पहुँचा जिहां मन चावे
 रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुधीव तात रंजा देवी जाया, धन धन
 अतरजामी ॥ तिलोकरिख पायक तुमें नायक, बडू नित शिर
 नामी रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ सु० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम शीतलजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ व्यापर दोलत फुल रही ॥ तिजकी ए वेशी ॥ शीतलजिन
 जी शीतल करो, तेरे तन गीयाकी लाय स्वामी ॥ जनम रूपी रूइ
 विपेजी कांइ, मरणकी आग ब्यो बुजाय स्वामी ॥ शी० ॥ १ ॥
 संजोगमांहे विजोगनी जी कांइ, सपदामें विपत्ति कहाय ॥ स्वा० ॥
 सुखशातामें अशाताकी जी कांइ, अभि दियोने मिटाय ॥ स्वा०
 ॥ शी० ॥ २ ॥ हरख ठिकाणे शोककी जी काइ, ज्ञानके माही अ
 ज्ञान ॥ स्वा० ॥ सुबुधिके कुबुधितणीकी जी कांइ, शीलमें कुशील
 डखदान ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ३ ॥ सजम सतरा प्रकारको जी कांइ,
 जिएमें असजम आग ॥ स्वा० ॥ कृमा धरम रूइ विपे जी कांइ,
 मेटो क्रोध तणो दाग ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ विनय कह्यो सुख
 कारणो जी, काइ सर्व धर्मको सार ॥ स्वा० ॥ अविनय दुताशनो
 लोकमें जी काइ, दीजो एह निवार ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ५ ॥ सतोष
 विपे तृष्णा तणी जी काइ, दीजो दुताशन टाल ॥ स्वा० ॥ दीसे
 नहिं त्रिहु लोकमें जी कांइ, तुम सम शीतल हेमाल ॥ स्वा० ॥

शी० ॥ ६ ॥ दृढसेन जूप नदा मायना जी कांइ, अंगज सुखे
 अरदास ॥ स्वा० ॥ तिलोक कहे मुऊ नणी जी कांइ, दीजो छि
 वशीतलवास ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्रेयासजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ श्रीमाहावीर जिनेश्वर, आप विराज्या अमर सहेरमें ॥ ए
 वेशी ॥ श्रेयास जिनेश्वर, अरज सुनोजी मोरी साहेवा ॥ ए आंक
 णी ॥ जिम तुम श्रेयपद अश छुई कर, श्रेय पद नाम प्रतिद ॥
 ते तुम कृपा जावद्युजी कांइ, आपो एहज रिई हो ॥ श्रे० ॥ १ ॥
 तुम करुणारस सागर, गुण रतनागर ईश ॥ छु तुमने खामी पडे
 सो काइ, क्यों न करो बकसीस हो ॥ श्रे० ॥ २ ॥ चाकर चू
 क पडे कोइ विरियां, गिरुवा ठाकुर जेइ ॥ तेइ निवाजे पलकमें
 जी काइ, गिरुवा एम सनेइ हो ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ मात पिताछे
 मूरख बालक, करे कोइक अपराध ॥ निज जाणीने तेइ निवाजे,
 तुम गुण अगम अगाध हो ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ दु निगुणो पापी निर्बुद्धि,
 कूड कपट जमार ॥ जिम तिम करिने पावन करकें, कतारो जब
 पार हो ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ तुम बिना कोइ तारणहारो, जगमें दीसे
 नाहि ॥ विण ताच्या तुमने नहि गोइ, ए निशे मनमाहि हो ॥
 श्रे० ॥ ६ ॥ विण्णु पिता बिन्दु महतारी, धन धन नंदन जेइ ॥
 तिलोकरिख कहे मुऊ गिर टीको, लागो नवल सनेइ हो ॥ श्रे० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन स्तवन प्रारभ ॥

राग तुमरी ॥ प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरजन, रोम रोम मेरे
 मन बसिया, वारी रोम रोम मेरे दिल बसिया ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ चइ
 चकोर उर मोर मेव मन, मधुकर ज्यों मालति रसिया रे ॥ म०
 ॥ प्र० ॥ १ ॥ सति चरतार बालक चित्त जननी, कुजर कजली
 वन धसीया ॥ कु० ॥ प्र० ॥ अथ कोयल चकवी रति चाहत,

हस सागर जल उद्धसियावारी ॥ हं० ॥ प्र० ॥ १ ॥ तिम तुमसुं
 मुज प्रीति घणोरी, करम नरममांही में फसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥
 विषय कषाय माहा मदमातो, राग द्वेष विषधर मसीया ॥ रा०
 ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तुम जप गरुड शब्द जिम जाणु, मन शुद्ध नाम
 लेता नसिया ॥ म० ॥ प्र० ॥ परम गारुडी तुम हो कृपानि
 धि, सकल जहर दुरां जे चसियां ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ देवा
 धिदेव अलेव अगोचर, मिथ्या नर्म सो दुरा खसिया ॥ मि०
 ॥ प्र० ॥ करमको खार हस्यो तप सोगसुं, नाव अगनि करी उ
 द्दसिया ॥ ना० ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नवि मन रजन अलख निरजन,
 सिद्धिमें सिद्ध जाय ठसिया ॥ सि० ॥ प्र० ॥ सहज स्वभाव तुवा
 को तिरण पण, करम वजन बुटा ठकसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ ६ ॥
 मेरेसें दूर नहि प्रभु कबुद्धी, जेसें अग्नि अरणीके घसीया ॥ जे०
 ॥ प्र० ॥ वासुपूज्य जयावे नदनका, तिलोकरिखजी दरिसण
 त्रसिया ॥ ति० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विमल जिनेसर वदो रे नविका, नव नव सरण सदाई ॥
 ए टेक ॥ ज्ञान अनंत पण अलोकको ठेढो, कह्यो न आगम मा
 ई ॥ दरिसन केवल स्वपन नहिं देखे, ए देखो अधिकाई ॥ वि०
 ॥ १ ॥ शाता अशाता वेदे नहिं कबु, निराबाध सुखमाइ ॥ त्या
 ग नही पण आश्रव लूटो, अटल अवगहणा अकायी ॥ वि० ॥ २ ॥
 आयुष्यविन थिर थित तुम स्वामी, नाम गोत्र क्षुध साई ॥ समरे
 एक नाव शुद्ध करके, सुख होवत वनताई ॥ वि० ॥ ३ ॥ अत
 राय क्षुध करीयो साहिव, नूतन लाज न कांइ ॥ वीतराग दशा पा
 वत प्रभु में, तारक धिरुद कहाइ ॥ वि० ॥ ४ ॥ हय गय रथ पाय
 क नहि ममता, जगतके नाथ कहाइ ॥ नारी नही शिवरमणीके

रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांझ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु क
 रुणासिधु, शत्रुसों दिया जगाइ ॥ कृतवर्म जूप श्यामा देवी नवा,
 जगमें शोभा सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुऊ तार
 एमें, कायकू जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक विरुद्ध विचारी, नि
 वगढ देउ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनंतनाथजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकु, वे जिन मुझ धारी हे ॥ ए वेशी ॥
 अनंतनाथ प्रभु नित्य वृत्ति वदू, अनंतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए
 टेक ॥ अनंत चारित्र्य अनंत शक्तिधर, अनंत जीवके हितकारी
 हे ॥ सचित्त अचित्त अनंत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मजारी हे
 ॥ अ० ॥ १ ॥ अनंत जीवाके प्रतिपालक साहिब, अनंत वर्गणा
 निवारी हे ॥ इव्य गुण पर्याय सकलमें, जिन जिन करकें उचारी
 हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन जवन जस वक्राल तेरो, महिमा अपरम
 पारी हे ॥ वदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण बलिहारी हे
 ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगवंधव जगनायक, जगतारक सुख
 कारी हे ॥ सब विध लायक सत सहायक, वायक सकल पियारी,
 हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ समय साधी मोक्ष आराधी, उपाधि सकल प
 रिहारी हे ॥ अलख निरजन शत्रुके गजन, अजर अमर अवि
 कारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुऊ दाय न आवे, तुमखं
 प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वृत्ति दायक, अविचल नक्ति उ
 मारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिद्धसेन कुल दीपक प्रगल्भा, सुजसा प्रभ
 महतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो नव जल
 पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुदरी जी काइ, पाव्यु शियल अखम ॥

ए देशी ॥ धर्मजिनद सेव्या विनाजी कांइ, इम रूले ससार
 ॥ ए टेक ॥ धरम धरम करतो फिखो जी काइ, धरम न जाणो जेद
 ॥ रुलियो चवगति जीवढो कांइ, पायो पूरण खेद जी ॥ ध० ॥
 ॥ १ ॥ वार अनती उपनो जी कांइ, जोगव्यां डु ख अनत ॥ के तो
 जाणो आतमा जी कांइ, के जाणो जगवत जी ॥ ध० ॥ २ ॥ एक
 मुहूर्तमें जव कखा जी काइ, साही पैंसठ हजार ॥ ठत्तिस अधिक नि
 गोदमें जी काइ, काल अनत विचार जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ त्रस था
 वर तिर्यचमें जी कांइ, ठेदन जेदन प्राप्त ॥ सही तिहा परवश प
 णे जी कांइ, सची करमनी राश जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जो कवि नरज
 व पामियो जी काइ, सपदा पायो हीन ॥ पापकर्म सचय कखां
 जी कांइ, मिथ्यामतमें लीन जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुर जयो तो चा
 कर पणोजी कांइ, राख्यो ख्याल विनोद ॥ मरणसमे जूख्यो धणो
 जी कांइ, नूख्यो सयली मोद जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ पुजल नाता सद्गु
 ग्रह्या जी काइ, जानु सुत सुव्रताना जात ॥ तिलोकरिखनी ए वि
 नती जी काइ, आपो धर्म निज वातजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शातिजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ समर छे समर छे राधिका श्री हरि ॥ ए देशी ॥ राग प्रजातीमें ॥
 ध्यान धर ध्यान धर शांति जिनराजको, दिन दिन सपत्ति अधि
 क आवे ॥ सकल सकट हरे रुद्धि वृद्धि करे, कर्मको नर्म दूरें ह
 ठावे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ नृप विश्वसेन कुल घद रवि किरणसा, अ
 चिरा देवी मायने कूखें आवे ॥ मारी निवारी प्रभु देशकी गर्ने
 में, शातिकुमार प्रभु नाम ठावे ॥ ध्या० ॥ २ ॥ शातिजीको नाम
 सतत करी जाणीयें, अरि करी हरि सो दूरा जगावे ॥ ताव तेजा
 तरो चववारो वेलातरो, आधि व्याधि डु ख उपशमावे ॥ ध्या०
 ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट माहा वेरी जे वाकडो, समरता शाति सो लागे

रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु क
 रुणासिधु, शत्रुसों दिया जगाइ ॥ कृतवर्म नूप श्यामा देवी नदा,
 जगमें शोना सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुऊ तार
 एमें, कायकूं जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक विरुद विचारी, सि
 वगढ देउ जितार्ई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनतनाथजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकु, वे जिन मुझ धारी हे ॥ ए देखी ॥
 अनतनाथ प्रभु नित्य वति वदू, अनतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए
 टेक ॥ अनत चारित्र अनत शक्तिधर, अनत जीवके हितकारी
 हे ॥ सचित्त अचित्त अनत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मजारी हे
 ॥ अ० ॥ १ ॥ अनत जीवाके प्रतिपालक साहिव, अनत वर्गणा
 निवारी हे ॥ इव्य गुण पर्याय सकलमें, जिन जिन करकें उच्चारी
 हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन जवन जस उल्लास तेरो, महिमा अपरम
 पारी हे ॥ वदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण बलिहारी हे
 ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जगनायक, जगतारक सुख
 कारी हे ॥ सब विध लायक सत सहायक, वायक सकल पियारी
 हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ सयम सार्थी मोक्ष आरार्थी, उपाधि सकल प
 रिहारी हे ॥ अलख निरंजन शत्रुके गजन, अजर अमर अवि
 कारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुऊ दाय न आवे, तुमस
 प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वठित दायक, अविचल जक्ति तु
 मारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिद्धसेन कुल दीपक प्रगट्या, सुजसा प्रभ
 मदतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो नव जल
 पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पचदश धर्मनाथजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुदरी जी काइ, पाळ्यु शिखर अखम ॥

॥ अथ अष्टादश अर जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ अर
ति हरो रे, वीनती मुऊ अवधार ॥ सेवा कठिन प्रभु ताहरी रे,
सोहली खड्गकी धार ॥ जिनेश्वर अरहनाथ सुखपूर, मुऊ राखो
चरण हजूर ॥ जि० ॥ १ ॥ लोहचणा दांतें चावणा रे, सागर
तरणो अथाह ॥ पवनने जरणो कोथले रे, इणसुई नक्ति अगाह
॥ जि० ॥ २ ॥ श्वेतांवरी विगवरी रे, जैनमें नेद अनेक ॥ निज
निज पद्द करे खेंचना रे, एकात नय पद्द टेक ॥ जि० ॥ ३ ॥
अनेकात मत ताहरो रे, हेय झेय उपादेय ॥ सप्तजगी स्यादाद
नो रे, समजण छु कर अंग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अतर तेरे प्रकारका
रे, किम करि दीजें ठेल ॥ कांस्यपात्र सिहणी क्षीरने रे, किम
करि राखे फेल ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव अदोषी गुरु सजमी रे, ध
रम दयामांही सार ॥ निर्वेद वाणी ताहरी रे, मानुं शरण आधार
॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नदना रे, वदणा जीलो द
याल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे ठो परम कृपाल ॥
जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ एकोनविंशति महिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सुण चेतन रे तुम गुणवत मुनिकों मेवो ॥ ए देशी ॥
सुण चेतन रे तु महिजी जिनद समर छे ॥ कर धर्मध्यान गुणथा
म, नवोदधि तर छे ॥ ए टेक ॥ एक विवेह देशमें, मथुरा नग
री सोहे ॥ जहा प्रजापाल नृपाल, कुन मन मोहे ॥ राणी प्रजा
वति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कुखें लियो अवतार, महि
जिन छुहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या दुमासर्पिणीकाल, अठेरो जाणो ॥
जयो प्रथम वेद अवतार, प्रभुकों बरवाणो ॥ दोयसें नन्याणव वर्षे,
वमरमें आया ॥ ठ नृप पूरव नव मित्र, परण न कमाया ॥ सु० ॥

पावे ॥ सजन सजोग विजोग दुश्मन तणो, अवनपति मान
अधिको बढावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ मकणी शंकणी नूत जोटिंग सो,
समरता सकल दूरा पलावे ॥ कतरे जहेर छुजग विंदू तणां, अ
नल जिननामजले उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ बध बधन सहु
बुटे प्रछु नामछुं, चोर छुटेरा उग जागि जावे ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री
शांति शांती करे, दुष्ट दमण स्वहा हिरवे ध्यावे ॥ ध्या० ॥ ६ ॥
इह नवें सुख परनवें शिव सपदा, देत जगदीश जो समरे जावें ॥
तिलोकरिख करे अरदास कर जोढिने, द्यो निज नाम गुण प्रेम
जावें ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश कुथुनाथजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ पवन सुत कोन दिशासैं आयो ॥ ए देशी ॥ राग श्याम क
व्याण ॥ मेरे प्रछु कुथु नाथ मन जाया ॥ मे० ॥ ए टेक ॥ सजम
करणी नवजल तरणी, धारकें कर्म द्वाया ॥ ध्यायो छुक्त ध्यान
अनुपम, ज्ञान केवल प्रगटाया ॥ मे० ॥ १ ॥ अशरण शरण अ
वधव वधव, अनाथके नाथ कहाया ॥ जगजीवन जग वत्सल ता
रक, हित उपदेश सुनाया ॥ मे० ॥ २ ॥ कोइक राग तानमें मग
न हे, कोइ फुलेल लगाया ॥ कोइक रूप रंग अग राचे, खट रस
जोजन जाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तन धन सक्कन नानाविध नर, रखा
ल तमासैं लोचाया ॥ निज गुण छुज गे चूल होय कर, फरमके
फद फदाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रनु सरणा विन तरणो न होवे, जुं
मदिर विन पाया ॥ अक विना छुन्य काम न सारे, जेसैं सुपनकी
माया ॥ मे० ॥ ५ ॥ चरण सरणकी मरण करणसु, नव अरणव
नटकाया ॥ विणजाराका वेल ज्यु जगमें, पच पच जनम गमाया
॥ मे० ॥ ६ ॥ सुगराय श्रीदेवी अगजके, तिलोकरिख सरणे चज
आया ॥ जिम तिम कर निज वास बतावो, तो में सकल
नर पाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

वधायो, मुनिसुव्रत पद नहि जायो रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ हेय डेय उ
पादेय नयरस केली, जाणी में किंचित शेलि रे ॥ हवे मत तोढो
प्रीत ए पहेली, विनति ब्यो प्रभु जेली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र
नृप पद्मावती जाया, अवके तो डुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख श
रणागत आया, तार तार माहाराया रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ नहिं हे सदेह लगार निरुपम ॥ ए देशी ॥ एकविंशमा न
मि नाथ निरुपम, उपमा कही नहि जावे ॥ तेज रविसम ज्यो
कहुं प्रचुने, सो पर प्रते दजावे ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृ
द्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ बादलथी मद अरु
ग्रसे तस केतु, असनव इण न्यावे ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहुं च
इ सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलकी जनावे ॥ नित नित हानि वृ
द्धि तस दीसे, रवि उदय मद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर स
म कहु जगतारक, आर पार दोइ पावे ॥ खारापणमें कवण बढा
ई, जतु अनेक रुवावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेतां पण श
क्रूं, लोहने हेम वणावे ॥ न करे लोहका खरुने सरिखो, गज ह
रि पशुमें गिणावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ मेरु कहुं तो कठिन घणैरो, अ
ग्नि सो लाय लगावे ॥ सुरतरु चितामणि आदि पदारथ, परजवें
काम न आवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ विश्वसेन नृप विप्रा अगजने, ति
लोकरिख शीश नमावे ॥ मोय अनुपम करो जगवत्सल, अवर
कबू नहिं चावे ॥ एक० ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वाविंशति रिष्टनेमि जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ गाफल मत रहे रे ॥ ए देशी ॥ जपो नेमिसरजी, मेरी जा
न, जपो नेमिसरजी ॥ नेमीश्वर बालब्रह्मचारी, बढाई हे ज
गमें जहारी ॥ जपो० ॥ ए टेक ॥ समुद्रविजयशिवा देवी नदा,

॥ ३ ॥ प्रसुप्त मोहन घरके मांहि, ठहु बुलवाया ॥ प्रतलिको ठघा
 छ्यो ढक, डुर्गधसुं गनराया ॥ तब प्रसुजी दे ठपदेश, सुणो रे
 शाणा ॥ ए देह अशुचि नमार, अंत तज जाणां ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए
 जोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, ड ख
 आगर हे ॥ श्रवणवश श्रवणमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ वीप
 कमें पतंग निज अग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ नमर फूल
 के माहि, घ्राणवशें हाणी ॥ रसना वश मछ मरे, फरसे गज जा
 णी ॥ एक एक इडियके, वशें प्राण गमावे ॥ जे पाचुके वश होय, क
 वण गति आवे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पूरव जब तप कपट, तणे परजावें ॥
 तुम हम अंतर जाणो, प्रसुजी दरसावे ॥ जातीसमरण पाय, सक
 ल शिव जावे ॥ प्रसु ताच्या बड्डु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु०
 ॥ ६ ॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रसु अधम उद्धार
 ण विरुद, थें अंतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि, नमे शिर नामी
 ॥ तुम चरण शरणको वास, किजो शिवधामी ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ स्वामी सुणेने सुदरी जांखे ॥ ए वेशी ॥ श्री मुनिसुव्रत सा
 हिव साचो, रोम रोम माहि राख्यो रे ॥ जबलग में तुज जाणियो
 काचो, नट जिम चवगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तु अविना
 शी गुणधनराशि, निरंजन निराकारी रे ॥ जेसी सिद्ध अवस्था
 तुमारी, तेसी मुजमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ हेत कल्पना ते
 सड्डु ठोडी, नर्मकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमछु जोडी,
 थाव में किम करि दोडी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मो
 हणी नाता, ज्ञागा निपट यह ताता रे ॥ कृण जर छेन वेत नहिं
 शाता, चवगतियें अकुलाता रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनत में ए
 म गमायो, पारो ज्यु बुटी मूर्खायो रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कमें

रग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गेज दीना, स
कट सहायां प्रभु जलधरका रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ धरणिं राया तव
नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन
झरातम, तुम साहेब शिव मदिरका रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ नील वरण
तन दमकत काया, चरणमें लहान फणिधरका रे ॥ विषय क
पायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह महरका रे ॥ ज० ॥ ५ ॥
श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, हूय किया धनघाति अरिका रे ॥
जब जन तारण तीरथ आप्या, उपदेश दिया हित सवरका रे ॥
ज० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका
रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु
शिवधरका रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ मेरी सुनीयो करुणा नाथ, जवोदधि पार कीजो जी ॥ ए
देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानद, नवजल वेग तारो जी ॥ करुणा
कीजो ॥ ए टेक ॥ कुमलपुरमें लिया अवतारा, सिद्धारथ नृप कुल
सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृह्वासमें रहिया, जग तज सज्जम मारग
गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनी जी ॥
अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यच परिसद खमिया, राग द्वेष मोह
महर वमिया ॥ धनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आ
राममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा ठमा
या जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोष प्रकारा, दिया उपदेश
ज्यो अमृत धारा ॥ चवदा सदस्र जये अणगारा, माहा सति
याजी बतिस हजार ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महा
रीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ आवक एक लक्ष उगणसाठ हजार, आ
विका तीन लक्ष सदस्र अगारा ॥ वारा व्रत धारक परकास्या,

नये जादव कुलमें चदा, जे नविजनके सुखकंदा ॥ हरिकी शख
 शालामाई, मित्र सग गया सो चलाई ॥ ज० ॥ १ ॥ नाक
 श्वासछ शख वजायो, छे धनुष टकार सुणायो, हरि सुण मन
 अचरिज आयो ॥ जाण्या जव नेमकुवर ताई, कल मन धिता
 अधिकार ॥ ज० ॥ २ ॥ राज जेरो इम मर आयो, ठल करके
 फाग रचायो, जिम तिम करी व्याह मनायो ॥ उग्रसेन नृपति
 की वेटी, राजकुल रूप गुणोंकी पेटी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिणसु करी
 हरजीये सगाई, किनी खुव जान सजाई, छुनेगढ आया चढा
 ई ॥ पद्यपर करुणा दिल आणी, तोरणसु रथ फेखो जाणी ॥
 ज० ॥ ४ ॥ प्रद्यु वरही दान नित दीनो, फिर सजम मारग
 लीनो, तप जप अति डुकर कीनो ॥ कर्म कृपाकर केवल
 पाया, प्रीत धर जवजन समजाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ सति किनी
 हे फुरणा जारी, आखर फिर समता धारी, सातशें सखी संग
 नई त्यारी ॥ चोपन दिन पहेली शिव पाई, पिठेसैं मुक्ति गया
 साई ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्यू पद्यपर करुणा लाया, तिम महेर करो
 महाराया, तिलोकरिखजी तुम शरणे आया ॥ प्रद्यु तकसिर माफ
 कीजो, अचल शिव नक्ति लान दिजो ॥ जपो० ॥ ७ ॥ ३३ ॥

॥ अथ त्रयोविंशति पार्श्व जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ पिछे रे प्पाला ॥ ए देशी ॥ जजले रे वाला, वामा देवी
 लाला, जगत रखवाला, जगत प्रतिपाला, रक्षपालक ब्रह्म आवर
 का रे ॥ ए टेक ॥ अश्वसेन कुलदीपक सामी, मरद्या मान क
 मठ सुरका रे ॥ नाग नागणी जलत निकाब्या, करुणावत साहेब
 परका रे ॥ ज० ॥ १ ॥ परमेष्ठी नवकार सुणा कर, ठाम दिया
 धरणीधरका रे ॥ नागणी पद्मावती गति सुरिकी, शासनाधिष्ठ
 श्री जिनवरका रे ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रद्युजी जगमाया ठटकाई, मा

रग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, सं
कट सहा प्रभु जलधरका रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ धरणिंइ राया तव
नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन
झातम, तुम साहेव शिव मदिरका रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ नील वरण
तन दमकत काया, चरणमें लहान फणिधरका रे ॥ विषय क
पायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह महरका रे ॥ ज० ॥ ५ ॥
श्री जिन केवलज्ञान जो पाया, हूय किया घनघाति अरिका रे ॥
जब जन तारण तीरथ थाप्यां, उपदेश दिया हित सवरका रे ॥
ज० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका
रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु
शिवधरका रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्षमान जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ मेरी सुनीयो करुणा नाथ, नवोदधि पार कीजो जी ॥ ए
देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशजानद, नवजल वेग तारो जी ॥ करुणा
कीजो ॥ ए टेक ॥ कुमलपुरमें लिया अवतारा, तिहारथ नृप कुल
सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवास्तमें रहिया, जग तज सजम भारग
गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनी जी ॥
अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्थच परिसह स्वमिया, राग द्वेष मोह
महर वमिया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम छकल आ
राममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमा
या जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोष प्रकारा, दिया उपदेश
ज्यो अमृत धारा ॥ चउदा सहस्र नये अणगारा, माहा सति
याजी बतिस हजार ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महा
रीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ आवक एक लक्ष उगणसाठ हजार, आ
विका तीन लक्ष सहस्र अठारा ॥ वारा व्रत धारक परकास्या,

आज्ञा आराधि सर्गमें वासा ॥ जाज्ञो मोक्ष माँईजी, आतूं कर्म
 घाई जी ॥ अ० ॥ ४ ॥ ससार सागरमें कर्मको पाणी, जोगको क
 र्दम महा दुखदाणी ॥ चार कपाय बढवानल जारी, राग द्वेष
 माहा मगर करारी ॥ नवि रहे नर्म केरा जी, मिथ्यामोहनी प
 रम अधेरा जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ धर्मको दीवो पाटण शिवपुर हे,
 सो देखणकी अधिक आतुर हे ॥ अधम उद्धारण विरुद्ध विचारो,
 सरणो आयाने पार उतारो ॥ तुम प्रभु जहाज यावो जी, सुखें सुख
 ठेठ पहुँचावोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ इच्छुति अजिमानज कीनो,
 तिणने शिष्य करि शिवपुर दीनो ॥ चमकोशें मक दीनो हे आई, मे
 ल्यो तेहि स्वर्ग आत्मा माई ॥ अपराधी अनेक ताखा जी, जर्गति
 में पढता वाखा जी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अनादि कालको छुट अधर्मी,
 चउगति दुख दु पायो कृकर्म ॥ तुम बिन उर उद्धारणहारो,
 बीसे नही कोई इण ससारो ॥ सरणो तुमारो शोध आयो जी,
 जयो में पूरणकायोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ अरोग बोध समाधि स
 ममुक्ति, दीजो करुणानिधि वर मुक्ति ॥ इणजवें हिरि सिरि धी नि
 धि वृद्धि, मन इष्टा करजो सब सिद्धि ॥ तिलोकरिखजी आश पू
 रोजी, राखो नित आप हजूसो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ कलश ॥

॥ चौबीश जिनवर, परम सुखकर, जावहु, स्तवना करी ॥ अण
 णीशें अढतिस, ज्येष्ठ वदि पञ्च, वार रवि नव तिथि खरी ॥ मा
 हाराज अयवता, रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख, बिनवे सदा ॥ आ
 रोग बोधि, समाधि शाता, दिजो हँही श्री, सपदा ॥ प्रभु दिजो अ
 विचल, सपदा ॥ इति चौबीश जिनस्तवनानि सपूर्णानि ॥

॥ अथ जिनेश्वरजीकी आरति प्रारब्ध ॥

॥ एसे जिन एसे जिन एसे जिन हे ॥ ए देशी ॥ जय जय जय जय ॥

बोलो जिनवरकी, जो हे आशा अमर शिवधरकी ॥ ज० ॥ ए टेक ॥
 ॥ १ ॥ जेसी काति शशी दिनकरकी, काया दमके सकल हितक
 रकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्यु खसबोइ अंगर तगरकी, जिएसू थास
 सुगंध मनोहरकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ जेसी मीठी मली हे सक्करकी, वा
 एी अनंत गुणी सुमधुरकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनु
 त्रकी, शोना अनुपम प्रनुजीका नुरकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ जेसी चा
 ल मराल गजवरकी, तिणसु गमनगति सुदरकी ॥ ज० ॥ ६ ॥
 चिता आणी हे जब सागरकी, सबहरी दान इष्टा उजागरकी ॥
 ॥ ७ ॥ घात करवा करम रूप अरिकी, क्रियाधारी सजम सवर
 की ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान दिशा जब फरकी, जब त्रिगडाकी
 रचना अमर की ॥ ज० ॥ ९ ॥ करुणा आणी हे जीव अपरकी,
 दी उपदेशना पापका नरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अ
 थिर हे सुरकी, तिण आगे कदा क्रुद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ पर
 थम थापना करी गणधरकी, पिठें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज०
 ॥ १२ ॥ जे गति पावे मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजर
 की ॥ १३ ॥ होढ कुण करि शके ठण नगरकी, गिणती सागर आ
 गें क्या बिछरकी ॥ ज० ॥ १४ ॥ महिमा अपरमपार गुणागरकी,
 कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥ ज० ॥ १५ ॥ अयवतारिखजी
 महाराज महेरकी, कीर्ति दाखी देव अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥
 तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, जाव नक्ति करे तीर्थकरकी ॥ ज०
 ॥ १७ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनानि सपूर्णानि ॥

॥ अथ श्रीपचपरमेष्ठीका प्रत्येक स्तवन लिख्यते ॥

तत्र

प्रथम श्री अरिहंत स्तवन प्रारभ ॥

॥ सिद्धचक्र जिन पूजो रे नविका ॥ ए देशी ॥ श्रीअरिहंतजी वदो रे नविका, डू रूत दूर निकदो रे ॥ ज० ॥ श्रीअरिहंतजी वदो ॥ ए आकणी ॥ बीश बोल सेवन करी स्वामी, तिसरा नवके मां ही ॥ गोत्र तीर्थकर वधन कीयो, चउद स्वपन दिया माई रे ॥ ज० ॥ १ ॥ छुन विरियां मांही जन्म जयो दे, इइ सकल हरखाया ॥ मदर गिरिपर महोच्चव करकें, माता पास पोढाया रे ॥ ज० ॥ २ ॥ नोगावली कर्म नोगवियांसुं, वरसीदान दे करकें ॥ सज म ले कर कर्महय कीना, केवल पद अनुसरकें रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ पेंतिस वाणी निरवद्य जाणी, नव्य प्राणी सुखदाणी ॥ अमृत जिम उपदेश देइने, तीरथ चउ दियां ठाणी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ प्रथम सधयण सठाण प्रभुके, रोग रहित वर काया ॥ प्रभुको रूप देखी ने सुर नर, रोम रोम उब्ढसाया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अष्ट लङ्घन स्वङ्घन, जहा विचरे जिन राया ॥ सात ईति सो कोझ न थावे, अशोक तरु करे ठाया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ देवछुछुनि बाजे गगनमें, इइध्वजा लहकावे ॥ चोसठ जोडां बिंजाय चमरनां, ती न ठत्र शिर थावे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ योजन मरुल वाय सुगंधी, अ चित्तजल धरसावे ॥ कुसुम पंच वर्णी जल थल सरखा, ठग अषि क महकावे रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विषम पंथ सो पाधरो होवे, कटक अणी अधो थावे ॥ बैरजाव नहिं जागे जोजनमें, सिद्ध अजा सम जावे रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ आज्ञा कागल लेखण ब नराइ, श्याही सागर जल लावे ॥ कोढाकोढि सागर सुरगुरु जो, लिखे तो पार नहिं पावे रे ॥ ज० ॥ १० ॥ अनंत गुणात्म आ

तम प्रभुकी, मूलका गुण कह्या वारा ॥ तिलोकरिख अनुरागी प्र
भुको, चाहे नवजलपारा रे ॥ व० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धस्तवन प्रारंभ ॥

॥ शांति चरणारी जावं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ वदू सिद्ध सदा
अविकारी, पूरो प्रभु आश हमारी ॥ ए आकणी ॥ शुक्लध्यानशै
लेशी परिणामे, तिनही जोग निवारी ॥ एक समयमाही जाय
विराज्या तो, सिद्धक्षेत्र सुखकारी, कर्मकी लगे न कारी ॥ व० ॥
॥ १ ॥ सर्वार्थसिद्धसुं जोजन वारा, ऊर्ध्व दिशाके मजारी ॥ लाख
पैंतालीस जोजन पहोली, चिता ठत्र आकारी, जोजन बल आठ
वच्चारी ॥ व० ॥ २ ॥ ठेदहे माखीकी पाखसु जीणी, सुहाली
घठारी मठारी ॥ अरजन सुवर्णमाही मनोहर, ठवि जागे अति
प्यारी, दोष नहिं दीसे लगारी ॥ व० ॥ ३ ॥ जोजनको उपरलो
गाव, जाग ठछो सुविचारी ॥ सहजानद आतम अवगाहना, प
रमानद पद धारी, नहिं जहा छ ख बिमारी ॥ व० ॥ ४ ॥ पंच
वर्णमें वर्ण नहिं हे, वासना दोष प्रकारी ॥ पंचरस अठ फरस
ने जिनके, तीनही वेद विकारी, विषयकी लाय निवारी ॥ व० ॥
॥ ५ ॥ पंच प्रभाव उपाधि नही हे, चार कषायके टारी ॥ अ
जर अमर अविनाशी अखमित, निरजन निराकारी, सदातृपत
निराहारी ॥ व० ॥ ६ ॥ जाणत देखत सर्व पदारथ, निरा
बाध सुखधारी ॥ समकित ह्यायिक अटल अवगाहन, अमूर्तिक
गुणधारी, अलख जस ज्योति अपारी ॥ व० ॥ ७ ॥ अगुरु
लघु परजाय सदा फिर, नहिं जिहां तात महेतारी ॥ सुत सहो
दर सक्कन छुशमन, नहिं सगपण व्यवहारी, जात कुल वर्ण न
चारी ॥ व० ॥ ८ ॥ शिष्य गुरु नही पायक नायक, रूप अद्वयम
धारी ॥ पन्नर जेवें अगम अगोचर, नहिं कण्ठ नहिं गारी, नहिं

कोई वस्ति ठजारी ॥ व० ॥ ए ॥ जावे पण आवे नही पाठा, प
चमी गति सुखकारी ॥ तिलोकरिख कहे तुम स्थान बतावो, ए
मागु रिऊ थारी, वारीमें जाव वलिहारी ॥ व० ॥ १० ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचारज स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सुगुरु पिठाणो इण आचारें ॥ ए देशी ॥ आचारज प्रणमं
पद त्रीजे, अष्ट सपदाधार जी ॥ चार तीरथके वे सुख शाता,
आवेय वचनका धार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पूरण पा
ले, पंच सुमंतिका धार जी ॥ तीन गुप्ति सो दृढ करी राखे, निर्म
ल पंच आचार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाढ शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी,
जीत्या चार कषाय जी ॥ पाच इडिय गणी वश करी राखे, निरव
द्य वाणी न्याय जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजिनधर्मने खूब दीपावे,
मिथ्या खमनहार जी ॥ वादी जनसू हार न पावे, बुद्धि प्रबल न
य सार जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ शूरा मन वचन कायाना, ऊलके नहिं
लवलेष जी ॥ नव्य जीव तारनके कारण, साचो वे उपदेस जी
॥ आ० ॥ ५ ॥ क्लेश होवे जो चार तीरथमें, वेवे आप मिटाय
जी ॥ सतोशे अमृतवाणीछं, दिन दिन पुष्प सवाय जी ॥ आ०
॥ ६ ॥ शम दम उपशम तप जप राता, भ्याता निर्मल ध्यानजी ॥
नाता ताता तोड दिया सब, करताता जिनगुणगान जी ॥ आ० ॥
॥ ७ ॥ पंच आचार जे पाले पलावे, टाळे टलावे दोष जी ॥ पर
उपगारी जाऊ सरीखा, नाणे राग ने रोष जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ ति
लोकरिख कहे उत्तिस गुण गणी, गुण गावो नरनार जी ॥ अष्टज
कर्मका बंधन बूटे, थावे सफल जमार जी ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ उवजाय स्तवन प्रारंभ ॥

॥ सुणो चदाजी, सीमधर परमात्म पासें जाजो ॥ ए देशी ॥
सुणो नवियण जी, चउथे पद उवजाय नमो सुख कारणा ॥ शुद्ध

अक्षा जी, बोध देइने मिथ्या जर्म निवारण ॥ ए आंकणी ॥
 जे अग इग्यारका धारक ठे, चउदा पूरव सुविचारक ठे, छुट पा
 ठ अर्थ उच्चारक ठे ॥ सु० ॥ १ ॥ जे सातुइ नयका जाणक ठे, नि
 श्चय व्यवहार वखाणक ठे, जे छुट अछुट पहिचाणक ठे ॥ सु०
 ॥ २ ॥ जे नीति वात बतावे ठे, सब मिथ्या जर्म उढावे ठे, नि
 न्न निन्न करके समजावे ठे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे ज्ञान ग्रहणने आ
 वे ठे, छुट पात्र देखिने पढावे ठे, अज्ञानपण तस ढावे ठे ॥ सु० ॥
 ॥ ४ ॥ जे उपशम रसना सागर ठे, तप सजम गुण रतनागर ठे,
 उत्पात माहाबुद्धि नागर ठे ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे चर्चा करवा आवे
 ठे, सत्य न्याय बताई हरावे ठे, फिट्टा दुइ करके जावे ठे ॥ सु०
 ॥ ६ ॥ जिन नहिं पण जे जिन जेवा ठे, वाणी सत्य निरवद्य
 मेवा ठे, हितकारी जेहनी सेवा ठे ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख
 कहे जे गुण गावे ठे, ज्ञानावरणीने खपावे ठे, अनुक्रमे मुक्ति
 सिधावे ठे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम साधु स्तवन प्रारभः ॥

॥ निर्मल छुट समकित जिनपाई, जिणरे कमी रहे नही काई ॥
 ए वेशी ॥ वदो साधु सदा सुणो ज्ञाता, जिणसु नवजन्ममें सुख
 शाता ॥ ए आंकणी ॥ ए ससार असार जानिके, लीनो सजम
 नारो ॥ तप जपकी खप करता बिचरे, निरवद्य वेण उच्चारो ॥
 ॥ वं० ॥ १ ॥ एक बिचारे एक निवारे, दो पाले दो टाले ॥ ती
 नहु अराधे तीनके साथे, त्रिहुं गाले चिहुं ढाले ॥ व० ॥ २ ॥
 चार करे नही चार धरे चित्त, पंच पाले पंच लोहे ॥ ठ प्रतिपा
 लन ठ प्रतिपाले, ठ में तीनके मोहे ॥ व० ॥ ३ ॥ ठ जाणो अरु
 ठके त्यागे, सात बिछुडि लावे ॥ सात सातके दूर निवारे, तजे
 आठ आठ चावे ॥ व० ॥ ४ ॥ ॥ पाले नव टाले नव जाणो,

दमण करे दश सेवे ॥ दशसो दशसो बोले नहि मुखसैं, दश बा
 रासो कहेवे ॥ व० ॥ ५ ॥ इत्या करण करावण कामी, फूट कहे
 जे जाणी ॥ अदत्त हेरे परको हित आणी, परधि प्रेमज ठाणी ॥
 वं० ॥ ६ ॥ धन अखूट अधर्मसा ध्यानी, महामानी निर्मानी ॥
 मांस जखे नित्य मांस जखे नही, मद्यथी तृपति आणी ॥ ब०
 ॥ ७ ॥ हय गय रथ पायक तज दीना, लीनासो सद्गु पासैं ॥
 मात पिता नारी सुत त्यागी, अनुरागी नित्य जासे ॥ व० ॥ ८ ॥
 पर ड ख देखी शाता चावे, इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोक रिख
 अनुनवरस शैली, समज कही सुविचारी ॥ व० ॥ ९ ॥ सुगुणा
 समजी शीश नमावे, निगुणाने मन हांसी ॥ एसा मुनिवर जो
 कोइ सेवे, सो होइ शिववासी ॥ व० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ एम पंच नाम, नवकार जगमें, सार इण सम,को
 नही ॥ जे समरे जावें, सुख पावे, विघन सब, नासे सही ॥ ॐ
 एीर्णे सैंतिस, विजय दशमी, तिलोक रिख, स्तवना करी ॥ नव नव
 सरण, होजो मुजने, अधिक दिन दिन हिरी सिरी ॥ प्रष्टु अधि० ॥
 ॥ १ ॥ इति पंच परमेष्ठिस्तवनानि संपूर्णानि ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ साधु स्तवनकी इतररी गाथासू नवमी गाथासूधीको
 कठिणार्थ होवार्थी ते कहे ठे

(एकविचारे के०) एकतत्त्व विचारे (एकनिचारे के०) एकदोष
 निचारे (दोसयमपाले के०) तप अने सजम पाले (दोटाळे के०) राग
 अने द्वेषने टाले (तीनकेआराधे के०) ज्ञान दरिसण चारित्र ए अण
 ने आराधे (तीनकेसाधे के०) मन वचनकायाको साधे (त्रिदुंगाले
 के०) तिन गर्व गाले (चिदु ढाले के०) चारकपाय गिरावे ॥ ५ ॥
 (चारकरेनहि के०) चार विकथा न करे (चारधरेचित के०)
 चार सरणा प्रत्ये चित्तमेधारे (पंचपाले के०) पंचमहाव्रत पाले ॥

(पचलोढे के०) पचेंडीयने पीले (ठप्रतिपालन के०) ठव्रत
 पालक मुनिराज ते (ठ प्रतिपाले के०) ठ कायनी द्यापाले
 (ठमेंतीनकुमोढे के०) ठ छेइयामेंसू तीन अधर्मलेइयाने वरजे,
 ॥ ३ ॥ (ठजाणे के०) षट्छव्य जेव जाणे (अरुठकेत्यागे के०)
 वली ठ अव्रत त्यागे (सातविद्युदिलावे के०) सात पिमेशणा
 विद्युद अहार लावे (सातसातके दूरनिवार के०) सात जय सात
 व्यसन वेगलां करे (तजेआठ के०) आठ मव ठोढे (आठचावे के०)
 आठप्रवचन पांचसमिति तिन गुप्ति, ए आठकी वठना करे ॥ ४ ॥
 (पालेनव के०) नववाड ब्रह्मचर्य पाले (टाले नव के०) नवनि
 याणां टाले (जाणे के०) नवतत्त्व जाणे (दमन करे दश के०) पांच
 इडियो, चार कपाय, एक मन ए दशने दमे (दशसेवे के०) दश
 प्रकारें अमण धर्म सेवे (दशसोदशसोबोले नहि मुखसैं के०) दश
 प्रकारें असत्य दश प्रकारें मित्र, ए जाषा न बोले (दशवार सोकहेवे
 के०) दश प्रकारें सत्य, वार प्रकारी व्यवहारी जाषा बोले ॥ ५ ॥
 (हत्याकरण के०) आठकर्मरूप शत्रुने घात करे (करावण कामीके०)
 कर्मरूपी शत्रुको नाश करावण कामी (फूट कहे जे जाणी के०) जे
 पदार्थने मृषा जाणे तेने फूटो कहे (अदत्तहेरे परकोहित आणी
 के०) अपराया जीव अदत्त ग्रहण करे ते ठोढावे तथा पुजल चोरी ते
 ईम ग्रहे (परधी प्रेमज ठाणी के०) श्रीजिन वाणी रूप धी जेबुदि
 तेथी प्रेम आणे ॥ ६ ॥ (धन अखूट के०) तप जप रूप धन जमारयुक्त
 ठे (अधर्मासाध्यानी के०) अधर्मास्तिनो गुणथिर ठे तेम तेस्थिर ध्या
 नना करण हार ठे (माहामानी के०) श्रीजिननी आज्ञा माने ठे
 (निर्माणी के०) अद्वकार रहित ठे (मासजखे नित्य के०) मास तप
 करी शरीरको मांस निरंतर सोसे (मांसजखे नहि के०) मांसझुगठ
 निक तथा वार मास जखे नही (मद्यथी के०) आठ मद्ययकी (तृप्ति
 आणी के०) इष्टा नहि ॥ ७ ॥ (ह्य गय रथपायकतजदीना के०)

लौकिक हाथी, घोड़ा, रथ, पायक, ए चार दल गोक्यां ठे जेणें एवा (लीनासोसद्रुपासैं के०) लोकोत्तर चार ते मनरूप घोड़ो धीरज रूप हाथी, शीलरूप रथ, जावरूप पेदलत सदा राखे ठे. (मातपिता नारी सुत त्यागी के०) सांसारिक मात पिता नारी पुत्र तेनो त्याग कीधो ठे जेणे एवा (अनुराग नित्यजासे के०) अनुरागी ते दया रूप माता, ज्ञान रूप पिता, सुमति रूप नारी, सुबुद्धि रूप पुत्र तेथी राग राखे ॥७॥ (परडु ख देइ शाता चावे के०) कर्मवर्गणा कर्मचेतना डु ख देवे अने जीव चेतनाके शाता वढे, इत्यादिक गुणनाधारक ठे (तिलोकरिख अनुभव रसशैलि के०) त्रिलोकरिख नामा कवि कहे ठे, के अनुनवरस अतरहानकी शैली जे विवेकता तेनी (समण कही सुविचारी के०) समझि बोधदृष्टिकरिने कही विचारी ठे ॥८॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ श्रीअरिदंत गुण गावो रे नविका, चोवीश जिन गुण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ए आकणी ॥ रिपज अजित सज व अजिनदन, सुमति पवम प्रभु थावो रे ॥ श्री सुपार्श्व षड प्रभु समरो, नित नित शीश नमावो रे ॥ श्री अ० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल चित गावो रे ॥ अनंत धर्म श्रीशाति जिनेसर, शांतिकरण जग गावो रे ॥ श्री अ० ॥ २ ॥ कुष्ठु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, सुव्रत करण ठमावो रे ॥ नमी नेम पारस माहावीर जी, सासणपति जिम गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ३ ॥ ए चोवीश जिन सज्जम धारी, दियो करमके गावो रे ॥ केवल लेईने तीरथ थाप्या, जवजल तारण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ४ ॥ होय अलोगी मुक्ति सिधाया, फिर न रह्यो इहा गावो रे ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सकल जगतका गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ५ ॥ नाम लिया सब धियन विनासे, न रहे डु खको दावो रे ॥ ५

शत्रु सो मित्री सम वरते, जो सुमरन मन ब्यावो रे ॥ श्री अ० ॥ ६ ॥
 संवत् उगणीश आहतीस शालें, विजयदशमी दिन ठावो रे ॥ दिन
 दिन विजय दोय प्रभु नामें, नव नवमें सुख पावो रे ॥ श्री अ० ॥
 ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु तुम सरणो, नव नवमें सुख थावो रे ॥
 शिवसपत अरु द्यो तुम दरिसेण, नित नित मंगल बधावो रे ॥ ७ ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ नजो रे नविक
 जिन चोवीश विख्याता, तजो रे आलस गुणिजन गुण गाता ॥
 ॥ न० ॥ १ ॥ रिषज अलित संजव जगताता, अजिनदनजी आ
 णवके दाता ॥ न० ॥ २ ॥ सुमति पदम पदम रग राता, सुपा
 र्वचदा प्रभु सबहु सुहाता ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस
 जो प्राता, वासुपूज्य तोड्या हे जगनाता ॥ न० ॥ ४ ॥ विमल
 अनत धर्मधन माता, शांति जिनव करी हे सुखशाता ॥ न० ॥ ५ ॥
 कुशु अर मल्लि मलयाता, मुनिमुव्रत व्रतमें रग राता ॥ न० ॥ ६ ॥
 नमि नेमी पारस चित नाता, महावीर रह्या पाप पलाता ॥ न०
 ॥ ७ ॥ विद्वरमान गुणधर गुरु ज्ञाता, साधि सकल बधु सति माता
 ॥ न० ॥ ८ ॥ इनके चरण सरण चित चाता, तिलोकरिख ताकुं
 शीश नमाता ॥ न० ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ अथ रूपज जिन स्तवन ॥

॥ जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ ए देशी ॥ जे जिणव
 जे जिणव जे जिणव देवा, वठि प्रजात समर नाथ, श्रीरूपज देवा
 ॥ ए टेक ॥ पिता तेरे नाजिराजा, जननी हे मरुदेवा ॥ देही क
 चन वृपज लठन, तेजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ १ ॥ छुगला
 धर्म निवार कियो प्रभु, ठे कुलगरकी ठेवा ॥ सजम लीधो श्री
 जिन जावें, कर्म अरिने हणोवा ॥ जे० ॥ २ ॥ केवल छे प्रभु देशना

दीधी, वाणी जुं अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी, न
वज्र पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सदस्र मुनि सगें अष्टापद,
चढीया अणसण लेवा ॥ ठ दिन संथारे मुक्त बिराज्या, सुखि
अनंत नितमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे में तुम चाकर,
बु चरणारज खेवा ॥ जिम तिम करि नव पार कतारो, दिजो
अविचल सेवा ॥ जे० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीछु ॥

॥ श्रीगौतम स्वामीमें गुण घणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरजी, नयनजण जगनाण ॥ गोत्रतीर्थकर
बाधिने, उपना सर्वार्थ सिद्धविमाण जी ॥ अषाढ विदि चोथ तिथि
जाण जी, थयो प्रभुको चवण कल्याण जी, नानि नामें नृपति
कुज आणजी, माता मरुदेवीजी वरवाणजी ॥ श्रीरूपन जिणद
जीसु वदणा ॥ ए टेक ॥ चैत्रि विदि तिथि अष्टमीजी, शुनवेला
शुन चार ॥ जनम थयो जगदीशको, ठपनकुमारी आइ तिणवार
जी, जन्मकारज कियो सुविचार जी, आया इइ हरपें अपार जी,
कियो मोहव मेरुमजार जी, सगें गया साधि व्यवहारजी ॥
श्री० ॥ १ ॥ वृषन स्वपनलंछनथकी जी, रिपन कुमर दीयो
नाम ॥ पंचसें धनुष उचापणे प्रभु, तन कचन अजिरामजी, वि
श लख पुरव कुवर पदगाम जी, राज कीयो त्रेशठ लख स्वाम
जी, जुगलधर्म निवाहो तमाम जी, वसार्या नगर पुर गाम जी ॥
श्री० ॥ २ ॥ कला बद्धुत्तर पुरपनी जी, चोशठकला बली नार ॥
वरन चार थापन किया प्रभु, सीखायो रुजगार जी, चैत्रवदि
नौमी तिथि सारजी, ठठतपस्या लिवि धारजी, चार सदस्र पुरुष
परिवार जी, लीनो प्रभु सजम नार जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बरस दिव
सने पारणे जी, लिपो इकुरस आहारजी ॥ ठममस्थपणे परिसा
सह्या प्रभु, सवह्वर एक हजार जी, फागुण वदी ग्यारस जहार जी,

घनघातिक दृष्ट्यां कर्म चार जी, यथा प्रभु केवल धारजी, उपदेश दीयो
 हितकार जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चार तीरथ प्रभुषापीया जी, ताखां बहु
 नर नार ॥ अष्टापद अणसण कखां, सार्थे दश सहस्र अणगार
 जी, ठ दिनको आयो सथारजी, माघकृष्ण तेरस जगधार जी, प्रभु
 पट्टता मुक्ति मजार जी, पाट असखें वरी शिवनार जी ॥ श्री०
 ॥ ५ ॥ गजहोदे मातेश्वरी जी, पामी मोक्ष डुवार ॥ नरत आरिसा
 नवनमें, लहि केवल कमला सारजी, सो पुत्र दो पुत्री विचारजी,
 सद्गु शालि रूख परिवारजी, तिलोक रिख कहे वारोवार जी, मा
 हारी वीनतडी अवधार जी, प्रभु करो मुक्त नवोदधि पारजी ॥
 श्रीरिषजजी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीछं ॥

॥ श्री वीरजिणंद सासण धणी, जिन त्रिभु
 वनसामी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमु आदिजिणंद, युग्मचरणांबुज सरणो ॥ मनमधुकर मोही
 रह्यो, गुणवास आचरणो ॥ पूरवजर्वे नए पाच, पूर्वचक्रीपद त्याग
 क्रीना ॥ गोत्रतीर्थकर बांध, चवी सर्वार्थ सिद्धलीना ॥ अपाढवि
 दितिधि चोथमें ए, आधिरेण मजार ॥ चवणकल्याण प्रभुजीतणु,
 नांखुं सूत्र मजार ॥ नां० ॥ १ ॥ नाजिरायकुलनद, मात मरुदेवी
 जाणी ॥ तिणकूखें अवतार लियो, अक्षरयणी ठानी ॥ कृष्ण अ
 ष्टमी चैत्र, मास छनवेलामाई ॥ जनम्यारिपज जिणंद, ठपन कु
 मारी आई ॥ जनमकारज तिणो सद्गुकियो ए, आसण चव्यो ति
 णवार ॥ शक्रइ चल आईया, आणी हरष अपार ॥ श० ॥ २ ॥
 मूकी निडा मातवैक्रिये, निजरूपज धरिया ॥ पच रूप करी इइ प्रभु,
 लेई प्रभु परवरीया ॥ गिरिसुवरसण जाइ, इइ कखो मोष्ठव हरपें ॥
 प्रभुको रूप अनूप, नेत्र अनिमेपित निरखे ॥ प्रभुके मेढ्या फिर

मातपै, रचि वनिता पुरसाज ॥ ६६ गया निजस्थानकें, करि मोहव
 सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चण्डे सपनामें प्रथम, वृषजवर ठज्ज
 ल दीतो ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीतो ॥ तिण
 कारण करि नाम, दियो प्रजु रिपन कुमार ॥ कवन बरण शरीर, वृ
 षन लठन पग धार ॥ पाचगें धनुष उचापणो, देह मान जिन
 राज ॥ वीश लाख कुवर पदें, रह्या श्री गरिव निवाज ॥ क० ॥ ४ ॥
 पूर्व त्रेशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लखतगिण
 तादिक बहोतेर, कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोस
 व, शिष्य कर्म सब विध स्थापी ॥ जरतादिक सो नंद, राजश्री स
 दुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ ४
 ८ तप धारी निकल्या, लीनो संजम नार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी
 कर लोच, पंच महाव्रत ठच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली छ
 ६ मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें दस कुंवर, इंदुरस बहोराया ॥
 सहस्र वरस ठच्चस्थ, करणी करी मन बच काया ॥ चड जेमसी
 तल कहा ए, सागर जेम गनीर ॥ अधिक तेज रवि किरणची,
 मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, वि
 चख्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर वाहिर, अष्टम तप करकें
 आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष बढ हेठे विराज्या ॥ ध्यायो छ
 क्कज ध्यान, पाय तिजें छुन साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए, प्रा
 त समयमें ज्ञान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान
 ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥
 दीनो तब उपदेश, चतुर्विध तीरथ गाने ॥ रिपन सेणादिक जाण,
 चोराशी गणधर नारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अ
 धिकारी ॥ ब्राह्मी सुदरी धन साधवी ए, सब सतियां शिरवार ॥
 तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आझाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चा
 र सहस्र साढी सातगें चण्डे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

ज, सहस्र नव सोदत नारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार ठ, रें विश सह
 स्र कहीजें ॥ मन परजव वारे सहस्र, बरें पचास लहीजें ॥ केवल
 नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वदू नित जावद्यु,
 पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ए ॥ चर्चावादी सहस्र, वारे साढी
 ठसें कहीयें ॥ नवर्षे बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥
 साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर बहु गुण
 धार, मुनि निज आत्म साजी ॥ ते प्रणमुं सद्गु जावद्युं ए, जिनवर आ
 ङ्गाधार ॥ सार्थे रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ के० ॥ १० ॥
 वाराव्रतका धार, सिधसदिक आवक नारी ॥ पाच सहस्र तिन
 लक्ष, सवे श्कविशगुणधारी ॥ सुजडादिक पच लाख, आविका
 चोपन हजारी ॥ श्रीजिन आङ्गामांदि, कही गुणवती नारी ॥ क
 री करणी छुद जावद्युं ए, पाई अमर विमाण ॥ ए सख्या तीरथ
 तणी, आगममांदि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लाख पूरव
 सर्वे, सजम केवलपद पाली ॥ नव्य जीव उपदेश, दियो कुगति
 मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ, अष्टापद चढीया जाइ ॥ पव्य
 क आसण करि ध्यान, अणसण ठ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण ते
 वंश तिथि ए, प्रभु पद्गुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो,
 जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असख, पाट
 केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रजुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥
 श्रीनरतेश्वर छुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुबल प्रचुनंद,
 सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणव
 त ॥ प्रणमुं आदि जिनेंझी, जय नजण नगवत ॥ न० ॥ १३ ॥
 पटदरिसण सिद्ध आदि, जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोढ, होढ
 कोन करे चरणारी ॥ अरि करी नय झख दूर, होय जिण समरण
 करता ॥ प्रभुगुण अनत अपार, पार नहि आवे उच्चरतां ॥ सुगु
 रु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रजु गुण विस्तार ॥ कोडाकोढ साग

मातपैं,रवि वनिता पुरसाज ॥ इइ गया निजस्थानकें, करि मोहव
 सब साज ॥ क० ॥ १ ॥ चउवै सपनामें प्रथम, वृषजवर उज्ज्व
 ल दीगो ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीगो ॥ तिष्ठ
 कारण करि नाम,दियो प्रजु रिपज कुमार ॥ कचन बरण शरीर, वृ
 षज लठन पग धार ॥ पाचवैं धनुष उचापणो, देह मान जिन
 राज ॥ बीस लाख कुंवर पदैं, रह्या श्री गरिव निवाज ॥ क० ॥ ४ ॥
 पूर्व त्रेशठ लाख राज, छगल धर्म दूरो कीनो ॥ लाखतगिण
 तादिक बहोतेर,कला तत्त बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोस
 ठ, शिष्य कर्म सब विध स्थापी ॥ जरतादिक सो नंद, राजश्री स
 दुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ ७
 तप धारी निकल्या, लीनो सजम नार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी
 कर लोच, पच महाव्रत उच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली छ
 ६ मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें दंस कुंवर, इंदुरस बहोराया ॥
 सहस्र वरस ठगस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चइ जेमशी
 तल कहा ए, सागर जेम गजीर ॥ अधिक तेज रवि किरणशी,
 मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, वि
 चख्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करकें
 आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृद्ध बड देठे विराज्या ॥ ध्यायो छ
 क्कज ध्यान,पाय तिजें छज साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए,प्रा
 त समयमें जान ॥ आदिजिनेश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान
 ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥
 दीनो तव उपदेश, चतुर्विध तीरथ गने ॥ रिपज सेणादिक जाण,
 चोराशी गणधर नारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अ
 धिकारी ॥ ब्राह्मी सुदरी धन साधवी ए, सब सतियां शिरधार ॥
 तीन लक्ष थई सादुणी, श्रीजिन आहाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चा
 र सहस्र साढी सातगें चउवै पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

ज,सहस्र नव सोदत जारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार ठ, रों विश सह
 स्र कहीजें ॥ मन परजव वारे सहस्र, ठरें पचास लहीजें ॥ केवल
 नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वढू नित जावञ्च,
 पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ९ ॥ चर्चावादी सहस्र, वारे साडी
 ठसें कहीयें ॥ नवत्रें बाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥
 साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर वढु गुण
 धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमुं सद्गु जावञ्च ए, जिनवर आ
 ङ्गाधार ॥ सार्थे रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ के० ॥ १० ॥
 वाराव्रतका धार, सिखसदिक श्रावक जारी ॥ पांच सहस्र तिन
 लक्ष, सवे इकविशगुणधारी ॥ सुजडादिक पंच लाख, श्राविका
 चोपन दजारी ॥ श्रीजिन आङ्गामांदि, कही गुणवती नारी ॥ क
 री करणी शुद्ध जावञ्च ए, पाई अमर विमाण ॥ ए सरख्या तीरथ
 तणी, आगममांदि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लाख पूरव
 सर्व, संजम केवलपद पाली ॥ नव्य जीव उपवेश, दियो कुगति
 मत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ, अष्टापद चढीया जाइ ॥ पत्य
 क आसण करि ध्यान, अणसण ठ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण ते
 पश तिथि ए, प्रभु पढुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो,
 जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असख, पाट
 केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रजुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधायी ॥
 श्रीनरतेश्वर छवन, अरिसे केवल लीधो ॥ बाहुवल प्रछनद,
 सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणव
 त ॥ प्रणमु आदि जिनेंज्जी, जय जजण जगवत ॥ ज० ॥ १३ ॥
 पटदरिसण सिद्ध आदि, जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोढ, होढ
 कोन करे चरणारी ॥ अरि करी जय छ ख दूर, होय जिण समरण
 करता ॥ प्रभुगुण अनत अपार, पार नहि आवे चञ्चरतां ॥ सुगु
 रु शारदा स्वयमुखे ए, करे प्रजु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड साग

मातपै,रचि वनिता पुरसाज ॥ ३५ गया निजस्थानकें, करि मोहव
 सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनामें प्रथम, वृषजवर उज्ज्व
 ल दीगो ॥ तेहनो फल एह पुत्र, महासुखकारक मीगो ॥ तिण
 कारण करि नाम,दियो प्रनु रिपन कुमार ॥ कचन बरण शरीर, वृ
 षज लखन पग धार ॥ पांचशें धनुष उचापणो, देह मान जिन
 राज ॥ बीस लाख कुंवर पदें, रह्या श्री गरिव निवाज ॥ क० ॥ ४ ॥
 पूर्व त्रेशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लखतगिण
 तादिक बहोतेर,कला तस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चोस
 ठ, शिल्प कर्म सब विध स्थापी ॥ नरतादिक सो नद, राजश्री स
 दुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ ४
 ठ तप धारी निकल्या, लीनो सजम नार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी
 कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरियां ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली छ
 ६ मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें हंस कुंवर, इंदुरस बहोराया ॥
 सहस्र वरस ठगस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चउ जेमशी
 तल कहा ए, सागर जेम गजीर ॥ अधिक तेज रवि किरणशी,
 मेरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, वि
 चक्षा श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करकें
 आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष बढ देठे विराज्या ॥ ध्यायो छ
 क्कज ध्यान,पाय तिजें छन साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए,प्रा
 त समयमें जान ॥ आदिजिनैश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान
 ॥ के० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूप, जाण्यो जिनवर जिन ज्ञाने ॥
 दीनो तव उपदेश, चतुर्विध तीरथ गने ॥ रिपन सेणादिक जाण,
 चोराशी गणधर नारी ॥ चोराशी सहस्र मुनिराज, मांहे दीपे अ
 धिकारी ॥ ब्राह्मी सुवरी धन साधवी ए, सब सतियां शिरदार ॥
 तीन लक्ष थई सादुणी, श्रीजिन आझाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चा
 र सहस्र साही सातगें चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिरा

જ, સદસ્ય નવ સોદત જારી ॥ વૈક્રિય લલ્લિકા ધાર ઠ, ગેં
 સ્ત્ર કહીજે ॥ મન પરજવ વારે સદસ્ય, ઢર્શે પચાસ જરીજે ।
 નાણી મુનિવરુ એ, વીશ સદસ્ય પરિમાણ ॥ તે વડ
 પાયા પદ નિર્વાણ ॥ પાઠ ॥ એ ॥ ચર્ચાવાદી નરુ
 ઢર્સે કહીયે ॥ નવગેં વાવિશ હજાર, અનુત્તર
 સાધવી ચાલિશ સદસ્ય, કેવલ લે મુગતિ વિગર્ન ।
 ધાર, મુનિ નિજ આતમ સાજી ॥ તે પ્રણમુ મદુ
 હાધાર ॥ સાર્યે રહ્યા જિનરાજને, કરતા ય્ય
 વારાવ્રતકા ધાર, મિલસદિક આવક જારી ।
 જદ્, સવે શ્કવિશગુણધારી ॥ મુનિજા
 ચોપન હજારી ॥ શ્રીજિન આજ્ઞામાદિ
 રી કરણી શુદ્ધ જાવશું એ, પાર્શ્વ અમર
 તણી, આગમમાંહિ પ્રમાણ ॥ આ
 સર્વ, સજમ કેવલપદ પાત્રી ॥ ત
 મત ટાલી ॥ દશ સદસ્ય મુનિ મા
 ક આસણ કરિ ધ્યાન અગમ
 શ્વેતિથિ એ, પ્રચુ પદ્મતા નિવ
 ચિત્તજામર પગિમાણ ॥

૨
 તે
 પ્રચુ
 નવ
 ૩ સા
 તિ ઠ
 નરાયો
 ત્વા ॥
 ॥૬૫॥

ર લગે, તોહિ ન આવેજી પાર ॥તોળા ॥૧૪॥ મુઝમતિ ઢે અતિ હી
 ન, ગુણોદધિપાર ન આવે ॥ મન સમજાવા કાજ, કહ્યા ગુણ સં
 મિત જાવે ॥ ચંદનવૃક્ષ જુજંગ, જીવસગ કર્મજ લાગે ॥ જિનવર
 જપ ઢે ગરુડ, કરમ અહિ દૂરા જાગે ॥ શ્રી પરમેશ્વર એહવા એ,
 જો સમરે છુદ્ જાવ ॥ નીમ નવોદધિ તારવા, પરતલ જિન જય
 નાવ ॥ તળ ॥૧૫॥ સવત ઝંગળીશૈત્રીશ, માસ આપાઢ ઝજારી ॥
 તિથિ તેરશ નોમવાર, સદેરમદશોર મજારી ॥ અધમઝદારણ બિરુ
 દ, સુણી પ્રજુસરણો લીનો ॥ જન્મ મરણ રોગ સોગ, દુઃખ સસાર
 સુંધિહીનો ॥ તિલોકરિલ કર જોડિને, અરજ કરે શિર નામ ॥
 હવે તારો પ્રજુ મુજ નળી, આપો અવિચલ લામ ॥ આળ ॥ ૧૫ ॥

॥ અથ ચતુર્વિંશતિ જિન સ્તવન પ્રારબ્ધ ॥

॥ કેરવાની વેશી ॥ જે જે રહો પ્રહુ તાહરી, મારી વદણાં લી
 જો સ્વીકાર નલાં જી ॥ મારીળ ॥૧॥ રિલજ અજિત સજવ અનિ
 નવન, અધમ ઝદારણહાર ॥ જળ ॥ અળ ॥ જેળ ॥ ૧ ॥ સુમતિ
 પદમ સુપાસ ચદા પ્રહુ, અષ્ટ કર્મ કિયા ઠાર ॥ જળ ॥ અળ ॥ જેળ
 ॥ ૨ ॥ સુવિધિ શીતલ શ્રેયાંસ વાસુપૂજ્ય, જગનાયક જયકાર ॥
 જળ ॥ જળ ॥ જેળ ॥ ૪ ॥ વિમલ અનત શ્રીધર્મ શાંતીશ્વર, શાં
 તિ કરિ ઢે સસાર ॥ જળ ॥ શાળ ॥ જેળ ॥ ૫ ॥ કૃષ્ણ અર મહિ સુનિસુ
 વ્રત, કરુણાનિધી કિરતાર ॥ જળ ॥ કળ ॥ જેળ ॥ ૬ ॥ નમી ને
 મ પારસ માહાવીરજી, સાસણકા સિરદાર ॥ જળ ॥ સાળ ॥ જેળ
 ॥ ૭ ॥ કર્મ સ્વપાઈ કેવલ પાયા, શુક્લધ્યાન મજાર ॥ જળ ॥ શુળ
 ॥ જેળ ॥ ૮ ॥ એ ચોવીશ જિનવર જગરાયા, ત્યાગ દિયો ઢે સસા
 ર ॥ જળ ॥ ત્યાળ ॥ જેળ ॥ ૯ ॥ સંજમ કરણી નવજલ તરણી,
 કરિ અતિ દુઃકરકાર ॥ જળ ॥ કળ ॥ જેળ ॥ ૧૦ ॥ નવિજનને ઝપ
 વેશ સુણાયો, વાળી જ્યો અમૃતધાર ॥ જળ ॥ વાળ ॥ જેળ ॥ ૧૧ ॥

सूत्र चारित्र धर्म प्ररूप्यो, थाप्यां तीरथ चार ॥ न० ॥ था० ॥ जे०
॥ ११ ॥ होय अजोगी मुगति सिधाया, अजर अमर अविकार ॥ न०
॥ अ० ॥ जे० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो न
वजल पार ॥ नलांजी प्रभु तारो ॥ न० ॥ ता० ॥ जे० ॥ १४ ॥ इति ॥ १ ॥
॥ पद बीछु ॥

॥ सुण सुण रे सयण सयाणां ॥ ए देशी ॥ रिपज अजित स
नव सुखकारी, अजिनदनकी वजिहारी ॥ सुमति पदम प्रभु जग रा
या, जाये आतु कर्मकू घाया ॥ १ ॥ सुपारस चदा प्रभु देवा, चा
हु नव नवमें तुम सेवा ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपू
ज्य जगतप्रतिपाला ॥ २ ॥ विमल अनत धर्म धन दाता, शांति
नाथजी करो सुखशाता ॥ कुशु अर मछिजी महाराया, प्रभु
आठ करम रिपु घाया ॥ ३ ॥ विशमा श्रीमुनिसुव्रत वदू, नव नव
हु ख दूर निकदू ॥ नमी नेम पारस जसवता, महावीर प्रभु सा
सण कता ॥ ४ ॥ प्रभु थाप्या हे तीरथ चारी, प्रभु परमपति उ
पगारी ॥ प्रभु तुम बिन अति हु ख पायो, चारुगतिमें गजरायो
॥ ५ ॥ अब जाण्या में साहिव साचा, सब देव जाण्या अन्य काचा ॥
इम जाणी तुम सरणमें आयो, तिलोक वदे मन वच कायो ॥ ६ ॥

॥ पद बीछु ॥

॥ मछिनाथ मोह्यो रे, खटराजिद केरो ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं नि
त पाया, तारो तारो जिनराया रे ॥ प्र० ॥ रिखज अजित सनव
अजिनदन, नविजनने सुखदाया रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम
सुपार्थ चदा प्रभु, आठ कर्म रिपु घाया जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि
शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, राग द्वेषकू दहाया जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ वि
मल अनत धर्मनाथ शांति जी, मरकी रोग उपशमाया जी ॥ प्र०
॥ ४ ॥ कुशु अर मछि मुनिसुव्रत जी, चोतिस अतिशो विपाया
जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेम पारस महावीर जी, सासणपति म

न जाया जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोवीश जिन कर्म निवारी, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चार तीरथकी किनी पापना, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे नित नित प्रभुकू, वदू मन वच काया जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ मेरी मेरी करता जनम गयो रे ॥ एवेशी ॥ जय जय जिनदा जय जय जिनदा, टाले चउगति नव नव फदा ॥ ज० ॥ १ ॥ रिपन अजित सनव सुखकारी, अजिनदण चरणन बलिहारी ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपारस सामी, चदा प्रभु धन अतरजामी ॥ ज० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य प्रणमु किरपाला ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनत धरम धनदाता, शातिजिनद करि हे सुखशाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मझि गुणवता, श्रीमुनि सुव्रत शिवपुर कता ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस मन जाया, महावीरपति शासनराया ॥ ज० ॥ ७ ॥ ए चोविश जिन जग ठटकाई, लियो सजम तन मन बलसाई ॥ ज० ॥ ८ ॥ जप तप किरिया करि अति जारी, कर्मशत्रु सब दया निवारी ॥ ज० ॥ ९ ॥ केवलज्ञान प्रगव्यो जिण वारी, दइ उपदेशना नवि हितकारी ॥ ज० ॥ १० ॥ मन वचन तन जोग निवारी, शिवगढ राज लियो तिण वारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ तिलोकरिख कहे सरणो तुमारो, जिम तिम करि नव पार कतारो ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमु ॥

॥ शांति चरणारी जाव बलिहारी ॥ एवेशी ॥ जेजो बदणा स्वामि हमारी, तुमारे चरण बलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिपन अजित सनव अजिनदन, सुमति पदम सुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चदा प्रभु समरो, जगनायक जसधारी ॥ प्रभुजी पूर्ण कपगारी ॥ जे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनत धर्मधारी ॥ शांति ॥

जिनद सुखकद जगतमें, मेट दिनी सब मारी ॥ हरो मेरी विपत्त
 बिमारी ॥ जे० ॥ १ ॥ कुंशु अर मछि मुनिसुव्रतजी, नमी ने
 मी सुविचारी ॥ तोरणसें पाठा फिर आया, ढोडकें राजझुलारी ॥
 नाथ तुम करुणा नमारी ॥ जे० ॥ २ ॥ वे वारसके वारस पार
 स, पचपरमेष्ठी वच्चारी ॥ नाग नागणी जलत वचाया, किना
 सुर अवतारी ॥ महिमा जगमें अति थारी ॥ जे० ॥ ४ ॥ शास
 ननायक वीर जिनेश्वर, हृद हृमा प्रभु धारी ॥ केवल लई प्रभु
 धर्म बतायो, सूत्र चारितर सारी ॥ तीरथ थाप्यां प्रभु चारी ॥ जे०
 ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभु जोग त्याग कर, पट्टता दे मुगति म
 जारी ॥ अनत सुखामांही जाइ विराज्या तो, निरंजन निराकारी ॥
 रह्या लोकालोक निहारी ॥ जे० ॥ ६ ॥ मोह मायामांही उलज
 रह्यो में, पायो दुं ड ख अपारी ॥ तुम सरण विन चउगति नट
 क्यो, धर्मकी बुद्धि विस्तारी ॥ शीख सतगुरुकी न धारी ॥ जे० ॥ ७ ॥
 अछुन करम कबु दूर नयासु, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उ
 दारण विरुद सुणीने, सरणो लियो सुविचारी ॥ सार करजो प्रभु
 म्हारी ॥ जे० ॥ ८ ॥ मुऊ सरिखो नहि दीन जगतमें, तुम सरिखो
 दातारी ॥ जिम तिम करि नव पार कतारो, या मायु रिऊवारी ॥ अ
 रज लीजो अवधारी ॥ जे० ॥ ९ ॥ ऊणीईं अढतिस माघ कृष्ण
 पक्ष, तीज तिथि शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवल कोटि पेटमें, जो
 ड करी हितकारी ॥ तिलोकरिख कहे सुविचारी ॥ जे० ॥ १० ॥ ५ ॥

॥ पद ठहु ॥

॥ पणीयारीकी देशी ॥ जय जय आदि जिनेश्वरु ॥ माहाराया रे ॥
 नव नव ड ख निकद ॥ तार माहाराया रे ॥ अजित जीत करी
 कर्मसु ॥ मा० ॥ प्रभु नविजनके सुखकद ॥ ता० ॥ १ ॥ सजव
 स्वामी सुहामणा ॥ मा० ॥ करुणानिधि किरतार ॥ ता० ॥ अजि
 नदन हितकारीया ॥ मा० ॥ सुमति सुमति दातार ॥ ता० ॥ २ ॥

पद्म कदमको आसरो ॥ मा० ॥ सूपारस जसवत ॥ ता० ॥ चढ
 आनद सदा करो ॥ मा० ॥ शिवरमणीका कत ॥ ता० ॥ ३ ॥ सु
 विधिनाथ बुद्धि दीजीयें ॥ मा० ॥ शीतल दीन दयाल ॥ ता० ॥
 श्रीश्रेयांस कृपा करो ॥ मा० ॥ प्रभु वासुपूज्य कृपाल ॥ ता० ॥ ४ ॥
 विमल विमल मति दीजीयें ॥ मा० ॥ अनंत अनंत गुणधार ॥
 ता० ॥ धर्म धर्म दाता सदा ॥ मा० ॥ शांति शांति दातार ॥ ता०
 ॥ ५ ॥ कुंभुनाथ करुणानिधि ॥ मा० ॥ अरनाथजी जगन्नाथ ॥ ता० ॥
 मद्भिनाथ मनमोहियो ॥ मा० ॥ मुनिसुव्रत पद निरवाण ॥ ता०
 ॥ ६ ॥ नमुं नमी रिष्ट नेमजी ॥ मा० ॥ पशुकी सुणी हे पुकार
 ॥ ता० ॥ तोरणसु पाठा फिखा ॥ मा० ॥ जाए चढ्या गिरनार ॥
 ता० ॥ ७ ॥ नावारस वारस प्रभु ॥ मा० ॥ पारस जिन जयका
 र ॥ ता० ॥ माहावीर जगधीरजी ॥ मा० ॥ शासनका शिरदार
 ॥ त्त० ॥ ८ ॥ असरण शरण दयानिधि ॥ मा० ॥ तुम बिन नहिं
 को आधार ॥ ता० ॥ तिलोकरिख अरजी करे ॥ मा० ॥ तार ता
 र प्रभु तार ॥ तार माहाराया रे ॥ ए ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ देशी वणजारीकी ॥ जिन राया रे ॥ श्रीमरुदेवी नद, प्रणमु
 आदि जिणदजी ॥ जि० ॥ जि० ॥ अजित सजव हितकार,
 अजिनदन सुखकव जी ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ सुमतिपद्म सुपास,
 चढा प्रभु हितकारिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस,
 वासुपूज्य उपगारीया ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ विमल अनंत धर्म
 नाथ, शांति जिनद शाता करो ॥ जि० ॥ जि० ॥ कुंभु अर म
 छीनाथ, मुनिसुव्रत आरति हरो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नमी ने
 मी जिनराज, पारसनाथ करुणा घणी ॥ जि० ॥ जि० ॥ बर्द्धमा
 न सुखकार, जय जय जय सासणधणी ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ घन
 घातिक चठ कर्म, दूणी केवल पद पामिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ दी ~

नो धर्म उपदेश, चार तीरथ थापन कियां ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥
 थया निरजन निराकार, शिवरमणी प्रभुजी वरी ॥ जि० ॥ जि० ॥
 तिलोकरिख कहे एम, तारजो मोहि रुपा करी ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥
 ॥ पद आठमुं ॥

॥ तुं धन तुं धन तु धन तु धन, शांति जिनेसर सामी ॥ ए देशी ॥
 राग प्रजाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें जाव
 धरी ॥ प्रा० ॥ ध्रु० ॥ रिखन अजित सनव अजिनदन, सुमति कुमति
 सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदत हृष्या कर्म
 अरी ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयास वासुपूज्य, विमल विमल बु
 दि वेत खरी ॥ अनत धर्म श्रीशांति जिनेश्वर, हरियो रोग असा
 थ्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कृष्ण अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी
 शिवरमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो नव
 उंघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम
 निशें मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्ति
 श्री द्यो महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ पद नवमु ॥

॥ पारस जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन समरो रे जा
 इ, दिन दिन सपति पामो सवाइ ॥ नय सब जावे रे जागी, म
 हा झुशमन होवे अनुरागी ॥ श्री० ॥ १ ॥ रिखन जिनेश्वर रे पहे
 ला, अजित जिनव नमु अलवेला ॥ सनव स्वामी रे गावो, अजिनद
 नके चरण चित्त लावो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुमति पदम प्रभु रे वदो,
 सुपार्थ नाम सदा सुखकवो ॥ चदा प्रभु पुष्पदत रे सामी, शीत
 ल श्रेयास नमु शिर नामी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जगना रे ता
 ता, विमल अनत धर्म शिवदाता ॥ शांति कृष्ण अर मल्लि रे वेवा,
 मुनिसुव्रतजीनी करो नित्य सेवा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नमी नेमी पारस
 रे प्यारा, वर्धमान शासन शणगारा ॥ प्रभु तुम शिवपुर रे वसि

या, तुम दरिस्सण नामें निशिदिन तसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम
उद्धरण रे जाणी, चरण शरण इम हिंदेमें थाणी ॥ तिलोकरिख
वदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री०॥६॥ इति
॥ पद दशमुं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमु आदि जिनदने जी कांइ,
अजित नाथ महाराज ॥ सजवगुण सजव करोजी काइ, अजिनद
न जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया, एत वतावो सुगति महेलकी ॥
सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रज जगदीश ॥ श्रीसुपास
दा प्रभुकु, नित्य नमाठ शीत हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल
श्रेयास वासुपूज्य, विमल अनत धर्मनाथ ॥ शाति कुशु अर मछि
मुनिसुव्रत, वदू में जोढी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविंशमा न
मिनाथ निरुपम, बाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस,
दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्धमान सासनका
साहेव, हृष्यां घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पाय नेजी कांइ,
दास्यो श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उ
थापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी सुगति बिराज्या, अ
जर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरजन नवदुख
नजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल,
जिम तिम करो नवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमुं ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ रिखन अजित सजव सुखकार, अजिनदन प्रभु जग आधा
र ॥ सुमति पदम प्रभु तारण ऊहाज, प्रणमु श्रीचोवीशे जिनराज
॥ १ ॥ सुपारस चंद्रप्रज स्वाम, सुविधि शीतल जिन करू प्रणाम ॥
श्रेयास वासुपूज्य सारो काज ॥ प्र० ॥ १ ॥ विमल विमलमति दास
क देव, अनत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शाति करो श्रीशांति मा
हाराज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुशु अर मछि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत

त्रिजग जाण ॥ नमी नेम राखो मुऊ लाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पारस
नाथ महावीर दयाल, जवडु ख जजन परम कृपाल ॥ मुक्ति नग
रको लीनो राज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तुम विन नहि कोई तारणहार,
तिलोकरिख इम निशे धार ॥ अरज करे द्यो शिवपुरसाज ॥ प्र० ॥ ६ ॥

॥ पद वारमुं ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ रूपन अजित सजव नमु सजव नमुं जी
कांई, अजिनदन जस धार ॥ सुमति पदम प्रभु वदीयें वदीयें जी
कांई, सुपारस जिन हितकार ॥ करुणा सागर तारजो तारजो जी
प्रभु, जक्तवत्सल जगवत ॥ क० ॥ १ ॥ चदा प्रभु सुविधिशिरे सु
विधिशिरे जी कांई, शीतल जिन श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल नमुं
विमल नमुं जी कांई, अनतनाथ अवतंस ॥ क० ॥ २ ॥ धर्म शांति कुंभु
नमुं कुंभु नमुं जी कांई, अरनाथ जी जगतात ॥ मछिनाथ उंगणी
शमा उंगणीशमा जी कांई, प्रजावतीना अगजात ॥ क० ॥ ३ ॥
मुनिसुव्रत मुनिसुव्रत धणी जी कांई, नमिनाथ जस धार ॥ रिष्ट
नेमी करुणा धणी करुणा धणी जी कांई, पशुवाकी सुणिहे पुकार
॥ क० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारीखा सारिखा जी कांई, बलता नागि
णी नाग ॥ परमेष्ठी सुणाइ सुरपद दीयो सुरपद दीयो जी कांई,
कीना तिण महानाग ॥ क० ॥ ५ ॥ महावीर शासन धणी शास
न धणी जी कांई, हृद हृमा प्रभु धार ॥ केवल लेई सुगतें गया
सुगतें गया जी कांई, पाया पद अविहार ॥ क० ॥ ६ ॥ तुम शरणा
वित्रु दु जम्यो दुं जम्योजी कांई, पायो डु ख अपार ॥ तिलोकरिख
कहे में लियो में लियो जी प्रभु, चरण शरणको आधार ॥ क० ॥ ७ ॥

॥ पद तेरमु ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ रिखज अजित सज
व नमु, अजिनदन श्रीकत ॥ जिनेश्वर ॥ सुमति पदम सुपास जी,
कीधो करमको अत ॥ जि० ॥ मोय तारो किरपा करी ॥ १ ॥ ए आं

या, तुम दरिस्तण नामें निशिदिन तसीया ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम
उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इम हिंदेंमें थाणी ॥ तिलोकरिख
वदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री०॥६॥ इति॥
॥ पद दशमं ॥

॥ माचका दोहाकी देशी ॥ प्रणमु आदि जिनदने जी कांइ,
अजित नाथ महाराज ॥ सजवगुण सजव करोजी काइ, अजिनद
न जिनराज हो ॥ चोविश जिनराया, एत वतावो मुगति महेलकी ॥
सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रज जगदीश ॥ श्रीसुपास वं
दा प्रभुकु, नित्य नमाउं शीस हो ॥ चो० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल
श्रेयास वासुपूज्य, विमल अनत धर्मनाथ ॥ शांति कुंथु अर मझि
मुनिसुव्रत, बढू में जोढी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविशमा न
मिनाथ निरुपम, बाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस,
दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान सासनका
साहेब, हृष्या धनधातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पाय नेजी कांइ,
दारव्यो श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिष्या उ
थापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति बिराज्या, अ
जर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरंजन नवडुख
नजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल,
जिम तिम करो नवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारमु ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ रिखन अजित सजव सुखकार, अजिनदन प्रभु जग आभा
र ॥ सुमति पदम प्रभु तारण ऊहाज, प्रणमु श्रीचोवीशे जिनराज
॥ १ ॥ सुपारस चड्प्रज स्वाम, सुविधि शीतल जिन करू प्रणाम ॥
श्रेयास वासुपूज्य सारो काज ॥ प्र० ॥ २ ॥ विमल विमलमति दास
क देव, अनत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शांति करो श्रीशांति मा
हाराज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मझि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत

श्रीश्रेयास वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवत ॥ अनत ना
थ प्रभु धर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीशांति ॥ सा० ॥ १ ॥ कुशु
नाथ प्रभु करुणासागर, अरहनाथ जगदीश ॥ मछिनाथ श्रीमुनि
सुव्रत जी, नित्य नमावु शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकवीशमा नमि
नाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसें पाठा फिखा प्रभु, शि
वरमणी जरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारिखा प्रभु, ना
वारसका नाथ ॥ वर्धमान सासणका स्वामी, प्रणमु जोढी हाथ
॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम विन पायो डुख अनता, जनम मरण जंजाल ॥
तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥

॥ पद शोलमु ॥

॥ चूंमी रे चूख अजागणी ॥ ए देशी ॥ प्रभु समरो नित्य जा
वहुं, रिपन अजित सुखकार ॥ लाल रे ॥ सजव अजिनदन जला,
नाम लिया निस्तार ॥ लाल रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपास जी,
बदा प्रभु चद जेम ॥ ला० ॥ जवडु ख ताप बुजावणा, नविजनने करे
खेम ॥ ला० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जी, वासुपूज्य शिवकत ॥
ला० ॥ विमल अनत धर्म धारणा, शांतिकारक श्रीशांति ॥ लाल रे ॥
प्र० ॥ ३ ॥ कुशु अर मछी नमुं, मुनिसुव्रत सुखदाय ॥ ला० ॥ एकवि
शमा नमिनाथ जी, नक्तवत्सल जिनराय ॥ लाल रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ रिष्टने
मि जिनवर जयो, पद्यवाकी सुणी पुकार ॥ ला० ॥ तोरणसू पाठा
फिखा, शिववधूना जरतार ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारि
खा, सजलाया नवकार ॥ ला० ॥ वचाया नाग नागिणी, दियो सुर
पद अवतार ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ वर्धमान शासन धणी, दीनाना
थ दयाल ॥ ला० ॥ केवल कमला छेइने, लीना सुख विशाल ॥ ला०
॥ प्र० ॥ ७ ॥ ए चोविश जगदीश जी, परमगुरु जगनाथ ॥ ला० ॥
तिलोकरिख कहे तारजो, वीनबु जोढी हाथ ॥ ला० ॥ प्र० ॥ ८ ॥

कणी ॥ चदा प्रभु सुविधि वली, शीतल टालो सताप ॥ जि० ॥ श्रेया
 स वासुपूज्य विमल जी, अनंतजीको करो जाप ॥ जि० ॥ मो० ॥ १ ॥
 यर्म शांति कुशु अर, मल्ली मुनिसुव्रत श्याम ॥ जि० ॥ नमियें नमी रिछ
 नेम जी, पारस प्रभु गुणधाम ॥ जि० ॥ मो० ॥ २ ॥ वर्द्धमान शास
 न धणी, कर्म नर्म किया ठार ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान दीवाकर,
 थाप्या तीरथ चार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ४ ॥ कियो उपगार दया
 निधि, पद्मता मुक्तिमजार ॥ जि० ॥ तिलोक कहे जिम तिम करी,
 कीजो नवजल पार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चौदमु ॥

॥ चार पहेरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ रिपन अजित जिन वदीयें
 रे, सज्जव जिन सुखकार हो ॥ नविक जन ॥ अजिनदन करुणानि
 धि रे, सुमति सुमति दातार हो ॥ न० ॥ वंदो चोविश जिन नावहुं
 रे ॥ १ ॥ पदम सुपारस चदा प्रभु रे, सुविधि शीतल रूपाल हो ॥
 न० ॥ श्रेयास वासुपूज्य थ्याश्यें रे, विमल अनंत सुविशाल हो
 ॥ न० ॥ व० ॥ २ ॥ धर्मनाथ शांतीश्वर रे, कुशु अर मल्ली जा
 ए हो ॥ न० ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिवा रे, नमी नेम गुण स्वा
 ए हो ॥ न० ॥ व० ॥ ३ ॥ पारस प्रभु महावीरजी रे, शासन
 का शिरदार हो ॥ न० ॥ व० ॥ राग द्वेष मल जीतिने रे, पद्मता
 सुगति मजार हो ॥ न० ॥ व० ॥ ४ ॥ अहो अविनाशी साहि
 वा रे, जगवत्सल जगदीश हो ॥ जि० ॥ तिलोकरिख करे विनति
 रे, कीजो नव निस्तार हो ॥ न० ॥ वदो ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पद पन्नरमु ॥

॥ ठाकुर जलें विराजो जी ॥ ए देशी ॥ आरतिनी देशीमा ठे ॥ सा
 हेव जलें विराजो जी, चोवीशे महाराज, मुक्तिमें जलें विराजो जी ॥
 ए टेक ॥ रिपन अजित सज्जव अजिनदन, सुमति पदम सुपास ॥
 चदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल थो शिवबास ॥ सा० ॥ १॥

॥ पद उगणीशमुं ॥

॥ देशी प्रजातीमें ठे ॥ समर ले श्रीआदिनाथ, अजितनाथ
नारी ॥ सनवनाथ जगत तात, चरण बलिहारी ॥ स० ॥ १ ॥ उठि
प्रजात समर नाथ, वंदणा नित म्हारी ॥ धोधबीज आय साथ,
सेवा दीजो थारी ॥ स० ॥ २ ॥ अजिनदन दु खनिकंदन, सुमति
सुमति थारी ॥ पद्म सुपास चक्षुप्रज, आशा पूरो सारी ॥ स०
॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस नाथ, वासुपूज्य छुहारी ॥ विमल
अनत धर्म शांति, मेढो सब विमारी ॥ उ० ॥ ४ ॥ कुशु अर म
छी मुनिसुव्रत, कर्म कियां ठारी ॥ मुनिसुव्रत विशमा प्रछु, करु
णाके नमारी ॥ उ० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ बद्रू, सदा सु
खकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राष्ट्रल नारी ॥ उ० ॥ ६ ॥
वचाया नागनागिणी प्रछु, परमेष्ठी उच्चारि ॥ परचापूरण पारस
नाथ, पर कपगारी ॥ उ० ॥ ७ ॥ महावीर धीर धार, कर्मकू वि
मारी ॥ केवल ज्ञानज्ञान जया, थाप्या तीर्थ चारी ॥ उ० ॥ ८ ॥
तारि नविजीव गया, मुक्तिके मजारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रछु, वि
नती ल्यो धारी ॥ उ० ॥ ९ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पद बीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेवा ॥ अथवा अजणाना रासना कढवामा ॥
प्रणमु जिनेश्वर जगपति, परमदयाल करुणाना नमार तो ॥ छगला
रे धर्म निवारीया, रिपज जिनद नृप नानिकुमार तो ॥ प्र० ॥ १ ॥ अ
जित कदर्प दल जितिया, सनवनाथ गुणसनव जाण तो ॥ अजिनद
ण वदण करु जावहुं, सुमति पदम प्रछु त्रिजगजाण तो ॥ प्र० ॥
२ ॥ श्रीसुपारस जस घणो, वदा प्रछुजीने सुविधि जिनद तो ॥ शी
तल श्रेयांस गुणधारणा, वासुपूज्य जगगुरु टाव्या नवफद तो ॥
प्र० ॥ ३ ॥ विमल विमल मति वंदियें, अनत अनत गुण सुखनी रा
श तो ॥ धर्म श्री शांति कुंशु अर, मछी जिनद कियो शिववास्त तो ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ देशी तुमरीनी ठे ॥ समर समर जिननाथ समर ले, नविज
न जनम सुधारक हे वारि ॥ ज० ॥ स० ॥ १ ॥ रिपज अजित सजव अ
जिनदन, कर्मरिपुके विदारक हे वारी ॥ क० ॥ स० ॥ २ ॥ सुमति पदम
सुपास चंदाप्रभु, नवख तापनिवारक हे वारी ॥ ज० ॥ स० ॥ ३ ॥
सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, उकायके जीवगारक हे वारी ॥
ज० ॥ स० ॥ ४ ॥ विमल अनत धर्म शांतिनाथजी, सुख सपति हित
कारक हे वारी ॥ सु० ॥ स० ॥ ५ ॥ कुशु अर मल्ली मुनिसुव्रत
जी, धर्मके मार्ग उच्चारक हे वारी ॥ ध० ॥ स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी
पारस महावीरजी, हृद कृपा प्रभु धारक हे वारी ॥ ह० ॥ स० ॥
७ ॥ केवल लेई प्रभु मुक्ति बिराज्या, अजर अमर अविकारक हे
वारी ॥ अ० ॥ स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम
विण नही को उवारक हे वारी ॥ तु० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अठारमुं ॥

॥ देशी फागनी ठे ॥ प्रणमो नित नित चोविश जिन सुख
दाता ॥ प्र० ॥ रिपज अजित सजव अजिनदन, तोड दिया मोह
नीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपासचंदा प्रभु, धियन ठे
ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य,
तोड दिया हे सब कुटुबीका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनत
धर्म शांतिनाथजी, मरकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंशु
अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥
५ ॥ नमी नेमी पारस महावीर जी, शासन नायक जग प्राता
॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोविश जगदीश क्याला, शिवपुर सुखमें सदाई
माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वेगसुं, अखल
नक्ति दिजो एही चाता ॥ प्र० ॥ ८ ॥ उंगणिओं उंगणचालिस पौष
शुद्ध चउदश, दियावहीमें गुण किया उद्घसाता ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

केवल लेइ थाप्यां तीरथ चारी, मुलकमें कीर्ति अपरम पारी ॥
ज० ॥ ४ ॥ प्रभु असरण सरण कहाया, जगवत्सल नाम धराया,
तिलोकरिख सरण तुम आया ॥ नाथजी में नवनव तुम वदा,
मेढो मेरा जनम मरण फदा ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ कुंथु जिनराज तु एसो ॥ रेखताकी देशीमें ॥ समर जिनना
मकू प्यारा, मिटे सब कर्मका नारा ॥ ध्रु० ॥ रिपज जिननाम सुख
दाता, दरिसेण पटमांही विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ अजित जिनरा
ज गुणवता, सजव जगदीश शिवकता ॥ जे जे जे अजिनदन सा
मी, सुमति पद्मप्रजजी अतरजामी ॥ २ ॥ सुपारस नाथ जस
धारी, जिनोंके चरण बलिहारी ॥ स० ॥ चदा प्रभु वदू चडवरणा,
नवो नव चरणका सरणा ॥ ३ ॥ शीतल श्रेयांस जगदीशा, नमू
नित्य वासुपूज्य ईशा ॥ स० ॥ विमलमति विमल प्रभु कीजो, अ
नंत सुख अनंत नाथ दीजो ॥ ४ ॥ धरम धन धरमनाथ धरता,
शांतिप्रभु शांतिके करता ॥ स० ॥ कुंथु अर मझि मल घाया, मेरे
प्रभु मुनिसुव्रत जाया ॥ स० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ ध्याव,
चरण पै शीश नमाव ॥ बावीशमा रिष्टनेमी साई, तारिफमा सुर
मुलक वाई ॥ स० ॥ ६ ॥ त्रेवीशमा पारस नाथ सच्चा, जिनोंका
प्रगट हे परचा ॥ सासणपति माहावीर बका, वजे हे आज उनका
मका ॥ स० ॥ ७ ॥ करी प्रभु जवरजस्त करणी, लीनी हे अचल
शिवधरणी ॥ प्रभुजी मेरी अर्ज मान लीजो, तिलोकरिख पदवी
मोय दीजो ॥ ८ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ कडखाकीदेशी ॥ वदू चोवीश, जिनद आनदसु, तारो रु
पाल, करुणा नमारी ॥ तुम सम और नहि, और त्रिदु खवनमें,
जाणीने सरण, लीयो विचारी ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ रिपज अजित, सजव

प्र०॥४॥ श्रीमुनिसुव्रत नमी प्रभु, रिष्टनेमी दयासिधु दातार तो ॥
 पशुकी पुकार सुणी साहिवा, तोरणसुं फिर गया मोक्ष मज्जर तो
 ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारिखा, जगतवारस प्रभु परम दया
 ल तो ॥ श्रीवर्धमान शासन धनी, नक्ततारक प्रभु जग प्रतिपा
 ल तो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अधम उद्धारण विरुद आपको, जाणिने श्र
 रण लियो जगदीश तो ॥ जिम तिम तारो प्रभु मुज नणी, तिलो
 करिख वीनवे पुरो जगीश तो ॥ ४ ॥ प्र० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ गांफल मत रहे रे, मेरी जान ॥ गां० ॥ ए देशी ॥ जपो जिन
 वर रे मेरि जान, जपो जिनवर रे ॥ जिनवर जप जगतमें सुखदा
 ता, जूवा हे सब जगका नाता ॥ ज० ॥ रिपन अजित सजब सु
 खकारी, अजिनदन जग जसधारी, सुमतिनाथ सुमति दातारी ॥
 पद्मप्रभु सख अचल पाया, जया तीन जवन अचल राया ॥ ज०
 ॥ १ ॥ सुपास आश सब पुरो, चदा प्रभु सकट चूरो, सुविधि शी
 तल मोह कियो दूरो ॥ झ्यारमा श्रेयासनाथ सामी, वासुपूज्य व
 दू में शिर नामी ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रीविमल विमल मतिवता, श्रीअ
 नत धर्म शिवकंता, शाति करो शाति महता ॥ कुशु अर कियो
 कर्म धाणो, केवल छेड़ पाया निर्वाणो ॥ ज० ॥ ३ ॥ मझिनाथ अ
 नत बलिराया, बहू नृपतिकू प्रभु समजाया, मुनिसुव्रत व्रत सुहा
 या ॥ एकविशमा नमिनाथ महोटा, नमतां मिटे जन्म मरण दोटा
 ॥ ज० ॥ ४ ॥ रिष्टनेमी शिवादेवी नदा, जादव कुलदीपक चदा,
 चढघा व्यादन घातके बदा ॥ पशुकी पुकार अवधारी, त्यागी प्रभु
 राखलसी नारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ पारस करुणाके जमारी, नागनागि
 णी जलत उगारी, परमेष्टीको सरण उचारी ॥ कमठमद जंजण नि
 शका, दिया प्रभु मुक्तिमाहे रुका ॥ ज० ॥ ६ ॥ वर्धमान शासन
 पति सच्चा, जग जान लिया प्रभु कक्षा, सजम करणी मांही रक्षा ॥

पद्म सुपासजी कांई, वढित पूरणहार ॥ प्र० ॥ १ ॥ चदा प्रभु
चदवरणा हो, सुखकरणा सुविधि जिनेश्वरू, प्रभु शीतल शिवदा
तार ॥ श्रेयास वासुपूज्य ध्याउ हो, मनाउ विमल जिनद जी प्रभु,
अनंत अनत गुणधार ॥ प्र० ॥ २ ॥ धर्मधर्म धननायक हो, दायक शांति
दया करु प्रभु, शांति करी ससार ॥ कुंथु अरमछी वंदू हो, निकंदू पा
तक माहेरा प्रभु, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नमि नेमी जिनरा
या हो, मनजाया पारसनाथजी, प्रभु परचा पूरणहार ॥ महा
वीर जग माह्या हो, तजि माया ममता मोहनी, प्रभु कर्म न
र्म किया ठार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ केवलज्ञानज पाया हो, जब आया
इह उमावसु, कियो मोहव हर्ष अपार ॥ हितउपदेश सुण्याजी,
जगराया पर उपगारीया, प्रभु थाप्यां तीरथ चार ॥ प्र० ॥ ५ ॥
सुगतिनगर सीधाया जी कांई, पाया शिव सुखसासता, प्रभु अ
जर अमर अविकार ॥ तिलोकरिख इम बोले हो, प्रभु खोले आ
यो आपके, मुऊद्यो अविचल सुखसार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ पद षष्ठीशमु ॥

॥ सजुरुजी कहे जगसपना ए ॥ ए देशी ॥ जपो जपो न
विक जिन राया, कर्म काटके अमर पदपाया रे ॥ ज० ॥ १ ॥ रि
पन अजित सजव मन जाया, अजिनदन वदू मनकाया रे ॥
ज० ॥ २ ॥ सुमति पद्म सुपास सुखदाया, चदा प्रभुचद धरन सो
दाया रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास अति माह्या, वासु
पूज्य कर्मरिपु घाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनत धर्मधन पा
या, शातिनाथ नविक समुजाया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर
मछि मलदूगया, मुनिसुव्रत व्रतदृढ ठाया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी
नेमी पारस सरसाया, महावीर त्रिशलादेवी जाया रे ॥ ज० ॥ ७ ॥
तिलोकरिख प्रभुसरणे चल आया, जिम तिम करि तार महा
राया रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ १६ ॥

अग्निनदन, सुमतिपदम, सुपार्श्व देवा ॥ चङ्गलह्वनचङ्ग, वर्णचदा प्र
 च्छु, नवचव दिजो प्रच्छु, अचल से वा ॥ व० ॥ २ ॥ प्रणमुं पुष्प
 दत्त, शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य पूजनिक, जगजन सुहा
 या ॥ विमल अनन्त धर्म, शांतिशांति करो, जगन्नायकजग, गुरु क
 हाया ॥ व० ॥ ३ ॥ श्रीकुशु अर मन्त्रि, श्री मुनिसुव्रत, सुकृत
 करणी करी, सरल नार्वे ॥ नमी नेमी श्री, पार्श्वमहावीरजी, नाम
 लिया सकल, विघन जावे ॥ व० ॥ ४ ॥ ईशका ईश, जग दीप्ति
 चोविस प्रच्छु, कर्मटाटी काटी, सविमुक्ति पाया ॥ तिलोकरिखवीनती, इ
 रिसण दीजीयें, अचलनक्ति अरु, चरण ठाया ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥ २३ ॥
 ॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ प्रच्छु थारा गुण अनन्त अपारा ॥ ए देशी ॥ प्रच्छुजी थारा च
 रणको आधार, प्रच्छुजी थारा धर्मको आ० ॥ ध्रु० ॥ रिपज अजित स
 नव अग्निनदन, सुमति सुमतिदातार ॥ प्र० ॥ १ ॥ पद्म सुपास
 चदा प्रच्छु समरो, सुचङ्गवदन सुखकार ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शी
 तल श्रेयांस वासुपूज्य, जगमें कीर्ति अपार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अ
 नन्त धर्म शांतीश्वर, शांतिकरण सत्तार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंशु अर
 मन्त्री मुनिसुव्रतजी, सुव्रतपद दातार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमि पार्
 रस महावीरजी, सासणपति शिरदार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मुज सम दी
 न नही कोइ जगमें, तुम सम नहिं को दातार ॥ प्र० ॥ ७ ॥
 अधम वधरण विरुद्ध विचारो, करुणानिधि किरतार ॥ प्र० ॥ ८ ॥
 तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, कीजो नवजल पार ॥ प्र० ॥ ९ ॥

॥ पद पञ्चीशमु ॥

॥ आज नलो दिन उगो जी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥ प्रात
 उठ नित नार्वेजी, प्रणमु चोविश जिनदजी, प्रच्छु करजो नवजल
 पार ॥ ध्रु० ॥ रिपज अजितसुखदाई हो, सनवजगमाई दीपता प्र
 च्छु, अग्निनदन हितकार ॥ सुमति सुमतिके दातार हो, जगत्राता

धाया रे ॥ व० ॥ ५ ॥ श्रीमहावीर सासणपति साचा, नव
डुख नजन जाचा रे ॥ रोम रोममें मन तन राचा, खोटा ज
गका लाचा रे ॥ व० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगराया, डुर्ल
न डुर्लन पायारे ॥ कुदेव त्यागी तुमसरणे आया, तार तार
माहारायारे ॥ वं० ॥ ४ ॥ इति ॥ १० ॥

अथ देवगुणस्तवन प्रारंभ ॥

॥ देशी वावा आदमकी ॥ ऐसा जिन ऐसा जिन ऐसा जिन हे,
ललि ललि वड सदा निश दिन हे ॥ ए० ॥ १ ॥ एक सहस्र अष्ट
लङ्घन हे, तनकाति जलक ज्यों रतन हे ॥ ए० ॥ २ ॥ जाके पर
थम सठाण सधयण हे, उत्कृष्ट रूप सुवरन हे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जाण्यो
सब अथिर तन धन हे, कियो सजम लेवनको मन हे ॥ ए० ॥
४ ॥ एक कोड अठ लाख दिन दीन हे, वेई दान माहा तप कीन हे
॥ ए० ॥ ५ ॥ शुक्ल ध्यानविपे लय लीन हे, धनघातिक कर्म
कीने ढिन हे ॥ ए० ॥ ६ ॥ केवल ज्ञान प्रगट्यो ततखिन हे, सब
इय जाणे जिन जिन हे ॥ ए० ॥ ७ ॥ चोतिस अतिशय पैतिस
बुचन हे, वक्केश वेते नविजन हे ॥ ए० ॥ ८ ॥ नारी पुत्र जण
त कोटीन हे, स्वामी सरिखो न उर नवीन हे ॥ ए० ॥ ९ ॥ कर्म
वधनकी ज्याकू धीन हे, परमपात्र परम परवीन हे ॥ ए० ॥ १० ॥
तीर्थ थापे कापे कर्मवन हे, प्रभु पदुचे अचल नवन हे ॥ ए० ॥
११ ॥ अजर अमर अविनाशी पद लीन हे, जनम मरण किया
पर द्हीन हे ॥ ए० ॥ १२ ॥ अयवता रिखजी महाराज मया कीन
हे, ऐसा देव लिया मेनें चिन हे ॥ ए० ॥ १३ ॥ तिलोक रिख कहे
प्रभु धन धन हे, ऐसा देव वसे मेरे मेरे मन हे ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ गुरुगुण स्तवन प्रारंभ ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा गुरु ऐसा गुरु ऐसा गुरु हे, रहे कनक का
२७

॥ पद सत्त्यावीशमुं ॥

॥ कपूर होवे अतिवजलो जी ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं आदिजिनेश्वरू जी, नयनजण जगवत ॥ अजितनाथ जित्या अरिजी, सजव गुण अनत ॥ जिनेश्वर आपतणो ठे आधार ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ अर्चिं दन आनदकरो जी, सुमति सुमतिदातार ॥ पदमप्रभु करुणा निधि जी, सुपारस सुखकार ॥ जि० ॥ २ ॥ चदप्रज चडलछना जी, चदरवरण शरीर ॥ पुष्पदत शीतल नमू जी, श्रेयास श्रेयांस गुणधीर ॥ जि० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमल नमु जी, अनत अनत सुखलीन ॥ धर्मनाथ शांतीश्वरू जी, मरीनो रोग शांतिकीन ॥ जि० ॥ ४ ॥ कुष्ठु अरजिनवर जयो जी, मल्ली मलमद मार ॥ केव लकमला पार्श्या जी, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ जि० ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस नमुं जी, चोविशमा वर्धमान ॥ ए चोविशजिन जगगुरु जी, पाम्या अविचल आन ॥ जि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कर जोडिने जी, वदे वारम वार ॥ अरज एतिक अवधारजो जी, कीजो नवजल पार ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ पद अष्टावीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत व्रत साद्विव साचो ॥ ए देशी ॥ वदू चोविश जगदीश दयाला, गुणरतनाकर माला रे ॥ जग वधारण जगरठ पाला, काळ्या कर्मका जाला रे ॥ व० ॥ १ ॥ रिपज अजित स जव सुखकारी, अजिनदन जसधारी रे ॥ सुमति पदम प्रभुजी व पगारी, चरणसरण बलिहारी रे ॥ व० ॥ २ ॥ सुपारस चदा प्रभु सामी, सुविधिशीतल गुणधामी रे ॥ श्रीश्रेयांस नमुं शिवगामी, जय जय अतरजामी रे ॥ व० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य श्रीविमल मर्दता, अनत धरम शिवकता रे ॥ शांतिजिनेश्वर शांति करता, किना करम रिपुअता रे ॥ व० ॥ ४ ॥ कुष्ठु अर मल्ली मल धाया, मु निसुव्रत व्रत माया रे ॥ नमी नेमी पारस जाया, नक्रवत्सल पद

नव चरम हे ॥ ए० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे सिद्ध परिव्रज्य हे, गुरु
महेरसु दुवो महेरम हे ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जिनगुणविस्मयस्तवन प्रारंभ ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ अहो प्रभु तु
म गुण अचरिज आवे, कहेता सुरगुरु पार न पावे ॥ अ० ॥ १ ॥
तुम सद्गु जाण कहे जग माइ ॥ जीवकी आदि सो कबु न बता
ई ॥ अ० ॥ २ ॥ जगत कहे देखे सब स्वामी, स्वपनु नहि देखो
शिवगामी ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदो नहिं सुख डख जग जाणे, सुख
अनत सिद्धांत वखाणे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुम वीतराग दिशा सदा
पावे, आराध्या विण कोइ मोक्ष न जावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ निगुणा
पर नहिं द्वेष तुमारो, आज्ञा नही माने तो जमत ससारो ॥ अ०
॥ ६ ॥ पञ्चस्काण तो प्रभु एक न कांइ, आश्रव नहिं लागे तु
म तांइ ॥ अ० ॥ ७ ॥ आख्खा कर्मको बंधण नांइ, अनत का
लकी थिरथिति पाइ ॥ अ० ॥ ८ ॥ नाम करम स्वय करि शिववा
सो, नाम लीया सब विघन विनासो ॥ अ० ॥ ९ ॥ गोत्र क
रुम तुमने नहिं देवा, गोत्र संजालि करे जन सेवा ॥ अ० ॥ १० ॥
अंतराय करि डुरि थां सांइ, वृंतन लाज दिसे नहिं कांइ ॥ अ०
॥ ११ ॥ करुणासागर जगमें कहावो, करम रिपु सब दूर जगावो
॥ अ० ॥ १२ ॥ परिग्रह नहिं तुमने जग दाखे, जगनायक कहे
आगम साखे ॥ अ० ॥ १३ ॥ कामिनी त्रिविध त्रिविध तुम त्या
गी, शिवरमणी पति कहे जगरागी ॥ अ० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख
लियो शरण तुमारो, अधम उद्धारण विरुद्ध विचारो ॥ अ० ॥ १५ ॥
मुक्त अवगुण प्रभु दूर निवारो, जेम तेम करि जव पार वतारो ॥ १६ ॥

॥ अथ उपदेश स्तवन पद पहेलु प्रारंभ ॥

॥ समज समज गुणवत सयाणां, कर छे मुक्त प्रभुका गुण

मिनीसे दूर है ॥ ए० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यानमें रहे जरूर है, बीतान
 शरण सदा ठर है ॥ ए० ॥ २ ॥ आतुं कर्मकी फोज कर है, तो
 तप जपसें करे चक चूर है ॥ ए० ॥ ३ ॥ नहिं क्रोध कपट मन
 रूर है, विषय मदन किया चक चूर है ॥ ए० ॥ ४ ॥ त्यागे पाप
 अगारा जे कूर है, बोले निरवद्य वचन मधूर है ॥ ए० ॥ ५ ॥
 नर पद्य ऊँ सुर असुर है, सहे परिसह सकल सखा शूर है ॥
 ए० ॥ ६ ॥ शील समकित धन जखा चूर है, दूर होत कर्मरूपी
 धूर है ॥ ए० ॥ ७ ॥ सजाय रूप वजे रणतूर है, कीर्तिरूप नो
 त रही घूर है ॥ ए० ॥ ८ ॥ नही माने विकथा मचकूर है, जे
 जिनागमकुं करे मजूर है ॥ ए० ॥ ९ ॥ संसार माने सो कृष्णचंगूर
 है, जाये धर्म पिर सदा मसहूर है ॥ ए० ॥ १० ॥ मिथ्यामत
 माने फितुर है, नय तत्त्व पेठाने चतुर है ॥ ए० ॥ ११ ॥ नबि
 जन मन नावे जरूर है, नहिं वदे सोई वे सहूर है ॥ ए० ॥ १२ ॥
 अयवतारिखजी महाराज दजूर है, मेनें जाण्यो धर्मको अंकूर
 है ॥ ए० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जे सतगुरु है, सदा बढणा
 उगातां सूर है ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ धर्मवर्णन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ वेशी एहीज ॥ ऐसा धर्म ऐसा धर्म ऐसा धर्म है, जिणसें
 मिटत सकल जयजर्म है ॥ ए० ॥ १ ॥ सब जीव चाहे शांता प
 रम है, नहिं वे परकु परिश्रम है ॥ ए० ॥ २ ॥ नहिं जाखे मृषा
 कोमरम है, टाले चोरी पाले व्रत ब्रह्म है ॥ ए० ॥ ३ ॥ टाले म
 मता ठल रहे नरम है, नही राग द्वेष नहिं गरम है ॥ ए० ॥ ४ ॥
 कलहो कलक चाही सुवधे कर्म है, परिहरे सुगुणी राखे सरम है
 ॥ ए० ॥ ५ ॥ श्रीजिन आग्याके मांही धर्म है, कोइ बुध जनकु
 भहेरम है ॥ ए० ॥ ६ ॥ पाले धर्म होवे अकरम है, केवल जेई नया

मात पिता तिरिया सुत सारा, मरण आया नहिं राखणहारा
 ॥ ५ ॥ ग० ॥ सात कोट चूतल धसि जावे, जहां पण जम आ
 यकें गटकावे ॥ ६ ॥ ग० ॥ हरि हर इइ चइ नर राया, जमकी त्रा
 ससैं सब गजराया ॥ ७ ॥ ग० ॥ जिण घर दय गय लहू चोराशी,
 वे पण हो गये मसाणके वासी ॥ ८ ॥ ग० ॥ ठपन कोडिके ना
 थ कहाया, पाणी बिना वनमें मरण पाया ॥ ९ ॥ ग० ॥ काहेकुं
 तुं करता अकडाइ, देख तु दादा बडदादाके तांइ ॥ १० ॥ ग० ॥
 केइ चल्या केइ चालणहारा, क्यु न दुशियार होवे तुं गमारा ॥ ११ ॥
 ग० ॥ दिन दिन चलणो निकट जो आवे, काल अचानक ऊपट
 ले जावे ॥ १२ ॥ ग० ॥ धन दोलत ऊर माल खजाना, ठेवट ठोढ
 अकेला सिधाणा ॥ १३ ॥ ग० ॥ धन कमायो सो पाबला खावे,
 कर्ममें कोय न पांति पढावे ॥ १४ ॥ ग० ॥ घेवर सो तो जमाइ
 ने खाया, केदखानामें मोदी छ ख पाया ॥ १५ ॥ ग० ॥ दो को
 साके आतरे जावे, तो पण खरची साथ ले सिधावे ॥ १६ ॥ ग० ॥
 परजव तो निश्चै तुज जाणो, क्यु नहिं लेवे तुं धर्मको नाणो ॥ १७ ॥
 ग० ॥ सज्जु चोकीदार चेतावे, सुकृतसौदा तेरे सग आवे ॥ १८ ॥
 ग० ॥ उगणीजें गुणचालिस मजारो, मगशिर छुवि अष्टमी चइ
 वारो ॥ १९ ॥ ग० ॥ शहेर सतारो दक्षिणमाई, तिलोकरिख कहे
 चेतजो जाई ॥ २० ॥ ग० ॥

॥ अथ उपदेशीफटको स्तवन प्रारंभ ॥

॥ चाल एहीज ॥ धिक तेरा जीवडा, न करता धरमकु ॥ धिक ते
 रा तन मन, धिक हे जनमकु ॥ धि० ॥ १ ॥ रत्नचितामणि ज
 न्म जो नरको, खोय दियो जेसैं जव तेने खरको ॥ धि० ॥ २ ॥
 नीचकु देखिकें शिश नमावे, सतकु देखि अधिक अकडावे ॥ धि० ॥
 ॥ ३ ॥ धर्मकथा कबु दाय न आवे, जो सुणो तो फुकफुक जोला खावे

गाणा ॥ स० ॥ १ ॥ काल अनंत जन्मो खठ गतिमें, राज्यो नहि
 तुं श्रीजिनमतमें ॥ स० ॥ २ ॥ गर्नवासमें बहुत छुख पायो, न
 वमासा तुं थो लटकायो ॥ स० ॥ ३ ॥ जन्म जयो विससो
 छुख सारा, खावण पीवण प्रेम अपारा ॥ स० ॥ ४ ॥ बालपण
 हसि खेल गमायो, धर्म ध्यान कबु दाय न आयो ॥ स० ॥ ५ ॥
 जोवन वयमाहि पाप कमायो, जोग विलासविषे ललचायो ॥ स०
 ॥ ६ ॥ निशिदिन हाय करे धन केरी, देश विदेश देवे घणि फेरी
 ॥ स० ॥ ७ ॥ जूलो कहे माया मेरी या मेरी, तेरे कहे कबु होत
 न तेरी ॥ स० ॥ ८ ॥ बाप दादा सबही गये ठमी, कितविध आ
 श करे तु घममी ॥ स० ॥ ९ ॥ सुवि बांधके जन्म तुं पायो, हाथ
 पसारके आगे सिधायो ॥ स० ॥ १० ॥ कर कर खोटा धधा धन
 जोडे, धर्मकरणीसु प्रीति क्युं तोडे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिप्पलपान
 सझाका उजासा, वादल गाय सुपन धन आशा ॥ स० ॥ १२ ॥
 वेहसु ममत करे तु घणेरी, होवे घडीकमें राखकी ठेरी ॥ स० ॥
 ॥ १३ ॥ पल पल आयु घटे नर तेरो, पाप कमायासु नरकमें मे
 रो ॥ स० ॥ १४ ॥ देव निरंजन नक्ति करीजें, गुरु निर्मथके नित्य
 नमीजें ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्म दयामें दे सुखदानी, ए तिन तख
 लो न्याय पीठाणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मिथ्या जर्म कर्म सब ठंमो, ठ
 काय जीव जणी मत दमो ॥ स० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे सुणो
 नर नारी, इण जव जस आगे सुख नारी ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ पद बीजु ॥

॥ देशी एहीज ॥ गफलतमें मत रहे रे विवाना, जीव चिढा
 जमराज सिचाना ॥ १ ॥ ग० ॥ रात विवस करता नित धया,
 जाणके होय रह्या कैसें अथा ॥ २ ॥ ग० ॥ जेसें तितरकुं बाऊ
 ऊपटे, मुसकको ज्यों मांजार गटके ॥ ३ ॥ ग० ॥ कुरंगको सिह
 ज्यों पकड धिदारे, तेसेंही प्राणीकुं काल प्रहारे ॥ ४ ॥ ग० ॥

धाया, धिक जननी जिणें गोद खिलाया ॥ धि० ॥ ३६ ॥ उंग
णिणें अढतिस माहावदि जाणो, चोथ तिथि रवि वार वस्वाणो ॥
धि० ॥ ३७ ॥ तिलोकरिख कहे आवलकोटी मांड, इम सुणी करजो
थें धर्म कमाई ॥ धि० ॥ ३८ ॥ इति ॥

॥ पद बीजं ॥

॥ उपदेशमें सुलट ॥ देशी एहीज ॥ धन तेरा जीवढा, नित
करता धरमकु ॥ धन तेरा तन मन, धन हे जनमकुं ॥ १ ॥ रत्न
चितामणि नरनव पाई, धर्मचितामणि ले उलसाई ॥ २ ॥ मि
थ्यात्वी नरकु नहि सरसावे, धर्मीकुं देख अधिक हरखावे ॥ ३ ॥
धर्मकथा सुणवा चित्त चढावे, सुण कर सार ग्रही उलसावे ॥ ४ ॥
तप जप किरियामें रहे अगवानी, पुजल पर कबु ममता न आ
णी ॥ ५ ॥ ख्याल नाटकमें कबहुं न जावे, मुनि दरिसण आल
स नहिं आवे ॥ ६ ॥ प्रभुगुण गावता अधिक गुंजावे, क्रोध कलेश
थकी शरमावे ॥ ७ ॥ दान देवे नित ठलट परिणामें, थर थर धू
जे सो हिसाके कामें ॥ ८ ॥ पापका काममें भर अति आणो,
धर्मको काम सदा नलो जाणो ॥ ९ ॥ क्रोध मान तृष्णा बल
त्यागे, दान शीघल तप जावमें आगें ॥ १० ॥ पापका काम
में निर्वल अगें, धर्मका काममें शूरपणु रगें ॥ ११ ॥ सत्यपद्मकी
प्रतीतजो आणो, फूठको पद्म रति नहीं ताणो ॥ १२ ॥ जीव
दया धन खरचण जाणो, लाज अनत हिये इम ठाणो ॥ १३ ॥
न करे निदा विकथा सुणो नाई, गुणिजनना गुण सुणि वल्ल
साई ॥ १४ ॥ कर्मवधणकी शीख न धारे, धर्मशिक्षा सुखदायी
विचारे ॥ १५ ॥ पापीसु प्रीति न राखे कदाई, धर्मीकु आवर दे
अधिकाई ॥ १६ ॥ धरमसु परचो पापथी दूरो, कर्ममें पाठो
सो तप जप शूरो ॥ १७ ॥ परछु ख देखि अणुकपा घणोरी, मगरूरी
करे नहीं निज सुख केरी ॥ १८ ॥ आमके बोय आम फल चढावे,

॥ धि० ॥ ४ ॥ इष्कका ख्याल राग अनुरागें, धक्का स्वाय तोहि बसे
 आगें ॥ धि० ॥ ५ ॥ नाटकमें उजा रहे रात सारी, मुनिवरितख
 आलस अति जारी ॥ धि० ॥ ६ ॥ तप जप वातमें पट नट जा
 वे, खाशेमें लोटी लेई ऊट जावे ॥ धि० ॥ ७ ॥ स्तवन सचाव क
 हेतां शरमावे, लहता तो कबु दाय न आवे ॥ धि० ॥ ८ ॥
 दान देता थरथर कर धूजे, हिंसा करणमें कर अति जूजे ॥ धि०
 ॥ ९ ॥ लोच कारण करे अति नरमाई, साहाधर्मीसुं करे गुमराई ॥
 धि० ॥ १० ॥ पापकरणीमें मन उध्वसावे, धर्मक्रियामें न धिक्
 लगावे ॥ धि० ॥ ११ ॥ क्रोध मान टुण्णा ठल जारी, दान जीव
 ल तप जाव विस्तारी ॥ धि० ॥ १२ ॥ पाप करणमें जोर बणा
 वे, धर्म उद्यममाहि कायर आवे ॥ धि० ॥ १३ ॥ परस्व नहिं बेव
 गुरु धर्म केरी, विणजमें दृष्टि पढोचावे घणोरी ॥ धि० ॥ १४ ॥
 जीवदयामें खरचता रोवे, जस शोनामें निरर्थक धन खोवे ॥
 धि० ॥ १५ ॥ निदा विकयामें निशिदिन रातो, गुणिजनका गुण
 सुणी अकजातो ॥ धि० ॥ १६ ॥ कर्मबंधनकी शिख सुणि राजी,
 धर्मशिखा सुणि अधिक ना राजी ॥ धि० ॥ १७ ॥ पापीकुं आबर
 देकें बिठावे, धर्मीकुं देख अधिक घुररावे ॥ धि० ॥ १८ ॥ पाप
 थी परचो दयाथकी दूरो, धर्ममें पागो कर्ममांही शूरो ॥ धि० ॥
 ॥ १९ ॥ परछु ख बेखीने अति हरखावे, निज सपत्तसैं अधि
 क पोमावे ॥ धि० ॥ २० ॥ बज्रुल वोय आमफल चहावे, विष न
 ह्मण करि जीवणो चहावे ॥ धि० ॥ २१ ॥ पच पच खोय बीयो
 नव सारो, तेजीका बेल ज्युं हाखो जमारो ॥ धि० ॥ २२ ॥ नि
 शदिन दाय दाय धन धनकी, लाज नदीं परनव गुरुजनकी ॥
 धि० ॥ २३ ॥ धोवीका श्वान ज्युं कहे धन मेरो, सोचे न ठेवट
 नरकमें मेरो ॥ धि० ॥ २४ ॥ इहा अपजस आगें जस जारी, धर्म
 बिना नव नवमें खुवारी ॥ धि० ॥ २५ ॥ जैसा जाया तैसा सि

या तव होत निराशा ॥ ४ ॥ ए० ॥ मात पिता सुत वधव नारी,
 रुदन करे मतलब परिवारी ॥ ५ ॥ ए० ॥ गद्देणां आचूषण लेवे
 उतारी, मतलबकी जगमें सब थारी ॥ ६ ॥ ए० ॥ आठ हाथ
 को कपड़ो मगाई, उढाय सिढीमें दे पधराई ॥ १० ॥ ए० ॥
 चार जणा लेवे खांधे उठाई, कोइ रोवे कोइ हरखाई ॥ ११ ॥ ए० ॥
 पलंग उपर जे सोते सदाई, उनकुं लकड़ चुण देवे जलाई
 ॥ १२ ॥ ए० ॥ हाड लकड़कें सज्यो घास पूजो, होवे नस्म तुं
 कहियें जूजो ॥ १३ ॥ ए० ॥ आन करी सब घर चल आवे,
 कोइ कीसीके संग न जावे ॥ १४ ॥ ए० ॥ दो दिन याद करे
 वस नरकें, वरस ठ मासमें जाय विसरकें ॥ १५ ॥ ए० ॥
 पाती करकें सजन धन खावे, पाप कमाया तेरे संग आवे
 ॥ १६ ॥ ए० ॥ ए जगका सब जूठा दे नात्ता, क्युं तुं कमावत
 कर्मका खाता ॥ १७ ॥ ए० ॥ जो इत जगमें देहज धारी, ठेवट
 जल बल होवेगा ठारी ॥ १८ ॥ ए० ॥ उगणिर्शें गुणचालिश
 मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पढ़ ठजासो ॥ १९ ॥ ए० ॥
 तिलोकरिख कहे सतारा मजारो, करी उपदेशी नविक हित
 कारो ॥ २० ॥ ए० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पाचमुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा
 पण्डके समाना ॥ १ ॥ सुरुत ड कृत जेद न जाना, जीव अजीव
 कहु न पिठाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कांई, आश्रव स
 वर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोह पद जाणी, खबर
 नहिं कहु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कोन हे साधु असाधु है कैसा,
 इह नव परजव नहिं को अंदेसा ॥ ५ ॥ निशि दिन पाप करे नि
 शका, साधुकु देख होवे वडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो

ऐसे गुणीसों कदि न उगावे ॥ १९ ॥ निशिदिन बढना धर्म मरम
की, लाज घणी परजव गुरुजनकी ॥ २० ॥ धन कुटुंब तन न
हीं जाणे मेरो, जाणे जैनधर्म सहायक तेरो ॥ २१ ॥ इणजव
शोना आगे सुख जारी, कर्मशत्रु हणि वरे शिवनारी ॥ २२ ॥ नर
जव पायके धर्म कमाया, धन जननी जिणें गोद खिलाया ॥ २३ ॥
तिलोकरिख कहे हित उपदेशो, इम सुणि करजो ये धर्म हमेशो ॥ २४ ॥

॥ पद त्रीजु ॥

॥ देशी एहीज ॥ देखि बदन गोरा, क्यों तु सुलाना, रंग पतंग जिम
सजा फुलाना ॥ दे० ॥ १ ॥ दाढका पिंजर चाम मढाना, नितर कुं
धका जरा है खजाना ॥ दे० ॥ २ ॥ कच्चा घडामांदि पानी जराना,
टुटे अचानक पीपल पाना ॥ दे० ॥ ३ ॥ तेसा बदन तेरा है रे
दिवाना, देत दगो यह क्यों तुं जुजाणा ॥ दे० ॥ ४ ॥ निशिदि
न मागे यह खानांदि खाना, देत नहि तव करत हेराना ॥ दे०
॥ ५ ॥ तेने तो इच्छुं मेरा करी माना, कर कर हिसा तुं देत है
खानां ॥ दे० ॥ ६ ॥ ए दगावार महा ड खदाना, ठेवट निकाले अकेजा
ही जानां ॥ दे० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे समज सयाणा, तप
जप करके लहे निर्वाणां ॥ दे० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

॥ पद चौथु ॥

॥ देशी एहीज ॥ एक दिन ऐसा भितेगा सकलमें, कर ले सुकृत
तु सोच अकलमें ॥ १ ॥ ए० ॥ ककर जुन जुन महेल बनाया,
उनका मसाणमें वास वसाया ॥ २ ॥ ए० ॥ जिणके धन होतो
केई कोडी, उनके सग गइ नहीं एक कोडी ॥ ३ ॥ ए० ॥ केई को
डी दल लाखोही हाथी, वे पण नगे गये नहिं साथी ॥ ४ ॥ ए० ॥
हरि हलधर अकरी नर राशी, ठेवट सबहीं मसाणके वासी
॥ ५ ॥ ए० ॥ जमका लइकर जब चदि आवे, ततकृण हस कूब
कर जावे ॥ ६ ॥ ए० ॥ सास रहे जबहीं लग आशा, सास ग

या तव होत निराशा ॥ ४ ॥ ए० ॥ मात पिता सुत वधव नारी,
 रुदन करे मतलब परिवारी ॥ ५ ॥ ए० ॥ गद्देणां आचूपण लेवे
 छतारी, मतलबकी जगमें सब यारी ॥ ६ ॥ ए० ॥ आठ हाथ
 को कपडो मगाई, उंढाय सिढीमें दे पधराई ॥ १० ॥ ए० ॥
 चार जणा लेवे खांधे ठगई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ ११ ॥ ए० ॥
 पलग ठपर जे सोते सदाई, उनकुं लकड चुण वेवे जलाई
 ॥ १२ ॥ ए० ॥ हाड लकडकें सज्यो घास पूजो, होवे नस्म तुं
 कहिपैं जूलो ॥ १३ ॥ ए० ॥ स्नान करी सब घर चल आवे,
 कोई कीसीके सग न जावे ॥ १४ ॥ ए० ॥ दो दिन याद करे
 वस नरकें, वरस न मासमें जाय विसरकें ॥ १५ ॥ ए० ॥
 पाती करकें सजन धन खावे, पाप कमाया तेरे सग आवे
 ॥ १६ ॥ ए० ॥ ए जगका सब जूठा दे नाता, क्यु तुं कमावत
 कर्मका खाता ॥ १७ ॥ ए० ॥ जो इत जगमें बेहज धारी, ठेवट
 जल बल होवेगा ठारी ॥ १८ ॥ ए० ॥ उंगणिओं गुणवालिश
 मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पक्ष वजासो ॥ १९ ॥ ए० ॥
 तिलोकरिख कहे सतारा मजारो, करी उपदेशी नविक हित
 कारो ॥ २० ॥ ए० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पाचमुं ॥

॥ वेशी एहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा
 पछुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत ड कृत जेद न जाना, जीव अजीव
 कबु न पिठाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न काई, आश्रव स
 वर समज न आई ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, स्वर
 नहिं कबु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कोन हे साधु असाधु है कैसा,
 इह नव परजव नहिं को अदेसा ॥ ५ ॥ निशि दिन पाप करे नि
 शका, साधुकु देख होवे बडा वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो

वरसावे, हडक्या श्वान ज्युं काटण धावे ॥७॥ आप बढाई निंदा
करे परकी, देखे नदी करणी निजघरकी ॥ ८ ॥ हाय हाय करी
जन्म गमावे, करके कृकर्म नहि पस्तावे ॥ ९ ॥ भगत करे तन स
ज्जन धनकी, खवर नहिं कबु अपने बतनकी ॥ १० ॥ शिंग पुढकी
रहि हिएताई, माढी मूढकी नइ अधिकाई ॥ ११ ॥ नरनव पा
यके दान न दीनो, तप जपको कबु काम न कीनो ॥ १२ ॥ सतकुं
देखिके शिश न नमाया, जिजसु प्रभुका गुण नहिं गाया ॥ १३ ॥
कानसु सूत्रकी सुणि नहिं वाणी, नेत्रसु मुनिदरिसण नहिं जा
णी ॥ १४ ॥ धरणीके नारें मारी अधिकाई, फिट फिट जननीकी
कूख लजाई ॥ १५ ॥ ऐसा प्राणी चरगतिमांदे नटके, बढवायु
ल कथे सुख लटके ॥ १६ ॥ पावे सो दुख अनत अपारा, बाध
लिधा सग पापका नारा ॥ १७ ॥ तिलोकरिखजी सताराके माढी,
धर्म किया होवे सुख सदाई ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ बाहुबध विसर गई कगनां ॥ ए देशी ॥ नमो नमो रे जवि
क प्रभुचरणा, मिट जावे सकल दुख मरणा रे ॥ न० ॥ १ ॥ आ
दि अजित सजव हित करणा, अजिनदन सुमति बुद्ध धरणां रे
॥ न० ॥ २ ॥ श्रीपद्म सुपासजी वञ्चरणां, चङ्प्रजजी लढन च
इवरणा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल अतीव दुख हरणा, श्रे
यास वासुपूज्य शरणा रे ॥ न० ॥ ४ ॥ होय विमल जपत जय टरणां,
अनत धरम मेटे जवफिरणां रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शांति कुशु अर
किया न्याय निरणा, मछी मुनिसुव्रतजी स्मरणा रे ॥ न० ॥ ६ ॥ न
मि नेमि पारस करि अहि करुणा, माहावीरजी चरणे शिश धर
णा रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जो दुख हरणां, तो सम
रो प्रभु तारणतरणा रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति स्तवन ॥

॥ अथ देवआश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ नमो नमो रे देव अरिहता, प्रभु शिवरमणीके कंता रे
॥ न० ॥ १ ॥ घनघातिक करम सब हता, सब जाणत केवल
वता रे ॥ न० ॥ २ ॥ जे अतिशयचोतिस सोहता, प्रभु तीन न
वनमें महंता रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक योजन वाणी वागरता,
चार तीरथ आपना करंता रे ॥ न० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख मन तनसें
नमता, सेवा दीजो सदाई जगवता रे ॥ न० ॥ ५ ॥

अथ गुरु आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सतगुरुजी जपो रे मेरे नैया, जे नवजल पार करैया रे
॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी हे नाव खेवैया, परने तारत आप तैरे
या रे ॥ स० ॥ २ ॥ गुण सत्ताविशके धरैया, सत्यमधुर वाणीके उ
झरैया रे ॥ स० ॥ ३ ॥ विषय कपायकी अगन बुझैया, वे तो झा
नको जल बरसैया रे ॥ स० ॥ ४ ॥ गुरु जोगें अनत शिव लैया,
सब सूत्रमें न्याव चेतैया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे गहि
बैयां, सो तो अविचल वास बसैया रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ धर्मरूपी वणाय लो नैया, मानो मानो रे शीख मेरी नैया रे
॥ ध० ॥ १ ॥ संतोषका पाटिया जमैया, कृमाकी मेख लगेया रे ॥
ध० ॥ २ ॥ पंच आश्रव द्वार बुरैयां, करो चाटुवैराग सोहैया रे ॥
ध० ॥ ३ ॥ सतगुरुजी हे चतुर खेलैया, पर तारे उर आप तैरैया
रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ नवोदधिख तरणकी जो चैयां, तिलोकरिख कहे
धर्म गहैया रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ ज्ञान आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ करो ज्ञान दीपक अजवालो, जिणसु मिटत अज्ञानको का
लो रे ॥ क० ॥ १ ॥ पेहेली उघ आलसकु टालो, ठोढो विकथा

रसको प्यालो रे ॥ क० ॥ १ ॥ करो सुगुरु सेव विशालो, सूत्रसधि
सु खोल देवे तालो रे ॥ क० ॥ ३ ॥ कुमति कलेश कपायकुं ये बा
लो, जाणपणा बिना किरिया वेयालो रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोक
रिख कहे ज्ञान गुणिजालो, वेगी लहेगा मुक्तिको मालो रे ॥ क० ॥

॥ अथ सम्यक्त आश्रयी पद प्रारजः ॥

॥ शु० सम्यक्त व्रत रस राचो, जैन येन विना केन सब काचो
रे ॥ शु० ॥ १ ॥ सञ्जा देव गुरु धर्म परख जाचो, खोटो पद्द सो म
त खाचो रे ॥ शु० ॥ २ ॥ नित्यव्रतें जैन शास्त्रकुं बाचो, बली सुणके
लगावो तन आचो रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ इणसुं सिवीजें कालको माचो,
ठूटे अनत जव सरथा साचो रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इण बिना चारी ग
तिमें नाचो, नहीं लुटो कर्मको जाचो रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ तिलोक
रिख कहे समकित माचो, कुमति लता जड टांचो रे ॥ शु० ॥ ६ ॥

॥ अथ चारित्र आश्रयी पद प्रारजः ॥

॥ पालो पालो रे सजमकी करिया, जिणथी जीव अनतहि
तरिया रे ॥ पा० ॥ १ ॥ पच माहाव्रत जावें ठञ्जरिया, रहो पाप
कर्मसू टरिया रे ॥ पा० ॥ २ ॥ पंच आश्रवधारकुं बुरियां, राग द्वे-
ष शत्रु सब चूरिया रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो संजम करणीयकी मरि
या, सो तो चार गतिमांहे फरिया रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ एसो जाण
के सजम आदरिया, सो तो अनत गुणाका हे दरिया रे ॥ पा० ॥
५ ॥ तिलोकरिख कहे परहित धरिया, पुण्यजोगसु मिलि एह वि
रिया रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारजः ॥

॥ तुम तपस्या करो जव प्राणी, शम दम उपशम चित्त आणी
रे ॥ १ ॥ तु० ॥ कर्म धान्य पिसणकुं ए घाणी, मोह अटवीके
आग लगाणी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहंकार पर्वत ड खस्त्राणी, तप

स्या सो वज्र समाणी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ जब ताप बुजावण पाणी,
करे सकल कलेशनी हाणी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे
तप सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मेढो मेढो रे जबिक जन जाली, जिणसुं रहोगे सदाइ खु
शियाली रे ॥ मे० ॥ १ ॥ पेत्ती देवें निज अत्मा वाली, पिठें दू
जाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥ यातो धर्मतरु ठेदन वाली, ज
गमें रीश बढी हे जजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ एसी जाणकें देवणी
नहिं गाली, कृमा जाणजो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ तिलो
करिख कहे कृमा धर्म जाली, गया शिवमंदिर सुविशाली रे ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ अथ मान आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत करो रे चतुर अजिमाना, अत दावे तो परजव जानां
रे ॥ म० ॥ १ ॥ फूल फूले सो देख कुमलाना, जो बध्या सो तो विख
राना रे ॥ म० ॥ २ ॥ थिर नहिं इइ चइ रवि जाना, थिर नही
हे जगमें राजा राणा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ एसी समजकें दिल नरमा
ना, नित गुणिजनके गुण गानां रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे
सुणजो शाहाणा, विनय कियासुं पद निर्वाणा रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ कपट आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ ठोढो ठोढो रे कपटकी कतरणी, या तो धर्म मेराकी ठिन
करणी रे ॥ ठो० ॥ १ ॥ या तो नरकनिगोदकी निसरणी, या तो
धूर्त लोनीके घर घरणी रे ॥ ठो० ॥ २ ॥ या तो अंतरका शय्य जे
सी वरणी, या तो देवे नवोजव झुख अरणी रे ॥ ठो० ॥ ३ ॥
या तो झुख देवावे वेतरणी, या तो शिवपुर सुखकी हरणी रे ॥
ठो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कपट न करणी, जो थाने शिव
बधु वरणी रे ॥ ठो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायाआश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या तो पुण्य जिहां लगे तेरी
रे ॥ म० ॥ १ ॥ जब वित जावे पुण्यकी लहेरी, तब राखि रहेनी
नहि तेरी रे ॥ म० ॥ २ ॥ या तो साथी नहिं ठे किये केरी, ना
ग्य बिना मिले नहिं हेरी रे ॥ म० ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी ग
हेरी, ठेवट रयण अधेरी रे ॥ म० ॥ ४ ॥ या तो ज्युं ज्युं जेलि हो
वे गहेरी, त्युं त्युं तृष्णा वधे बहु तेरी रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जाणो नरक
निगोवकी या सेरी, एसी जाणकें ल्यो तृष्णा र्ये केरी रे ॥ म० ॥ ६ ॥
तिलोकखि कहे उपदेश किया नेरी, इतकी सगत जा शिवसेरी रो ॥ ७ ॥

॥ अथ उपदेशआश्रयी पद पहेलुं प्रारंभः ॥

॥ मानो मानो रे सुयुरुका कहेनां, जिएसैं पावोगा अमर
सुखचेना रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मिथ्या धर्म जाणो सब फेना, खोल
देखो र्ये अंतर नेनां रे ॥ मा० ॥ २ ॥ करो ठकाय जीवकी
जयणा, बोलो मधुरता निरवय वेणां रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ बिनबिया
किसीका नहिं लेणा रे, परत्रिया गिणो मार्ग वेना रे ॥ मा० ॥ ४ ॥
अति तृष्णा करो मति सेणा, चाडि जुगली आल नहिं वेणां रे
॥ मा० ॥ ५ ॥ सज्जम आदरकें परिसह सहेणां, तिलोकखि कहे
प्रभु सरण रहेणा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी पद बीज ॥

॥ जोर नइ रे बटाव जागो जागो, थाने जाणो वेशावर आ
धो रे ॥ जो० ॥ १ ॥ चले सग चतुरको सागो, जिएसु रहे मति
पाठो आधो रे ॥ जा० ॥ २ ॥ ले ले खरची आगे नहिं थागो, जि
एसैं लागे नहिं छु खदाधो रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ पंच उगणि सुमति
करे रागो, वश पहियासु करदेशी नागो रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ तिलोक
खि कहे मोहनिद त्यागो, ठवट ठोढकें शिवपथ लागो रो ॥ जा० ॥ ५ ॥

- ॥ उपदेशी पद त्रीजु ॥

॥ चेतो चेतो रे चतुर जग खोटा, करो धर्मध्यान फल महोटा
रे ॥ चे० ॥ १ ॥ धर्म विना जमेगा बढि दोटा, सहेगा नरक विपे
जम सोटा रे ॥ चे० ॥ २ ॥ नहि मिले पापीने पूरा रोटा, पाणी पि
वणका मिले नहिं लोटा रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ जेलो करे नर धन केइ
कोटा, तोइ तृष्णावत मन टोटा रे ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे
छे लो धर्म उंटा, तो मिट जावेगा जमचोटा रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ काल आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ काटो काटो रे कालकी फांसी, रहो रहो जगतसें उदासी
रे ॥ १ ॥ का० ॥ काल रिपु तुज पर चढ आसी, एसी ठोर नहिं
जहां लुक जासी रे ॥ २ ॥ का० ॥ इइ चइ असुर सुरराशि, जो
उपजे सो सकल विनाशी रे ॥ ३ ॥ का० ॥ तु तो चार दिवसकोहे
वासी, कर्म करेगा जैसी गति पासी रे ॥ ४ ॥ का० ॥ जय मरणको म
नमें विमासी, करो सुरुत सोदा उछासी रे ॥ ५ ॥ का० ॥ जो मो
हनी कर्म खपासी, तिलोकरिख कहे काल नहिं खासी रे ॥ का० ॥ ६ ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ रहो रहो रे धरम धन तसीया, ज्यो रें शिवरमणीका रसि
या रे ॥ १० ॥ १ ॥ राखजो रें मन तनके कसिया, छुइ समकि
तब्रतमें ठसिया रे ॥ १० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन मसिया, ज
विजन सो तो दूर नसिया रे ॥ १० ॥ ३ ॥ काम क्रोध उगोमें जे
फसिया, सो तो अचल झुकानसु चसिया रे ॥ १० ॥ ४ ॥ तिलो
करिख कहे जे धर्म वसिया, सोवे शिवसेजमें उछसिया रे ॥ १० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ चेतो चेतो रे कुटुबके विगारी, जाणो मतलबकी जग यारी
रे ॥ १ ॥ चे० ॥ मात पिता सुत वधव नारी, तुं जाणी रह्यो दि

ल म्हारी रे ॥ १ ॥ चे० ॥ कुटुबी हे कपटके जमारी, करे खुसा
मत उपरसु थारी रे ॥ ३ ॥ चे० ॥ ज्यों पंखी बैठे तरु मारी, मन
माहि सो गरज विचारी रे ॥ ४ ॥ चे० ॥ तिलोकरिख कहे व्यो
धर्मधारी, जो ठतरवा चाहो नवपारी रे ॥ ५ ॥ चे० ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो रें करमका
करजी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मत ड खाना किसीकी मरजी, होणहार
टले नहिं जो सरजी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ कुसगतिकों देयो तुम वर
जी, पाप त्यागो सयारों चित्त लरजी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ मत हो
ना छुवेगारका ये वरजी, विषय कपायकुं देयो तुम तरजी रे ॥ ४ ॥
मा० ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी, करे प्रसुजीसु शिव अरजी रे ५

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो सुगतिकी शोरी
रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मात पिता कुटुंब सब बैरी, जिणसु ममता कखा
डुख केरी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर
तु ममता बहु तेरी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ काचा कुन जैसी कायाकी वै
हरी, ठेवटमें हावेगा राख ठेरी रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ राग द्वेष सर्प
माहा जहेरी, ले वपशमकी जडी ठेरी रे ॥ ५ ॥ मा० ॥ तिलोक
रिख कहे शिख हेरी, पियासुअमृत शिव नेरी रे ॥ ६ ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत थकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी नटके रे
॥ १ ॥ म० ॥ नित अनरु आहारके गटके, बार बार तोय झा
नी गुरु हटके रे ॥ २ ॥ म० ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन नटके,
धरमके कामें दूरो ठटके रे ॥ ३ ॥ म० ॥ वे तो नरककुममाही ल
टके, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ ४ ॥ म० ॥ तिलोकरिख

कह कर्म रज फटके, सो तो वेगा अचल सुख सटके रे ॥ ५ ॥ म० ॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद वीजु ॥

॥ क्यों नूब्यो रे जोवनमें अकही, नवमासा लटक्यो सेरी सक
ही रे ॥ १ ॥ क्यों० ॥ बालपणामें रम्यो ख्याल खखडी, रह्यो जो
वनवयमें ऊकही रे ॥ २ ॥ क्यों० ॥ आयो बुढापो सुजत नहिं अ
खही, जोर पढियासुं पकही लकही रे ॥ ३ ॥ क्यों० ॥ तिलोकरिख कहे
धर्म लेवो पकही, तो पावोगा मुगति फुल पखही रे ॥ ४ ॥ क्यों० ॥

॥ अथ ससार आश्रयी पद प्रारंभ.

॥ सतगुरुजी कहे जग सपनां, करो धर्मध्यान सोहि अपनां रे ॥
॥ स० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान करत नहिं धपनां, पाप करतां तो दि
जमांहे कपनां रे ॥ स० ॥ २ ॥ दान देनां शीलपाल तप तपनां,
छुड़ावनामें दल थपनां रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेही नहिं
हे कोइ थपनां, आखर तो जरूर तुज खपना रे ॥ स० ॥ ४ ॥ सुगुरु
सेवा करत नहिं थपनां, तिलोकरिख कहे प्रभु जपनां रे ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ शिक्षा आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ बार बार सतगुरु समजावे, क्यों तुं कर्म बंध उपावे रे ॥
॥ वा० ॥ १ ॥ जीव हसता हसता जमावे, मोडंतां अति मुशकि
ल थावे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ जो तु आक घतुरा वावे, तो तुं आंव
कहांसु खावे ॥ वा० ॥ ३ ॥ ऊहेर खायकें जिवणो उमावे, तिम
पाप करिने सुख थावे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जैसा बाध्या तेसा उदय
थावे, चारु गतिमांहि सो दुख पावे रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तिलोकरि
ख कहे कर्म उढावे, सो तो शिवपुर वेग सिधावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ कर्म आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ कर्मगति हे अजब जगमाहे, इण सम शत्रु कोइ नाइ रे ॥
॥ क० ॥ १ ॥ कुमरिक तप करियो खलसाइ, मर गयो नरक सात

ल स्हारी रे ॥ ३ ॥ चे० ॥ कुटुंबी हे कपटके नमारी, करे सुखा
मत उपरसु थारी रे ॥ ३ ॥ चे० ॥ ज्यों पंखी वेठे तरु मारी, मन
मांही सो गरज विचारी रे ॥ ४ ॥ चे० ॥ तिलोकरिख कहे ब्यो
धर्मधारी, जो उतरवा चाहो नवपारी रे ॥ ५ ॥ चे० ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो रें करमका
करजी रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मत ड खाना किसीकी मरजी, होणहार
टले नहि जो सरजी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ कुसगतिकों देयो तुम वर
जी, पाप त्यागो सयाणें चित्त लरजी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ मत हो
ना छुवेगारका रें वरजी, विषय कपायकुं देयो तुम तरजी रे ॥ ४ ॥
मा० ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी, करे प्रभुजीसुं शिव अरजी रे ५

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो मुगतिकी शेरी
रे ॥ १ ॥ मा० ॥ मात पिता कुटुंब सब वैरी, जिणसु ममता कखा
डु ख केरी रे ॥ २ ॥ मा० ॥ मायाकी सपना सम छेरी, मत कर
तु ममता बहु तेरी रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ काचा कुन जैसी कायाकी दे
हरी, ठेवटमें हावेगा राख ढेरी रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ राग द्वेष सर्प
माहा जेहेरी, छे ठपशमकी जडी ठेरी रे ॥ ५ ॥ मा० ॥ तिलोक
रिख कहे शिख हेरी, पियासुअमृत शिव नेरी रे ॥ ६ ॥ मा० ॥ इति ॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत अकडे जोवनके मटके, तेरे शिरपर काल वैरी नटके रे
॥ १ ॥ म० ॥ नित अचरु आहारके गटके, बार बार तोय झा
नी गुरु हटके रे ॥ २ ॥ म० ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन नटके,
धरमके कामें दूरो ठटके रे ॥ ३ ॥ म० ॥ वे तो नरककुंममाही ल
टके, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ ४ ॥ म० ॥ तिलोकरिख

जिणमें होवे नहिं धर्म हाणी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ वोलो शुद्ध सत्य
मती वाणी, जिणकी कीर्ति अधिक जग जाणी रे ॥ स० ॥ ४ ॥
तिलोकरिख कहे आगम वाणी, सत्यवादी वरे शिवराणी रे ॥ ५ ॥

॥ अथ अदत्त व्रत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत लेवो रे अदत्त पर जाइ, जिणसु कमी रहे नहिं कांइ रे
॥ म० ॥ १ ॥ जे चोरी तजेगा चित्त चहाइ, कबु फिकर नहिं उ
एतांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ रहे जगमें प्रतीत सवाइ, सतोप समान
सुख नांइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जिसके अनेक विघन टल जाइ, मर
जावे सुरगतके मांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे दत्तव्रत
की वडाइ, जिनशास्त्रमें प्रजु फरमाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलव्रत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सदा पालो रे शीयल सुखदाइ, वोइ नवमें कीर्ति सवाइ रे
॥ स० ॥ १ ॥ चोर शत्रु सो जावे नरमाइ, शीलवतने नमे सुर आ
इ रे ॥ स० ॥ २ ॥ सूत्रप्रश्न व्याकरणके मांइ, वतिस ठपमा प्रजु फ
रमाइ रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सोला उपमा ठोटी वंताइ, ए अद्भुत व्रत
अधिकाइ रे ॥ स० ॥ ४ ॥ विण मनसुद्धि पाले इणतांइ, चोसठ सह
स्र वर्ष सुर जाइ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे धन वणतांइ,
शिल पाले सदा वलसाइ रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ ममत्व आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ त्यागो ममता परिग्रह ड खदाइ, ए तो जगतपति फरमाई
रे ॥ त्या० ॥ १ ॥ सतोपको सुख अधिकाई, देवे तृष्णाकी लाय
बुजाई रे ॥ त्या० ॥ २ ॥ इणमाही जे रह्या मूर्खाइ, सो तो सचे
अति कर्म कमाई रे ॥ त्या० ॥ ३ ॥ लोन गिणो नहिं सयण सगाइ,
वेखो जरत घाढुवल जाई रे ॥ त्या० ॥ ४ ॥ जिम जिम वधे धन
प्रजुताइ, तिम तिम वधे तृष्णा सवाई रे ॥ त्या० ॥ ५ ॥ एसी समज

मी माइ रे ॥ क० ॥ १ ॥ अढीदिन सजम पद पाइ, पुमरीक स
 वर्षसिद्ध जाइ रे ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रनुजी कीकिनी अधिक बुराइ, नो
 सालक पायो सुर प्रनुताइ रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जमाली श्रीवीरका ज
 माइ, करमासु खोटी सरथा आइ रे ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख क
 हे कर्म कसाइ, इनके कोइको मुलानो नाइ रे ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शूरपणा आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ करो करो करमसें दगा, जिणसु पावोगा सुख उत्तगा रे ॥ क०
 ॥ १ ॥ बश कर लो मनकी तरगा, ठोढो विषय कपाय प्रसगा रे
 ॥ क० ॥ २ ॥ राखो चित्त निर्मल जिम गगा, ठोढो पंच प्रमाद
 अमगा रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तप जप करणीमें रहो चगा, मेढो कर्म ब
 धणकी उडगा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे केवल सगा, तरौ
 नवोदधि सरग अथगा रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दयाव्रत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ पालो पालो रे नविक दया माता, इणसु पाउंगा अचल
 सुखशाता रे ॥ पा० ॥ १ ॥ जग प्राणी सब जीवणो चहाता, ड
 ख मरणसें सब थरराता रे ॥ पा० ॥ २ ॥ ऐसें जाणकें होवो ये अ
 नयदाता, कोइ जीवकु न देणी अशाता रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ टले न
 रकनिगोदका खाता, जो रहे दयारस रगराता रे ॥ पा० ॥ ४ ॥
 साठ नाम बताया जगत्राता, ज्यों आराधे सो शिवसुख पाता रे
 ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाता, कोइ हलुकर्मी चि
 त चाता रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ सत्यवचन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सत्य वचन बोलो रे नविप्राणी, सो तो निरवद्य शिवसुख
 दाणी रे ॥ स० ॥ १ ॥ सत्य असत्यको जेद पिठाणी, पिठें बोलो
 वचन छुड़ ठाणी रे ॥ स० ॥ २ ॥ कोमल मृड अमृतसी वाणी,

रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समजो इसमें कबु हासा, ये आसा हे जव
 लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले सजाका उजासा, पड्या
 पाणीके बीच पतासा रे ॥ द० ॥ ३ ॥ जैसा जल मोतीका उकासा,
 तैसा हे इत तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्यु जुणो उंचा उंचा
 आवासा, एक दिन होयगा जंगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल
 अहेडीका नहिं विसवासा, एकदिन देगा सब पर फांसा रे ॥ द०
 ॥ ६ ॥ तजो क्रोध मानका पासा, जिणसु वजत सुजसका त्रासा रे
 ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसु नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा उद्धा
 सा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकुं खुजासा, करो धर्म
 ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारब्ध ॥

॥ सुण चेतन रे, तुम गुणवत् मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो
 सुगुणा रे, तुम धर्म ध्यान नित कर लो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद,
 नवोदधि तर लो ॥ ध्रु० ॥ यो नरनव लीनो नीठ, आरज देश पायो
 ॥ या काया निरोगी धार, उत्तम कुल जायो ॥ तोय सज्जुको मि
 ल्यो जोग, सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधा
 नें ॥ सु० ॥ १ ॥ या वेद औदारिक जाण, उपरसें चंगी ॥ या पलमें
 सुदराकार, पलमें विरगी ॥ या माया हे बादलढाय, सुपन जो जा
 णो ॥ या जोधन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥ २ ॥ ये मात
 पिता सुत प्रात, कुटुंब उर नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरज
 की यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय ले वासो ॥ जावे चठ
 दिशी विखर, दिवस उजासो ॥ सु० ॥ ३ ॥ केइ वाजीगर ज्यों
 वाद, मचावे जाई ॥ सुम सुमीको सुण शब्द, खलक छुड आइ ॥
 होय तमासो वध, सवि जग जावे ॥ वाजीगर निज ठाम, अकेलो
 जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारु महारु कर रह्यो, जीव अहानी ॥

के टाले मूर्च्छाताई, तिलोकरिख कहे सो शिव पाई रे ॥ त्या० ॥ ५ ॥

॥ अथ रात्रिजोजनव्रत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ मत करोरे जोजन निशिमाहि, इव्यजावे अणुकंपा जाइ रे ॥

॥ म० ॥ १ ॥ त्रस जीव थालीमाहे पडे थाइ, सुणे नहिं कबु
थधाराके मांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ जूनकृणें जलोदर थाइ, विंदुषी
कपाल सड जाइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ माखी नकृण वमण वरसाइ,
इत्यादिक ड ख इण नवमांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ जो त्यागे निशिजो
न तांइ, संवहरमें ठमासी तपसाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख
कहे त्यागो जाइ वाइ, इव्यजावें फल अति सुंख वाइ रे ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ अथ ड कृत आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ ठोढो ठोढो रे ड कृत ड खदानी, इक्कुं कुमति रूप पट्टराणी
रे ॥ ठो० ॥ १ ॥ नरक निगोदमें सेज विठाणी, जिहा न मिजे अ
न्न ऊर पाणी रे ॥ ठो० ॥ २ ॥ करे सुख सपत्ति जस हाणी, जम वे
वे अति त्रास पिळे घाणी रे ॥ ठो० ॥ ३ ॥ ड ख पावे घारी गतमे
प्राणी, सो तो जाणत केवल नाणी रे ॥ ठो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख
कहे न्याय पिठाणी, सो तो नविजनके मन मानी रे ॥ ठो० ॥ ५ ॥

॥ अथ मन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ चित्त चंचल चपल थिर करणां, नित धरम शुक्ल ध्यान धर
णारे ॥ चि० ॥ १ ॥ तिन दम तिन शल्य परिहरनां, पंचपरमेष्ठी
का गुण सो उच्चरना रे ॥ चि० ॥ २ ॥ पंच आश्रव पापसेती नर
ण, आठ कर्मशत्रुसेंती लरना रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ ग्रहो मुनिधर्म
दश चव सरणा, बार जावना तप अनुसरणा रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ ति
लोकरिख कहे नवोदधि तरणा, धारो सुगुरु सुदेवका चरणा रे ॥ ५ ॥

॥ अथ आनखा आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ दम जमका नहि विसवासा, क्यो करे मेरी तेरी धन आशा

रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समजो इसमें कबु हासा, ये आसा हे जव
 लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले सजाका उजासा, पढ्या
 पाणीके धीच पतासा रे ॥ द० ॥ ३ ॥ जैसा जल मोतीका उकासा,
 तैसा हे इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्यु जुणे उंचा उंचा
 आवासा, एक दिन होयगा जगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल
 अहेडीका नहिं विसवासा, एकदिन देगा सब पर फासा रे ॥ द०
 ॥ ६ ॥ तजो क्रोध मानका पासा, जिणसु वजत सुजसका त्रासा रे
 ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसु नर सुर सबही त्रासा, एक सिद्ध सदा उद्गा
 सा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सबकुं खुजासा, करो धर्म
 ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ सुण चेतन रे, तुम गुणवत मुनिकों सेवो ॥ ए वेशी ॥ सुणो
 सुगुणा रे, तुम धर्म ध्यान नित कर जो ॥ तुम त्यागो पंच प्रमाद,
 नवोदधि तर जो ॥ ध्रु० ॥ यो नरनव लीनो नीत, आरज वेश पायो
 ॥ या काया निरोगी धार, वत्तम कुल जायो ॥ तोय सजुस्को मि
 यो जोग, सूत्र सुण कानें ॥ तुं मत कर आलस धार, शुद्ध सरधा
 रें ॥ सु० ॥ १ ॥ या वेह औदारिक जाण, ठपरसें चंगी ॥ या पलमें
 उदराकार, पलमें विरंगी ॥ या माया हे बादलगाय, सुपन जो जा
 यो ॥ या जोवन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥ २ ॥ ये मात
 पिता सुत प्रात, कुटुब उर नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरज
 की यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पंखेरु, आय छे वासो ॥ जावे चम
 विशी विखर, दिवस उजासो ॥ सु० ॥ ३ ॥ केइ वाजीगर ज्यों
 वाद, मचावे जाई ॥ रुम रुमीको सुण शब्द, खलक छुट आइ ॥
 होय तमासो वध, सवि जग जावे ॥ वाजीगर निज राम, अकेलो
 जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारुं महारु कर रह्यो, जीव अज्ञानी ॥

पण ठेवट जावे ठोढ, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट,
 जे जावे ताणी ॥ इम जाणीने चे तो चतुर, मानो प्रभु वाणी ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ उगणीर्षे अढतीस जेठ, छुद्द ठठ जाणो ॥ ए रस्तापुरके
 माय, कियो वखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेतें, सोइ सुख पावे ॥
 पावे अमर विमान, मुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हारे मतराचे रे ॥ संसार
 हे सपन माया, मत राचे रे ॥ हाडकाको पिंजरो ने चामडासु
 मढियो, काचाकुन जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन
 सपदा रे पायो, विणस जाय जैसी बादल ढाया ॥ म० ॥ २ ॥
 जोवन रंग पतंग नदीपुरसों, ढलती जाणजो दूपेरकी ढाया ॥
 म० ॥ ३ ॥ आयो बुढापो छुढापो रे आयो, सामा बोलण
 लागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥ काल वेताल किया धाक तिड्डु लो
 कमें, इड चड सब अरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी डुखी बाल
 छुवान वृद्धनरने, ठोढे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पि
 ता तिरिया सुत वधव, आवर देवे मतलब आया ॥ म० ॥ ७ ॥
 गरजविना कोइ तार नहि पूढे, मूरखपणे क्यों तु लजचाया ॥
 म० ॥ ८ ॥ अकेलो तु आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत
 का सोदा रें कर लो जाया ॥ म० ॥ ९ ॥ धर्म बिना तु न
 टक्यो चारु गतिमें, जनम मरण वड्डु डुख पाया ॥ म० ॥ १० ॥
 दान शियल तप जावना रे जावो, तिलोकरिख कहे अवसर
 आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद वीछ ॥

॥ देशी एहीज ॥ मानो मानो रे, हारे ॥ मा० ॥ चतुर सजुरु वाणी,
 मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरथो, तीन रतन ग्रहो सु

खदाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप कर लो,
 आव करम करो धूल धाणी ॥ मा० ॥ २ ॥ क्रोध कपट अ
 हंकार तज दीजो, तृष्णाकी लाय बुझावो प्राणी ॥ मा० ॥ ३ ॥
 प्राणातिपात फूव चोरी नहि करिये, पालो शील संजम समता
 आणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ णिन णिनमांहे थारो ठीजे रे आव
 खो, खूट जाय जैसो अजलीको पाणी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन
 धन जोवन थिर मत जाणजो, मोह ममता कखा ड खखाणी
 ॥ मा० ॥ ६ ॥ उगणिसें सेंतिस माघणुदि तेरश, तिलोकरिख
 कहे हित आणी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धन आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ देशी एहीज ॥ करे कायकु, हारे ॥ क० ॥ हाय माया नहिं
 साथी ॥ क० ॥ एकलोही आयो ने एकलोही जावसी, सगे को
 डी नहि आवे सुगुणा ॥ क० ॥ १ ॥ दामके काम फिरे देश पर
 देशमें, पुष्यविना आवे रीतो सुगुणा ॥ क० ॥ २ ॥ कूड कपटसुं
 तो माया करे एकठी, जिणमांहि सातपांती पडे सुगुणा ॥ क०
 ॥ ३ ॥ पाप कमाझे जावे मरी एकिलो, धनको मालक उर हो
 वे सुगुणा ॥ क० ॥ ४ ॥ नरकमादे प्राणी ड ख सहे एकिलो,
 कुटुबी सो आमा नहिं आवे सुगुणा ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख
 कहे हाय लाय ढोड वो, समतासु शिवपुर पावे सुगुणा ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ देशी एहीज ॥ जागो जागो रे, हारे ॥ जा० ॥ विदेशी थाने दूरो
 जाणो ॥ जा० ॥ काल अनतको तु सुतो मोहनिदमें, कायासा न
 गरमाहि बस्यो राणो ॥ १ ॥ जा० ॥ कामक्रोध मद उग लारें पडिया,
 तपसजमको छूटे ठे नाणो ॥ २ ॥ जा० ॥ चार तीरथको सागर मो
 टको, धर्मरूपि मोटी जहाज माणो ॥ ३ ॥ जा० ॥ ज्ञान दरिसण चा

पण ठेवट जावे ठोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट,
 वे जावे ताणी ॥ इम जाणीने चे तो चतुर, मानो प्रजु वाणी ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ उंगणीझें अढतीस जेव, छुट्ट ठव जाणो ॥ ए रस्तापुरके
 माय, कियो वखाणो ॥ तिलोकरिख कहे चेतें, सोइ सुख पावे ॥
 पावे अमर विमान, सुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारब्ध ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हारे मतराचे रे ॥ ससार
 हे सपन माया, मत राचे रे ॥ हाडकाको पिंजरो ने चामढासु
 मढियो, काचाकुन जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन
 सपदा रे पायो, विणस जाय जैसी वादल ढाया ॥ म० ॥ २ ॥
 जोवन रंग पतंग नदीपुरसो, ढलती जाणजो दूपेरकी ढाया ॥
 म० ॥ ३ ॥ आयो बुढापो कुढापो रे आयो, सामा बोलण
 जागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥ काल वेताल किया धाक तिहु लो
 कमें, इड चड सब थरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी डुखी बाल
 छुवान वृद्धनरने, ठोडे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पि
 ता तिरिया सुत वधव, आदर देवे मतलब आया ॥ म० ॥ ७ ॥
 गरजविना कोइ सार नहिं पूढे, मूरखपणे क्यों तु ललचाया ॥
 म० ॥ ८ ॥ अकेलो तु आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत
 का सोदा र्थे कर लो जाया ॥ म० ॥ ९ ॥ धर्म विना तु न
 टक्यो चारु गतिमें, जनम मरण वहु डख पाया ॥ म० ॥ १० ॥
 दान शियल तप जावना रे जावो, तिलोकरिख कहे अवसर
 आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद वीछु ॥

॥ देशी एहीज ॥ मानो मानो रे, हारे ॥ मा० ॥ चतुर सज्जु वाणी,
 मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरधो, तीन रतन म्हाओ सु

की सरधा, जैन धरम सत्य मन जायो ॥ चे० ॥ १५ ॥ वा
टा साटे नरजव मतिहारो, वासी ठुकढामें क्यु तुं लजचायो ॥
चे० ॥ १६ ॥ तन धन जोवन कुदुब कवीलो, अथिर सकल
प्रभु दरसायो ॥ चे० ॥ १७ ॥ काल वेरी थारी लारा रे पढि
यो, सकल लोक इणसुं थररायो ॥ चे० ॥ १८ ॥ धर्मध्यान
सुकुत कर लीज्यो, जो शिवपुर सुख दोव चहायो ॥ चे० ॥
॥ १९ ॥ अण्णिर्णो सेंतिश माघण्णुदि तेरश, तिलोकरिख यों उप
देश गायो ॥ चे० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ वीश विहरमाननी लावणी ॥

॥ दीनदयाल रुपाल, करुणा नमारी ॥ क० ॥ जय विहरमा
न जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमधर स्वामि, सदा सुखका
री ॥ स० ॥ जय युग्मधर जसवत, चरण वलिहारी ॥ बाढुजिणद रु
पाल, करुणा नमारी ॥ क० ॥ श्री सुषाढु जगदीश, परम पद
धारी ॥ सुजात प्रभु घनघाती, कर्म कीया ठारी ॥ क० ॥ स्वयं
प्रज्ञ वीतराग, ममता विमारी ॥ रिखजानन आनद, करे नर नारी ॥
क० ॥ जय विहरमान माहाराज, धर्म अधिकारी ॥ १ ॥ अनत वीरज
जगनाथ, तज्या जगनाता ॥ त० ॥ श्री सूर प्रभु सुविख्यात, करो
सुखशाता ॥ विशाल प्रभु सुविशाल, त्रिजग के प्राप्ता ॥ त्रि० ॥ श्रीव
ज्जधर तप वज्र, कर्म के घाता ॥ चज्ञानन सुखकद, दर्श चित्त चा
ता ॥ दर्श० ॥ चड्ढाढु कर्मराढु, दहाया खाता ॥ कियो कर्मसें जग,
जुजग प्रभु नारी ॥ छ० ॥ ज० ॥ १ ॥ ईश्वर त्रिजग ईश, मेरे मन जावे
॥ मे० ॥ श्री नेमीश्वरजिन ध्यान, करतां दुख जावे ॥ वीरसेन करे
केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ माहानद करे नद, विघनकुं दहा
वे ॥ देवजसा करे सेव, रिद सिद आवे ॥ रि० ॥ अजित वीरज
निजपद, देत नज जावे ॥ अघन्यपदे वर्तमान, जिनद उपगारी ॥

रित्र तप जपको, नर लो-हरखसु करियाणो ॥ ४ ॥ जा० ॥ सत
गुरु खेवटीया मांदि जाणजो, जला परिणामको पवन आणो
॥ ५ ॥ जा० ॥ मोक्षरूपी पाटणमें वेगसुं सिधावणो, सिद्ध
पारी ज्याको सदा थाणो ॥ ६ ॥ जा० ॥ तिलोरिख कहे मा
ल खप जावसी, कर लो दुशियारी पद निर्वाणो ॥ ७ ॥ जा० ॥

॥ अथ नरकहु ख वर्णन पद प्रारंभ ॥

॥ चेतो चेतो रे, हारे चेतो चेतो रे, धरमबिना हु ख पायो ॥
चेतो० ॥ पाप करीने जीवनरकमांही उपज्यो, अनत हु ख देखी
गनरायो ॥ चे० ॥ १ ॥ जम अरडाट सुणिने चल आवे, लेइ तर
वार तिहां छटकायो ॥ चे० ॥ २ ॥ जूख लागी जव तिणनांही त
नको, मास काट काट कर खवायो ॥ चे० ॥ ३ ॥ तृषा लागी जव
जम देव आयने, तांवा ठकाल कर पाणी पायो ॥ चे० ॥ ४ ॥
गरमि लागी जव जवरीसु पकडी, कूड सामली तलें लटकायो
॥ चे० ॥ ५ ॥ टुट टुट कायापर पड़े रे पानहां, टुक टुक डुवो अ
ति गनरायो ॥ चे० ॥ ६ ॥ पाय पकडकें ठगाल्यो रे गगनमें, ऐस्यो
त्रिशूल माहा हु ख आयो ॥ चे० ॥ ७ ॥ अणठाण्या जलमांदि
घणो रे नावतो, नदी बेतरणीमाही ठटकायो ॥ चे० ॥ ८ ॥
पराइ तिरियाने प्यारी करि मानतो, लालथजो करी चपकायो ॥
चे० ॥ ९ ॥ दारु मास बिना घडि नहि चालतो, अगनिका
कुममाहि खुवकायो ॥ चे० ॥ १० ॥ नरकमाहि हु ख सह्या रे
अनत थें, पल सागरथिति थररायो ॥ चे० ॥ ११ ॥ तिहांथी म
रीने तिरजच गति उपज्यो, जन्म मरण जयो हु ख कायो ॥ चे०
॥ १२ ॥ नीट नीट कर नर नव पायो, देश आरज उख कुर्जे
जायो ॥ चे० ॥ १३ ॥ दीर्घ आठखो ने पूरण इडि, काया निरो
गी पोतें पुण्य लायो ॥ चे० ॥ १४ ॥ सतगुरु जोग मिय्यो सूत्र

जगतारक अणसण गया ॥ वदि तेरश नक्षत्र रेवती, ज्येष्ठ मास
में मुक्ति लही ॥ अजर अमर अविकार निरजन, ड खचंजन वि
दे आप सही ॥ तिलोकरिख कहे तारो मुऊकुं, अर्ज करुं नित
शिर नामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ देशी तेहीज ॥ नरपति सुरपति नमे जिनोकु, ध्यान धरे हे
साधु सती ॥ जग उद्धारण समरो साहिव, महावीर त्रिजगतपति
॥ ए टेक ॥ वीतनय पाटणके अदर, नाम उदायिन था राजा ॥
शूरवीर माहाधीर जोरावर, सोला देशका शिरताजा ॥ मुकुट बंध
दश राजा जिनकी, सेवा करता हर्ष धरी ॥ पद्मावती नामें पट्ट
राणी, शील रूप गुण प्रेम जरी ॥ परजाकु फरजदसी पाले, दिन
दिन चढती पुण्यरति ॥ ज० ॥ १ ॥ वर्द्धमान जगनाथ पधारे, बढ
न गये राजा चलिकें ॥ धर्मकथा प्रसुजी फरमाइ, दूनीमें मम
त ठलके ॥ विन मतलबसें कोइ न किस्का, जग माया हे स्वप्ने
ज्यों ॥ इस्कों ढोड कर धर्म आराधो, सुणकें लागा नृप कपनें ज्यों ॥
प्रसुसु कहे में सजम लवंगा, पुत्रकु दे कें राज ह्दिति ॥ जग०
॥ २ ॥ पीठें जोग में लवंगा तुमपें, जेज करो मत लीगारा ॥ राज
में जाता सोचे दिलमें, एकी पुत्र मुऊ अति प्यारा ॥ राज करेगा
नरक पड़ेगा, ड ख पावेगा वोत सही ॥ इसी सबव जाणेज रा
ज दठ, सला दिलमें यो राजा उही ॥ केशी नाम जाणेज राज दे,
नूप नया निर्भय जति ॥ ज० ॥ ३ ॥ पुत्र विचार किया दिल अद
र, मेरेमें क्या एव जरी ॥ क्यु नहि दिया राजठत्र मुऊ, दिलमें
चिता बद्धत करी ॥ रोप जराकें गया सो चपा, मासी घातके
पास चली ॥ वाराव्रत वो पाले निर्मल, सो मुनि उपर छेप बली ॥
अव सुण जो मुनिवरकी किरिया, तप सजममें अधिक रति ॥ ज०

जि०॥ ज०॥३॥ धनुष्यपांचगें प्रमाण, प्रजुजीकी काया ॥ प्र० ॥
 लक्ष चोराशी पूरव, आयु फरमाया ॥ थाप्यां हे तीरथ चार, न
 विक मन जाया ॥ ज० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥
 में अधम वधारण विरुद्ध, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ 'तिलोकरिख यें
 जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो नवपार, अरज अव
 धारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिनाथ जिन लावणी ॥

॥ अगडद अगडद ॥ ए देशी ॥ प्रजु तुम विण में नम्यो जगतमें,
 अव द्यो सुख सपति स्वामी ॥ शांति जिनेश्वर शांति करो मोय,
 विधन हरण अतरजामी ॥ पाव्यो पारेवो मेघरथ नृपजव, गोत्र
 तीर्थकर बाध्यो जिहा ॥ सर्वार्थ सिद्ध गये सयम लेकर, स्थिति
 तेत्रिश सागरकी तिहां ॥ हथिणापुर विश्वसेन पट्टराणी, अधिरा
 कूखे जन्म जियो ॥ वे पदवी उपराजी पुण्यसें, मरकी रोग प्रभु दूर
 कियो ॥ जस फेल्यो तव सारे देशमें, परजा पण शांता पामी ॥
 शां० ॥ १ ॥ पचिश पचिश हजार वर्षे लग, कुंअर राज चक्रव
 र्त्ती ॥ एक हजार पुरुष सर्गे प्रजु, सजम लीनो झूज मती ॥
 एक वरस ठगस्थ पणामें, सह्या परिसद जिनराया ॥ घनघा
 तिक चउ कर्म काटर्क, श्रीजिनवर केवल पाया ॥ वियो उपदेश
 नविक जन तारण, धन जगवत्सल शिवगामी ॥ शां० ॥ २ ॥ पञ्ची
 स सहस्र वर्षमें एक कम, केवल पदवी दीपाई ॥ उत्तिस गणधर
 हुवे नाथके, वासठ सहस्र जये मुनिराई ॥ एकशठ हजार उर ठगे
 थार्जका, एक लक्ष नेबु हजार ॥ जये आवक एकविश गुण पूरण,
 वाराव्रत धारणद्वारा ॥ तिन लक्ष ज्याण सहस्र आविका, कर
 णीमें कुठ नहि स्वामी ॥ शां० ॥ ३ ॥ लक्ष वर्षको सर्वे आयु
 खो, जिन मारग हृद दीपाया ॥ समेतशिखर पर्वत पर चढकें,

रेभर, चोत्तिस अतिशय करि ठाजे ॥ सकल कर्म जय नर्म मिटा
 या, वाणी पैतिस ज्यों धन गाजे ॥ पाखमी बंम अफम करे नहिं,
 जगे शीयाल ज्यों सिद्ध देखी ॥ अपरपार महिमा जिनवरकी, होये
 खुशी नवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृ
 हीकुं आया ॥ धन धनो मुनिराज जाऊ सम, सब मुनिवरमें सर
 साया ॥ ४० ॥ १ ॥ बागवान दिल हरख आनकें, कहता श्रेणिक राज
 नके ॥ पुण्य उदय प्रभु बागमें आये, सग बहुत मुनि है उनके ॥
 विदा दे कें चले सज असवारी, वदना कर वेठे सामे ॥ प्रजुजी दे
 उपदेश सनामें, पूठे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुज दीनदयाल
 कृपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ४० ॥ २ ॥ चउदे सहस्र
 मुनि सग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेतज हे कोन
 इनोमें, करणीमें ॥ ५ करकारा ॥ प्रजुजी कहे सब मोतीमाल सम, स
 जम करणी दुशियारा ॥ ५ कर ५ कर कार सकलमें, धनो मुनिवर
 अधिकारा ॥ नाम ठाम करणीका परसन, पूठे श्रेणिक कमाया ॥
 ४० ॥ ३ ॥ काकदी नगरीके अंदर, गाथा पतणी नडा नामें ॥ ध
 नो सुत गुणवत विचक्षण, बोंतेर कला जोवन पामे ॥ वत्तिस ल
 ढकी नूपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ वत्तिस वत्तिस जिनसा
 दायजे, सब एक सो वाणव आइ ॥ पडे नाटक धुंकार महेलमें,
 नोग नोगवे मन चाया ॥ ४० ॥ ४ ॥ एक दिन त्रिशलानंद दिवाकर,
 काकदी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लोक सब, श्री जिन
 दरिसणकुं धाया ॥ धनो शैठ पण आया उलट धर, वदणा कर वेठे
 आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग हे जगताइ ॥
 राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी सपत माया ॥ ४०
 ॥ ५ ॥ तन धन जोवन सर्व अधिर है, पुजल शोना हे सारी
 ॥ मात पिता उर कुटुब कबीला, मतलबकी जगमें यारी ॥ त्रा
 ण शरण नहिं मरण रोगमें, इस्में कुठ नहिं हे शका ॥ काच

॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरंतर, अरस निरस तुष्ट आहार
करे ॥ अग्यारा अंग कंठाग्र कर कें, आज्ञा छे जनपद विचरे ॥
विहार करतां सो आया सोही पुर, केशी राजा दिल बहेम जया ॥
डुआइ फेराइ पुरमें साधुकु, उतरने मत देनां यहा ॥ जो उतारेमा
इनकु घर अवर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुजकार
एक था नवि प्राणी, दिल अंदर विचार कीया ॥ राजा रूठा छेगा
गद्दा, नाम्ना राखका ढगरीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी, क्या कर छे
राजा मेरा ॥ एसी समज कर दिनि हे आज्ञा, मुनिवर आकर ज
हां उहेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अह्नी नहिं कबु जिन
स उती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजदुकीमसु राजा कहे तुम, जहेर देनां
औपथ माइ ॥ दवा लगे नहिंफिर जीवणकी, ऐसा काम करो जा
इ ॥ ऐसा डुकुम उन मान लिया ऊंर, साधुकु दिया जहेर माहा ॥
दवा छेतेही नइ रिख दीकत, रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर स
मता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥ ७ ॥ लहेने
वाला माग लहेनां, आनाकानी काम नही ॥ दे दिल साफी ढील
करे मत, ध्याया छुकल ध्यान सही ॥ पाय केवल ज्ञान मुनीश्वर,
मुक्ति नगरमें रुका दिया ॥ जय जय बोलो उनकी नइया, शमद
म रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन, सुख
अनत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥ ८ ॥ समकेती सुर दिल घुसे न
राणे, बिन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकु जहेर हलाहल,
प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दृष्टण पट्टण, वदी की
या डख पावत हे ॥ एसी दिलमें समजो सृगुणा, तिलोकरिख
वरसावत हे ॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म
अति ॥ ज० ॥ ९ ॥ इति उदायिन राजाकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ सोल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सु

रेश्वर, चोत्तिस अतिशय करि ठाजे ॥ सकल कर्म जय नर्म मिटा
 या, वाणी पैतिस ज्यों धन गाजे ॥ पाखमी बंम अफंम करे नहिं,
 जगे शीयाल ज्यों सिंह देखी ॥ अपरपार महिमा जिनवरकी, होये
 खुशी नवजन पेखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृ
 हीकुं आया ॥ धन धनो मुनिराज जाऊ सम, सब मुनिवरमें सर
 साया ॥ ध० ॥ १ ॥ वागवान बिल हरख आनकें, कहैता श्रेणिक राज
 नके ॥ पुण्य उदय प्रभु वागमें आये, सग बहुत मुनि हे उनके ॥
 विदा दे कें चले सज असवारी, वदना कर वेठे सामे ॥ प्रजुजी दे
 उपदेश सनामें, पूठे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुज दीनदयाल
 ठपा कर, तुम सब जाणक जगराया ॥ ध० ॥ २ ॥ चउदे सहस्र
 मुनि सग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजमेतज हे कोन
 इनोमें, करणीमें ड करकारा ॥ प्रजुजी कहे सब मोतीमाल सम, सं
 जम करणी दुशियारा ॥ ड कर ड कर कार सकलमें, धनो मुनिवर
 अधिकारा ॥ नाम ठाम करणीका परसन, पूठे श्रेणिक कमाया ॥
 ध० ॥ ३ ॥ काकदी नगरीके अंदर, गाथा पतणी जडा नामें ॥ ध
 नो सुत गुणवत विचक्षण, बोंतेर कला जोवन पामे ॥ बत्तिस ल
 डकी नूपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा
 दायजे, सब एक सो बाणव आइ ॥ पढे नाटक धुंकार महेजमें,
 जोग जोगवे मन चाया ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक दिन त्रिशलानव विवाकर,
 काकदी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लोक सब, श्री जिन
 दरिसणकुं धाया ॥ धनो शेर पण आया उलट धर, वदणा कर वेठे
 आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग हे जगताइ ॥
 राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी सपत माया ॥ ध०
 ॥ ५ ॥ तन धन जोवन सर्व अथिर हे, पुजल शोना हे सारी
 ॥ मात पिता ऊर कुटुब कबीला, मतलवकी जगमें यारी ॥ त्रा
 ण शरण नहिं मरण रोगमें, इस्में कुठ नहिं हे शका ॥ काच

॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरतर, अरस निरस तुष्ट आधार
करे ॥ अग्यारा अग कठाग्र कर कें, आझा छे जनपद विचरे ॥
विहार करतां सो आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम नया ॥
उआइ फेराइ पुरमें साधुकु, उतरने मत वेनां यहा ॥ जो उतारेगा
इनकु घर अदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुनकार
एक था नवि प्राणी, दिल अदर विचार कीया ॥ राजा रूठा लेगा
गद्दा, नामा राखका ढग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी देगी, क्या कर छे
राजा मेरा ॥ एसी समज कर दिनि दे आझा, मुनिवर आकर ज
हां वहेरा ॥ राजा चुन कर चुप रहा दिल, अष्टी नहिं कबु जिन
स बती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजदकीमसु राजा कहे तुम, जहेर वेनां
औपध माइ ॥ दवा लगे नहिंफिर जीवणकी, ऐसा काम करो ना
इ ॥ ऐसा दुकुम छन मान लिया ऊं, साधुकु दिया जहेर माहा ॥
दवा लेतेही नइ रिख दीकत, रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ मुनिवर स
मता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥ ७ ॥ लहेने
चाला माग लहेनां, आनाकानी काम नहीं ॥ दे दिल साफी ढील
करे मत, आया शुक्ल ध्यान सही ॥ पाय केवल हान मुनीश्वर,
मुक्ति नगरमें रुका दिया ॥ जय जय घोलो छनकी नइया, शमद
म रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन, सुख
अनत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥ ८ ॥ समकेती सुर दिल घुसे न
राणे, तिन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया मुनिवरकु जहेर हलाहल,
प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दष्टण पष्टण, बदी की
या इख पावत दे ॥ एसी दिलमें समजो सुगुणा, तिलोकरिख
दरसावत दे ॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाळे धर्म
अति ॥ ज० ॥ ९ ॥ इति उदायिन राजाकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ सोल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सु ॥

पण निर्वल नर उर, इण नवकी चाहत शाती ॥ परनवकी नहि
 चाहत जिसके, सो सजमसुं थरराता ॥ गुरवीरकु सहज हे सयम,
 जगका जूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायक
 ने दरसाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ सवाल जवाब जये मा वेटाके, अधिक
 थकी आझा दीनी ॥ वहुत मोहव उर चलट जावसें, धनाने दी
 झा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रजुजीसुं, जावजीव ठठ तप धा
 रुं ॥ पारणे आंवल आधार नाखतो, मिले तो लवं पारणा सा
 रु ॥ नगवत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय माह्या ॥
 ५० ॥ १६ ॥ चढते जाव उर सम परिणामें, तप धायो डकरकारी ॥
 कोई दिन आधार मिले नहिं मुनिकु, कोई दिन नहिं मिलता वा
 री ॥ सूका सूखा तन जया चूखसें, लोही मास सब सूकाणो ॥
 काचा तुवा सो सीस मुनिकों, नेत्र प्रांत तारा जाणो ॥ वना क
 डेला सो पेट ज्यु दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १७ ॥
 अबपेसी ज्यु नासिका रिखकी, काचरी ढाल ज्युं कान कया ॥ ढीं
 क पखी ज्यु जया वरसे, सूका सरप ज्यों वदन जया ॥ काक पाव
 ज्यु पावकी पिंमी, आगली सूकी ज्यों मुगफली ॥ न्यारा न्यारा
 हाड दीसे सब, अलग अलग सोखे पसली ॥ सकल खुलासा हे
 शास्तरमें, श्री मुख सादेव फरमाया ॥ ध० ॥ १८ ॥ कोयलाति
 क उर एरम लकडको, चलतो गाढो वजे जैसें ॥ ठठतां ठठतां
 हालतां चलतां, मुनिके हाड वजे तैसें ॥ तप तेजसें पुष्ट जया मु
 नि, निर्वल वहुत जये तनमें ॥ हिरते फिरते शब्द बोलते, सुण
 ते खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य धलसें काम करे सब, जाव सजम
 निश्चल ठाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ श्रेणिक सुणी द्वांवाल मुनिका, प्रभु
 कु वदे शिर नामी ॥ धन्या मुनिके पास जायकें, कहे तुम धन थं
 तरे जामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीमें कुठ न
 हि स्वामी ॥ ठता जोग ठटकाय दिया सब, ड कर तप किरिया

की शीशी फूटे पलकमें, मत मगरूर करे अंगका ॥ धरम ध्या
 न दोइ हे तुऊ सगी, जग सब सुपनेकी माया ॥ ध० ॥ ५ ॥
 काम क्रोध मद राग द्वेष बल, सकल करमके बधन हे ॥ चेत
 नकु वेहाल करे हे, चार गति डुख फदन हे ॥ जबलों जरा
 व्याधि नहि आवे, इडिया बल घटे तेरा ॥ जिस पेहले दुशिया
 र होय कर, धरम ध्यान करलो गहेरा ॥ शिवसुखकी जो चहाय
 तुमारे, ए कहेणी मानो जाया ॥ ध० ॥ ७ ॥ धनो शेर वैराग आ
 एविल, कहे साहिवसु शिर नामी ॥ आप कही सो हे सब
 सच्ची, में सजम लेवणकामी ॥ जननीकी आझा ले आव, प्रजु
 कहे सुख तुम तांइ ॥ जेज करो मत धर्म काममें, गइ पलसो
 आवे नांही ॥ वदणा कर चल आया मातपें, आझा मागे
 बलसाया ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुत्र सवाल सुणी ततक्षण सा, मूर्छा
 खाय पही धरती ॥ दासी मिल कर करी सचेतन, आंखो बुं
 दनसें जरती ॥ कहे पुत्रकु सजम किरिया, डुर्जन हे तुऊकुं
 नाइ ॥ बतिस तरुणी लघु वयें सारी, हाल जाये मत बटकाइ ॥
 मेरे पीठें तुऊ वृद्ध वय आयां, फिर सजम लीजें जाया ॥ ध०
 ॥ ९ ॥ खड्ग धार ठर ठुरी पान पर, चलणा डुप्कर अधिकाइ ॥
 जोइ चणा मोम दातें चावणा, बेलुकवल नहिं सरसाइ ॥ पवनसु
 कोथजो जरणो जैसैं, मेरु तोलणो कठिणाइ ॥ गंगा नदीकी धार
 पकड कर, चहना जैसैं गगनमाइ ॥ एसे सजम डु कर डु कर, तेरी
 हे कोमल काया ॥ ध० ॥ १० ॥ जननीका सवाल समज कर,
 धनो कहे सुणरी माइ ॥ नारी क्यारी नरक कुमकी, फल किंया
 कसी वरसाइ ॥ काल जोरावर तीन लोकमे, ठोडे नही ए किस
 ताइ ॥ कोण वखत ठर कवण योगसैं, पहेजा पीठें खबर नाइ ॥
 मेरेत ऊट दे दे आझा, जनम मरणसैं गजराया ॥ ध० ॥ ११ ॥
 सजम मारग डु कर डु कर, इस्में फरक नहि माता ॥ कायर रु

पण निर्वल नर उर, इण जवकी चाहत शाता ॥ परजवकी नहि
 चाहत जिसके, सो सजमसुं थरराता ॥ शूरवीरकुं सहज हे संयम,
 जगका जूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायक
 ने दरसाया ॥ ध० ॥ ११ ॥ सवाल जवाव जये मा वेटाके, अधिक
 थकी आझा दीनी ॥ वहुत मोहवे उर चलट जावसें, धनाने दी
 द्हा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रजुजीसुं, जावजीव ठठ तप धा
 रु ॥ पारणे आविल आहार नाखतो, मिले तो लव पारणा सा
 रु ॥ जगवत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय माह्या ॥
 ध० ॥ १२ ॥ चढते जाव उर सम परिणामें, तप धाखो डकरकारी ॥
 कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकु, कोई दिन नहिं मिलता वा
 री ॥ सूका जूवा तन जया नूखसें, लोही मांस सब सूकाणो ॥
 काचा तुवा सो सीस मुनिकों, नेत्र प्रांत तारा जाणो ॥ वंमा क
 डेला सो पेट ज्युं दीखे, रसना पान जो सूकाया ॥ ध० ॥ १४ ॥
 अवपेसी ज्यु नासिका रिखकी, काचरी ढाल ज्युं कान कया ॥ ढों
 क पंखी ज्यु जया बरसे, सूका सरप ज्यों बदन जया ॥ काक पाव
 ज्यु पावकी पिंमी, आगली सूकी ज्यों मुंगफली ॥ न्यारा न्यारा
 दाड दीसे सब, अलग अलग सोले पसली ॥ सकल खुलासा हे
 शास्तरमें, श्री मुख साहेब फरमाया ॥ ध० ॥ १५ ॥ कोयलाति
 क उर एरम लकडको, चलतो गाढो वजे जैसें ॥ ठवतां वेवतां
 हालतां चलतां, मुनिके दाड वजे तैसें ॥ तप तेजसें पुष्ट जया मु
 नि, निर्वल वहुत जये तनमें ॥ हिरते फिरते शब्द बोलते, सुण
 ते खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य बलसें काम करे सब, जाव सजम
 निश्चल गया ॥ ध० ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रष्ट
 कु वदे शिर नामी ॥ धन्या मुनिके पास जायके, कहे तुम धन अ
 तर जामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमकों, करणीमें कुठ न
 हि खामी ॥ ठता जोग ठटकाय दिया सब, ड कर तप किरिया

कामी ॥ तुम हो गरिबनिवाज दयानिधि, चरण शरण मुज मन
 जाया ॥ ४० ॥ १४ ॥ मुनिका करि गुणग्राम नूपति, प्रजु प्रण
 मी गये निज ठामें ॥ दिन केता रहि विहार कीयो प्रजु, विश्वरे पु
 र पाटण ग्रामें ॥ कोइ दिन राजगृही नगरमें, समोसखा फिर
 जिनराया ॥ धर्मजागरणामे मुनि चितो, शक्ति नहिं किंचित् काया
 ॥ दिन उगा प्रजु आझा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ ४० ॥ १५ ॥
 विपुलगिरि पर्वत पर चढकें, पादोपगम अणसण कीना ॥ एक
 मास सथारो आराधि, रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढे
 अग अम्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अंत चढते परि
 णामे, बहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवकारह्या कमति आ
 ख्वा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ४० ॥ १६ ॥ कोढी तिन पंच
 लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तिनसें जाणो ॥ मास नवका सात
 वताया, सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोढी के ऊपर, लाख
 सत्ताणु पल कहीयें ॥ सहस्र अछाणु नवसें बधु, त्रीजो जाग अ
 धिक लहीयें ॥ एक एक दम पर इतनी पलको, सर्वार्थ सिद्धमें सु
 ख पाया ॥ ४० ॥ १७ ॥ सबत उगणीशैं आढतीस शालें, चैत्र शु
 कल ग्यारश आइ ॥ बार चइ दिन पेठ आंवोरी, ठाइ बेश दक्षिण
 माइ ॥ भाहाराज अयवता रिखजी प्रसावें, तिलोकरिख लावणी
 गाइ ॥ गुणी जनकी तारीफ करी बह, अष्टजन कर्मके ह्वय तांइ ॥
 एसी समज सब गाना गुणी गुण, काम सिद्धि सुख सवाया ॥ ४० ॥
 ११ ॥ इति धन्नाकाकदीजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ आवक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे चेत सयाणा, उर्जेन नर अवतार ॥ धरम करी
 उत्तरो नव जल पार ॥ आरज बेश उत्तम कुज जनम्यो, देह नि
 रोगी धार ॥ आठखो इडिय पूरण सार ॥ सतगुरु जोग शास्त्रकी

सरस्वा, धारो हिरदा मजार ॥ जगतमें जैनधर्म सुखकार ॥ झा
न दर्शन चारितर करणी, तप धारा परकार ॥ धारकें तरे अन्नत
नर नार ॥ जेजो ॥ एसो जाणके धरम करीजें, करम वधएसैं अ
धिक मरीजें ॥ मिथ्या नर्मकुं दूर हरीजें, जप तप सजममे चित्तदीजें,
॥ ज० ॥ निश्चल समकिस धार ॥ होय तेरी आतमको उधार ॥ चे
त० ॥ १ ॥ मात पिता तिरिया सुत वधव, सजन स्नेही परिवार ॥
एतो सब हेगा मतलब यार ॥ बिन मतलब सब हे ड खदाइ, न
हिं तुफ तारणहार ॥ इसमें शका नहिं हे लगार ॥ पुत्र अंगकु न
ग किया नृप, कनक रथ ड खकार ॥ जिनोका ठेठे अंग विस्तार ॥
चुलणी राणी ब्रह्मदत्त सुतकु, लाखका महेल मजार ॥ बालवाकि
यो अगन परिचार ॥ जेजो ॥ सुरिकांता पति ऊहेर खवायो, अणि
कके सुत पिंजरे ठायो ॥ नरत बाहुबनि दास उठायो ॥ ज० ॥
डुर्योधन महा जंग मचायो ॥ कीयो कुलको सहार ॥ चे० ॥ २ ॥
काचा कुन जेसी काया रे तेरी, बिनमें होय बिनास ॥ इस्तीका जू
वा हे विश्वास ॥ खावणा पीणा जोग इडीका, ए सब हे ड खरा
स ॥ जोगसैं होवे नरकको वास ॥ पावे कष्ट अपार जहां सहे, प
रवश जमकी त्रास, शाता नहिं हे कृण जरकी तास ॥ बीते का
ल असख्य जहा नहिं, सुख रंच एक सास ॥ वध रह्यो अष्ट क
र्मकी फास ॥ जेजो ॥ जोग हलाहल ऊहेरसा जाणो, उपमा फल
किंपाक बखाणो ॥ अनित्य जाण जगके ठिटकाणो, ले लो खरची
धर्मको नाणो ॥ छे० ॥ करे सतगुरु दुशियार ॥ अवसर ऐसा न
हिं हे वारं वार ॥ चे० ॥ ३ ॥ धन सपत सब कारमी जाणो, ज्यों
बीजलि ज्वकार ॥ कवही नहिं चलेगा तेरी लार ॥ बिन बिनमा
हे बिजे आवखो, ज्यों अजलीको वार ॥ जोरावर काल लम्यो हे
तेरी लार ॥ देव दाणव हरिहर उर चक्री, इइ चइ अवतार ॥ ठोठे
नहिं किस्कु काल करार ॥ बखत वार नहिं देखे जोगणी, बाल त

रुण वयधार ॥ देखे नही सुखी ड खी नर नार ॥ जेजो ॥ दान शी
 ल तप जावना जावो, धरम ध्यानको लीजें लावो ॥ धन सपत
 में मत थकडावो, साधु सतकु शीश नमावो ॥ सा० ॥ जो चाहो नि
 स्तार ॥ माया तजि आदरो सजमजार ॥ चे० ॥ ४ ॥ निज आत्म
 सम जीव ठकाया, जाणो दया जयकार ॥ दया विन करणी सब
 वेगार ॥ सत्य वचन निरवयसो बोलो, चोरी सर्व निवार ॥ शील
 नव वाड सहित शुद्ध धार ॥ परिग्रह ममता क्रोध निवारो, लोच
 कपट अहंकार ॥ राग द्वेष करो सकल सहार ॥ कलह आल पर
 जुगली निदा, रत आरत परिहार ॥ माया मृषा मिथ्या तज ड ख
 कार ॥ जेजो ॥ नरक गति ड खकार ए जाणी, बोडो इनकुं नव्य
 जन प्राणी ॥ इण जव जस परजव सुखदाणी, लावणी श्रीगुंदा
 में जोडाणी ॥ ला० ॥ उंगणीशें तीस मजार, तिलोकरिख कहेता
 पर उपगार ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवरक्षा उपदेशनी लावणी ॥

॥ उत्तम कुल अवतार पाय कर, आवक करणी धार ॥ तोही
 पण उत्तरोगे जवपार ॥ देव नमो अरिहत जावसु, गुरु गिरुवा
 गुण धार ॥ जिनोंकी सेव किया निस्तार ॥ धर्म केवली आझामें
 सडो, जीव दयार्तत सार ॥ सकल शास्त्रमें हे अधिकार ॥ व्रत था
 वर दो जेद प्ररूप्या, न निजे सर्व प्रकार ॥ तोहि पण तरस जी
 वें ऊगार ॥ जेजो ॥ जाणी देखी निरअपराधी, अथवा तनकु देन
 उपाधि ॥ हणवाकी बुद्धि दिलसु साधी, हणो मत जिन आझा
 आराधी ॥ ह० ॥ निर्वय दुइ मत मार, शक्तिसु अधिक नरो मत
 नार ॥ उत्त० ॥ १ ॥ गाढो बंधण अग ठेदना, वध करो मत आ
 हार ॥ अणुकपा निशदिन दिलमें धार ॥ वापरणो नही अणग
 एणो जज, निरर्थक मत करो खुवार ॥ पुजे अग्रि मत दो नर नार ॥

॥ वासी लीपण लीपणो टालो, जू मांकड मत मार ॥ मञ्जरकुं
 हण न कुधुवो निवार ॥ अनंतगुणा पुनि थावरसू त्रस, पाप तणो
 नहि पार ॥ निजात्मसमसब जीव उगार ॥ जेजो ॥ तडको न देणो
 सब्यां धानके, मोल न लेणो पाप जाणके ॥ सेकणो पीसणो नहि
 पाप मानके, जीव उगारो दया आनके ॥ ज० ॥ तरस त्रास
 ड खकार, दानमें अजय दान श्रीकार ॥ उ० ॥ १ ॥ कन्या पशु
 उर धरती कारण, जूठ करो परिहार ॥ थापण पर उलवणी नहिं
 यार ॥ लाच लेइ कूडी साख नरो मत, मत करो मर्म जहार ॥
 छुवा खत मांमो मत कुविचार ॥ विना विचारे बोलणो नहि कु
 ढ, सत्य बडो ससार ॥ सत्यसू कदी न होवे द्वार ॥ खातर खणी
 धाढा मत पाढो, पडकूची परिहार ॥ धणियाती पडि वस्तु द्यो टा
 र ॥ जेजो ॥ शज दमे सो काम न कीजें, चोखी वताइ खोटी न
 दीजें ॥ चोरीकी वस्तु माल न लीजें, कूडां तोला मापां परहरीजें
 ॥ कू० ॥ चोरी हे ड खकार, समज कर त्यागो सब नर नार ॥
 उ० ॥ ३ ॥ परनारीको पाप बोत हे, खट मतमें विस्तार ॥ सम
 ज कर ममता दिलकी मार ॥ शील वरत सुखदाइ हे सबकु, व
 षित पूरणदार ॥ ऊपमा वत्रीश सूत्र मजार ॥ अल्पवयें अणसा
 खी पंचकी, सो वरजो निज नार ॥ तिब्र अनिजापाको अतिचार
 ॥ धन मरजादा करी हे तिणसु, अधकी ममत निवार ॥ परधन दे
 खी मत मुरजो लगार ॥ जेजो ॥ पुण्य विना बोलत नही पावे, नि
 रर्थक मनमें क्यो मुरजावे ॥ धन सपत ढिनमें विरलावे, एक
 लो आयो एकलो जावे ॥ ए० ॥ पुण्य पाप दो लार, पुण्यसें आश
 फले संसार ॥ उ० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व अधो तिरढी दिश जावण, मर
 जादा लो धार, टले ज्यू आश्रव पंच प्रकार ॥ ढविश बोल मरजा
 दा कर लो, कद मूल तुष्ट आहार ॥ कर्मादान पंश तज महा ना
 र ॥ तज प्रमाद उर निरर्थक आरत, हिसा दान निवार ॥ खो

टो उपदेश न दिजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहि कीजें, पाप स
 ख परिहार ॥ ऐसा हे आवकका आचार ॥ जेलो ॥ तीन वखत
 सामायिक कीजें, वत्तीस दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समजाव
 गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें
 धार ॥ जिस्को नफो हे अपरम पार ॥ उ० ॥ ५ ॥ वेशावकाशि
 क नेम चितारो, खट पोपध व्रत धार ॥ जिस्में वर्जो दोष अढार ॥
 तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणा चार ॥ जावछु प्रतिजा
 जो अणगार ॥ एकवीस गुण कहा आवकका, सो लीजो हिरवे धार ॥
 दोय ज्यु आत्मको उद्धार ॥ सबत उगणीशें शाल सेंतिशका, श्री
 गुदाके मफार ॥ पोप छुदि अष्टमी छुकरवार ॥ जेलो ॥ आवक क
 रणी करजो नाइ, नरनव चितामणि अधिकाइ ॥ बार बार ए अ
 वसर नाइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको
 खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ वत्त० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ पुण्यआश्रयी लावणी प्रारंभ ॥

॥ धन्नाशेठ भवमाय, दान दियो जावे ॥ दा० ॥ जिहां बांधुं
 तीर्यकर गोत्र, रूपनजिन थावे ॥ खट दरिण परसिद्ध, कृदि
 अति पावे ॥ क० ॥ प्रभु थाप्या तीरथ चार, अचल गति जावे ॥
 अजर अमर अविकार, कमी नही काइ ॥ क० ॥ तुम करो
 धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पाचशें मुनिकु, क
 वयो जावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, नरत नृप थावे ॥ ठ
 उपाधिपूर्व कीयो राज, ठ खमके साइ ॥ ठ० ॥ नवन आरिसाके
 राधी ज्ञा नाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥
 ॥ उक्त० जावें, वाहुवलि राया ॥ अपर वली जगमांहि, नरते
 अणुकपा ॥ २ ॥ मेघरथ नृप नवमाय, दया दिल थाणी
 निरर्थक मपारेवो सरण, धूजतो प्राणी ॥ धदनको मां

स दियो काट, दियो बचाइ ॥ दि० ॥ सर्वार्थसिद्धके मांइ, उत्कृष्ट
स्थिति पाइ ॥ शांति जिनद सुख कद, चक्रिपद पाया ॥ च० ॥ दी
पायो जिन धर्म, धन्य महाराया ॥ पाया केवल ज्ञान, आतु कर्म
घाइ ॥ आ० ॥ तु० ॥ ३ ॥ दीयो डाखको पाणी, राजा उर राणी
॥ रा० ॥ हर्ष जाव शखराय, कपट नहिं आणी ॥ बांध्यु तीर्थकर
र गोत्र, नेमि जिनराया ॥ ने० ॥ समुद्रविजयजीका नद, जगत
मन जाया ॥ तोरणसे फिर आया, पशु दया आणी ॥ प० ॥ प्र
तु तज कर राज्ञन नार, सजम पद गाणी ॥ जिनकी कीर्ति जग
मांदि, सदा हे सवाइ ॥ स० ॥ तु० ॥ ४ ॥ धर्म रुचि मुनिराज, मास
तप गाया ॥ मा० ॥ वे चपानगरी बीच, विचरता आया ॥ नाग
सिरी घर गया, तुवो बोहोरायो ॥ तुं० ॥ गुरु आझाथी जाय, विड
परगायो ॥ मरती किडियां देख, दया दिल आणी ॥ द० ॥ मुनि
जहेर हलाहल पियो, खीर सम जाणी ॥ खी० ॥ तेतीस सा
गर अमर, मुगति पुरी पाइ ॥ मु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ दीयो क्षीरको
दान, संगम नव मांइ ॥ स० ॥ शालिनइ सौजागी, महा रिद्धि
पाइ ॥ सुबाहुदिक वश कुमार, दान पगनावें ॥ दा० ॥ पंझ नव
के मांय, मुगति सब पावे ॥ रुष्ण श्रेणिक नरनाथ, धर्म द
जाली ॥ ध० ॥ जिणें बांध्यु तीर्थकर गोत्र, सूत्रमें चाली ॥
करी कृपा परवेशी, पाप छिटकाइ ॥ पा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ दान शी
ज तप जाव, शुद्ध आराधी ॥ शु० ॥ पाया हे सुख अनंत, ठोडे
वपाधी ॥ एसो जाण सुकृत करो, यें नर नारी ॥ ये० ॥ ठोडो
पाप प्रमाद, महा डु खकारी ॥ पुण्यानुवधी पुण्य, जिससें सुख पा
वे ॥ जि० ॥ तिलोकगिख कहे सत्य, सूत्रके न्यावें ॥ सहेर पुना
की मांइ, लावणी वणाइ, लावणी गाइ ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ दोहा ॥ सासण नायक सुरतरु, जयजजण जगवत ॥ त्रिश

टो उपदेश न दिजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहि कीजें, पाप स
 स्त्र परिहार ॥ ऐसा हे आवकका आचार ॥ जेजो ॥ तीन वस्त
 सामायिक कीजें, वत्तीस दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समजाव
 गुणीजें, सावध्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें
 धार ॥ जिस्को नफो हे अपरम पार ॥ ठ० ॥ ५ ॥ वेशावकाशि
 क नेम चितारो, खट पौपध व्रत धार ॥ जिस्में वर्जो दोष अढार ॥
 तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणां चार ॥ जावहुं प्रतिजा
 नो अणगार ॥ एकवीश गुण कल्या आवकका, सो लीजो हिरवे धार ॥
 होय ज्यु आत्मको उधार ॥ सबत् उगणीर्शो शाल सेंतिसका, श्री
 गुदाके मजार ॥ पोप छुवि अष्टमी छुकरवार ॥ जेजो ॥ आवक क
 रणी करजो नाइ, नरजव चितामणि अधिकाइ ॥ वार वार ए अ
 वसर नाइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको
 खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उत्त० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ पुण्यआश्रयी लावणी प्रारभ ॥

॥ धन्नाशेठ भवमाय, दान दियो जावे ॥ दा० ॥ जिहां बाधुं
 तीर्थैकर गोत्र, रूपनजिन थावे ॥ खट दरिण परसिद्ध, कृदि
 अति पावे ॥ क० ॥ प्रभु थाप्या तीरथ चार, अवल गति जावे ॥
 अजर अमर अविकार, कमी नही काइ ॥ क० ॥ तुम करो
 धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पाचर्शो मुनिकुं, क
 द्यो जावें ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, नरत नृप थावे ॥ ठ
 उपाधिपरव कीयो राज, ठ खमके साइ ॥ ठ० ॥ जवन आरिसाके
 आराधी ज्ञा नाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥
 नार ॥ उत्त० जावें, बाहुवलि राया ॥ अपर चली जगमाहि, नरते
 हार ॥ अणुकपा ० ॥ २ ॥ मेघरथ नृप नवमाय, दया दिल आणी
 एो जज्ञ, निरर्थक मपारेवो सरण, भूजतो प्राणी ॥ बदनको मा

विकसा कमल उकरही ठपर, जिस्का जेद मुनो जाइ ॥ चार
 वर्णमें माहाजनके घर, धरम रहेगा अधिकाइ ॥ सास्तरकी रुचि
 रहेगी थोड़ी, सुणतां निझा छेवेगा ॥ स्तवन सजाय ठर ढाल चो
 पाइ, जिस्में बहुत खुश रहेवेगा ॥ प्रतिबोध पण इस्में पा कें, होवेगा
 सजमधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ आझाका चमत्कार आठमें, जेद सुणो इस्का
 नीका ॥ उद्योत होयगा जैनधरमका, वाकी मिथ्यातम हे फीका ॥
 समुदर सूको तीन दिशा पर, दक्षिणदिश मोलो पाणी ॥ दक्षिण
 दिशपर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पंचकल्याणिक
 नये जिएपुरमें, धरम हानि जहा उच्चारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ दशमें
 सोनेकी थाली जिसमें, कुत्ता देखा खीर खाता ॥ उत्तमकुलकी
 दोलत हे सो, जावेगी मध्यम हाता ॥ नट खट सौदा चोर उगा
 रा, धूरत होयगा धनवाला ॥ साहुकार सो फुरेगा दिजमें, कहे
 न शके मनकी ज्वाला ॥ धन सपत सक्कनकी हाणी, सत्यवादी
 कम नर नारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ हस्तीके पर ग्यारमें स्वपने, देखा
 बंदरकु बैठा ॥ नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा
 हेठा ॥ बारमें स्वपने देखा तुमने, दरिये मरजादा ठोड़ी ॥ बेठा
 बेटी मात पिताकी, मरजादा राखे थोड़ी ॥ बहू सासुका न करे
 गी कहेणा, बलटी डुख वेगी जारी ॥ ज० ॥ ८ ॥ लाच ग्राही
 सो दुव्री होयगा, वचन ठेकें नट जावेगा ॥ दगादार विश्वासघाति
 नर, सबे नरकु हठावेगा ॥ जला सक्सका आदर कमती, पापी
 आदर पावेगा ॥ गुरु गुराणीकी चेला चेली, सेवा जक्ति कम चहावे
 गा ॥ अपनी बढाई करेगा मुखसें, गुरुकु होयगा डुखकारी ॥
 ज० ॥ ९ ॥ जोत्या देखी स्वपने तेरमें, बाठरुके महारथमाही ॥
 नादान उमरके धरम करेगा, सजम छेगा बलसाइ ॥ लज्जासु तप
 सजम पाली, तप जपमें चित्त देवेगा ॥ बूद्धा धिछा होयगा धर्ममें,
 आलस अधिको रहेवेगा ॥ सरखा नहिं सब लढका बूढा, समुचय

जानद दिनद सम, प्रणमुं मन धरि खत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौत
म गुरु, तप सजम दातार ॥ तास प्रसावें वर्णबु, सुपन सोझे अ
धिकार ॥ ३ ॥ पामुलिपुर नगरविपे, चङ्गुप्त राजिंद ॥ बारे व्रत
धारक गुणी, परजाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदे पूरव ज्ञान शुद्ध,
नङ्वाडु मुनिराज ॥ समोसखा उद्यानमें, तारण तरण जिहाज ॥
॥ ४ ॥ परकी पोसाने विपे, देख्या स्वपनां सोल ॥ पूढे वृष कर
जोडिने, अर्थ कदो मुनि खोल ॥ ५ ॥

॥ अगडदम अगडदम वजे चोघडा ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी
शाखा तूटी, अर्थ सुणो यह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होइगा को
इ, सजम वो नहि लेनेका ॥ झुजे अस्त जया सूर्य अकालें, नेद सु
णो अब इस्का सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया हे, उनकु केवल झा
न नहीं ॥ नहिं मनपरजव अवधि पूरण, ए अंधकार जया जा
री ॥ नङ्वाडु मुनि कहे नूपसु, पंचमो आरो ड खकारी ॥ १ ॥
चांद देखा तुम चालणी जेसा, तिसरे सपनाके माइ ॥ अलग अ
लग समाचारी होयगी, बोल फरक कुठ दरसाइ ॥ नूत नूतणी न
चते हिल मिल, देखा चोथे सुपनमाइ ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिन
कु, लोक मानेगा अधिकाइ ॥ दया धर्मपर बढ़ोत जलेंगे, थोडे
जेनधरमधारी ॥ न० ॥ २ ॥ पाचमे देखा सर्प नयकर, वारे फ
एकर फूकारे ॥ कितेक साल पिठें काल पढेगा, वारे वरस लग
नयकारे ॥ उत्तम साधु कर सथारा, आत्मकारज सारेगा ॥ का
यर साधु सो ढीले पढेंगे, हिंसाधर्म विस्तारेगा ॥ खोटा दे उपदेश
लोकोकु, होवेगा केइ घरवारी ॥ न० ॥ ३ ॥ ठेठे स्वपने देवविमा
एकु, आता सो देख्या फिरता ॥ जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद,
दिल अदर आणी फिरता ॥ जघाचारण लब्धि धारक, और वि
द्याचारण जाणो ॥ ए दो लब्धिके हे धारक, ऐसे मुनिवरकी दाणो ॥
वैक्य और आहारिककी लब्धि, ए बी विष्टेदेगा सारी ॥ न० ॥ ४ ॥

उंसबुंदपाणी परपोटो, वार न लागे द्वाण रे ॥ कर लो दुसियारी,
धर्म तैयारी मरजो कालसू ॥ १ ॥ जोवन जातां जेज न लागे, ज्युं
नदीको पुर ॥ नदी किनारे तरुवर जैसैं, कोई दिन जाये जरूर
हो ॥ कर लो दुसियारी ॥ ४० ॥ २ ॥ बाल तरुण वृद्ध सुखी
डुखी उर, राय रक नर नार ॥ हरि हर इह नरेंद्र सुरासुर, गोडे
न काल करार रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ३ ॥ वैधरत व्यतिपात
जोगिणी, कालवास्त दिशाशूल ॥ काल न देखे बखत वारने, बिनमें
करेगे नूल हो ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ४ ॥ सूतां जागतां खातां
पीतां, करता बात विचार ॥ नहिं जरोसो कालदूतको, जवरदस्त
ससार हो ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ५ ॥ जाड पहाड उजाडगाममें, नदी
खाल नवाण ॥ खवर नहि किण ठामके उपर, काल ले जावे ताण
रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ६ ॥ जल अग्नि और ऊहेर जुजगम, सिद्ध
रीड पण्ड व्याल ॥ खवर नहि रोग सोग उपातवकी, आसीकिण
जोगें काल रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ७ ॥ जाया सो तो जरूर जावेगा,
फूल्या सो कुमलाय ॥ बधा सो बिखरे इण जगमें, बेम नहि इणमाय
रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ८ ॥ जो कृण जावे सो नहि आवे, कर
तां कोडि उपाय ॥ आउखुं समोजक पायकें चेतन, खोवे मत
फोकमांय रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ९ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उ
द्यम, करजो सुगुणा लोक ॥ परजव खरची साधी जीवने, ली
जो नाणो रोक रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ १० ॥ ए ससार असार वा
बले, ममता मोह निवार ॥ कालको मर जो सेटणो तुजने, कर
ले सेवा पार रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ ११ ॥ उंगणीजें अडतीस जेठ
रुस पख, तीज तिथि शनिवार ॥ वेवटाकलीमें तिलोकरिख कहे,
धर्मसु जयजयकार रे ॥ कर लो ॥ ४० ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ अथ पाचमा आरानी लावणी ॥

॥ जमी निरम हो गइ, पाणी कम वरसे ॥ पा ॥ कवही धा

जाव कहा जहारी ॥ ज० ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मदी देखी, च
उदमा स्वपनामें जाणो ॥ नरतक्षेत्रका सत साधके, हेत शकलास
थोडो मानो ॥ क्रोधी क्लेशी अरु अजिमानी, अपनी बात जमावेगा ॥
जली सीख जो देगा कोइ, उस्का उंगुण बतावेगा ॥ अलपहोयगा
सजमवता, होयगा बहोतसा लिंगधारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ राजकुंअर
सो चढ्या पोविपर, देखा स्वपने पदरमें ॥ राजा जैनधरम तज दे
गा, राचेगा मिथ्याकरमें ॥ बात करे जो सच्चावटकी, उस्की थोडा
मानेगा ॥ जूठेकी परतीत करेगा, खोटेका पद्दतानेगा ॥ धर्मीपुरु
पका करेगा ठछा, पापीका आदर जारी ॥ ज० ॥ १२ ॥ लढते हस्ती देखे
सोजमे, विन भावत आपस मांहि ॥ वार वार डुक्काल पड़ेगा, म
न चढाया वर्पेगा नाहिं ॥ मात पिता गुरु बातके करता, बिच बिच
बात करेगा ठोटा ॥ जाइ जाइमें सपत उंढी, बोलेगा निरर्थक
खोटा ॥ पिता पद्दको आदर उंढो, त्रियापद्दसु करेगा बारी ॥
ज० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा
होवेगा ॥ जगडा टटा निरर्थक करकें, राजमाही धन खोवेगा ॥
केण न माने जला सक्सकी, फिर पाठे पस्तावेगा ॥ एकविश ह
जार वरस लग राजिद, एसी रीत कर जावेगा ॥ अरथ सुणी
सोले स्वपनाका, राजा नया दृढ व्रतधारी ॥ ज० ॥ १४ ॥ संव
त उंगणीजे शाल सेंटिसका, फागण बदि ग्यारस आई ॥ तिलो
करिख कहे स्वपन लावणी, गामकढामें बणाई ॥ पचम आरोड
खम नामें, डख हे इणमें अधिकारी ॥ घरम ध्यान उर समता रा
खे, उनकु सुख समजो जाइ ॥ एसो जाणकें करजो सुरुत, उतरो
गे नवजल पारी ॥ ज० ॥ १५ ॥ इति शोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ अथ कालकी लावणी ॥

॥ साखी ॥ विन विनमाहे ठीज आउखो, ज्यू अजजिजज जाण ॥

कबु परख, राजि आमवरसुं ॥ अल्प सपदामांहे, करे मगळरी ॥

तरपची, शेठ

गिरी ॥

जावे ॥ ज

ठोटे वडेकी

अकडाइ ॥

वचन दे कें

वसतें दिल

॥ पक्षु न

हे मांहे, ख

न खोवे ॥

तसमें अण

री ॥ पाण ॥

ता लाज,

होति, दाम

। परमदेवा

त, पीर म

लोनी व

। लगे खा

नहिं राखे

रे सायदी

रजापी ॥

सास्तर

रहि प्या

स्के देणे

॥ किस्के

ता डुख,

न्य गल जाए, कवहीं जन तरसे ॥ कवहींक उंठी थंन, लोक
 चित्त चहावे ॥ लो० ॥ कवहींक पडती बहोत, नाज जल जावे ॥
 कवहींक गरमी थल्प, रोग उपजावे ॥ रो० ॥ कवहीं धर्म पढे
 बहोत, आलम गजरावे ॥ करो धर्म ध्यान सतोप, सदा सुख
 कारी ॥ स० ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो दुसियारी ॥ ए
 टेक ॥ १ ॥ बस्ती कजह वोत, नहि धनवाला ॥ न० ॥ जो किस्के
 मिले धन, तहीं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन ला
 वे ॥ सो० ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा
 वेवे डख, जगडा केइ लावे ॥ ज० ॥ कोइके कुब्सनी होय,
 वाती दजावे ॥ कुलमें लगावे दाय, लजावे नारी ॥ ल० ॥ सु० ॥
 ॥ २ ॥ बोले बापके सामे, वेवे दुंकारो ॥ दे० ॥ साठीमें नाठी
 अकल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, माहे नहिं
 रेवे ॥ मा० ॥ सासूकु दुकममें राखे, बहू डख वेवे ॥ वेटा हो
 वे अलग, परणके नारी ॥ प० ॥ करे पितासु जोरो, माया स
 व म्हारी ॥ जगडे राजके माय, बोले कुविचारी ॥ वो० ॥ सु०
 ॥ ३ ॥ कोइके पूत सपूत, नारी डखकारी ॥ ना० ॥ डख वेवे
 दिन रात, माहा कलहकारी ॥ ठेढी लंकाकी लाय, शरम नहिं त
 नमें ॥ श० ॥ नांमे लोकके बीच, कत डखी मनमें ॥ जो नारी
 सुख होय, घात सतावे ॥ घ्रा० ॥ वे जगडा टटा करकें, राजमें
 जावे ॥ वात वातमें छेप, करे अति जहारी ॥ क० ॥ सु० ॥ ४ ॥
 जो होवे बहोत कुटुब, विटव रहे नारी ॥ वि० ॥ घरमें धन हो
 य थल्प, खरच डख त्पारी ॥ दास सम सब कुटुब, काम करे
 सारा ॥ का० ॥ तो पण न जरे पेट, सदा डखियारा ॥ कोइ रुसे
 कोइ रोवे, कोइ मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उधेग, काल जो
 खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुब, तोहि डखियारी ॥ तो० ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ जाइ गोत्रीमे देर, हेत करे परसु ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं

कठु परख, राजि आमंत्रसुं ॥ अल्प संपदामांहे, करे मगरूरी ॥
 क० ॥ धर्मी नरपें द्वेष, निदा करे कूरी ॥ गुमास्ता परपची, जेठ
 धन खावे ॥ जे० ॥ जेठको काढी दीवालो, आप जग जावे ॥ न
 ली शीख जो देत, देत तस गारी ॥ दे० ॥ सु० ॥ ६॥ ठोटे बढेकी
 रीत, कायदो नांही ॥ का० ॥ मनका ठाकर वणो, करे अकडाइ ॥
 बीच बीचमें करे वात, जाणो में श्याणो ॥ जा० ॥ वचन दे कें
 फिर जाय, ज्यों तेली घाणो ॥ मुख मीठो चित धिछो, उससें दिल
 राजी ॥ उ० ॥ कठण कहे हित वेण, उससें नाराजी ॥ पिता पदसु न
 हि हेत, नारी पद यारी ॥ ना० ॥ सु० ॥ ७॥ दया दानके माहे, स्व
 रचतां रोवे ॥ स्व० ॥ ख्याल गोठके माही, वृथा धन खोवे ॥
 साधु सतके पास, जातां दिल सरमे ॥ जा० ॥ मिजलसमें अण
 तेज्यो, जाय कुकर्म ॥ धर्म काममें पाठे, पाप अगवानी ॥ पा० ॥
 खावणमें तैयार, तपमें करे कानी ॥ त० ॥ प्रहृ गुण गाता लाज,
 ख्याल अधिकारी ॥ ख्या० ॥ ८॥ करके कन्या महोटी, दाम
 लिया चढ़ावे ॥ दा० ॥ ९॥ ति जिमावे ॥ परमदेवा
 भिदेव ॥

नवानी नूत, पीर म
 ॥ दा० ॥ जोनी ठ
 ख, अहि जगे खा
 दिलमें नहिं राखे
 ॥ जरे सायदी
 तेत परलापी ॥

॥ कहे सास्तर

॥ वात, जगे नहिं प्या
 कस्के लेणोका डख, कस्के देणो
 कस्के गेणोका सोच, कस्के रेणोका ॥ कस्के
 डख, कस्के दाणोका ॥ कि० ॥ कस्के जाणोका डख,

न्य गल जाए, कवहीं जन तरसे ॥ कवहींक उंठी थंन, लोक
 चित्त चहावे ॥ लो० ॥ कवहींक पडती व्होत, नाज जल जावे ॥
 कवहींक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो० ॥ कवहीं धर्म पडे
 व्होत, आलम गनरावे ॥ करो धर्म ध्यान सतोष, सदा सुख
 कारी ॥ स० ॥ सुणि इत आरेका हाल, करो दुसियारी ॥ ए
 टेक ॥ १ ॥ वर्स्ती कजड वोत, नहि धनवाला ॥ न० ॥ जो किस्के
 मिले धन, तहीं रखवाला ॥ होवे तो जीवे नांय, सोग मन ला
 वे ॥ सो० ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा
 वेवे डख, जगडा केड लावे ॥ ऊ० ॥ कोशके कुव्यसनी होय,
 वाती दजावे ॥ कुलमें लगावे दाघ, लजावे नारी ॥ ल० ॥ सु० ॥
 ॥ २ ॥ बोले धापके सामे, वेवे दुकारो ॥ दे० ॥ साठीमें नाठी
 अकल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, माहे नहिं
 रेवे ॥ मा० ॥ सासूकु दुकममें राखे, वडू डख वेवे ॥ बेटा हो
 वे अलग, परणके नारी ॥ प० ॥ करे पितासु जोरो, माया स
 व म्हारी ॥ जगडे राजके माय, बोले कुविचारी ॥ बो० ॥ सु०
 ॥ ३ ॥ कोशके पूत सपूत, नारी डखकारी ॥ ना० ॥ डख वेवे
 दिन रात, माहा कलहकारी ॥ ठेडी लकाकी लाय, शरम नहिं त
 नमें ॥ श० ॥ नामे लोकके बीच, कत डखी मनमें ॥ जो नारी
 सुख होय, त्रात सतावे ॥ त्रा० ॥ वे जगडा टटा करके, राजमें
 जावे ॥ वात वातमें धेप, करे अति जहारी ॥ क० ॥ सु० ॥ ४ ॥
 जो होवे व्होत कुटुव, विटव रहे नारी ॥ वि० ॥ घरमें धन हो
 य अल्प, खरच डख त्यारी ॥ दास सम सब कुटुव, काम करे
 सारा ॥ का० ॥ तो पण न जरे पेट, सदा डखियारा ॥ कोड रुसे
 कोड रोवे, कोड मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, काल जो
 खावे ॥ जो नहिं होवे कुटुव, तोहि डखियारी ॥ तो० ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ नाइ गोत्रीमें देर, हेत करे परसु ॥ हे० ॥ शुणकी नहिं

गतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुब चेतन मुद्देइ, वणा हे जहारी ॥ व० ॥
 आतु कर्म मुहाल, कपट जहारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया
 ॥ शो० ॥ सजाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन
 गुजारी, हूमा तलवाणा ॥ ह० ॥ तुम० ॥ १ ॥ में जाता शिवपंथ,
 कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, जुटा सब मेरा ॥ ल
 हू चोरासीके बीच, मोकुं अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ
 बध, मोकु बधवाया ॥ में पाया दु ख अनत, जेद नहि जाणा ॥ जे०
 ॥ तुम० ॥ २ ॥ ए टटा हे बेपार, वोत हे जूना ॥ वो० ॥ में रहा
 जोलपके मांहि, माफि करो गुना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सच्चे का
 नूना ॥ स० ॥ ए ज्यडा बढा बहोत, दिने दिन दूना ॥ में तो न
 या बलहीण, बढे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अब खुली कबु तकदी
 र, पुण्य परचारें ॥ पु० ॥ जाणा में दुं सच्च, दारु नहि न्योर्वें ॥
 सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज,
 बहोत मजमूना ॥ में किया जाकें मिलाप, बहुत हरखाणा ॥ व० ॥
 तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, जेद बताया ॥ जे० ॥ में
 जाना कर्मोका छुल्म, मसोदा बनवाया ॥ तुम विन करे कुण न्या
 य, अर्जी में लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ए आव, गवा बुलवाया
 ॥ शील असेसर चौधरी, ठस्कु बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अ
 व अर्जी गुजरी ठस बखत, दुकुम फरमाया ॥ दु० ॥ प्रभु ज्ञान
 चपहासी जेज, मुहाल बुलवाया ॥ सो बोले हम संग, कबु
 नहि दावा ॥ क० ॥ चेतन जगडे जूव, खलकमे ठावा ॥ पच
 प्रमाद विस्ववाद, गवा संग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ हम घर आ
 या यह, ठपत चलाइ ॥ ठप० ॥ खाया हे कर्जा बहोत, हममे ठमा
 इ ॥ राचा नोग विलास, मन बच काया ॥ म० ॥ घटा नफा न
 हिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मगण गये, तवे गनराणा ॥
 त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ दाजर खडे गवाइ, दाल सुणाया ॥ दा० ॥ त

किस्के लाणेका ॥ किस्के पिताका ड ख, किस्के माईका ॥ कि० ॥
 किस्के बहेन सुत ड ख, किस्के चाईका ॥ किस्के धनकी फिकर,
 किस्के बीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोइके शत्रुका सोच,
 कोइके साजनका ॥ को० ॥ कोइके परचक्री ड ख, कोइके
 राजनका ॥ किस्के खेतीका ड ख, कोइके वतनका ॥ को० ॥ को
 इके चोर हाकम, याद अगनका ॥ कोइके पढोशी ड ख, छुट जन
 जजका ॥ ड० ॥ कोइके अकलका ड ख, कोइके दल बलका ॥ न
 हिं संपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो कोइ
 माने सुख, सकल मुज मांइ ॥ स० ॥ सांज तलक कोइ ड ख, आ
 वे वसताइ ॥ जो नहिं मानो वात, देखो अजमाइ ॥ दे० ॥ ए
 सास्तरकी वात, विचारो जाइ ॥ पंचम कालका हाल, बडा हे बंका
 ॥ व० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इस्में नहिं शका ॥ कलिछुगकी
 निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अढालत लावणी ॥

॥ बोहा ॥

॥ समरु शासन स्वामिकु, त्रिकरण शीश नमाय ॥ जगहो चे
 तनकर्मको, न्याव कहु चित्त चहाय ॥ १ ॥ अथ धोसो ॥ समरु गु
 णधर संपति, जेन शुद्ध जति, शारदा सति, असल द्यो मति, पु
 ण्यकी रति, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चा
 हु नगति, अनत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ धन ॥ धर्मकी वनी कचे
 री जारी, सिंहासन धीज रूप धारी ॥ वेठे प्रभु जिस पर दुसिया
 री, सनामें जुड़े तीर्थ चारी ॥ अढालत करे सत्त जहारी, खोटेकी
 नहिं हे कहु यारी ॥ दगा जीय चेतनका हे बंका, न्याव तुम सु
 ए लो निजका जी ॥ १ ॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दोलत जमीन,
 अचज दिलराणा ॥ अचज दिलराणा ॥ तुम करो अढालत मेरी, ज

गतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्दे, वणा हे जहारी ॥ व० ॥
 आतु कर्म मुद्दाल, कपट नमारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया
 ॥ शो० ॥ सजाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन
 गुजारी, कृमा तलवाणा ॥ कृ० ॥ तुम० ॥ १ ॥ में जाता शिवपथ,
 कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, जुटा सब मेरा ॥ ल
 कृ चोरासीके बीच, मोकु अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ
 बध, मोकु बधवाया ॥ में पाया डु ख अनत, नेद नहि जाणा ॥ ने०
 ॥ तुम० ॥ २ ॥ ए टंटा हे वेपार, बोट हे जूना ॥ वो० ॥ में रहा
 जोलपके मांहि, माफि करो गुना ॥ मोय मिले नहिं वकील, सच्चे का
 नूना ॥ स० ॥ ए ऊधडा बढा बहोत, दिने दिन दूना ॥ में तो न
 या बलहीण, बढे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अब खुली कबु तकदी
 र, पुण्य परजावें ॥ पु० ॥ जाणा में हुं सच्च, हारु नहिं न्योवें ॥
 सत्तावीश गुणधार, वकील कातूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज,
 बहोत मजमूना ॥ में किया जाकें मिलाप, बहुत हरखाणा ॥ व० ॥
 तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, नेद बताया ॥ ने० ॥ में
 जाना कर्मोका जुल्म, मसोदा बनवाया ॥ तुम विन करे कृण न्या
 य, अर्जी में लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ए आठ, गवा बुलवाया
 ॥ शील असेसर चौधरी, ठस्कु बुलवाणा ॥ ठ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अ
 व अर्जी गुजरी ठस बखत, दुकूम फरमाया ॥ दु० ॥ प्रभु ज्ञान
 चपडासी नेज, मुद्दाल बुलवाया ॥ सो बोले ह्म सग, कबु
 नहिं दावा ॥ क० ॥ चेतन ऊगहे जूठ, खलकमे ठावा ॥ पंच
 प्रमाद बिखवाद, गवा सग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ ह्म घर आ
 या यह, वपत चलाइ ॥ व० ॥ खाया हे कर्जा बहोत, ह्मसे ठमा
 इ ॥ राचा जोग विलास, मन धच काया ॥ म० ॥ घटा नफा न
 हि जाना, कर्जा चढाया ॥ जत्र ह्म मगण गये, तवे गजरणा ॥
 त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाइ, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ त

किस्के लाणेका ॥ किस्के पिताका ड ख, किस्के माईका ॥ कि० ॥
 किस्के वहेन सुत ड ख, किस्के जार्ईका ॥ किस्के धनकी फिकर,
 किस्के बीमारी ॥ कि० ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोइके शत्रुका सोच,
 कोइके साजनका ॥ को० ॥ कोइके परचक्री ड ख, कोइके
 राजनका ॥ किस्के खेतीका ड ख, कोइके वतनका ॥ को० ॥ को
 इके चोर हाकम, धाड अगनका ॥ कोइके पडोशी ड ख, डट जन
 जलका ॥ ड० ॥ कोइके अकलका ड ख, कोइके दल बलका ॥ न
 हि सपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो कोइ
 माने सुख, सकल मुज मांइ ॥ स० ॥ साज तलक कोइ ड ख, आ
 वे उसताइ ॥ जो नहि मानो वात, देखो अजमाइ ॥ दे० ॥ ए
 सास्तरकी वात, विचारो नाइ ॥ पंचम कालका हाल, बडा हे बंका
 ॥ व० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इस्में नहिं शका ॥ कलिजुगकी
 निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरु शासन स्वामिकु, त्रिकरण शीश नमाय ॥ जगडो चे
 तनकर्मको, न्याव कहु चित्त चहाय ॥ १ ॥ अथ धोसो ॥ समरु गु
 एधर सघपति, जेन शुद्ध जति, शारदा सति, असल द्यो मति, पु
 एयकी रति, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चा
 हु नगति, अनत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ धन ॥ धर्मकी वनी कचे
 री नारी, सिद्धासन धीर्ज रूप धारी ॥ वेठे प्रभु जिस पर दुसिया
 री, सनामें जुहे तीर्थ चारी ॥ अदालत करे सत्त जहारी, खोटेकी
 नहि हे कहु यारी ॥ दगा जीव चेतनका हे धका, न्याव तुम सु
 ए लो निजका जी ॥ १ ॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दोजत जमीन,
 अचज दिलवाणा ॥ अचज दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, ज

अहार पाया ॥ वर्धमान प्रभु कर्म जोगसुं, ब्राह्मणीकुखे आया ॥
 वातया इंदर जब जानी ॥ वा० ॥ हरण कराये मेढ्या खत्री कुलमें,
 त्रसलादि राणी ॥ जयो ए अचरिज जगमांइ रे ॥ ज०॥क०॥१॥
 वारा वरस ठ मास सजममें, करि झुकर करणी ॥ नर सुर तिरजव दि
 या परीसा, वेदनाह्व वरणी ॥ उपसर्ग गोसालक दिया रे ॥ उ०॥ लो
 हीगाण ठ मास प्रभुके, केवलमाहे रीया ॥ खुलासा सूतर केमांइ
 रे ॥ खु०॥क०॥१॥ कपट प्रजावें मल्लिजिनेश्वर, वेद धखो नारी ॥
 ॥ सागरचक्रीकें साठ सहस्र सुत, गंगा लावण धारी ॥ काठा
 देवीने तोड नाख्यो रे ॥ का० ॥ सबही मरण पाया इक साथें,
 बाकी नहि राख्यो ॥ नृप सुणचिता अति आई रे ॥ नृ० ॥ क०
 ॥ ३ ॥ सनतकुमार चक्रीके तनमें, रगतपीती ठाई ॥ सजम
 ले कियो मास मास तप, सातसैं वर्षे तांइ ॥ आठमो चक्री मा
 न लायो रे ॥ आ० ॥ सातमो खंन साधवा चढियो, करम उदय
 आयो ॥ मखो सो सागरमें जाइ रे ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ राम ल
 ठमण सीता सतिसर्गें, विपत सही वनमें ॥ सबूक सूर्ज हस खड्ग
 साथ्यो, माखो गयो ढिनमें ॥ बाप चढ आयो हरि सामे रे ॥ बा०
 ॥ खर दूषण त्रिशिर रण लढता, तिन्नु मरण पामे ॥ कुमत्तमति ए
 सी वण आइ रे ॥ कु०॥क०॥५॥ साहसक तारासु मुरली, विद्या मो
 त जीवी ॥ लकपति महावककर्मसैं, सीताहरण कीवी ॥ रामजी लंका
 चढ आया रे ॥ रा० ॥ लक्ष्मणवीर महावलवता, दश मस्तक धा
 या ॥ विज्जीपण राजगादि पाइ रे ॥ वि० ॥ क० ॥ ६ ॥ श्रीमुनि सुव्र
 त शिष्ट आग्या विन, खधकादिक जाणी ॥ पाचसैं रिख गया दम
 क देशमें, पीलाणा घाणी ॥ खधकजीके आयो क्रोध जारी रे ॥
 ख० ॥ ममकी वेशके वाल्यो असुर जब, विराधिक पद धारी ॥ वा
 रमो चक्री नरक जाइ रे ॥ वा० ॥ क० ॥ ७ ॥ पामव पाच महा
 वलवता, हारी डौपदी नारी ॥ वारे वरस लग वन वन जटक्या,

विपता सहि जारी ॥ किचकको कीचो कर नाख्यो रे ॥ कि० ॥
 कौरवसुं कियो जुद्ध जोरावर, आपणो राज राख्यो ॥ डौपदी ले
 गयो सुर आइ रे ॥ डौ० ॥ क० ॥ ७ ॥ पांमव रुझ गया खम धा
 तकी, पद्मोत्तर आयो सामें ॥ कर्मजोग पांमव महावलिया, र
 णमें हार पामे ॥ नृसिंह रूप धाख्यो गिरिधारी रे ॥ नृ० ॥ डौ
 पदी लाया गंगा उतरिया, रुस्या हे मुरारी ॥ दिसोटो दियो
 पंमव ताइ रे ॥ दि० ॥ क० ॥ ९ ॥ कैदकेमाही जाया कृष्णजी,
 वध्या गोकुलगामें ॥ कंस पठाड सोरिपुर ठोडी, रक्षा द्वारकावा
 में ॥ जरास्थ माख्या हे महावंका रे ॥ ज० ॥ तिन खममें आ
 ण मनाइ, दिया जीतमका ॥ द्विपायण रीसज जराइ रे ॥ द्वि० ॥
 क० ॥ १० ॥ द्वारकानगरीमें दादज दीनो, मात पिता ताइ ॥ रथ
 में वेठाय चल्या हरि हलधर, द्वार पछ्यो आइ ॥ गया चल कर तु
 बी वन दोइ ॥ ग० ॥ मृगजरोसें जरा कुमारके, बाण माख्यो जोइ
 ॥ पानी बिन हरि मृत्यु पाइ रे ॥ पा० ॥ क० ॥ ११ ॥ नल राजा दम
 यती राणी, पाइ ड ख जारी ॥ हरिचवराय तारादे नीच घर, माथे
 जख्यो वारी ॥ कुकडो चदराजा कियो ॥ कु० ॥ रायचद फिर वीरमती
 को, रणमें प्राण लियो ॥ करणी फल बुटे नहि काइ रे ॥ क० ॥ क०
 ॥ १२ ॥ नागसीरी धर्मरुचि मुनिकु, कडवो तुंवो दीयो ॥ दुइ फ
 जीति नरक सिबाइ, अनत ड ख लियो ॥ जइ सुकुमालिका सा
 नारी रे ॥ ज० ॥ पंच जरतारी दुई कर्मसु, लियो अथजस जारी ॥
 समजो ए मतलब मनमाइ रे ॥ स० ॥ क० ॥ १३ ॥ काचराकी खाल
 उतारी पूरजनव, हर्ष धख्यो मनमें ॥ तेरे क्रोड जव पाठे खधक
 जीकी, खाल उतारी धनमें ॥ पुमरिक शेष वर्षे सजम पाली रे ॥ पु० ॥
 मगीयो तीन दिवसमें मर कर, नरक गयो चाली ॥ कर्मको ख्या
 ल अजन जार्हे ॥ क० ॥ १४ ॥ महापातकी राय प्रदेशी, सख्या
 नरक खाता ॥ केशी मुनि उपदेश सुणीने, आयक व्रत राता ॥ त

पस्या वेलें वेलें कीवी रे कीवी ॥ दिन गुणचालीस मांही सुकृत कर,
सुरगति जिण लीवी ॥ विचित्रगति कर्मीकी गाई ॥ वि० ॥ क०
॥ १५ ॥ वीरप्रभुको कुशिष्य कहियें, गोसालक जाणो ॥ अष्टांग नि
मित्त ठेवोल प्ररूप्या, जिन ज्यों सो युं जाणो ॥ बढाई करी मुखसें
जारी रे ॥ व० ॥ मरणसमे जिण कर्मजोगसु, आतमा धि
क्कारी ॥ वारमे सगें ठपज्यो जाई रे ॥ वा० ॥ क० ॥ १६ ॥ म
हावैराग्य परिणामें सजम, लीधो उलसाई ॥ कृत्री राजकुमर ज
माली, वीरजीको जमाई ॥ करम वस कुसरथा राच्यो रे ॥ क० ॥
श्रीजिनवचन उद्यापन करकें, खोटो मत खांच्यो ॥ समजायो सम
ज्यो कबु नाई रे ॥ स० ॥ क० ॥ १७ ॥ वसुदेवसरखे जो पिता और, देव
की जैसी माता ॥ नेम प्रभु शिष्य गजमुनिवरके, हरि हलधर त्रा
ता ॥ देख सुसराकु रीश आई रे ॥ वे० ॥ सिरपर बांधी पाल मा
टीकी, खीरा दिया गाई ॥ सुक्त्या विन बूटे कबु नाई रे ॥ छ० ॥ क०
॥ १८ ॥ चंदनराय मलयगिरि राणी, सायर नीर जाई ॥ चोर
ज्यो ठाने निकळ्या घरसें, दीकत बड्ड पाई ॥ कर्मवस चारूही वि
ठडीया रे ॥ क० ॥ रातें चोर आय धन हरियो, वन वन रहव
हिया ॥ वणजारो ले गयो माई रे ॥ व० ॥ क० ॥ १९ ॥ जा
तिमदसू महत्तरके घर, जन्म लियो जाई ॥ पुत्रपणे रह्या साड्ड
कार घेर, आव कन्या व्याही ॥ परण्या फिर श्रेणिककी वेटी रे
॥ प० ॥ सुनार घरे मेंतारज रिख शिर, बाध बांधी सेठी ॥ वेदना
पाई अधिकारी रे ॥ वे० ॥ क० ॥ २० ॥ मयणरेहा वश मोह्यो म
णिरथ, ठलपणो विचाखो ॥ रण जीती आयो सुण पापी, छुगवाड्ड
माखो ॥ आधिनिश निकळ्यो मर आणी रे ॥ आ० ॥ सर्प मर्यो
मरियो वनमांही, नरकगति ठाणी ॥ मयणरेहा वनमें पुत्र जाई
रे ॥ म० ॥ क० ॥ २१ ॥ जगवत जगत श्रेणिके कूणिक, पिंजरामें दीयो
॥ तीलपूट खाईने मरिया, नरकवास कीयो ॥ कूणिक लेणें हार

हाथी तांई ॥ कृ० ॥ एक क्रोड ने एंसी लाख नर, मरिया रणमाइ ॥ सार
 पण निकल्यो कबु नांइ रे ॥ सा० ॥ क० ॥ ११ ॥ मृगापुत्र सगढ अजंन
 सेण, चिलाती चोर जाण्यो ॥ डु ख अनता पाया कर्मसुं, सूत्रमें बसा
 एयो ॥ केइ तो कथामांहे जहारी रे ॥ के० ॥ जिनचक्री हरि हर इश
 विक, कोइसुं नहि यारी ॥ बेटा तो को सी गिणत मांइ रे ॥
 डो० ॥ क० ॥ १३ ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, ठेलो चारित्र
 पाइ ॥ पढ कर सो गया नरक अनता, कह्यो सूत्रमांहि ॥ इइ
 जीव वपजे थावर जाइ रे ॥ इ० ॥ एसी समज कर धूजो कर्मसुं, श
 का कबु नांही ॥ वात ए जिनवर फरमाइ रे ॥ बा० ॥ क० ॥ १४ ॥
 उंगणीई अडतीस वैशाख छुदि ठठ, दक्षिणवेश जाणी ॥ सेका
 काल रह्या मिरिगाममें, नविजन हित थाणी ॥ कर्मफल दृष्टांत
 वताया रे ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे तोळ्या कर्म सब, सो शिव
 सुख पाया ॥ धर्म हे सदाहि सुखदाइ रे ॥ ध० ॥ क० ॥ १५ ॥

॥ अथ मूर्खे उपर लावणी ॥

॥ बालक सगत करे सो मूरख, काम विना पर घर जावे ॥
 मात पितादिक वडे जो उनके, देत गालि नहिं सरमावे ॥ विना
 कामें सो वडेके सामे, बार बार इत वत फिरता ॥ विना हुंकारे
 वात करे शव, परकुड दान मना करता ॥ प्रह्वन्न वात कहे त्रिया
 के आगें, नीच निगुणा नरसु यारी ॥ ऐसे मूरखसैं दूर रहो तुम,
 जो चहाते शोना सारी ॥ एटेक ॥ १ ॥ धर्मकथामें चित्त न राखे,
 के कवे के वात करे ॥ आपमें अधिक वससे अकडाइ, नरपतिका
 विश्वास धरे ॥ मरके ठिकाने जावे अकेला, गुरुका अवगुण वाद
 कहे ॥ अथणी पदूच न देखे जराजर, वडे वडेकी होठ चहे ॥ सहे
 ज वात पर हाथ चलावे, विन मतलब देवे गाली ॥ ए० ॥ २ ॥
 विण जाणेंसैं करे मस्करी, देन छेन घर साथ करे ॥ छुकन वर्ज

ता जावे अगाढी, बदल जाय जव गरज सरें ॥ नरी सजामें मी
 सर दाखे, विना दोष कढबु बोले ॥ परनुकशानी देखि आणदे,
 सत्य फूट पद्द नहिं ठोले ॥ अपनी बडाइ करे पमित विच, जली
 शिक्षा लागे खारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ अजीरण पर जमे रसोइ, ल
 कड फाडे जहां खडा रहे ॥ चाडि चूगल अहि सोनीका दिल, विस
 वास धरि मन माहे चहे ॥ धर्मी पुरुषकी करे निदना, सज्जन रु
 स्यो नहिं मनावे ॥ पाणी पीता हसे मूढ नर, रस्ते चलतां रोटी
 खावे ॥ लडका चेला रखे लाडमें, निरर्थक तोडे तरु मारी ॥ ए० ॥
 ॥ ४ ॥ दान दे कें मगरूरी करे उर, कियो उपगार न माने रति ॥
 हुलकी बोली बोले परकुं, सतापे डखी साधु सती ॥ सुलटी कहे
 तां उलटी माने, हांसिकी बात पर रीश नरे ॥ ठती शक्ति उपगार
 करे नहिं, दया दानमें शमें मरे ॥ विनां सुदातो गायन गावे, वा
 त करे विन विचारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ विश्वास दे कें बदल जावे
 उर, जूठा जूठा सोगन खावे ॥ अपना धर्मकी करे हीनता, पा
 प कर कें दिल पोमावे ॥ दो नर बात करे उसि ठामें, कान ब्री
 जो नर लगावे ॥ प्रह्वन्न बात करे प्रगट परकी, त्रिया पर हाथज
 कगावे ॥ राम नामसु करे अडी उर, बद परेजी करे विमारी ॥
 ए० ॥ ६ ॥ गर्व करे तन धन जोवनका, बुद्धि जली नहिं फेलावे
 ॥ ज्ञान ध्यानको करे न उद्यम, विकथामें दिल रमावे ॥ तप ज
 प करतां आलस अधिको, पाप कर्ममें अगेवानी ॥ नर नव रत
 न फोकटमें खोवे, ए सव हे मूरख प्रानी ॥ तिलोकरिख कहे सत
 सगतसु, वेगें तरो नवजल पारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कक्का वत्तीसी उपर लावणी ॥

॥ कक्का कर्मकी अजव गति हे, मत करना तुम नर नारी ॥
 हस्तें हस्तें बांधे जीवडा, छुगते तव मुसकिल नारी ॥ ठिनमें रा

दुनीयांका वदे, इइ धनुष वादल जेसा ॥ तग पांचूका संग न कर
 नां, परजवका रख अदेसा ॥ मूला मंक मत रखो दीलमें, साफीकी
 सुधरे करणी ॥ जिस्की बुराई जिस्कु पढावे, जाय पड़ेगा नर्क वे
 तरणी ॥ वाप मारणकी दिलमें विचारी, नंदिवर्धन कुमर गयो मा
 री ॥ क० ॥ ४ ॥ ढुंढा ढूढ ले सार वस्तुकु, देव निरजन जसवता ॥
 गुरु निर्ग्रथ उर धर्म दयामें, तीन रत्न ए शिव कता ॥ नन्ना नमो
 नित अरिहत सिद्धकु, आचारज उवदाय सदा ॥ साधु साधवी स
 जमी सरणो, लेतां दुख नहि आवे कदा ॥ इनसुं जो रक्के करडाइ,
 वे दुख पाते गति चारी ॥ क० ॥ ५ ॥ तत्ता तत्त्व नवका करो निर्णय,
 त्रणकु जाणो त्रणकुं ठमो ॥ सवर निर्झरा मोह ए तीनु, इनकुं
 शुद्ध मनसु ममो ॥ थडा थिर नहिं इंदर चंदर, अस्थिर ग्रह नदत्र
 तारा ॥ थिर नहिं इइ चइ हरि चक्री, सकल चराचर ससारा ॥
 जन्मे सो मरे फुले सो कुमलावे, रखो धर्मकी दुशियारी ॥ क० ॥ ६ ॥
 दहा दया नित पालो सियाना, दान वेनां दिल हरखाइ ॥ विषय
 कपाय इडीकु दमन कर, ए करणी हे सुखदाइ ॥ धडा धर्मका
 सोदा कर लो, ज्ञान ध्यान तप जप सच्चा ॥ ए करणी हे स्वर्ग मो
 क्की, इत बिन सब सौदा कक्षा ॥ नन्ना नाम लो प्रभुका हर्द
 म, जो चहाते आतम तारी ॥ क० ॥ १० ॥ पप्पा पुण्यसें पाया
 नर जव, आरजवेश उत्तम कुलमें ॥ लवो आखरो जोग मुनिको,
 वसु तुं पडा हे जग भुलमें ॥ फप्पा फूल मत तन धन देखी, चार
 रोज चटको मटको ॥ आखरमें सब जाना ठोड कें, एसी सम
 जके दिल हटको ॥ बच्चा बडाइ जिनकी खलमें, रखे धर्मकी ते
 य्यारी ॥ क० ॥ ११ ॥ जप्पा जजाइ कर लो जइया, पुण्य
 पाप सग आवेगा ॥ बरा रहेगा माल खजाना, जस अपजस रह
 जावेगा ॥ मम्मा मान ले मुनिवर कहेणी, मन बंदरकुं कर वशमें ॥
 मान माया मोह ममत मेट दे, आयु ठिजे ज्यों जल पसमें ॥ मि

वका एक बणावे, तिनमें रांकको राख करे ॥ लक्ष चोराशी चार
 गतिमें, नाना विध जीव रूप धरे ॥ ५५ ॥ ५५ नरेंद्र सुरासुर, किस
 सुं नहिं रस्के यारी ॥ क० ॥ १ ॥ खस्का खजाना सगी धर्मका,
 आगेकु सुखदायक हे ॥ धर्म मूल द्रमा अगेवानी, जगतपतिका
 वायक हे ॥ गंगा गर्व मत करो सियाना, गुरु कहेणी करो नि श
 का ॥ गर्व किया राजा रावणने, खोय दीनी दममें लका ॥ गर्व
 रह्या नहिं किसका जगमें, मगरूरी हे दुःखकारा ॥ क० ॥ २ ॥
 घघ्या तु घर जो मानत मेरा, सो नहिं हे सगी तेरा ॥ तु परवेशी
 चार दीनोंका, क्यु करता मेरा मेरा ॥ नन्ना नरमाइ रखना दिल
 में, नरमाइ जगमें प्यारी ॥ करडा निसरडा वाजे जगमें, पावे न
 व नव दुःख जारी ॥ एरु वृक्ष फल उपमा उत्कें, धर्मो सक्त्सु
 नहिं यारी ॥ क० ॥ ३ ॥ चच्चा चर्चा तुम कर लो धर्मकी, कर्म
 नर्मकी खबर पढे ॥ मूढसु बात करो मत वंदे, राग द्वेष उर के
 श बढे ॥ ठष्ठा तिन तिन ठिजे उमर सब, किस्के नरोंसें तुं अक
 हे ॥ काल अचानक एकदम अदर, जेसें बाज तित्तर पकडे ॥ ए
 सी समज्के ठोड वे ममता, सतगुरु कहे रख दुशियारी ॥ क०
 ॥ ४ ॥ जल्ला जरासी कहु हकीगत, जरा आया जोवन जावे ॥
 जोर हठे जर जोरु जमी जन, तेरे सग कोइ नहिं आवे ॥ एसी
 जाण करो जैनधर्मकुं, जीवजन्ना विन हे खुवारी ॥ ऊष्ठा पूठ
 मत बोलो धंदे, पूठी हे ममता माया ॥ पूठा लेणा पूठा देणा, पूठा
 पूठमें ललचाया ॥ आगूका मर रख कर जेया, पूठ बात वे नीवारी
 ॥ क० ॥ ५ ॥ नन्ना नीम व्रत कर लो पहेली, जव लग चूढापा नहिं
 आवे ॥ रोग वदनमें आवे नहिं ठर, इडिका पूरण बल पावे ॥
 टट्टा टेक तुम रखो धर्मकी, जव लग जीव रहे तनमें ॥ पापकी
 टेक करो मत कवहु, मिले वदनामी जगजनमें ॥ सुजूमचकी रा
 वण चक्री, खोटी टेक लह्यो दुःख जारी ॥ क० ॥ ६ ॥ उठा वाठ

॥ केदी उपर जावट्टांतनी लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ इस दुनियामें जीव सो, जूल रहे नर्ममांय ॥ समजानेके वास्ते, कहुं दृष्टात वणाय ॥ १ ॥ प्रथम नमुं जिनराज चरणकुं, ए देशीमें ठे ॥ इस दुनियाके अंदर जैया, केदी खाना नयंकार ॥ जी समें केदी पढे अपार ॥ एक रोजका जकि सुनो सब, सफी लगी री मद्दा नार ॥ केदी कोइ जागे सोउ सवार ॥ वसी वखतमें वि जली चमकी, देखे दृष्टि पसार ॥ पहेरायत सोते निद मजार ॥ दोहो ॥ केदी कहे सुणो यार, अब वखत मल्या श्रीकार ॥ जेज करो मत पलककी, निकलो तुरगके वहार ॥ गफजतसे होवे गे खूब खुवार, समजके निकल चलो दुशियार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कोइ कहे तब तनक निद ले, फेर चलेंगे यार ॥ श्रादा हेगा हमा रा सार ॥ जेट रहे सो रहे केदमें, पस्तावे दिल सोय ॥ गुजारे रो ज सवे रोय रोय ॥ जो निकले सो पहाँचे घरकुं, माने मोज अपा र ॥ मिला जिनकु अपना परिवार ॥ दोहो ॥ इस दृष्टांतें पढ रहे, मोह तुरगके माय ॥ जगतवासी सब डख सहे, जहू चोराशी मांय ॥ रस्ता हे जैनधर्म सुखकार ॥ स० ॥ २ ॥ मोह कर्मकी जीत पढे कवी, विजली दमक अवतार ॥ इसीमें चेते नवि नर नार ॥ बूटे मोहके केव खानासें, जावे मुगत मजार ॥ मिले नि ज गुण सपत परिवार ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सि द सदा जयकार ॥ जिनोंके नाम लिपां निस्तार ॥ दोहो ॥ कर्म नर्म दूरे रहे, परम पद निराकार ॥ धर्मपथ साधन किया, वरते मगल चार ॥ आराधो समदृष्टि नर नार ॥ स० ॥ ३ ॥ विषय कपायमें मस्त रहे केइ, दिलमें रखे अहकार ॥ नहिं हे हमसो कोइ शिरदार ॥ टेडी टेडी पघडी रखे, चले निरखतो ठांय ॥ मरो हे मूठ रहे अकडाय ॥ कर्मगतिका अजब तमासा, ठिनकमाहि

त्रपण कर ठक्कायासु, अन्नयदान हे सुखकारी ॥ क० ॥ १२ ॥
 यज्या याद रख चर्चा धर्मकी, या देही मुश्किल पाया ॥ एसी ब
 खतमें धर्म किया नहि, सो जब जबमें पस्ताया ॥ ररा रोष मत
 करो किसीकु, रोष किया तप फल हारे ॥ खंधक दीपायन रोष
 कियासु, अनेक कोटि प्राणी मारे ॥ जन्म मरण इ ख लहेगा ज
 गमें, तपकरणी सो गया हारी ॥ क० ॥ १३ ॥ लछा लोनकी
 लाय बुरी हे, जालच बश इ रुत करते ॥ हत्या करे घोले मुख
 जूठा, थापण ठावे परधन हरते ॥ बड़ा वाणी वीतराग प्ररूपी,
 सञ्चि जाणि व्रत आदरनां ॥ विना धर्मको मूल जमा कर, आ
 व कर्म बशमें करना ॥ शशशा सत्य हे सार सकलमें, साचकु आं
 च न लगारी ॥ क० ॥ १४ ॥ पण्या करो पट् कायकी रक्षा,
 निज आत्म सम सब प्राणी ॥ इ ख मरण सो कोइ न चहाते,
 दया जगोती सुखदाणी ॥ सस्ता ए ससार समूदर, विषय जोग
 कीचड जाणी ॥ अब थव आठ करमका इसमें, अनत वर्गणाफा
 पाणी ॥ धर्म जाजमें वेठ सियाना, उतर जाठ जबजल पारी ॥
 क० ॥ १५ ॥ दहा हाल ए सुन के हियामें, हर्दम श्रीजिनकु न
 जना ॥ हेत रखो ठक्काय जीवमें, हाय हरामी हठ तजनां ॥ ह
 रो क्रोध माया मद तृष्णा, पाप करता दिलमें लजना ॥ दया
 दान सत्यशील अमम, धर्म किया करता गजना ॥ इण जबमें
 तन धन जन सपति, परजबमें लहो जयकारी ॥ क० ॥ १६ ॥
 ठगणीशें अडतिस वैशाख ठक्कल पर्व, तिथि वारस दिन बुधवा
 र ॥ तिलोकरिय कहे ककावत्तीसी, सुणकें नविजन अवधारे ॥
 तो ठनकु सुमति छुड़ आवे, मिथ्या जर्म सो जग जावे ॥ जाने
 अयिर ससारकी रचना, जेनधर्म शरणो चहावे ॥ कर्म जर्मको
 मर्म प्रिचारी, परम पद होय अत्रिकारी ॥ क० ॥ १७ ॥ इति ॥

को ॥ हिमायतिच्या वलें गरीब गुरि,वालां तू घुरकावु नको ॥ दो
 दिवसाची जाइल सत्ता, अपयश माथा घेउ नको ॥ बहुत कर्ज
 वाजारी होउनी, बोज आपला दौडुं नको ॥ स्नेहासाठी पदर मो
 ड कर, परतु जामिन होउ नको ॥ चाल ॥ विहपैलाचा उचलुं
 नको, ठणी तराछु तोलु नको ॥ गहाण कुणाचा रुलवु नको, अ
 सल्यावर निख मागू नको ॥ चाल पहेली ॥ नसल्यावर सांगणे
 कशाजा, गाव तुजा निह धरू नको ॥ लु० ॥ ३ ॥ ठगीच निदा
 स्तुति कुणाची, स्वहिता साठी करूं नको ॥ बरी खुशामत शाहा
 णाचीही, मूर्खाची ती मैत्री नको ॥ कष्टाची बरि नाजी नाक
 री, तुप साकरेची चोरी नको ॥ आल्या अतिथि मूठजर द्यावा,
 मागे पुढती पाडु नको ॥ दिव्ही स्थिती देवाने तीतज, मानी सुख
 कधी विदु नको ॥ आसल्या गांठी धन सचय कर, सत्कार्या व्यय
 ददुं नको ॥ आतां तुजेही गोष्ट सांगतो, सत्कर्मा ओसरु नको
 ॥ सत्कीर्ती नौबतिचा रुका, गाजे मग शकाच नको ॥ चाल ॥
 सुविचारा कातरूं नको, सतसगत अतरू नको ॥ दैताजा अनु
 सरू नको, हरि नजना विस्मरू नको ॥ गावयांस अनतफदीचे,
 फटके मागे सरू नको ॥ लु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ लावणी बीजी मराठी नाशामा ॥

॥ येव देवाचे नाम देवाचें, अष्टौ प्रहरा जप जिनवर ॥ दे टा
 कुनि हे वंद वावुगे, फव विषयेंची काय मजा, प्रभु नामाची
 लावी ध्वजा, असार हा ससार त्यजा, शांति गुणाला देवरजा,
 रजकर्माची दूर नजा, नाव विमलची करी पूजा, द्रुमा शांति
 मन धरी तजा ॥ पंच महाव्रत सुमति गुप्ति, निद्रा मागे घर
 घर घर ॥ येउ दे० ॥ १ ॥ परोपकारा शरीर जिजावै, जैसा मैलागिरि
 चदन, करी सज्जन चरणी वदन, काम शत्रुचे निकदन, गृह

के अजिह्वेआदि, अष्टाविश फरमाया रे ॥ अगारा मुनि सुव्रतस्वामी,
मल्लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नमि नाथजीके गणध
र सतरा, शुच नामें शुचकारी रे ॥ रिष्टनेमजीके वरदत्त आदि, ५
ग्यारा सुविचारी रे ॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदिनादिक पारस प्रभुके,
दश कहा सूत्र मजारो रे ॥ महावीरजीके इष्टचूति प्रमुख, श्या
रा गणधारो रे ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी ज्ञान पूर्वधर सारा, सिद्ध
पदवी सद्गु पाई रे ॥ तिलोकरिखजी कहे मन वचन तन, बढ
ना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सौधर्म स्वामीनी सदाय प्रारंभ ॥

॥ जमी कदमें रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर
पट्टोदर नमुं, श्री श्री सौधर्मा स्वामी ॥ मगध देशों रे को राखी पु
र जलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धर्मिल रे
माता धारिणी, रूपें काम कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी,
पूरण जस्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अठार ठे शास्तर
वली, चउदे विद्या निधान ॥ सोमल ब्राह्मण यज्ञके कारणों, बू
जाया वेइ सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रिशला नद
जी, धनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपुरें, जग
नायक जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इइ आया तिणपुरमें, वली
सुर सूरि अपार ॥ रञ्जो त्रिगढो रे महिमा विस्तरी, आण्यो सो
अर्द्धकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चर्चा करवा रे गया उमगछु, रचना दे
खी सो नयण ॥ गर्वज उतस्रो रे सशय टालियो, प्रभुनां अमृत वय
ण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी रे परम वैरागछुं, पचसया परिवार
॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि कपनी, चौदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥
मति श्रुति अवधि रे मन परजव वली, उपना ज्ञान ए चार ॥ नि
शिदिन उद्यम रे करे तप जप तणो, जावना जावे सो वार ॥ वी०

॥ ग० ॥ ५ ॥ जबू जैसा चेला रे थरिया, कोडि नन्याणु त्याग
सोनेया ॥ रातें परण्णा रे नारी, दिन ठगा लियो सजम धारी ॥
ग० ॥ ६ ॥ ममितपुत्र ठठा रे कहियें, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख
लहियें ॥ अकंपित आठमा रे वदो, नव नव ड रुत दूर निकवो ॥
ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, नव नव ड रुत दूर नसा
वो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म जर्म नय दूर पलावो ॥ ग०
॥ ८ ॥ प्रजासजी ग्यारमा रे सेवो, प्रात ठठी नित नामज छेवो ॥
चउदे पूरव रे धारी, पूढपा प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग० ॥ ९ ॥ त
प कियो ड कर रे कारी ॥ ताखा बहु नवियण नर नारी ॥ सम
ता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना कखा चकचूरा ॥ गु० ॥ १० ॥ स
हु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुगति सिधायी ॥ ते सब
प्रणमू रे जावें, जनम मरण नय जिम मिट जावे ॥ ग० ॥ ११ ॥
ठगणीसैं ठतिस रे सालें, चोमासैं रह्या घोढनदी वरसाले ॥ गण
धर मुनिवर रें गाया, तिलोकरिखजी प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥

॥ अथ द्वितीय सवाय प्रारंभ ॥

॥ देशी केरवामें ॥ गणधर ग्यारा वदियेंजी, जिनने किनो म
हा उपगार ॥ जला रे मुनि किनो ॥ ग० ॥ १ ॥ मान धरी गया
वाद करणकू, दियो हे जर्म निवार ॥ न० ॥ दि० ॥ ग० ॥ २ ॥ इडजूति
जी लियो सजम प्रछुपें, ठठ ठठ तप लियो धार ॥ न० ॥ ठ० ॥ ग०
॥ ३ ॥ तेजोलेझ्या वश कर लीनी, नणिया अंग प्रछु वार ॥
न० ॥ न० ॥ ग० ॥ ४ ॥ अग्रिजूति वायुजूति श्रीजाजी, ए तीनु वधव
विचार ॥ न० ॥ ए० ॥ ग० ॥ ५ ॥ वसुजूति चोथा नित्य प्रणमु, शूर
वीर शिरदार ॥ न० ॥ शू० ॥ ग० ॥ ६ ॥ वीर पट्टोदर स्वामी सुगर्मा,
रूप अनूप उदार ॥ न० ॥ रू० ॥ ग० ॥ ७ ॥ ममितपुत्रजी ने मौर्यपुतर,
अकंपित सुखकार ॥ न० ॥ अ० ॥ ग० ॥ ८ ॥ अचल बली प्रणमू मे

॥ ८ ॥ वरस पचासैं रे रह्या गृहवासमें, त्रीश वरस लग जाण ॥
 सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रभु पट्टता निर्वाण ॥ वी० ॥ ९ ॥
 आचारज पद वार वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूरव करण
 छक्क ध्यानथी, हणियां घातिक कर्म ॥ वी० ॥ १० ॥ केवल पाया
 रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे
 जवुसारिखा, नन्याणु कोढी रे इव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें पर
 एया रे आठ कामिनी, पांचगों सत्तावीश लार ॥ दिन उगता रे सं
 जम आदखो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष
 लग रे केवल पद रह्या, पढोता मुगति मजार ॥ अजर अमर सुख रे
 पाया सासता, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ सवत् उगणी
 रोंरें उगण चालीसका, पौष छुट् आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम
 में रे कीधी सद्याय ए, दक्षिण देश वखाण ॥ वी० ॥ १४ ॥ तिलो
 करिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम
 तिम करिने रे पार उतारजो, विनति ए अवधार ॥ वी० ॥ १५ ॥

॥ अथ इग्यारागणधरकी सजाय प्रारब्ध ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ गणधर समरो रे जाइ ॥
 दिनदिन अधिक सपत सुखदाइ ॥ विघन न व्यापे रे कोइ, छ्ही श्री
 मनवठित लहे सोइ ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रभु केवलरे पाया, वाद
 कण्णने अधिक उमाया ॥ नर्म निवासो रे स्वामी, सजम प्रभुर्यें
 जियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ ठठ ठठ तपस्या रे कीनी, तेजो
 लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सब शिष्यमाही रे पहिला, इन्द्रूति
 प्रणमू अजवेजा ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीनूति रे बीजा, वायुनूति प्र
 णमू नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहू सगा रे त्राता, तोड दिया मोहनी ड ख
 ताता ॥ ग० ॥ ४ ॥ वसुनूति चोथा रे जाणो, पचमा सुधर्माभ्यामी
 वखाणा ॥ वीरजीके पाटे रे सोहे, निरखत जविजनना मन मोहे

लिशई एकदिनमें दीक्षा धारी, झ्याराई गया शिवमदिरकूं ॥ ४ ॥
स० ॥ उगणीई अढतीस आंवोरी पेटमें, तिलोकरिख प्रणमें सदा
मुनिवरकू ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सदाय प्रारज ॥

॥ दया धरम दिलमांही जावे रे ॥ ए वेशी ॥ वदो नित गण
धर ग्यारा रे,मिटे जिम जर्म अधारा रे ॥ ए टेक ॥ चवदा सहस्र
अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवत ॥ इड्नुति सुख कारणा जी,
रचिया ज्या सर्व सिद्धांत ॥ १ ॥ अग्रिनुति स्वामी दूसरा जी,वायु
चूति त्रीजा जाण ॥ ए तीन्नु सगा वधवा जी,गोतम गोत्र वखाण
॥ वं० ॥ १ ॥ वसुचूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥
सूत्र जगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ व० ॥ ३ ॥
वीरजीरे पाटे दीपता जी,धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म
दीपाइने जी, सारियां वठित काम ॥ व० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जबू
सरिखाजी, रातें ते परण्या नार ॥ कोढि नन्याणु त्यागिने जी, लिथो
सजम जार ॥ व० ॥ ५ ॥ मन्तिपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी,
अकपित जस धार ॥ अचलजीने जपता थकां जी, तरियें नव
जलपार ॥ व० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज कि
या सिद्ध ॥ वडु प्रजासजी झ्यारमा जी, जाका नाम लिया नव
निध ॥ व० ॥ ७ ॥ ए झ्यारा गणधरू जी, चवदा पूरव धार ॥
शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशई परिवार ॥ व० ॥ ८ ॥ इण
ड खम आग विपे जी, सूत्र तणो ठे आधार ॥ ते सब जाणो न
विजना जी, गणधरजी वपगार ॥ व० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे ज
गतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित
नित जय जय कार ॥ व० ॥ १० ॥

तारज, सब गया मुगति मजार ॥ ज० ॥ स० ॥ ग० ॥ ए ॥ प
 रजास जी झ्यारमा प्रणमू, शिवसपतिना दातार ॥ ज० ॥ शि०
 ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजीकू, नित नित होज्यो
 नमस्कार ॥ ज० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥

॥ अथ तृतीय सवाय प्रारंभ ॥

॥ देशी प्रजाती ॥ प्रात ठठि प्रणमो नवि जावें, नित नित ग
 णधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इन्द्रूति अग्नि नूति वदूं, वायुनूति
 सुखकारा ॥ वसुनूति सुधर्मा स्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥
 प्रा० ॥ १ ॥ मन्तिपुत्र मौर्यपुत्र अकपित, अचल अचल अवि
 कारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवता, प्रजासजी प्राण पियारा ॥
 प्रा० ॥ २ ॥ अग्यारा गणधर महा गुणसागर, जुम्मालिशसें परिवार
 ॥ वीरप्रभुके पासें एकदिनमें, व्रत किया अंगीकारा ॥ प्रा०
 ॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल
 केवल कमलाधारी, कर गया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इ
 ण समरता संकट नासे, रहे अखूट नमारा ॥ तिलोकरिख कहे
 चरण सरण मुऊ, कीजो नव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सजाय प्रारंभ ॥

॥ देशी फागणका ख्यालमें ॥ समरो नित समरो नित, ग्याराइ गण
 धरकू ॥ स० ॥ इन्द्रूति अग्निनूति वदो, वायुनूति वदो जोडी करकू ॥
 स० ॥ १ ॥ वसुनूति सुधर्मा स्वामी वदो, मन्तिपुत्र ठोडी जगह
 रकू ॥ स० ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र अकपित अचलजी, मेतारज जी ठो
 ड्या साते मरकू ॥ स० ॥ ३ ॥ झ्यारमा श्रीपरजासजीकू वदो,
 ठोड दिया हे सज्जन घरकू ॥ स० ॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सा
 रा, उपदेश दिया हे धर्मका परकू ॥ स० ॥ ५ ॥ ग्याराहि तप सज
 म शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कर्म अरि कू ॥ स० ॥ ६ ॥ जुमा

लिशई एकदिनमें दीक्षा धारी, झ्याराई गया शिवमदिरकूं ॥ ४ ॥
स० ॥ उगणीई अढतीस आंवोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमे सदा
मुनिवरकू ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सहाय प्रारंभ ॥

॥ दया धरम दिलमांही जावे रे ॥ ए देशी ॥ वदो नित गण
धर ग्यारा रे, मिटे जिम नर्म अधारा रे ॥ ए टेक ॥ चवदा सहस्र
अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवत ॥ इड्चूति सुख कारणा जी,
रचिया ज्या सर्व सिद्धांत ॥ १ ॥ अग्रिचूति स्वामी दूसरा जी, वायु
चूति त्रीजा जाण ॥ ए तीन् सगा वधवा जी, गोतम गोत्र वखाण
॥ व० ॥ २ ॥ वसुचूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥
सूत्र नगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ व० ॥ ३ ॥
वीरजीरे पाटे दीपता जी, धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म
दीपाइने जी, सारिया बढित काम ॥ व० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जन्म
सरिखाजी, रातें ते परण्या नार ॥ कोहि नन्याणु त्याग्निने जी, लिथो
सजम नार ॥ व० ॥ ५ ॥ मरुतिपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी,
अकपित जस धार ॥ अचलजीने जपतां थकां जी, तरियें नव
जलपार ॥ व० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज कि
या सिद्ध ॥ वडुं प्रजासजी झ्यारमा जी, जाका नाम लिया नव
निध ॥ व० ॥ ७ ॥ ए झ्यारा गणधरू जी, चवदा पूरव धार ॥
शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशई परिवार ॥ व० ॥ ८ ॥ इण
छ खम आरा विपे जी, सूत्र तणो ठे आधार ॥ ते सव जाणो न
विजना जी, गणधरजी ठपगार ॥ व० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे ज
गतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित
नित जय जय कार ॥ व० ॥ १० ॥

तारज, सब गया मुगति मजार ॥ ज० ॥ स० ॥ ग० ॥ ए ॥ प
 रनास जी झ्यारमा प्रणमू, शिवसपतिना दातार ॥ ज० ॥ शि०
 ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजीकूं, नित नित होज्यो
 नमस्कार ॥ ज० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥

॥ अथ तृतीय सवाय प्रारंभ ॥

॥ देशी प्रजाती ॥ प्रात उठि प्रणमो नवि जावें, नित नित ग
 णधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इच्छूति अग्नि चूति वंदूं, वायुचूति
 सुखकारा ॥ वसुचूति सुधर्मा स्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥
 प्रा० ॥ १ ॥ मन्तिपुत्र मोर्यपुत्र अकपित, अचल अचल अवि
 कारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवता, प्रजासजी प्राण पियारा ॥
 प्रा० ॥ २ ॥ अग्यारा गणधर महा गुणसागर, बुम्मालिशसैं परिवा
 रा ॥ वीरप्रभुके पासैं एकदिनमें, व्रत किया अगीकारा ॥ प्रा०
 ॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल
 केवल कमलाधारी, कर गया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इ
 ए समरंता सकट नासे, रहे अखूट जमारा ॥ तिलोकरिख कहे
 चरण सरण मुऊ, कीजो नव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सजाय प्रारंभ ॥

॥ देशी फागणका ख्यालमें ॥ समरोनित समरो नित, ग्याराइ गण
 धरकू ॥ स० ॥ इच्छूति अग्निचूति वंदो, वायुचूति वंदो जोडी करकू ॥
 स० ॥ १ ॥ वसुचूति सुधर्मा स्वामी वदो, मन्तिपुत्र ठोडी जगह
 रकू ॥ स० ॥ २ ॥ मोर्यपुत्र अकपित अचलजी, मेतारज जी ठो
 ड्या साते मरकू ॥ स० ॥ ३ ॥ झ्यारमा श्रीपरनासजीकू वदो,
 ठोड दिया हे सङ्गन धरकू ॥ स० ॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सा
 रा, उपदेश दिया हे धर्मका परकू ॥ स० ॥ ५ ॥ ग्याराहि तप सज
 म शुद्ध पाली, टाल दिया थाठ कर्म अरि कू ॥ स० ॥ ६ ॥ बुमा

लिशर्शे एकदिनमें दीक्षा धारी, झ्याराई गया शिवमंदिरकूं ॥ ७ ॥
स० ॥ उगणीशे अढतीस आंवोरी पेठमें, तिलोकरिख प्रणमें सदा
मुनिवरकू ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम सवाय प्रारज ॥

॥ दया धरम दिलमांही नावे रे ॥ ए देशी ॥ वदो नित गण
धर ग्यारा रे,मिटे जिम जर्म अधारा रे ॥ ए टेक ॥ चवदा सहस्र
अणगारमें जी, ज्येष्ठ शिष्य जशवत ॥ इन्द्रूति सुख कारणा जी,
रविया ज्या सर्व सिद्धांत ॥ १ ॥ अग्निचूति स्वामी दूसरा जी,वायु
चूति त्रीजा जाण ॥ ए तीनू सगा वधवा जी,गोतम गोत्र वखाण
॥ वं० ॥ २ ॥ वसुचूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥
सूत्र जगवतीमें चालियो जी, परशननो अधिकार ॥ वं० ॥ ३ ॥
वीरजीरे पाटे दीपता जी,धन धन सुधर्मा स्वाम ॥ श्रीजिन धर्म
दीपाइने जी, सारिया वठित काम ॥ व० ॥ ४ ॥ शिष्य थया जवू
सरिखा जी, रातें ते परण्या नार ॥ कोहि नन्याणु त्यागिने जी, लिथो
सजम नार ॥ व० ॥ ५ ॥ ममितपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी,
अकपित जस धार ॥ अचलजीने जपता थका जी, तरियें नव
जलपार ॥ व० ॥ ६ ॥ मेतारज आरजमति जी, निज कारज कि
यां सिद्ध ॥ वडै प्रजासजी झ्यारमा जी, जाका नाम लिया नव
निध ॥ व० ॥ ७ ॥ ए झ्यारा गणधरू जी, चवदा पूरव धार ॥
शिष्य थया श्री वीरना जी, चुम्मालिशर्शे परिवार ॥ व० ॥ ८ ॥ इण
ड खम आरा विपे जी, सूत्र तणो ठे आधार ॥ ते सब जाणो न
विजना जी, गणधरजी उपगार ॥ व० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे ज
गतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइयें जी, नित
नित जय जय कार ॥ वं० ॥ १० ॥

निकम्म माणाय बुद्धिवयणें, अत मगलिक सोचो दीर्घनयणें ॥
 जे० ॥ १० ॥ प्रथम अध्ययनमें धर्म प्रशसा, इतियाध्ययनें धी
 रज पर असा ॥ जे० ॥ ११ ॥ अनाचीरनको त्रीजामें विस्तारो,
 चोथे ठकाय तणो हितकारो ॥ जे० ॥ १२ ॥ पचमे विष्टुद्ध जि
 द्दा शिक्षा आणी, ठेठे मुनिगुण किरिया वखाणी ॥ जे० ॥ १३ ॥
 वचन सुधी सातमे परधानो, आठमो विचारो आचार निधानो
 ॥ जे० ॥ १४ ॥ नवम अध्ययने विनय मूल दाखे, दशमे अध्ययने
 निष्कुण जाखे ॥ जे० ॥ १५ ॥ समुच्चय नाम कहां इहा सतो,
 अनत नयातम वचन महंतो ॥ जे० ॥ १६ ॥ सूत्र समुद्धार कुण
 पावे, गगन शशी शिष्ट देख उमावे ॥ जे० ॥ १७ ॥ तैसैं दू आज्ञासी
 महा अल्पबुद्धि, जिनागमकी नहि पूरण शुद्धि ॥ जे० ॥ १८ ॥
 प्रत्येक अध्ययन उद्देशा विचारो, कहु निज जापामें गुरु उपगा
 रो ॥ जे० ॥ १९ ॥ पाले आराधे जाव शुद्ध आणी, तिलोकरिख
 जी कहे सो वरे शिवराणी ॥ जे० ॥ २० ॥ इति पीठिका सजाय ॥

॥ अथ प्रथम डुम्मपुप्फियाध्ययन सवाय प्रारभ ॥

॥ जावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देखी ॥ धर्म मगल उत्कृष्ट ठे,
 सासतो ए त्रिहु कालो जी ॥ अहिंसा लक्षण धर्मनो, जाख्यो ठे
 दीनदयालो जी ॥ १ ॥ धरम आराधो जी जावष्ट, सजम सत्तरे
 प्रकारो जी ॥ वारे जेदें तपस्या करे, इव्य जाव सुविचारो जी ॥
 ध० ॥ २ ॥ चार जातिका देवता, हरि हर चक्री उदारो जी ॥ धर्म
 विपे सदा मन रहे, तिणने नमे वारवारो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम
 तरु फूलें अलि चित्त रली, पीवे सो मकरंदो जी ॥ पीढा नहि देवे
 कुसुमने, पोतें वृक्षि आणवो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम मुनि लोक
 विपे कहा, आरभ परिग्रह निवारो जी ॥ जमर निहायें खणी ग्रहे,
 जो देवे शुद्ध दातारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सजम जार निजाववा,

॥८॥ धिक्कार हो तुऊ अपजस कामी, असंजम जीवित चहावे ॥
 वम्यो जोग वढणो नहिं छुगतो, मरण जलो तुऊ थावे के ॥ सु०
 ॥ ९ ॥ जिहां जिहां तुं देखिस त्रिया नयणें, अधिर जाव तुऊ था
 सी ॥ दडवृद्ध जिम पडे पवन प्रतापें, तिम तुऊ संजम जासी के
 ॥ सु० ॥ १० ॥ अकुशर्था जिम गज वश थावे, जिम सती मावत
 जेमो ॥ ज्ञान अंकुश करीने वश लाइ, उन्मत्त गज रहनेमो के ॥
 सु० ॥ ११ ॥ धर्म खुटे मुनि थिर करि थाप्यो, दोनु लह्यो शिव
 वासो ॥ इम जाणी मुनि मन वश करि राखे, बूटे तस गर्नवासो
 के ॥ सु० ॥ १२ ॥ सामान्यपूर्वि अध्ययन ठे दूजो, बुजो नविज
 न जावें ॥ तिलोकरिख कहे सुजो जिनमारग, सो इम मन सम
 जावे के ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति सामान्यपूर्वि अध्ययनं ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय खुडियाराध्ययन सवाय प्रारंभ ॥

॥ थें करज्यो शाणा धर्म ते वार, आखा तीजको ॥ अथवा ॥
 आरस सेलढी आदिजिणेसर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ सजम धा
 रे ममत निवारे, ठक्काया प्रतिपाल ॥ ते वावन अनाचीरण व
 रजे, जिन आणा वजमाल हो ॥ थें सुणो नवि प्राणी, धन जे
 परमेश्वर वाणी, आवेरे आहा आदरे ॥ १ ॥ आरंभ करी कियो
 आधार उद्देशिक, मोल आय्यो मुनिकाज ॥ नित्य पिम वली सा
 हामो आय्यो, सो नहिं छे रिखराज हो ॥ थें ० ॥ २ ॥ रात्रिजो
 जन स्नान सुगंध तन, पेहरे नहिं वली माल ॥ न करे विंजणो
 रात्रे स्निग्ध दे, रुदस्थ पातर टाल हो ॥ थें ० ॥ ३ ॥ दानशा
 लानो आधार न लेवो, मर्वन नहिं करे तेल ॥ दातण मीसी रु
 दस्थसें शाता, तजे चोपहादिक खेल हो ॥ थें ० ॥ ४ ॥ मुख नहिं
 जोवे दर्पणमांही, ठत्र धरे नहिं शीश ॥ सावद्य ओपधि वर्जे
 पगरखी, साचा जेद मुनीश हो ॥ थें ० ॥ ५ ॥ तेठ आरंभ तजे

आहार सिज्यातरी, बैठे न मांचे पलग ॥ विण कारण गृहस्थ घर
 नहिं बैठे, टाळे उवटणो अंग हो ॥ ये० ॥ ६ ॥ वेयावच्च गृहस्थकी
 करे न रिखजी, जाति जणाइ आहार ॥ मिश्र पाणी वली इ ख
 आया, सरणो न वळे परिवार हो ॥ ये० ॥ ७ ॥ मूलो आदू ख
 म सेलमी, कद मूल फल बीज ॥ सचलादिक पंच जूण आवि दे,
 तजे सचेत सब चीज हो ॥ ये० ॥ ८ ॥ शोभा कारण वस्त्र धूप
 धोवण, वमन वस्ती कर्म जेह ॥ विरेचन अजण दत्त पखाजण,
 शरीर शुभ्रूपा तेह हो ॥ ये० ॥ ९ ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाळे,
 निर्मथ सजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख
 कार हो ॥ ये० ॥ १० ॥ उष्ण कालें आतापना जेवे, शीतकालें
 सहे उम ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मम हो ॥
 ये० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह दुगवे, डप्कर किरिया धार ॥ के
 इक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मजार ॥ ये० ॥ १२ ॥ खु
 डियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शु
 च तिलोकरिख तस, प्रणमे वारं वार ॥ ये० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ ठळीवणियाध्ययन सदाय प्रारंभ ॥

॥ मानव जनम जनम, रतन तेने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री
 जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ ध्रु० ॥ पट्टोघर
 श्री सुधर्मास्वामी, जयु पूठे तिणसु शिर नामी रे ॥ चौथा अ
 ध्ययन मजारो, कित्यो ठे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री०
 ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहुं तुजसु सु
 णवायो रे ॥ पृथिवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति
 तस ठाणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कहा ठळाया,
 सुखवठक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे, इ त्वसु थररावे ॥
 आगम दरसावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध नव प्रा

णी, ठकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोच जय हास्या, वश मत
 वोलो जापा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥४॥ गाम नगर व
 न अल्प बहु ठोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर न
 र तिरजंचो, मैथुनयकी वचो ॥ त्यागो यह परपचो ॥ श्री० ॥
 ॥ ५ ॥ अल्पबहु ठोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ प
 रिग्रह दु खकारो, नरमावे ससारो ॥ करिये परिहारो ॥ श्री० ॥६॥ अ
 सणादिक जे कहा चउ आहारो, निशिनोजन परिहारो रे ॥ एह
 खटव्रत सुखकारो, पाव्यां जव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥ श्री०
 ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपकरण सारां, ते पूजो पलेवो वारं वारा रे ॥
 त्रस थावर प्राणी, करो जन्म पेढाणी ॥ इम आगम वाणी ॥ श्री०
 ॥८॥ अजयणासु चाले तथा उजो रहेवे, वेठे सुवे खावे सुख केवे
 रे ॥ प्राणीनी हिंसा थावे, पापकर्म वधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥
 श्री० ॥ ९ ॥ शिष्य पुढे तव क्लिणविधि करीये, गुरु कहे जयणा
 आदरीये रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूधे आश्रव सागे ॥ अविचल
 सुख आगे ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पढे दया थाणी, कांइ
 जाणो जे पाप अनाणी रे ॥ सूत्र सुण्यां बोध थावे, आश्रव ठिट
 कावे ॥ सज्जम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृष्ट सज्जम धा
 रो, कर्म नर्म करे ठारो रे ॥ केवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥
 शाश्वतां सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृद्ध पणो पण
 किरिया, धारी अनताही तरियारे ॥ ठळीवणीया अधिकारो, छुट
 पासे नर नारो ॥ तिलोकरिखजी सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ पचम पिम्पेपणाध्ययनस्य प्रथम

उद्देश सदाय प्रारब्ध ॥

॥ सोवन सिद्धासण रेवती ॥ ए वेशी ॥ शास्त्रविधि किरिया छुट
 आदरे, इव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति निम जति सचरे, देखी

आहार सिज्यातरी, वैठे न मांचे पलग ॥ विण कारण गृहस्थ घर
 नहिं वैठे, टाळे उवटणो अंग हो ॥ ये० ॥ ६ ॥ वेयावश्च गृहस्थकी
 करे न रिखजी, जाति जणाइ आहार ॥ मिश्र पाणी वली डख
 आया, सरणो न वठे परिवार हो ॥ ये० ॥ ७ ॥ मूलो आदू ख
 म सेजमी, कद मूल फल बीज ॥ सचलादिक पंच जूण आविदे,
 तजे सचेत सब चीज हो ॥ ये० ॥ ८ ॥ शोना कारण वस्त्र भूप
 धोवण, वमन वस्ती कर्म जेह ॥ विरेचन अंजण दंत पखाण,
 शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ ये० ॥ ९ ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाळे,
 निर्ग्रथ सजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख
 कार हो ॥ ये० ॥ १० ॥ उण्ण कालें आतापना लेवे, शीतकाळें
 सहे वस्त्र ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मम हो ॥
 ये० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह दगावे, डप्कर किरिया धार ॥ के
 इक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मजार ॥ ये० ॥ १२ ॥ सु
 हियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाळे शु
 द्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वार वार ॥ ये० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ ठळीवणियाध्ययन सचाय प्रारंभ ॥

॥ मानव जनम जनम, रतन तेने पायो रे ॥ ए वेशी ॥ श्री
 जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ घु० ॥ पद्मोधर
 श्री सुधर्मास्वामी, जवु पूठे तिणसु शिर नामी रे ॥ चौथा अ
 ध्ययन मजारो, किम्यो ठे अधिकारो ॥ कह्यो तस विस्तारो ॥ श्री०
 ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहुं तुजसु सु
 णवायो रे ॥ पृथिवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति
 तस वाणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कहा ठळाया,
 सुखवठक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे, डखसु थररावे ॥
 आगम दरसावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध नव प्रा

एणी, ठकायरह्ता सुखदानी रे ॥ क्रोध लोच नय हास्या, वश मत
 वोलो जापा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥४॥ गाम नगर व
 न अल्प बहु ठोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर न
 र तिरजचो, मैथुनथकी वचो ॥ त्यागो यह परपचो ॥ श्री० ॥
 ॥ ५ ॥ अल्पबहु ठोटो मोटो सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ प
 रियह डु खकारो, जरमावे ससारो ॥ करिये परिहारो ॥ श्री० ॥६॥ अ
 सणादिक जे कह्या चउ आहारो, निशिनोजन परिहारो रे ॥ एह
 खटव्रत सुखकारो, पाव्यां नव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥ श्री०
 ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपगरण सारां, ते पूजो पलेवो वार वारा रे ॥
 त्रस थावर प्राणी, करो जन्म पेठाणी ॥ इम आगम वाणी ॥ श्री०
 ॥८॥ अजयणासु चाले तथा उजो रहेवे, वेठे सुवे खावे मुख केवे
 रे ॥ प्राणीनी हिंसा थावे, पापकर्म वधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥
 श्री० ॥ ९ ॥ शिष्य पूठे तव किणविध करीये, गुरु कहे जयणा
 आदरीये रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूखे आश्रव सागे ॥ अविचल
 सुख आगे ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पठे दया थाणी, कांइ
 जाणे जे पाप अनाणी रे ॥ सूत्र सुण्या बोध थावे, आश्रव ठिट
 कावे ॥ सजम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे ठळ्ठु सजम धा
 रो, कर्म नर्म करे ठारो रे ॥ कवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥
 शाश्वतां सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृद्ध पणो पण
 किरिया, धारी अनताही तरिया रे ॥ ठळ्ठीवणीया अधिकारो, छुद्ध
 पाले नर नारो ॥ तिलोकरिखजी सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम पिंढेपणाध्ययनस्य प्रथम

उद्देश सवाय प्रारंभ ॥

॥ सोवन सिद्धासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शास्त्रविधि किरिया छुद्ध

आदरे, इव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति जिम जति सचरे, देखी

धुसरा प्रमाण रे ॥ १ ॥ हुं बलिहारी जाव रिखचरणकी, प्रस थाव
 र प्रतिपाल रे ॥ कोयला रुख नस्मी पुंज पर, चाले नहिं शंका
 निहाल रे ॥ व० ॥ १ ॥ वेश्यावासमें नहिं संचरे, नवी प्रसूत श्वाननि
 गाय रे ॥ उन्मत्त वेल हय गज जिहां लडे, मुनि दूर वर्जने जा
 य रे ॥ व० ॥ २ ॥ धम धम चाल चाले नहि, दसे बोले नहिं
 पंथ रे ॥ चाले नहि महेल देखतो, श्रंधारु घर ते तजत रे ॥ व०
 ॥ ३ ॥ डुगठनिक अप्रतीति कारीयो, कुल तिहां मुनि नहि जाय
 रे ॥ पढदो किमाड आग्या विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ व०
 ॥ ४ ॥ दोष वियालीस टालिने, सुजतो ले निहु आधार रे ॥ उ
 परत दोष विधि पिंमनो, सुणजो कार्शक अधिकार रे ॥ व० ॥ ५ ॥
 दोजणा सामिल आधार ते, निमत्रें एक तिण वार रे ॥ ते मुनीसर
 वर्जे सही, विहरे छुगहामी जेवार रे ॥ व० ॥ ६ ॥ गर्जिणी
 अर्थे नोजन कियो, जिम्मा पहिली परिहार रे ॥ ठवेसरके बोराव
 ण नणी, पूरण मास गर्जपुत नार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ बालक धव
 रावती छवती, ठोढावता रोवे जे बाल रे ॥ दान पुण्य भगत अर्थे
 जे, कियो ए सद्गु वे रिख टाल रे ॥ व० ॥ ८ ॥ अल्प खाणो
 वद्गु नाखाणो, मुनिजन ते वर्जत रे ॥ तरखा बूजे नहिं जिण ज
 ले, ते नहिं बहारे गुणवत रे ॥ व० ॥ ९ ॥ उपयोग विना सेवा
 णो कदा, परठवे तेह एकत रे ॥ अणासक्ति स्थानकें आणनी,
 शृद्धस्थ घरे आह्वा शृद्धत रे ॥ व० ॥ १० ॥ विधिशुद्ध आधार क
 रतां कदा, काष्ठ काकरो निकलत रे ॥ हाथमें ग्रही सूके तदा, पण
 सुखसु नहिं थूकत रे ॥ व० ॥ ११ ॥ जो निजस्थान आवे मु
 नि, निसही शब्द कहंत रे ॥ करे काठस्सग्ग इरियावहि, अतिचा
 र सद्गु ते चितंत रे ॥ व० ॥ १२ ॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जि
 णघर जिणविधि आधार रे ॥ सजाय करो विश्रामो छेई, आमत्रें
 जे अणगार रे ॥ व० ॥ १३ ॥ शाक सहित रहित तथा, अरस

विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि जोगवे, स्वाद न करे लगार
रे ॥ व० ॥ १५ ॥ दुधहा उहा मुहा दोई कह्या, मुहा जीवि इ
म जाण रे ॥ दोई जावे सुजगति विपे, अनुक्रमें लहे निरवाण रे ॥
व० ॥ १६ ॥ पंचमुं अध्ययन पिंमेपणा, प्रथम उद्देशा मजार
रे ॥ तिलोक रिखजी कहे वर्णव सी, पाले सो धन अणगार रे
॥ व० ॥ १७ ॥ इति पिंमेपणाध्ययन प्रथमउद्देक सवाय ॥

॥ अथ पचम पिंमेपणाध्ययन द्वितीयोद्देश सवाय प्रारंभ ॥

॥ प्राणी आचखो दुखाने, सांधो को नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्रावि
पे जे मुनि बहोरीयो रे, झुंघ सुगध जे कोई आहार रे ॥ जोगवे जि
म जुजग बीलमें धसे रे, पण परतवे नहि सो लगार रे ॥ प्रभु आ
ग्या आराधो मुनिवर जावछु रे ॥ १ ॥ जो चाहो नवोदधि पार
रे ॥ अल्पकाल ठे डख देहीने रे, सुख अनत अपार रे ॥ प्र०
॥ २ ॥ कालोकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमलियाथी शो
च न कोय रे ॥ चुगो जो लेवे जिहां पंखीयां रे, बली जिहुक मागतो
होय रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ते देखी मुनि नहिं सचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं
डुहवाय रे ॥ जो करे गृहस्थी आदर वंदण रे, बलि बलि तिन घर नहिं
जाय रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वदे तो हरख आणे नहिं रे, विण वाद्यांसु
नहि कुमलाय रे ॥ कठिण वचन रिख बोले नहिं रे, समता साग
र मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ विन बताया गुरुदेवने रे, जोगवे न
हिं सो लगार रे ॥ किंचित ठानो सो राखे नहिं रे, कपट न करे
आपागार रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नीसा सहित आहार नहिं जोगवे रे,
जिणथकी सजम हाण रे ॥ परमगुरु दोष महोटी कह्यो रे, त्याग्या
थी होय कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार बलि
जावना रे, चोर कह्या पच प्रकार रे ॥ ते थावे किष्किपी देवता
रे, कह्यो झुंघति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ एक मूकपणे होवे ति

हांथी मरी रे, नरक तिरिपंच गति जाय रे ॥ समकित धर्म छर्जन
कह्यो रे, इम जाणी ठोढे मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ सिद्धा निद्धा
शुद्ध ग्रहणनी रे, दूजा उद्देशानी मांय रे ॥ तिलोकरिखजी कहे जे
व्रतें क्रिया रे, तिनने हुं वदू शीश नमाय रे ॥ प्र० ॥ १० ॥

॥ अथ पष्ठ धर्मार्थकामाध्ययन सवायप्रारंभ ॥

॥ आज नलो दिन उग्यो जी, श्रीसीमंधर स्वामी जिन बंदस्या ॥
ए देशी ॥ ज्ञान दरिसपो संपूर्ण ठे हो कर्मगिरि चूरण कारणें,
मुनि तप सजम वज्रधार ॥ ध्रु० ॥ एदवा गुणमणि गणिवर हो
मुनिसर आइ समोसखा, कांई कोइक उद्यान मज्जर ॥ राय प्रधान
जो आवे हो उमाहे क्वत्री माहणा, कांई पूढे प्रश्न विचार ॥ ग्या०
॥ १ ॥ जगतारक सुखकारक हो उद्धारक धर्म कित्यो कह्यो, कांई
तो दाखो अणगार ॥ सो निसुणी इम बोले हो कांई खोले हो आ
गम सघने, कांई निन्न निन्न करि विस्तार ॥ ग्या० ॥ २ ॥ जे धर्मा
रथ कामी हो शिवगामी वामी जोगने, मुनि वजें स्थानक अढार
॥ परथम थानक दाखे हो अनिलाखे जीवदया नली, मुनि सब
जीवा हितकार ॥ ग्या० ॥ ३ ॥ सद्गु जीव जीवणो चावे हो थरर
विमरण विमासिने, कांई प्राणवध जयंकार ॥ इम जाणी मुनिराया
हो मन काया वचन जोगथी, त्रिकरण हिंसा परिहार ॥ ग्या० ॥
॥ ४ ॥ निजपर अरथें सावय हो क्रोधादिक वश मृपा गिरा, कांई
निदीसदू अणगार ॥ अविश्वासनु कारण फूज हो ते उठ समुं
जाणी करी, करो अलिक नापापरिहार ॥ ग्या० ॥ ५ ॥ तुष
तरणादिक चोरी हो डख उरी दोरी नरकनी, करे स्वर्ग सुख
सहार ॥ प्रमाद तणी या हेतु हो काइ केतु अपकीर्ति तणी,
कांई कुशील डशील आचार ॥ ग्या० ॥ ६ ॥ लुण बली विग
य पाची हो जाची नहिं गखे रेणमें, कांई ए आइहा जगतार ॥

वस्त्र पातर धारे हो ते संजम लज्जा कारणें, रिख करे मूर्छा प
 रिहार ॥ ग्या० ॥ ४ ॥ अहोनिश तप जे कहीयें हो कांइ हियें
 समता जावने, कांइ एक नक्त परिहार ॥ पृथिवी पाणी तेउ वाउ
 हो वनस्पति त्रस जाणियें, कांइ ठेइ काया जीव उगार ॥ ग्या०
 ॥ ७ ॥ एकेकीकायनद्यावे हो हणावे तिहां प्राणी घणा, कांइ
 गोचर अगोचर धार ॥ डख डुर्गति बधारण हो नवारण्य कारण
 जाणिने, कांइ हिंसा सर्व निवार ॥ ग्या० ॥ ९ ॥ ठ व्रत बली ठक्का
 या हो पाले त्रिकरण जोगसुं, कांइ ए थयां स्थानक वार ॥ पिंम
 शय्या वस्त्र पात्रां हो चातुर मुनि लेवे सृजता, कांइ दोष न क
 रे अगीकार ॥ ग्या० ॥ १० ॥ कांस्यादिक पात्रमांही हो नहिं
 जोगवे आहार पाणी कदा, कांइ च्रष्ट थाय आचार ॥ पलग मांचा
 दि आसण हो सिद्धासण पर वेसे नहि, कांइ पढिलेहण ड क
 रकार ॥ ग्या० ॥ ११ ॥ जावे गोचरी काजें हो विराजे नहिं गृह
 स्थी घरे, कांइ उपजे दोष अपार ॥ वृद्ध रोगिया तपसी राया
 हो जस कायामें शक्ति नहिं, कांइ कल्पे त्रिहुं अणंगार ॥ ग्या०
 ॥ १२ ॥ स्नान वज्र्यो जिनराया हो बहु काया थाये विराधना,
 कांइ व्रतमें लागे अतिचार ॥ सुर्गाधिकें चदन केशर हो परमेश्वर
 वज्र्या साधने, कांइ दृढ कर्म बंधणहार ॥ ग्या० ॥ १३ ॥ जे श
 म दम उपशम सागर हो रतनागर रिख बहु गुण तणा, कांइ क
 र्म खपावण हार ॥ पापपुज खपावे हो तन तावे तप जप साध
 णा, करे कपट क्रोध परिहार ॥ ग्या० ॥ १४ ॥ ज्ञान ध्यान रग
 राता हो जगना ताता तोढणें, कांइ शशिसम जस निर्मलधार ॥
 तिलोकरिखजी कहे धर्मार्थ साधी हो आराधी सीधी कोइ स्वर्गमें,
 कांइ उपजे त्रायी अणंगार ॥ ग्या० ॥ १५ ॥ इति धर्मार्थाध्ययन ॥
 ॥ अथ सप्तम वाक्यशुद्ध्यध्ययन सद्याय प्रारंभ ॥
 ॥ बधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ चउनापा जिनवर कही,

जाणे रिख बुध बुद्धिवता हो ॥ दो सीखे दो वर्जित करे, जे च
 तुर मदता हो के ॥ १ ॥ मुनिवर वस बोले हो, जिहां सावय
 तिहा सत्य नहीं, स्म अनुभव तोले हो के ॥ मु० ॥ २ ॥ सत्य
 विहार समाचरे, फूट मिश्र टाले हो ॥ निरवय अकर्कश असदेह
 सो, बुद्धिवत गिरा जाले हो के ॥ मु० ॥ ३ ॥ अतीत अनागत
 वर्तमानमें, एकांत नहि ताणे हो ॥ नि संदेह निश्चै तजे, जे अ
 वसर जाणे हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ नि सदेह साची वली, जिणधी
 जीवणा हो ॥ ते पण रिख वर्जे सही, जिहा पाप बधावे हो के ॥
 मु० ॥ ५ ॥ काणो न कहे एकनेत्रीने, पमग पंगरोगी हो ॥
 चोरने चोर कहे नहिं, जे मुनि उपयोगी हो के ॥ मु० ॥ ६ ॥
 मूरख गोलो कूतरो, क्रोधी कपटी जिखारी हो ॥ वर्जे इत्यादिक
 नापा जे, लागे परने खारी हो के ॥ मु० ॥ ७ ॥ दाढ़ी पढदाढ़ी
 माता, धुया सखी चोरी उकुराणी हो ॥ इत्यादिक शोले प्रकारनी,
 वर्जे रिख वाणी हो के ॥ मु० ॥ ८ ॥ नाम गोत्र जिम तेहनां,
 तिमहीज बतलावे हो ॥ तिमही पुरुष नाता सहू, वर्जे बतलावे हो
 के ॥ मु० ॥ ९ ॥ मनुष्य पशु पंखी अही, गाय बेल तरु खेती
 हो ॥ जोजनादिकये सहू, देखी बोले सो चेती हो के ॥ मु०
 ॥ १० ॥ रुढो विवाह किधो इणो, नली निपजी रसोई हो के ॥
 वारु ठेयो शाक नलो मखो, दाखे नहिं रिख जोई हो के ॥
 मु० ॥ ११ ॥ जलु हराणु डव्य मुजीनु, जलुं गण धन एहनो
 हो ॥ ए कन्या सुदर सी रे, स्म वचन केहणो हो ॥ मु० ॥ १२ ॥
 रुढो कीधो तप परिपक्वशीले, ठेयो मोहणी तातो हो ॥ पंमितम
 रण क्रोधादिक हखो, नलो कह्यो तिण वातो हो के ॥ मु० ॥ १३ ॥
 नलो थयो कर्म खाली थयो, साधुकिरिया नजेरी हो ॥ इत्यादिक
 नापा वदे वली, जिणमें बुद्धि गहरी हो के ॥ मु० ॥ १४ ॥ आ
 वो जावो तेढी लावो, ठगो वैठो खावो पीवो हो ॥ इत्यादिक मु

नि जंपे नहि, जाके अनुजव वीवो हो के ॥ मु० ॥ १५ ॥ कर
जो सामाधिक पढिक्कमणो, सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो ठ
या देवाणुप्रिया, बोलो मृड सत्यवाणी हो के ॥ मु० ॥ १६ ॥
देव मनुष्य तिर्यचर्म, होवे क्लेश लडाई हो ॥ हार जीत अमुका
तणी, चिते नहिं मनमाई हो के ॥ मु० ॥ १७ ॥ वायु वर्षा शीत
उष्णता, बढे नहिं वृद्धि हाणी हो ॥ क्रोध लोभ जय हास्यकारि
णी, रिख बोले न वाणी हो के ॥ मु० ॥ १८ ॥ सुवाक्य सूधी वि
चारीने, जापा दोष निवारे हो ॥ कपाय टाले पाले देवा, क
र्मशत्रु प्रहारे हो के ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लेइ शिवपुर लहे, सु
वाक्यशुद्धि प्रनावें हो ॥ तिलोकरिखजी कहे आराधिक, सदा तस
शीश नमावे हो के ॥ मु० ॥ २० ॥ इति सुवाक्यशुद्धिअध्ययन ॥

॥ अष्टाष्टमाचाराध्ययन सवाय प्रारंभ ॥

॥ दया धर्म दिलमाही जावे रे ॥ ए देवी ॥ मुनिजन आझा
आराधो रे, निजातम कारज साधो रे ॥ ध्रु० ॥ आचार निधान
ने पामीने जी, वरते जिम अणगार ॥ सुण जवु किरिया जली जी,
जंपी परम दातार ॥ मु० ॥ १ ॥ पृथिवी पाणी तेउ वायरो जी,
वनस्पति त्रसकाय ॥ तीन करण तीन जोगसु जी, हिंसा वर्जे सु
निराय ॥ मु० ॥ २ ॥ सूक्ष्म धुवर फुल कथुवा जी, किडी नांगरा
विक उत्तग ॥ फूलण खसखसादिक बीज सो जी, उगता अकूरा
अंग ॥ मु० ॥ ३ ॥ इमा कीडादिकना कहा जी, ए अष्ट सूक्ष्म
जाण ॥ दया पालो गाढा उपयोगसु जी, पढिलेहणा परिमाण ॥
मु० ॥ ४ ॥ घर घर फिरे रिख गोचरी जी, देखे सुणो वहु कान ॥
थिर राखे निज आतमा जी, तप सलम सावधान ॥ मु० ॥ ५ ॥
थोढो थोढो ग्रहे आहार सो जी, छूख वृत्ति अणगार ॥ कणोदरी
आहार तृप्ता रहे जी, क्रोध न करे लगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ देहें ड
ख दीधा सपजे जी, महासुख कह्यो वीतराग ॥ चचल नहिं ती

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य

प्रथम उद्देशक सहाय प्रारंभ ॥

॥ श्रीजिन मुकुने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ रे नाई विनय धर्म
 सुखदाई ॥ तिणसुं कमी तिणसुं कमी रहे नहि काई रे नाई ॥ विन
 मान क्रोध ठल लोचसुं प्राणी, विनयनहिं सीखे गुरु पासैं ॥ ग्यान
 नणे तोई विपत सवाई, फल आया वास विनासे रे नाई ॥ वि०
 ॥ १ ॥ मंद प्रकृति अल्पश्रुत वय ठोटा, हिलणायी आशातना
 लागे ॥ आचारवत वर श्रुतगुण सागर, तिणनोदी विनय कोइ
 त्यागे रे नाई ॥ वि० ॥ २ ॥ तिणने जिम अग्नि जस्म करे वस्तु,
 तिम ज्ञानादिक गुण नासे ॥ सर्प ठोटो तोइ मस्या प्राण खोवे,
 अविनीत झुंति डुखि पासैं रे नाई ॥ वि० ॥ ३ ॥ आशीविप
 प्राण लेवे एक नवमें, गुरु आशातना नव नवमें ॥ डुख देवे वो
 धबीज नहिं आवे, जाय पढे डुखदवमें रे नाई ॥ वि० ॥ ४ ॥
 अग्निने यग करीने जो चाहे, सर्पने कोप चढावे ॥ जीवितअर्थे
 खावे जहेर हलाहल, पर्वत शिरथी दवावे रे नाई ॥ वि० ॥ ५ ॥
 सूतो सिद्ध जगावे घोला कर, बरढी पर द्येली प्रहारे ॥ इण द
 टांतें आशातना करे गुरुनी, बली सुख चित्त विचारें रे नाई ॥ वि०
 ॥ ६ ॥ देवजोगें जो वरते सुखदायी, आशाताना फल टले नाई ॥
 विनयविमोखो गुरुहिलणियो, जगतारक फरमाई रे नाई ॥
 वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण शिवसुखना अर्थी, अग्नि जिम गुरु
 ने सरीजें ॥ धर्मपद एक शिखे जिण पासैं, तिणनो पण विनय
 करीजें रे नाई ॥ वि० ॥ ८ ॥ लक्का दया सजम शील ए चारु,
 अर्थी पुरुष शिवगामी ॥ करें गुरुनक्ति तो जर्म पुलावे, तम
 हरे ज्यु दिनस्वामी रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ जिम शंशी सोढे ग्रहण
 माही, तिम आचारज पण ठाजे ॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो,

मुक्तिके मांही विराजे रे जाई ॥ वि० ॥ १० ॥ विनयसमाधि प्रथ
म उद्देशामें, एह वरणन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिखजी कहे विनय जो
आराधे, सोही लहे नवपारो रे जाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य

द्वितीय उद्देशक सहाय प्रारज. ॥

॥ देशी केरवामें ठे ॥ जिम वृद्धने मूल खंद पठें शाखा, पान
फूल विस्तार ॥ जलां रे झानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध
जो कांइ, जो चाहो नवनिस्तार ॥ जलां रे झानी ॥ जो० ॥ विन०
॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल परंप्यो, जगतारक जसवार ॥
न० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ कोधी अज्ञानी मानी दुष्ट नापक, क
पटी धूरत नर नार ॥ ज० ॥ क० ॥ वि० ॥ ३ ॥ ससार सागरमें तणावे
एसा दुष्टी, काठ नदीपूर मफार ॥ ज० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥
जली शीख देतां उलटी धारे ज्युं, शिरे अति दंभ प्रहार ॥ ज०
॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनीत नवदंभ दु ख पावे, सदा दारिद्र
घर बार ॥ ज० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण न
व सुखसंपत, परनवमें जय जयकार ॥ ज० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७ ॥
सुर नवपद विचारकर होवे, अविनीतपणुं दु खकार ॥ ज० ॥
अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अनिप्रायनो जाणक, नमन करे
वारंवार ॥ ज० ॥ न० ॥ वि० ॥ ९ ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म
धन धारक, उतरे नवजल पार ॥ ज० ॥ ख० ॥ वि० ॥ १० ॥ ति
लोकरिखजी कहे अध्ययन नवमामें, कूजे उद्देशें अधिकार ॥ ज०
॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उद्देश सहाय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय

उद्देशक सहाय प्रारज ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आक्षा शिर

धरो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें,
 सेवे तिम सेवो पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगचेष्टा जाणे गुरु
 तणी, करो शुश्रूषा वारवार ॥ वि० ॥ वय ठोटा दीक्षा करि बढो,
 साधो तस विनय व्यवहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ २ ॥ दोष ब्यालीस टा
 जिने, लेवतो सुकृतो आहार ॥ वि० ॥ सथारो शय्यासन जो
 गवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा डु
 धर कहा, स्वमे मुनि समताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं,
 अग्रियवचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकीमां
 णो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ जुगल नहिं दीनवृत्ति नही,
 निजप्रशस्ता निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु
 डुवे, कामाथी गुणथी असत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण संग्रह
 करो, राग द्वेष दोष हणत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या न
 णी तात देवे, देखी घर वर ठाम ॥ वि० ॥ तिम गुरु सुशिष्यने न
 ली, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सुशिष्य माने
 गुरु आज्ञा, जावे सुगतिने माय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो नवमा
 ध्ययननो, तिलोकरिखजी कहे बखाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ

उद्देशक सहाय प्रारब्ध ॥

॥ चार पदेरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ सौधर्मास्वामी रुढी
 रीतसु रे, आर्जजवृक्ष कहे एम रे ॥ चतुर मुनि ॥ जिम श्रीजिन मु
 ञ्छ कहा रे, दाखू हू तुज्यकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि
 चित्त धरो रे ॥ १ ॥ प्रथम विनय विचार रे ॥ च० ॥ गुरुशिक्षा सुणो
 खतसुं रे, वरतो सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें
 किरिया करणी कही रे, साचवो कालो काल रे ॥ च० ॥ मन अ
 निमान आणो मति रे, दुई सुविनीत विशाल रे ॥ च० ॥ चा०

सजाय सग्रह-

१७६

यकै टाले, ध्रुवजोगी धनवत हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वर्जे जोग सावय
 समदृष्टि, अर्थिज्ञान तप चरण हो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पाप प्रहारे थिर जोग धारे,
 जे मुनि तारण तरण हो ॥ ध० ॥ ७ ॥ चार आहार वाशी नहिं रा
 खे, जोगवे साधर्मिकी आमत्र हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ विग्रहकारिणी
 नित आतमा, निज राखे स्वतंत्र हो ॥ ध० ॥ ९ ॥ न करे राग द्वेष क्रमा
 दुख वधारणी, न कथे विकथा प्रवध हो ॥ ध० ॥ १० ॥ पच इडीने कंटक
 धारक, संजम तप ध्रुव वध हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ अट्ट हास्य शब्द परम ज
 सम लागे, आक्रोश वचन परिहार हो ॥ ध० ॥ १२ ॥ पडिमाधारक सात
 र्यंकर, सम सुख विचार हो ॥ ध० ॥ १३ ॥ पडिमाधारक सात
 नय वारक, ममता नहिं तन तुप तोल हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ पृथिवी समान उप
 धान आराधे, वर्जे नियाणो कितोल हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ सहत प
 रिसह लडत अरिसें, कुगतिसें आतम टालत हो ॥ ध० ॥ १६ ॥ जन्म मरण नव
 वर्जण कारण, सजम तपस्या साधत हो ॥ ध० ॥ १७ ॥ हाथ पा
 य बाह इडिय सजय, सदायरक्त सूत्र जाण हो ॥ ध० ॥ १८ ॥ अज्ञात
 र्वा नहिं राखे, जे निष्कु चाहे कल्याण हो ॥ ध० ॥ १९ ॥ अज्ञात
 कुलें गृहे अल्प आहार रिख, न करे विणज वेपार हो ॥ ध० ॥ २० ॥ गोडे कुसग
 मूँ नहिं नही जोजन, नहिं वडे पूजा सत्कार हो ॥ ध० ॥ २१ ॥ कोप
 वशें कुजापा न जपे, ठमे गल अजिमान हो ॥ ध० ॥ २२ ॥ पुण्य पाप फल प्रत्ये
 विचारे, जे निष्कु आगम जाण हो ॥ ध० ॥ २३ ॥ धर्मदेव धर्मदेश
 ना दायक, नायक या एक जेम हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ धर्मदेव धर्मदेश
 कुशील लिंग प्रेम हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ देहको वास अष्टचि डर्वासक,
 असासतो विद्युत्सज्जवान हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ ममता त्यागी अनुरागी मुग्तिका,
 निजपर आतम सुखदान हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ जनममरण रण
 मरण मिटाइ, चरण करण उद्धार हो ॥ ध० ॥ २८ ॥ चरण सरण धर तरण तारण
 को, केवल कमला जरतार हो ॥ ध० ॥ २९ ॥ मुक्ति महेजकी सहे
 ल अचल पद, अजर अमर अविकार हो ॥ अलख निरंजन जविम

न रजन, वरते जेजेकार हो ॥ ध० ॥ १८ ॥ दशमुं अध्ययन निरु
 मार्गनुं, जे कर्मनेदनहार हो ॥ आराधना करे शम दम परिणामे,
 पावे नव निस्तार हो ॥ ध० ॥ १९ ॥ सवत् पंदरेशें एकतिस संव
 ष्टर, उत्तयो नसमगृहकूर हो ॥ श्रीजिनसासण ठवे पूजा प्रगटी,
 समकित जोत सनूर ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विगोप प्रसिद्धता,
 अहमदाबाद मजार हो ॥ शुद्ध अक्षाधारक आवक लुंका जी, किनो
 ज्ञान उपगार हो ॥ ध० ॥ २१ ॥ ततदेशना सुणि एकदिनमाही, सु
 ख्य नाणो जी वखाण हो ॥ पेंतालिस जणा सगें सजम धाखो, चि
 त्त दृढता अति आण हो ॥ ध० ॥ २२ ॥ ड कर ड कर करणी धारी,
 दयाधरम अयो परकाश हो ॥ सातमे पाटे सत्तरेसैं पूज, पद भारक
 विमास हो ॥ ध० ॥ २३ ॥ श्रीश्री कान्हजी रिख महाराया, दीपायो
 जैनधर्म हो ॥ चालीस सहस्र ग्रंथ आगम कवागर, टाखो अज्ञान
 को नर्म हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ तत् पाटोधर पूज्यता रिखजी, काला
 रिखजी गुणवत्त हो ॥ वगसू रिखजी तस पाट विराज्या, गुरवीर म
 दमत हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ तत् अतेवासी पूज्य धनजी, शम दम उ
 पशम धार हो ॥ तत् शिष्य श्रीअयवता रिखजी, चरण करण दातार
 हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ चरण सरण तस ग्रहण करीने, बाज स्याल जि
 म जाण हो ॥ प्रत्येक अध्ययन ठदेशाकी किंचित, रची रचना हित
 आण हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ हीण अधिक पद अर्थ जो दीसे, सुध
 जनसु अरदास हो ॥ शुद्ध करि लीजो हास्य न कीजो, जयणा शुद्ध
 नणजो ठक्षास हो ॥ ध० ॥ २८ ॥ सवत् अंगणीशें चालीस सव
 ष्टर, चैत्र शुक्ल धीज जाण हो ॥ वार चड् देश दक्षिणमाही, अहमद
 नगर प्रमाण हो ॥ ध० ॥ २९ ॥ तिलोकरिखजी कहे धन जिनाग
 म, सर्थे जो नविक मन खत हो ॥ अनत ससार परित कर वेवे, पाले
 सो होय शिव कत हो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हीण अधिक जे आग्यानी
 बाहिर, जो कोइ जोडाणो होय हो ॥ देव गुरु धर्म आतमा साखें,

मेष्ठामि दुक्कड मोय हो ॥ध०॥३१॥ अरिहंत सिद्ध साधु धर्म ए
 गरी,होजो सदा शरण चार हो ॥ रिद्धि सिद्धि सुख सपत अविच
 त, दीजो परम दातार हो ॥ध०॥३२॥ कलश ॥ जिनराज वाणी,
 पुस्कदाणी, नविक प्राणी,सुख नणी ॥ सप्त जगी,कही चगी,नविक
 एगी,रुचि घणी॥जे पाले जावें,कर्म धावे,केवल पावे,सार ए ॥ तिलोक
 रिख जी इम, सीख गुरुगम,ए रचि सधाय,सुखकार ए ॥ध०॥३३॥
 इति निष्कुञ्ज अध्ययनम् ॥ इति वृशवैकालिकसूत्रजीकी पीठिका सहित
 अध्ययन उद्देशा प्रत्येक पन्नर सधाय संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥३३॥

॥ अथ गुरुगुण सधाय प्रारंभ ॥

॥ देशी केरवामें ठे ॥ प्रणमं गुरु गुणवत नगीना, रिद्ध सिद्ध दा
 तार ॥ नजां रे द्धानी ॥ रिद्ध ० ॥ गुरुगुण हिरदे वसरह्या, महारें
 जीवन प्राण आधार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर परम वज्रा
 गर, नागर नवल व्रतधार ॥ ज० ॥ ना० ॥ गु० ॥ २ ॥ ज्ञान
 को अजण दे मनरजण, जजण नर्म अंधार ॥ ज० ॥ ज० ॥ गु०
 ॥३॥ धीरज मदिर सोम जुं चदर, धरम धुरधर धार ॥ज०॥ ध०
 ॥ गु० ॥ ४ ॥ करमके गजन अलख निरंजन, शिवपदके दातार ॥
 ज० ॥ शि० ॥ गु० ॥ ५ ॥ आप तरे परतारण हारा,राग द्वेष प
 रिहार ॥ ज० ॥ रा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ मात तात सुत चात कामि
 नी, सगपण सर्व असार ॥ ज० ॥ स० ॥ गु० ॥ ७ ॥ गुरु सम
 नहि को दित कारक ठे, विपत विमारणहार ॥ ज० ॥ वि० ॥ गु०
 ॥ ८ ॥ चित्रावेल चितामणि पारस, इण नवमें सुखकार ॥ ज०
 ॥ इ० ॥ गु० ॥ ९ ॥ सत्गुरु इणनव परनवमांही, दे सुखसपत
 सार ॥ ज० ॥ वे० ॥ गु० ॥ १० ॥ मोतिसा मलीने खामसा खा
 रा, आतमा समअपियार ॥ ज० ॥ आ० ॥ गु० ॥ ११ ॥ गुरु
 रुपासैं रायसजेती, लीयो सज्जम नार ॥ ज० ॥ ली० ॥ गु० ॥ १२ ॥
 पापी पुरो परदेशी राजा, वीयो सुर अवतार ॥ ज० ॥ दी० ॥ गु०

रोग दुख आवे जो तनमें, शरणागत नहिं कोइ ॥ तेरो साहाय
 क जैन धर्म हे, इण नव पर नव जोइ रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ प्रभु
 सरणा विना चवगति नटक्यो, पायो दुख अनतां ॥ ते वेदना
 निज आतमा जाणे, के जाणे नगवता रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जन्म
 लियो जब कोइ न साथी, मरतां पण नहि लारी ॥ बधी मुठीयें
 जन्मज लीनो, जावे हाथ पसारी रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ जायो जा
 यो कहे जनमता, वाहेर पडियो रोवे ॥ जन्मतांही अपगुनन जो
 लीधा, रेणो किस विध होवे रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ सुख दुख करता
 आतमा जाणो, नूगते आप अकेलो ॥ इम जानी दु कृत परहरि
 यें, सुकृत किरिया सो जेलो रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ धन कुटुब रिद्ध
 सपत पाइ, सो निज पुण्य प्रजावें ॥ जिण समे पुण्यको ठेडोज आ
 वे, देखतमें विरलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ जिम तरुवर पर आवे
 पंखेरु, निज निज स्वारथ कामें ॥ पान ऊढे पंखी उड जावे, वेठे
 हव्या वृक्षामें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ वाजीगर जब ख्याल रचावे,
 लोक होवे बडु जेला ॥ वाजी जयासुं सब जग जावे, जैसा जीव
 अकेलारे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ गुवालके सर्गे गायको टोलो, कहे घेनु
 सब महारी ॥ जब आवे सो अपने घरमें, रहे अकेलो वंदधारी रे
 ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ देह अपावन परम धिनापन, मल मूतरकी या
 क्यारी ॥ अगुचि आहार करी ए तन निपज्यो, चर्मकी गोना ठे ज
 हारी रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सागर जल करी जो नित धोवे, तो पण
 शुचि नहि आवे ॥ हाम करमिया जंम मीटीकी, इणपर क्यों तु पो
 मावे रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ सहस्र दिनारको एक कबोलेवो, जीमे
 एम सदाही ॥ तो पण दे वगो एक पलमें, काढे जीवनें साही रे ॥
 प्रा० ॥ १७ ॥ रोग सोग नय दुख उच्चाटण, जनम मरण घर का
 या ॥ क्रोध जतन करता पण जावे, इण पर क्यों तु लोनाया रे ॥
 प्रा० ॥ १८ ॥ दिन दिन चलनो नेडोज आवे, शका नहिं ठे लगा

णि नरन्व पायो, उत्तम कुल अवतारो ॥ तप जप मुकृत उद्य
म कर लो, वाटी साठे मत हारो रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ अनंत जी
व तस्या धर्म प्रजावै, वली अनंताही तरसी ॥ इम जाणी प्रभु आ
हा आराधे, सो शिव सुंदर वरसी रे ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सत्गुरु तो
कहेणेका हे गरजी, परवपगारी ये जानो ॥ जो नहि मानो तो
मरजी तुमारी, ए घोडा ए मेदानो रे ॥ प्रा० ॥ ३५ ॥ उगणीशें
अदतिश जेव शुद्ध सातम, गाम खरोंमीके मांही ॥ तिलोकरिख
उपदेश ठत्तिसी, जावना शुद्ध वणाई रे ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥

॥ अथ अनित्य जावना सवाय प्रारब्ध ॥

॥ सत चरणारी जाव बलिहारी ॥ ए देशी ॥ ए ससार अनित्य
नयकारी, नित्य जैनधर्म लो धारी ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ गढ म
ढ मंदिर हाट हवेजी, जाली जरोकातें वारी ॥ जो वंध्या सो स
कल ढल जावे, मढेल गवाक्ष अटारी ॥ आरंभ मत करजो जगा
री ॥ ए० ॥ १ ॥ पाट पीतांबर शाल झुशाला, हीर चीर जर तारी
॥ जो वणिया सो सकल विनाशक, रेशमी थान किनारी ॥ करो
कोई जल्ल हजारी ॥ ए० ॥ २ ॥ वाळुबंध छुजवम चोकडां, हारक
हा पोंची जारी ॥ घडिया मढिया जडिया सुवर्णसें, हीर रत्न ऊज
कारी ॥ सग नहि आवेगा थारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ हरि हर इड चड
सुर मानव, बाल तरुण जराधारी ॥ राव रक नीरोगी सरोगी,
अथिर सकल ससारी ॥ देखो जवि दृष्टि पसारी ॥ ए० ॥ ४ ॥
कूवा वावडी वाग घगीचा, वृक्ष विचित्र मनोहारी ॥ न रहे व
स्तु न रहे करता, करता क्रोड प्रकारी ॥ वात ए जगमाहे ज
हारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जग पेदल बल रथ तुरंगम, सेना चार प्रकारी
॥ म्याना पालखी अस्तर शस्तर, रेवे नही तस धारी ॥ चराचर
हे गतचारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ मात पिता वधव अरु जगिनी, काका

अनार्थी इम जाणी रे ॥ रिख तिलोक कहे धर्म शरण कर, पाया
पद निर्वाणी रे ॥ स० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ संसार जावना सद्याय प्रारंभ ॥

॥ सिद्धचक्रजी ने पूजो रे नविका ॥ ए देशी ॥ ए संसार च
लाचल इणमें, नमियो चउगति प्राणी ॥ चोविश दमक जहू
चौरासी, पायो दुख अनाणी ॥ संसार महादुख खाणी रे, नवि
का, धर्म सदा सुखदाणी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरक विषे गयो वार अनं
ती, क्षेत्रवेदना जिहा जारी ॥ परमाधामी महानिर्दयी, मारे विविध
प्रकारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पल सागर थिति जोगवे परवश, आरत
अधिकी आणो ॥ के तो तिणरो जीवज वेदे, के परमेश्वर जाणो रे
॥ ज० ॥ २ ॥ तिहांथी मरी तिरजच गतिमें, निगोदपणामें संच
रियो ॥ साढी पैंसठ हजार ठत्तिस नव, मुंहूर्त एकमें मरीयो रे ॥
॥ ज० ॥ ३ ॥ सत्त्वविकलेंडी सही असंझी, नमता नरनव पा
यो ॥ देश अनारज नीच वच कुल, दुखमें जन्म गमायो रे ॥ ज०
॥ ४ ॥ अज्ञान कष्टअकाम निर्जरासुं, सुरगतिमें अवतरियो ॥ ना
टक करकें रीजाया अपरनें, मरण समे दुख धरीयो रे ॥ ज० ॥
॥ ५ ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कामेण, सास वसास मन जापा
॥ पुजल परावर्त सातुहि कीधा, अनत वार इम आखा रे ॥ ज०
॥ ६ ॥ इव्य क्षेत्र काल जाव ए चारु, सूक्ष्म वावर कहीयें ॥ ए पण
वार अनतही जाणो, सूत्र वचन सद्दीयें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ रोग
सोग सजोग विजोग वली, सुख दुख अनुजब्ध्यां सारा ॥ नाता स
व जोड्या वार अनती, पण रह्या धर्मसें न्यारा रे ॥ ज० ॥ ८ ॥
खाया पिया पहेखा उठ्या, सब सणगारज कीना ॥ ठाकर चाकर
पद सब पायो, मुनिवरिसण नहिं चीना रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ पाप
सूत्र सब जणीया सो जिन जिन, कर्म व्यान सब धाया ॥ पाप

तिम जीव ॥ लक्ष् चौरासी रे जीवा जोनिमें, डु ख यों पायो अती
व ॥ रे ० ॥ ७ ॥ इणविध हो सोची रे नेमी रायजी, ठमी राज नमार ॥
तिलोक रिख दाखे रे सजम आदरी, पाया जवजल पार ॥ रे ० ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्यत्व जावना सजाय प्रारज ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए वेशी ॥ निज गुण उंजख रे प्रा
णी, मान मान श्रीजिनजीकी बाणी ॥ निजपणो निजमें रे आ
णो, परड्य सो अपणो मत जाणो ॥ नि ० ॥ १ ॥ सिद्ध स्वरूपज
रे तेरो, आंख मीच क्यों करत अंधेरो ॥ कस्तूरी मृगमें रे पावे,
दोढ़ दोढ़ निज प्राण गमावे ॥ नि ० ॥ २ ॥ तिम मत होवो रे
नाई, तु निरजन निराकार सदाई ॥ कर्मसुं काया रे बंधी, श्रीजि
न आगममें कही सधी ॥ नि ० ॥ ३ ॥ क्यों करे तनने रे मातो,
फूलो खोटो ए तन नातो ॥ इणसुं ममता रे टालो, अनुभव करी
आत्म अछुवालो ॥ नि ० ॥ ४ ॥ ए तन तेरो रे नांदि, या तो जह
तु चेतन माई ॥ इणमें शका रे नांई, ममत कियासुं अधिक डुख
दाई ॥ नि ० ॥ ५ ॥ नित नित जाहो रे दीजें, नित नित सार स
जाल करीजें ॥ तोही न होवे रे या तेरी, क्यों कहे निरर्थक मेरी या
मेरी ॥ नि ० ॥ ६ ॥ एकपखी प्रीती रे फूली, या तो तुज पर नव न
व रूठी ॥ कायासु ममता रे करणे, क्यों तु डुख देवे जीव अपरणो
॥ नि ० ॥ ७ ॥ जो जाणो मुज तणी रे काया, सो तो मूढ़ गिमार
कहाया ॥ इणसु नवे नवे रे धीती, दुशमन प्रीति अंत फजीती ॥
॥ नि ० ॥ ८ ॥ मृगापुत्र एह विध रे जाणी, सजम ले गया पद निर्वा
णी ॥ तिलोकरिख दाखे रे जाची, ज्ञानदर्शन किरिया सदा साची ॥

॥ अथ अशुचि जावना सजाय प्रारज ॥

॥ साधुजी सदाहि सुदामणा ॥ ए वेशी ॥ देहसु नेह न की
जीयें, देह अशुचिनु गेह हो ॥ नवियण ॥ मल मूतर रुधिर नरी,

म जलधर सरोवर जरे, तिम कर्मज आवे हो ॥ अथवा नावा
 ठिड़में, जल जरीयां मूवावे हो के ॥ सु० ॥ १ ॥ अधिक आ
 श्रव कर्मवधसुं, नरकगति जावे हो ॥ दीर्घस्थिति सु निगोदमें, अ
 नतकाल गमावे हो के ॥ सु० ॥ २ ॥ इडिय कपाय अत्रत
 बली, तीन जोग कहीजें हो ॥ पञ्चिष क्रिया जेद जोडतां, वर्ड
 यालिस लहीजें हो के ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रोत्र इडी वरें मृगलां, व
 नमें मृत्यु पावे हो ॥ नयन वश पतग सो, निज अंग दजावे हो
 के ॥ सु० ॥ ५ ॥ घ्राण अली रस माठलो, वश प्राण गमावे
 हो ॥ स्पर्श वश कुजर मरे, मन महिष हणावे हो के ॥ सु० ॥ ६ ॥
 एक एक इडी वश मखा, जगजीव अनता हो ॥ जे बैही व
 शमें पछ्या, नवनवमें मरंता हो के ॥ सु० ॥ ७ ॥ होतो सात
 जव आवखो, तो मोह सिधाता हो ॥ अनुत्तरवासी अत्रतवर्शें,
 फिर नव डुख पाता हो के ॥ सु० ॥ ८ ॥ छुज आश्रव छुज जोगथी,
 पुण्य वधन जाणो हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यसो, सुकृत सुख दाणो
 हो के ॥ सु० ॥ ९ ॥ समुद्रपाल इम जाणीने, ठमी जगमाया हो के ॥
 तिलोकरिखली कहे धन सो नवि, आश्रव ठिटकाया हो के ॥ सु० ॥ १० ॥

॥ अथ संवरजावना सधाय प्रारज ॥

॥ सोवन सिद्धासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सार सवर क्रिया आ
 दरो, दादरो ए शिववाट रे ॥ दाट कपाट सम जाणीयें, आ
 श्रव रज देवे दाट रे ॥ सा० ॥ १ ॥ त्याग करी आश्रव ना
 जाने, रोकियें मन घच काय रे ॥ कर्म जाल सो कीये तप क
 री, धोकीयें श्रीजिन राय रे ॥ सा० ॥ २ ॥ अष्ट प्रवचन सत आ
 दरो, जीतो परिसद्व वावीश रे ॥ धर्म दश विध साधु तणे, जा
 वना वारे जगीश रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ पंच चारित्र समाचरो, जे
 द सत्तावन एह रे ॥ अनुभव ज्ञान दिशा करी, जाण सवर सु

राचे मूरख जेहू हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ १ ॥ माता रुधिर पिता शुक्रनो, की
 धो प्रथम आहार हो ॥ ज० ॥ गर्भवेदना सही आकरी, ते जाणे
 किरतार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ २ ॥ मास सवा नव फूलीयो, उधे मुख
 गर्भवास हो ॥ ज० ॥ जन्म थयो दुख वीसस्यो, छुलि गयो दुख
 राश हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ३ ॥ दिन दिनतन महोठो थयो, करे शुश्रूषा अ
 पार हो ॥ ज० ॥ दुगंछा आणे अपर तणी, निज उत्पत्ति तो स
 नार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ४ ॥ सात धातु इण देहीमें, सात कही
 उपधात हो ॥ ज० ॥ सातु मज निशिदिन जरे, तन कपर त्वचा
 कही सात हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ५ ॥ सातशें सर इणमें सही, ति
 नसे हाम करंम हो ॥ ज० ॥ वात पित्त कफ दोष जो, अधिक धि
 नापन जम हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ६ ॥ सागरजलसुं पखाजीयें,
 तोहि विमल नहि थाय हो ॥ ज० ॥ मान करणे किण कारणें,
 चर्मकी शोना देखाय हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ७ ॥ काचा कुंज तणी
 कपमा, सजा फूलवो जेम हो ॥ ज० ॥ इधधनुष जल मोतिको,
 नास होणेको नहि नेम हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ८ ॥ आहार आधा
 रें ए रहे, रोग तणो जमार हो ॥ ज० ॥ तप जप रत्न सग्रह करो,
 इणमें एहीज सार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ९ ॥ जो जाणे छुचि का
 चने, ते तो मूढ गिमार हो ॥ ज० ॥ चित्तमणि जवहारणो, खा
 वे नरकमाही मार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ १० ॥ चक्री सनतकुमार
 जी, जाणी काया असार हो ॥ ज० ॥ तिलोकरिख कहे तप करी,
 पाया जवजल पार हो ॥ ज० ॥ दे० ॥ ११ ॥

॥ अथ आश्रव जावना सधाय प्रारज ॥

॥ वधव धोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आश्रव करमाको वध ठे,
 जगजीवने जाणो हो ॥ शुन अशुन नय जेव वो, सिद्धांत पे
 ठाणो हो के ॥ सुगुण आश्रव टालो हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ जि

प फल जोगवे, कांई दोनुई वधन तेम ॥ च० ॥ ७ ॥ जिहां लगे मोक्ष
न सर्वथा, कांई तिहां लगे निर्जरा जाण ॥ सर्वथा निर्जरा होय
तदा, कांई लहीये पद निर्वाण ॥ च० ॥ ८ ॥ इम जाणी शम
दम नावसुं, कांई करी अर्छुन अणगार ॥ तिलोकरिखजी कहे
ठमासमें, कांई पाया नवजलपार ॥ च० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ लोक स्वभाव तथा लोक सठाण

भावना सदाय प्रारंभः ॥

॥ सुमति सदाई दिलमें धरो ॥ एवेशी ॥ लोक स्वरूप विचारी
ये, भूल जेद कहा तीन ॥ सुम्यानी ॥ ऊर्ध्व अथो तिर्यग् सही,
व्यवहार नये इम चीन ॥ सु० ॥ लो० ॥ १ ॥ ऊर्ध्व सनीचर उप
रें, मृदंगके सठाण ॥ सु० ॥ कार्शक कम सात राजनो, दाखीयो त्रि
जगजाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ २ ॥ तिणमें कल्प द्वादश कहा, नव लो
कांतिक जाण ॥ सु० ॥ नवग्रैवेयक तिण उपरें, पंच ठे अनुत्तर
विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ३ ॥ तीन किष्किपी वली तेदमें, वासठ प्र
तर ठाण ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासीके उपरें, सत्ताण सहस्र विमा
ण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ४ ॥ तेवीश वली अधिका कहा, रत्न ज
हित ऊजकत ॥ सु० ॥ तप सजम जिणें आदखो, सो सुरगति
उपजंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाणसु, वारा
जोजन प्रमाण ॥ सु० ॥ सिद्ध शिला चित्ता ठत्र ज्यो, पूरण चड
सठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ६ ॥ पेंतालिस लक्ष योजन कही, लं
बी पद्मोली सो जाण ॥ सु० ॥ अष्ट योजन जाही विचें, अर्छुन
सुवर्णमय बखाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ जोजन जाग चोविशमो,
उपरें सिद्ध अनंत ॥ सु० ॥ अनंतसुखा मांही जिल रह्या, अष्ट
कर्म करी अत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ८ ॥ निचें शनिचरें विमाणसु,
अठारेसें जोजन जाण ॥ सु० ॥ तिर्गे लोक श्री जिन कह्यो, ऊछ

ख गेह रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ संवर अंबर उढियें, मोहीयें नवहु ख
 ताप रे ॥ विषय रूप शीत सो लागे नहिं, चिपके नही आश्र
 व आप रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीव तलाव जलकर्म ते, आश्रव
 नाला करो बंध रे ॥ अध होवो मत मोहमें, ए जिन आगम
 सध रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ वश करो चार कपायनें, ठोडवो पंच
 प्रमाद रे ॥ आदरो छुट समकित किया, मेटजो नर्म अनाद रे ॥
 सा० ॥ ७ ॥ श्रीजिन आह्वा आराधियें, पालीयें संजम नार
 रे ॥ जनम मरण विपता टले, उत्तरो नवजल पार रे ॥ सा०
 ॥ ८ ॥ एसी जावना मनमें ग्रही, धन हरिकेशी अणगार रे ॥
 रिख तिलोक कहे धन जिका, धारे संवर सुखकार रे ॥ सा० ॥ ९ ॥

॥ अथ निर्जराजावना सवाय प्रारंभ ॥

॥ सुरीजन सांजलिजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन मारग
 उलखो, कांई निर्जरा नाव विचार ॥ छुके सर जल तापथी, कांई
 तिम ठिजे कर्मको वार ॥ चतुर नर ॥ अनुभव दृष्टि निहार ॥ ए
 टेक ॥ १ ॥ देही जाजन जीव धृत ठे, काइ कर्म ते ठास समान ॥
 तप दुताशन निन्न करे, कांई हेम कीट इम जाण ॥ च० ॥ १ ॥
 ते तप वारे प्रकारनु, कांई अणतण कणोदरी नाम ॥ निख्याच
 री रस त्यागणो, कांई जाणी निर्जरा ठाम ॥ च० ॥ २ ॥ काय
 किलेस सखीनता, कांई वाऊ तप खट प्रकार ॥ प्रथम प्रायश्चित
 तप कह्यो, कांई विनय वेयावञ्च धार ॥ च० ॥ ३ ॥ सजाय घ्या
 न कावसग जलो, कांई ए अर्जितर सुविचार ॥ इह लोक पर
 लोककिर्ती विना, कांई सो निर्जरा तप सार ॥ च० ॥ ४ ॥
 कर्म पहाड जेदण जणी, कांई करणी या वज्र समान ॥ पुद्गल
 ममता त्यागीयें, कांई छुट जाव सुख दान ॥ च० ॥ ५ ॥
 ह्मण अगनि ह्मण नीरमें, कांई छूहार साणसी जेम ॥ पुण्य पा

॥ अथ बोधवीज भावना सहाय प्रारंभः ॥

॥ सीमर साहिब, दिल वसो ॥ ए देशी ॥ समकित रत्न चि
तामणि, वठित सुखनी दातारो जी ॥ जतन करी अति राख
जो, टालो पच अतिचारो जी ॥ स० ॥ १ ॥ पुण्यजोगें मानव
नव लह्यो, उत्तम कुत्रमें अवतारो जी ॥ समकित सरधा ठे दोहे
ली, कोथले नरणो वयारो जी ॥ स० ॥ २ ॥ अनंतानुव्रिकी
चोकडी, मोहणी तीन प्रकारो जी ॥ सातु प्रकृति उपशमे तदा,
उपशम समकित धारो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ काश्क ह्य कांश्क उ
पशमे, क्योपशम कहे जगनाणो जी ॥ सास्वादन पढताथकां,
की, वेदे सो वेदक जाणो जी ॥ स० ॥ ४ ॥ सातु ह्यथी ह्यायिक
होवे, दाखी श्रीजिनराया जी ॥ ह्यायिक आइ जावे नही, आग
म जेद वताया जी ॥ स० ॥ ५ ॥ ए निर्भे समकित तीका, ते तो
केवली जाणो जी ॥ उद्भस्य तो व्यवहारथी, इव्य क्रियाने पेठारों
जी ॥ स० ॥ ६ ॥ देव अरिहत निर्यथ गुरु, धर्मजिन आइ प्र
माणो जी ॥ ए तिहु तत्त्व समाचरे, सो व्यवहार बखाणो जी
॥ स० ॥ ७ ॥ ठे आवलिका प्रमाणही, फरसे समकित प्राणी जी
॥ अर्थ पुजलमें सो शिव लहे, जाखी केवल नाणी जी ॥ स० ॥ ८ ॥
समकित समकित सब कहे, कठिन ठे समकित नावो जी ॥ नि
श्चय व्यवहार ने उलखे, तारक नवजल नावो जी ॥ स० ॥ ९ ॥
तप सजम किरियो करे, जो समकित बिना कोई जी ॥ ठार उपर
जिम लीपणु, अक बिना शून्य होई जी ॥ स० ॥ १० ॥ इण का
रण सुणो बुध जना, समकित दृढ करी राखो जी ॥ मिथ्या जर्म
निवारियें, जो शिवसुख अनिलाखो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ मास
मास तपस्या करे, कूस अगर जल आरो जी ॥ समकित सहित
नोकारसी, तुल्य न आवे लगारो जी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रेणिक क

रीके सगण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ए ॥ समय क्षेत्र अठे सासतो, ल
 कू पेंतालीश मांय ॥ सु० ॥ दीप अढाइ समुद्रसों, जांख्या श्री
 जिनराय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १० ॥ पंच महा विदेहमाही शाश्वतां,
 जघन्यपदे जिन वीश ॥ सु० ॥ दोय कोढी केवली कह्या, दोय को
 ढी सहस्र सुनीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ ११ ॥ ते सब प्रणमुं जावसुं,
 थापे तीरथ चार ॥ सु० ॥ नरत ऐरवत वग क्षेत्रमें, ठ आरानो
 व्यवहार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १२ ॥ अकर्मनूमिनां वली, क्षेत्र क
 ह्या प्रभु त्रीश ॥ सु० ॥ अंतर द्वीप ठप्पन अठे, जोगवे पुण्य जगी
 श ॥ सु० ॥ लो० ॥ १३ ॥ द्वीप असंख्याता बाहिरे, सागर पण
 सुविचार ॥ सु० ॥ जव्वुद्वीप पूर्ण वडसो, अवर सो वलयाकार ॥
 सु० ॥ लो० ॥ १४ ॥ अधोलोक व्यंतर तलें, वेत्रासन सात रा
 ज ॥ सु० ॥ सात नरक ड ख बोहिल्लु, पाप तणो एह साज ॥
 सु० ॥ लो० ॥ १५ ॥ उंगणपचास ठे पायडा, सातुही नरक मि
 लाय ॥ सु० ॥ नरकवास गिणतां थकां, लाख चोराशी सो थाय
 ॥ सु० ॥ लो० ॥ १६ ॥ परथम नरक धारे अंतरा, खाली ठे उप
 रला दोय ॥ सु० ॥ दशमाहे दश जवनपति, शका मत राखजो
 कोय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १७ ॥ सात क्रोड जवन तेहमें, अधिक
 बोहोत्तर लाख ॥ सु० ॥ देव असंख्याता ठे तेहमें, ठे सूत्र तणी
 साख ॥ सु० ॥ लो० ॥ १८ ॥ धर्माधर्म आकाशास्ति, पुजल जी
 व अने काल ॥ सु० ॥ ए खट डव्य सदा लोकमें, दाखी दीनद
 याल ॥ सु० ॥ लो० ॥ १९ ॥ जिण सुकृत करणी करी, ते उप
 न्या छुनगम ॥ सु० ॥ जिणें ड कृतपणु आदखुं, ते पाया ड ख
 धाम ॥ सु० ॥ लो० ॥ २० ॥ शिवराज रखि इम जावना, जेठ्या
 श्रीवर्धमान ॥ सु० ॥ तिलोकरिख कहे ध्येयध्यानसु, लहीयें शिव
 पुर थान ॥ सु० ॥ लोक सरूप विचारीयें ॥ इति लोक सजाव
 तथा लोक सगण जावना सथाय ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमृत
 अहारो ॥ से० ॥ ए ॥ गाल रे गाल, अष्टमद त्रिदुंगर्वने, टाल रे
 टाल, प्रमादघांटी ॥ पाल रे पाल, ठक्काय प्रितपाल तू, वाल रे वाल
 कून्म टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जक्त
 में, ग्यानको सार, एहीज वखाणी ॥ दया रुचि बिना, सर्व किरि
 या वृथा, कत विन रामा ज्यों, वेलु घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साठ
 नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया जगवती अति, सुख दाणी ॥ धर्म
 रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक
 आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कड्डुवा तुंवा तणो, आहार अमृत समो,
 कर लियो सम परि, एामें स्वामी ॥ तीक्ष्ण वेदना, खेद नहिं
 आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥
 मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, जाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥
 ध्यान झुकल धखो, ज्ञान केवल वखो, होय अजोगी, मुक्ति सिंघा
 या ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म वरजावना, जो कोई धावेगा, पावेगा
 सो शिव, गढ नि शका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परजावथी, इह
 जवें परजवें, जीत मका ॥ से० ॥ १५ ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सजाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाइजी कमाई कीजो धर्मनी, काइ तेरे काठी
 या टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिठा
 णियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल वखत ठे नहिं जी समाधिक
 पोसा वखाणकी, काइ काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पि
 ता सुत नाइजी कायाने माया कारमी, कांइ जाखी ठे जिनराय ॥
 तिणसु ममता बांधेजी नही साधे आतम काजनें, काइ मोह
 काठियो डु खदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म मांइजी करडाइ
 राखे जीवडा, काइलोक बढाई रीत ॥ तढके तोड बोलेजी नहि

अ नरेश्वरु, रिखज जिनंदजीका नंदो जी ॥ समकित विष्टु-६ प्र
 नावना, टाव्या नवहु खफंदो जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित कि
 या विना जगतमें, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिखजी
 कहे इम सर्वहो, जे सुगुणं नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म नावना सहाय प्रारंभः ॥

॥ देशी कहखामें ॥ सेव नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा,
 धीरजकी धरणी, सतोष पाणी ॥ ज्ञानको वीज, तस मूल समकित
 क्रिया, कंद विनय खंद, दया घखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा
 मदा, जेद प्रतिशाख तस, मधुर वचन बल, अधिक सोहे ॥ कुसु
 म छुन ध्यानके, कीर्त्तिसौरभ्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद मो
 हे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानंद पंथी, सुखा नदढायमें, निजानंद प
 ओधिर, जाव सेरी ॥ कपाय नव ताप, सताप दूरें हटे, बली
 हारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह ससारमें, धर्म
 आधारथी, रि-६ रि-६ सपदा, अनंत पाया ॥ बापडा जीव केह, न
 र्म कर्मावशें, कल्पवृक्ष गोडी, बाबुल लोनाया ॥ से० ॥ ४ ॥ के
 इ हिंसा करे, पाप पिमज नरे, दयाधर्म उपरें, देप राखे ॥ नर्मि
 छ कुगुरु तणा, कर्म बाघे घणां, गज परें निजशिर्से, धूल नाखे ॥
 से० ॥ ५ ॥ द्वार नर नव करे, द्वार चितामणि, सो सहे परवशें,
 खड्ग धारा ॥ विभ्रमे चवगति, जीव जे दुर्मति, धारे नहि धर्मके,
 धिष्ट गिमारा ॥ से० ॥ ६ ॥ धर्म विन सरण नहिं, धर्म विन तरण
 नही, धर्म विना नहिं कबु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, प्रात
 धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नहिं हे प्राता ॥ से० ॥ ७ ॥ दोढ
 रे दोढ, जैनधर्म तरु गढ़णकु, गोढ रे गोढ, नवताप ताई ॥ पोढ
 रे पोढ तु, उपशम ढायमें, गोढ रे गोढ ए सुख दाई ॥ से० ॥ ८ ॥
 ऊटक दे ऊटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप चारो ॥

हटक दे हटक दे, जोग विपरीत पण, गटक से धर्म, अमृत
 अहारो ॥ से० ॥ ९ ॥ गाल रे गाल, अष्टमद त्रिहुंगर्वने, टाल रे
 टाल, प्रमादघांटी ॥ पाल रे पाल, ठकाय प्रितपाल तु, वाल रे वाल
 कूजर्म टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरांत नहिं, धर्म कोई जक्त
 में, ग्यानको सार, एहीज बखाणी ॥ दया रुचि बिना, सर्व किरि
 या वृथा, कत विन रामा ज्यौ, बेलु घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साव
 नामें करी, सूत्रमें वर्णवी, दया जगवती अति, सुख दाणी ॥ धर्म
 रुची मुनि, देह ममता तजी, किडियां परें करुणा सो, अधिक
 आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कहुवां तुंवा तणो, आहार अमृत समो,
 कर लियो सम परि, एामें स्वामी ॥ तीक्ष्ण वेदना, खेद नहिं
 आण मना, सर्वार्थ सिद्ध लही, मोक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥
 मात मरुदेवी, सेवी जिन धर्मके, नाव चारित्र करी, कर्म घाया ॥
 ध्यान झुकल धखो, ज्ञान केवल बखो, दोय अजोगी, मुक्ति सिधा
 या ॥ से० ॥ १४ ॥ धर्म वरजावना, जो कोई धावेगा, पावेगा
 सो शिव, गढ़ नि शका ॥ रिखतिलोक कहे, धर्म परजावणी, इह
 नवें परजवें, जीत मंका ॥ से० ॥ १५ ॥

॥ अथ तेरे काठियानी सहाय लिख्यते ॥

॥ श्रीजिनमारग पाइजी कमाई कीजो धर्मनी, कांइ तेरे काठी
 या टाल ॥ ए आकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी वारिइ मूल पिठा
 एियें, कांई धरम करणकी जेज ॥ हाल बखत ठे नहिं जी समाधिक
 पोसा बखाणकी, कांइ काल गमावे सेज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पि
 ता सुत जाइजी कायाने माया कारमी, काइ जांखी ठे जिनराय ॥
 तिणसु ममता बांधेजी नही साथे आत्म कालनें, कांइ मोह
 काठियो डु खदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धर्म मांइजी करहाइ
 राखे जीवडा, कांइ लोक बढाई रीत ॥ तडके तोड बोलेजी नहि

तोले हिरदे न्यावने, कांइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ १ ॥
जाणे में हुं शाहाणो जी अकल बलरूपें जातिमें, कांई सघलामें नि
रदार ॥ परती करे बुराईजी वढाई करे आपनी, कांइ राखे मन अ
हंकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुंकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी,
कांइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोले
मर्मजु पारका, कांइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद ब
णो अग ठावे जी नहि जावे धर्मनी वातढी, कांइ समरे नहि नव
कार ॥ नरजव एल गमावे जी नहि चावे जप तप साधना, कांइ
धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोडे जीव
दोडे देश प्रदेशमें, कांइ तृष्णा अपरंपार ॥ घर ठोडया नहि जावे
जी किम थावे धर्म तिण जीवसु, कांइ लोच महाडुखकार ॥
श्री० ॥ ७ ॥ सिंह सरप सुर देणो जी वली घरको खरच निजाव
णो, कांइ मर आणे मनमांय ॥ धर्म किसबिध थावे जी नहिं ला
वे धीरजता हिये, कांइ सोचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट
तणो सजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो, कांइ रोगादिक तनमांय
॥ शोक घणोरो लावे जी गजरावे निशदिन प्राणियो, कांइ पामे धर्म
अतराय ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जीव अजीव नहि जाणे जी वली सम
के नहि पुण्यपापमें, कांइ लीणो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें राचे
जी वली खाचे खोटी रुढीने, कांइ अधिका घाघे कर्म ॥ श्री० ॥
१० ॥ विकथा करे पराई जी कमाई टोटा खरचकी, कांइ काम
जोग अधिकार ॥ हाथ कांइ नहिं आवे जी गमावे निजगुण
जीवढा, कांइ जटके अनत ससार ॥ श्री० ॥ ११ ॥ देखे ख्याल त
मासाजी वली घोले जापा हांसीनी, कांइ करे कुतूहल घात ॥
लाखेणी घडी खोवेजी विगोवे जव चितामणि, कांइ होवे धर्मकी
घात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशिदिन निशिदिन खाणोजी घजाणा
ताणो खेलणो, कांइ नाहाणो धोणो अग ॥ तिणमें फाल गम

वे जी नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्ममे जंग ॥ श्री०
॥ १३ ॥ काठिया ए डु खदायी जी लगा ठे संग अनादिका, कांइ ध
र्म रतनका चोर ॥ इणसुं वहु डु ख पायो जी नहिं आयो नेहो ध
र्मने, कांइ कीधो कर्म कठोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसैं गुण वा
लिशजी वदि मास आपाढतिथि चोथमें, कांइ पुना शहेर मजार ॥
तिलोकरिख कहे टालो जी ए काठिया तेरे जावहुं, कांइ उतरो न
वजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रंथानुसारसैं एकसोवत्रीशबोल अथवा
कर्मविपाक माला सभाय प्रारज ॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चितामणि सम नर पाइ, निरर्थक ज
नम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध डु ख
वावेगा ॥ सुण जाइ रे ठवे जयां पस्तावेगा ॥ सुण जाइ रे तेरा किया
तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके बिंद बिंदकें, गजराहार बणावे
गा ॥ इण करणीथी परजवमांइ, एक नेत्र नहीं पावेगा ॥ सुण०
॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तुं, जलके माही रुवावेगा ॥ इण
कर तवसैं परजवमांइ, जनम अधपण आवेगा ॥ सुण० ॥ ३ ॥
माखी मालका ठांता तोढे, धूवे करीने गजरावेगा ॥ इण पातक
सुं ते परजवमें, आंधा वेहेरा आवेगा ॥ सु० ॥ ४ ॥ रूप रंग देखी
तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे डुमणो, ज
लमल तो तास देखावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंडिय जीवाको करे जो
चूरण, सलिया धान्य पिस्तावेगा ॥ इण अनर्थसुं परजवमांइ, कूवडा
पणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बेल घोडादिक चौपद उपर, अ
धिको नार जरावेगा ॥ चांदी पहिया पण नहिं ठोढे, गडगुवड
अग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पंखेरूकी पांख ठखाढे, वृद्धकी माल
कटावेगा ॥ इण करणीसु परजवमाही, टूटा पग हो जावेगा ॥ सु०

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड उखाड़े, पणुजीव संतावेगा ॥ ठंसे मार
 ग लीलोतरा चांपे, पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ९ ॥ संबमी
 शीलवत जन केरी, निदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसूं परजव
 मांही, गुगो वोवडो थावेगा ॥ सु० ॥ १० ॥ करे वैदक उंषध मा
 त्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसूं परजवमांइ, खोजा
 ण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको ठेदन नेदन, हिससूं
 कर पोमावेगा ॥ इण करणीसूं परजव प्राणी, वेरो पांगुलो पावे
 गा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनकी अब
 गुण गावेगा ॥ इण करणीसूं परजव मांइ, गुगो वेहेरो हो जावेगा
 ॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर
 खोदावेगा ॥ इण अनरथसूं परजवमांही, गलत कोठ अग आवे
 गा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावय उंषध नेखज केरो, अधिको सजोम
 मिलावेगा ॥ तिणसूं जस करतां पर उपर, अपजस कमावेगा
 ॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी छूणका आगर खोदावे, छुणको बिणज
 कमावेगा ॥ इण करणीसूं परजवमांइ, आंख धावणी थावेगा
 ॥ सु० ॥ १६ ॥ सौम्य सुंदर नेत्र जे परनां, द्वेषधी मद कर देवेगा
 ॥ तिणकरणीसूं परजवमांहिं, आख मांजरी रहेवेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥
 महोटी काया देखि आपणी, अहंकार मन लावेगा ॥ इण करणी
 सूं परजवमांही, धावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ मंद आ
 करो करे उंरकूं, अधिको त्रास बतावेगा ॥ इण करणीसूं परजव
 मांही, रुंढ मुढ अग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंचेंद्रिय जीव हणो
 निज द्वार्षे, मुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसैं परजवमांही,
 रोग जगधर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दूसराके धन आतो देखी,
 विच अतराय लगावेगा ॥ तिण कर्म धन इष्टा राखे, पण लक्ष्मी
 नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रजावें मेथुन सेव्यां, पथरीका
 रोगज थावेगा ॥ फाटाने विधि माझला मारे, कठमाल रोग था

वेगा ॥ सु० ॥ २२ ॥ धुणी घाली जीव संतावे, हरस रोग डख
 आवेगा ॥ छुवारा वोवे वेलढी तोढे, बाल बहू पढजावेगा ॥ सु०
 ॥ २३ ॥ लांच लेइने फूतुं घोले, सच्चाकूं गजरावेगा ॥ तिणसू रो
 ग घणो डख अंगमें, लोकके नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ रु
 तघ्न पणुं कपट घणोरो, मित्रसू ठलपणुं लावेगा ॥ तिणसू सुख स
 जोग मिलावे, विजोग आय पढ जावेगा ॥ सु० ॥ २५ ॥ फल तोढी दो
 रामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसैं परजवमांदि,
 खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा वावढी सरवर जल
 का, वणावे पाल फोडावेगा ॥ इण करतव्यसैं परजवमांइ, रोगपा
 णको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ कोटवालको करम करे कोइ, ब
 होत प्राणी मर पावेगा ॥ तिणसू मरपणपणो घणो अंगमें, मा
 र घणोरी पावेगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जू मांकडादिक त्रेंडिय प्राणी,
 तावढे नाखीने धावेगा ॥ तिणसू खाजा फुटणी अंगमें, पीडा अ
 धिकी आवेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणोरो करे और पर, फूटा
 आल लगावेगा ॥ तिणसू मिथ्या सरधा करकें, फूटी घात जमावे
 गा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तैल मधुआदिकका वासण, वघाडा रा
 खे रखावेगा ॥ सूत्र नणावे करे वेयावच्च, ठलटा सो अवगुण गा
 वेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन छेवे, मागे तब नट
 जावेगा ॥ तिण करणीसू परजवमांहे, इसी नपुसग आवेगा ॥
 सु० ॥ ३२ ॥ पृथिवीको करे खांमण पीसण, आरंन अधिक करा
 वेगा ॥ तिण करणीसू होवे कोढीयो, नव नव गोथा खावेगा ॥
 ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माठलाको करे आहार घणोरो, छुवा अधिक सं
 तावेगा ॥ तप जप मद करे तिण करमें, तप अतरायज आवेगा
 ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी रुतघन छुटी, मित्रडोही घणो लावे
 गा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बढुला, पण परने नहिं सुवावेगा
 ॥ सु० ॥ ३५ ॥ वचन कला मधुरता घोली, जिणको गरज जला

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जह ठखावे, पण्ढनीव संतावेगा ॥ ठसे मार
ग लीलोतररी चांपे, पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ९ ॥ संजमी
शीलवत जन केरी, निदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसू परजव
मांही, गुंगो बोवढो थावेगा ॥ सु० ॥ १० ॥ करे वैदक उंथ मा
त्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसू परजवमांइ, खोजाव
ण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको जेदन जेदन, हिंस्र
कर पोमावेगा ॥ इण करणीसू परजव प्राणी, बेरो पांगुलो थावे
गा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साथवी आवक आविका, जिनकी अब
गुण गावेगा ॥ इण करणीसू परजव मांइ, गुंगो वेहेरो हो जावेगा
॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर
खोदावेगा ॥ इण अनरथसू परजवमांही, गलत कोढ अग थावे
गा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावय उंथ जेखज केरो, अधिको सजोग
मिलावेगा ॥ तिणसू जस करतां पर ठपर, अपजस कमावेगा
॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी छूणका आगर खोदावे, लुणको बिणज
कमावेगा ॥ इण करणीसू परजवमांइ, आंख वावणी थावेगा
॥ सु० ॥ १६ ॥ सौम्य सुंदर नेत्र जे परना, द्वेषी मद कर देवेगा
॥ तिणकरणीसू परजवमांइ, आंख मांजरी रहेवेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥
महोटी काया देखि आपणी, अहकार मन लावेगा ॥ इण करणी
सू परजवमांही, धावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ मंम आ
करो करे ऊंकू, अधिको त्रास घतावेगा ॥ इण करणीसू परजव
मांही, रूढ सुंद अग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंचेंद्रिय जीव हणो
निज द्वार्थे, सुखसू अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसू परजवमांही,
रोग जगधर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दूसराके धन आतो देखी,
विच श्रंतराय लखावेगा ॥ तिण कर्म धन इष्टा राखे, पण लक्ष्मी
नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रजावे मैथुन सेव्या, पथरीका
रोगज थावेगा ॥ काटने बिधि माझला मारे, कठमाल रोग था

वेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ धुणी घाली जीव सतावे, हरस रोग डख
 आवेगा ॥ छुवारा बोवे बैलढी तोढे, बाल बहू पडजावेगा ॥ सु०
 ॥ १२ ॥ लांच छेइने फूटुं बोले, सच्चाकुं गजरावेगा ॥ तिणसू रो
 ग घणो डख अंगमें, लोकके नहिं देखावेगा ॥ सु० ॥ १३ ॥ रु
 तघ्न पणुं कपट घणोरो, मित्रसुं ठलपणुं लावेगा ॥ तिणसू सुख सं
 जोग मिलावे, विजोग आय पड जावेगा ॥ सु० ॥ १४ ॥ फल तोढी दो
 रामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसैं परजवमांदि,
 खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ १५ ॥ कूवा वावढी सरवर जल
 का, वणावे पाल फोडावेगा ॥ इण करतव्यसैं परजवमांइ, रोगपा
 णको आवेगा ॥ सु० ॥ १६ ॥ कोटवालको करम करे कोइ, ब
 होत प्राणी नर पावेगा ॥ तिणसू मरपणपणो घणो अंगमें, मा
 र घणोरी पावेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥ जू मांकडादिक त्रैडिय प्राणी,
 तावडे नाखीने धावेगा ॥ तिणसू खाना फूटणी अंगमें, पीडा अ
 धिकी आवेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ क्रोध घणोरो करे और पर, जूठा
 आल लगावेगा ॥ तिणसू मिथ्या सरधा करकें, फूठी वात जमावे
 गा ॥ सु० ॥ १९ ॥ घृत तैल मधुआदिकका वासण, उधाडा रा
 खे रखावेगा ॥ सूत्र जणावे करे बेयावज्ज, ठलटा सो अवगुण गा
 वेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ कपट करिने परधन छेवे, मागे तब नट
 जावेगा ॥ तिण करणीसू परजवमांहे, इच्छी नपुसग आवेगा ॥
 सु० ॥ २१ ॥ पृथिवीको करे खांमण पीसण, आरज अधिक करा
 वेगा ॥ तिण करणीसू होवे कोढीयो, जव जव गोथा खावेगा ॥
 सु० ॥ २२ ॥ माढलाको करे आहार घणोरो, छुवा अधिक सं
 तावेगा ॥ तप जप मव करे तिण करमें, तप अंतरायज आवेगा
 ॥ सु० ॥ २३ ॥ अविश्वासी कृतघन छुटी, मित्रझोढी पणो लावे
 गा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बढुला, पण परने नहिं सुवावेगा
 ॥ सु० ॥ २४ ॥ वचन कला मधुरता बोली, जिणको गरज जला

दया नहि पाले, दारिद्र्यणो तस आवेगा ॥ देव गुरु धर्म खोटा
 सरथ्या, प्रिय कुटुंब मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ गुणसीत्तर कोडा
 कोडी सागर, मोहणी थिति द्वय जावेगा ॥ तव इण चैतनकूं अं
 तसमे, धर्म करण मन थावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ एक कोडी साग
 र वपर, मोहणी थिति वढ जावेगा ॥ तव ठण प्राणीने धर्म ध्या
 नकी, किंचित रुचि नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ तीव्रनावें कु
 शील सेवावे, मनमें अधिक हर्षावेगा ॥ तिणसू परधन संपत्ति दे
 खी, निश्वास नाखि मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ निलिका कुम
 करावे तिण कर्म, उग्रस्थ थानकमें जावेगा ॥ शिलावट कर्म ति
 णकर्म, रक्तपित्त कीडा पढ जावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ खेत्र खेडा
 वे हल हकावे, कुघा घणी उपजावेगा ॥ लीलां जाडकी मालि क
 टाया, आंगुलि उठी पावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ रगरेज पणाका कर्म
 कियाथी, बोलतां जीन अटक जावेगा ॥ बुद्धार कर्म बली तीव्र
 रोपसू, मृगीको जोलो आवेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ गोवर सडावे उ
 करडी बघावे, ग्राणां थापे थपावेगा ॥ थुंक जाल चुवे मुखसेंती,
 मुख डीध ननकावेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ मात्रामांही करे मातरो,
 पायखानामें दिसा जावेगा ॥ तिणसू नदी समुदरमांही, अचक
 नाव हुंव जावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ पायखानां जाडे तिण कर्म,
 बाल मरण मन चावेगा ॥ निवाण सुकावे तिणसू नाकको, खेल
 मुंडामें आवेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ शल्यां धान्य सेकावे भिजावे, लि
 पणे रोगी थावेगा ॥ फूटा सोगन खाया पृथिवीमें, उठो आवखे
 जावेगा ॥ सु० ॥ ६० ॥ हांसीमें फूटो वचन बोले, फूटोइज थाल
 लगावेगा ॥ उठे आवखे प्राणीमाही, उपजी बड्ड डख पावेगा ॥
 सु० ॥ ६१ ॥ वनकाटी जे करावे प्राणी, रुत नपुसक थावेगा ॥
 कपास लोढावे घाणी करावे, सो वेश्यानव पावेगा ॥ सु० ॥ ६२ ॥
 नरम वनस्पति फल फूलादिक, जो कोइ चूटे चूटावेगा ॥ जोवन

कटाइ शेके, निर्वीज पुरप सो थावेगा ॥ हलालखोरका कर्म किया
सुं, चोर जूगारी थावेगा ॥ सु० ॥ ४४ ॥ वनस्पतिको सरखो क
रावे, आप पियो पर पावेगा ॥ अनेक स्त्रीपरणें तो पण, सकल
बंजा रे जावेगा ॥ सु० ॥ ४५ ॥ बकरा जेंसादिक दोपद मारे,
गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति ठेदन किया, जन्म मर
ण दोइ साथें थावेगा ॥ सु० ॥ ४६ ॥ उगती कूपल तोढे तोढा
वे, मुखसू अधिक सरावेगा ॥ तिणपातकथी बालपणामें, मात
पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ४७ ॥ दान तणी अतराय जे देवे, मर
मकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पडिलाजणकी घणी इच्छा, अंतराय
रहे जावेगा ॥ सु० ॥ ४८ ॥ सोनारकी धमण धमावे, तिणसू रोग
जलोदर थावेगा ॥ गर्ज पाहिने ठानो राखे, गेव धसकें मरजावे
गा ॥ सु० ॥ ४९ ॥ अनतकाय कंद मूलकों ठेदी, जिणका चूरण
करावेगा ॥ धन सपत पाइने ते नर, चोरगीयो दुइ जावेगा ॥ सु०
॥ ५० ॥ उलट परिणामें दान वेईने, फिर पावें पस्तावेगा ॥ धनस
पत्तको लाज घणोरो, जोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥
हिंसा करे फूठ मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ लवो आठ
खो रहे दरिद्री, फूर फूरने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ देव गुरु
धर्मशास्त्र उथापे, निदा कर हरखावेगा ॥ सो किल्बीपी हूइ होय
गा बक्कर, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ ज्ञानको बेरी
निदक धेपी, आशातना अतराय लगावेगा ॥ तिणसू ज्ञानावरणी
बंधना, ज्ञान कबू नहीं थावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ दर्शनवतको
बेरी निदक, न्याय अन्याय बतावेगा ॥ दर्शनावरणी बंधनसेंती,
नव प्रकृति उपजावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ दान शियल तप जावहुमा
गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसू इणजव परजवमाइ,
शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ धाढा पाढे करे परनिदा,
परप्राणी सतावेगा ॥ तिणसू इणजव परजव मांही, अशाता वे

कढाई शेके, निर्बीज पुरप सो आवेगा ॥ हलालखोरका कर्म किया
 सूँ, चोर जूगारी आवेगा ॥ सु० ॥ ४४ ॥ वनस्पतिको सरखो क
 रावे, आप पियो पर पावेगा ॥ अनेक स्त्रीपरणें तो पण, सकल
 बंजा रे जावेगा ॥ सु० ॥ ४५ ॥ बकरा जैसादिक दोपद मारे,
 गलफांसी सो पावेगा ॥ तरुण वनस्पति ठेदन किया, जन्म मर
 ए दोइ साथें आवेगा ॥ सु० ॥ ४६ ॥ उगती कूपल तोड़े तोड़ा
 वे, मुखसू अधिक सरावेगा ॥ तिणपातकथी बालपणामें, मात
 पिता मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ दान तणी अंतराय जे देवे, मर
 मकी बात दरसावेगा ॥ मुनि पडिलाजणकी घणी इच्छा, अंतराय
 रहे जावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ सोनारकी धमण धमावे, तिणसू रोग
 जलोदर आवेगा ॥ गर्ज पाहिने ठानो राखे, जेव धसकें मरजावे
 गा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ अनतकाय कंद मूलको ठेदी, जिणका चूरण
 करावेगा ॥ धन संपत्त पाइने ते नर, चोरंगीयो दुइ जावेगा ॥ सु०
 ॥ ५३ ॥ उलट परिणामें दान देईने, फिर पावें पस्तावेगा ॥ धनस
 पत्तको जान घपोरो, जोग अंतराय बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥
 हिंसा करे फूल मुख बोले, मुनिका अवगुण गावेगा ॥ लवो आठ
 खो रहे दरिद्री, फूल फूलने मर जावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ देव गुरु
 धर्मशास्त्र वथापे, निदा कर दरखावेगा ॥ सो कित्बीपी हूइ होय
 गा बकर, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ ज्ञानको बेरी
 निदक धेपी, आशातना अंतराय लगावेगा ॥ तिणसू ज्ञानावरणी
 बंधना, ज्ञान कबू नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ दर्शनवतको
 बेरी निदक, न्याय अन्याय बतावेगा ॥ दर्शनावरणी बंधनसेंती,
 नव प्रकृति उपजावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ दान शियल तप जावहुमा
 गुण, परजीवने शाता उपजावेगा ॥ तिणसू इणजव परजवमांहु,
 शाता वेदनी पावेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ धाढा पाढे करे परनिदा,
 परप्राणी सतावेगा ॥ तिणसू इणजव परजव मांही, अशाता वे

जाणक आवेगा ॥ सु० ॥ १०३ ॥ मन मचन काया त्रिजोग रोककें,
 शैलेशी परिणाम चढावेगा ॥ अजर अमर अविकार निरजण, सि
 द्दकी पदवी आवेगा ॥ सु० ॥ १०४ ॥ जेसा जेसा कर्म करेगा,
 तेसा तेसा पावेगा ॥ मात पिता वन कुटुंब कबीला, पात को
 इ न पढावेगा ॥ सु० ॥ १०५ ॥ हलूकर्मो नवि प्राणी जिन
 के, जिनवाणी हिए सुहावेगा ॥ जारीकर्मो अनत ससारी, हां
 सीमें वात उढावेगा ॥ सु० ॥ १०६ ॥ कर्मविपाक सुण सरधे
 कोइ, पाप कर्म घटावेगा ॥ तिलोकरिख कहें सो नवि प्राणी,
 अजर अमर पद पावेगा ॥ सु० ॥ १०७ ॥ कलश ॥ वगणीगें
 गुण चालीशवर्षे, माघशुक्ल त्रयोदशी ॥ देश दक्षिण पेंठ मनचर,
 सूत्रवाणी शशितम वसी ॥ एकसो वतीस वोले नीरणो, करी
 तिलोक रिख कहें ॥ धन जिनागम आरधता लहे, शिवसिरी
 छिं श्री लहे ॥ १ ॥ इति कर्म विपाकमाला सजाय संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेश सर्वैया, गाम उपर लिख्यते ॥

अमदानगर पार्श्व, करज गाम जावे मती, कूडगाम वसियाहुं,
 लले गाम जावेगा ॥ रस्तापुर वासी तुं तो, हियडामें सोच कर,
 सो नई विचारेगा तो, बेलापुर पावेगा ॥ काकिणीके काज तु तो,
 फिरत लाखण गाम, पुना बिना कोरे गाम, ठहा होय जावेगा ॥
 कहत तिलोक तुं तो, सदरको पंथ धार, वाकी कीजो वाट, लि
 या धुले गाम आवेगा ॥ १ ॥ राय गाम वोडे मती, लाम गाम
 मर राख, जाम गाम लिया बिना, घुमरी लगावेगा ॥ देव गढचहा
 य करो, ठोड वे वावल बाढो, जाण गाम सोध कर, निरालो सि
 धावेगा ॥ मनवाडा कर ले तो, कोल गाम वास मिले, घाट सरम
 मिव्यो तोय, जाते पठितावेगा ॥ कहत हे तिलोकरिख, साइ खे
 'ढो ध्यान कर, कुदेवाडी ठोड कर रामपुरी पावेगा ॥ २ ॥ इति ॥

तरसनाको, विरथा अवर टालो रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं० ॥ १२ ॥ दिवस
 तथा निशिपेरकी सखा, त्यागो कुशल नर नारी ॥ उरदिन त्याग
 करो मन नाखे, विरथा पाप टालो रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं० ॥ १३ ॥ उची
 नीची तिरढीदिशि करी, कर परिमाण सीयाणो ॥ पांच आश्रव
 त्याग कर लीजो, पालो श्रीजिन आणो रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं० ॥ १४ ॥
 हाथ पाव मुख घोवणसो, वे सिनान कहावे ॥ सवसनान सरव
 अंगघोवण, त्याग करी सुख होइ रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं० ॥ १५ ॥ जो
 जन पाणीका वजनकी सख्या, वनमानसुं त्याग करियें ॥ मनछुइ
 राखो निर्मल पालो, अविरतिछु अति मरीयें रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं०
 ॥ १६ ॥ इणविध नीत सांज सवारें, आदि करो नित्य त्यागो ॥
 नाम नेम प्रमाद ठोडीने, मोहनिझायकी जागो रे ॥ ज० ॥ च० ॥ सं०
 ॥ १७ ॥ उंगणीसैं गुणचालीश फागण, शुक्ल पख ठठ जाणो ॥
 तिलोकरिखजी कहे जिन आण आराधो, लेशोपद निर्वीणो रे ॥
 ज० ॥ च० ॥ सं० ॥ १८ ॥ ॥

॥ अथ धर्मपर्व तथा लाकिक पर्व तथा अध्या
 त्मस्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ पञ्चसणपर्वस्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ सिद्ध चक्रने पूजो ॥ ए देशी ॥ पर्वपञ्चसण कीजो रे नविका,
 नर नव, सफल करीजें ॥ ए टेक ॥ पञ्चसण सम परच नहिं दूजो,
 जैन धरम यज साचो ॥ इणने जो कोई साधे जावछु, मिटे कपा
 यकी आंचो रे ॥ ज० ॥ प० ॥ १ ॥ आठ करमदल वरण कारण,
 आठ मदके सव गोढो ॥ अष्ट प्रवचन रचन अष्टसिद्धि, अष्ट गु
 णात्म जोढो रे ॥ ज० ॥ प० ॥ २ ॥ अष्ट दिवस अष्ट जाम निर

यणी ॥ कलेश केकसी राणी हे उसकी, अकलदार समजो ज
 हारी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मिथ्यामोहनी उसका फर्जद, दश
 मिथ्या दश आनन हे ॥ विस आश्रवकी छुजा हे उसके, कपटविद्या
 की खानन हे ॥ सम्यत्कमोहनी विनीपण दूजा, नदन सो कुठ हे
 न्यायी ॥ मिश्रमोहनी कुनकर्ण ए, लचपिच वातमें अधिकाई ॥ मा
 हामोहके ए तिहु नदन, समजो सुगुण नर नारी ॥ धर्म० ॥ २ ॥
 परपच नाम मदोदरी नामें, मिथ्यामोह रावन राणी ॥ विषय इजित
 अहं मेघवाहन, मिथ्या रावणकें सुखदाणी ॥ कुमति नाम, चंडन
 खा बहेन हे, कठिन क्रोध खरके व्याही ॥ दूषण दूषण तिन शय्य
 त्रिशिरा, ए दोनुहि उसके जाई ॥ सज्जल तिक चंडनखा सबुक, कबु
 एक आयो दुसियारी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ ज्ञानरूप सूर्यहस खड्गकू,
 साधनकी दिलमें आइ ॥ मात पिताका दुकम न माना, रह्या
 वो उपशम रणमाइ ॥ उसी वखतमें राय राजगृहि, दश लक्षण द
 शरथ राया ॥ सवर जावना राणी कौशल्या, धर्मराम पूतर जाया
 ॥ समकित सुमित्रा राणी दूसरी, सत लठमनकी मइतारी ॥
 धर्म० ॥ ४ ॥ सुमति सीतासैं धर्मरामका, बहोत ठाठसैं वियाव जया
 ॥ एक दिवस वो पिता डुकुमसैं, तिनुही सज्जम वनमें गया ॥
 सत लठमन वो खड्ग पकड कर, सजल सबुकका शिर धाया ॥ कुम
 ति चंडनखा कही पतिसु, खर दूषण त्रिशिरा धाया ॥ सतलठ
 मन तब चढे सामने, वन तीनुकु लिया मारी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥
 मिथ्यामोह रावणके पास वो, सुमति सीता की बढाइ ॥ करी वो
 त तव लालच वश बढा, चल आया लका सांई ॥ ठल विद्याका
 नाद सुना कर, सुमति सीताकी किवि हे चोरी ॥ राम लठमन
 जब जाना जेव ए, सोचे अबलानी हे दोरी ॥ जूठ साहीसकडुष्टि
 हे उसकी, सतलठमणनें करी खुवारी ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ सतोपसुग्रीव
 जब जया पक्षपर, बहोत चूप उसकी सगें ॥ जाम जाबुवाहन नीज

र ॥ न० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तिन गुपति, ए
तेरस सुखकार ॥ न० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ऐ ॥ खति मुक्ति अझाव म
द्वव, त्रीजे अंगें कहां डुवार ॥ न० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चव
घार खुला शिवमदिर, शिवलहमी हे तैयार ॥ न० ॥ शि० ॥ ऐ०
॥ ७ ॥ पाप कीयासु लहमी जावे, शंका नहिं हे लगार ॥ न०
॥ श० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर हे, खरचता
आवे नहिं पार ॥ न० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ए ॥ इति ॥ ३ ॥

• ॥ अथ चतुर्थ रूपचवदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ धन धन आज दिवस जलें उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए
देशी ॥ एसी रूपचवदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥
इडिय मन मुमन करी लीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ ए० ॥ १ ॥
पापको मेल पखालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज
धोती सुव्रत बाधो, सवरपाग शिर ठाजे रे ॥ ए० ॥ २ ॥ दया डुप
टो किरियाको अत्तर, धर्मध्यान सोला नेदो रे ॥ ए सोला शिणगार
सजणकी, चित्तमें राखो ठमेदो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तंवो
ल सुंदावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक जर्मकी वा
ती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ उगणीसैं अढतिश रूप
चवदश दिन, एह सजाय बणाई रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप जो
चादो, तो इम करो जाई बाई रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ४ ॥
॥ अथ पचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तेने पायो रे ॥ ए देशी ॥ दीपमाला
दीपमाला परव एसो करीयें रे, सिद्ध लठमी वरीयें ॥ दीप० ॥ ए टेक ॥
इव्यातम घर निर्मल करियें, कपायकी धूल परहरियें रे ॥ आश्रव
खाम पूरावो, त्याग लीपण लीपावो, गुण रग लगावो ॥ दी० ॥ १ ॥
• पुण्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमतिगा

॥ न० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तिन गुपति, ए
तेरस सुखकार ॥ न० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ऐ० ॥ खति मुक्ति अकलव म
इव, त्रीजे अगें कहरां डुवार ॥ न० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चउ
धार खुला शिवमदिर, शिवलल्लमी हे तैयार ॥ न० ॥ शि० ॥ ऐ०
॥ ७ ॥ पाप कीयासुं लल्लमी जावे, शंका नहिं हे लगार ॥ न०
॥ श० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन धिर हे, स्वरचता
आवे नहिं पार ॥ न० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ए ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ धन धन आज दिवस नलें उग्यो, पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए
वेशी ॥ एसी रूपचउदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे ॥
इंद्रिय मन मुमन करी जीजें, जप तप स्नान करीजें रे ॥ ए० ॥ १ ॥
पापको मेल पखालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज
धोती सुव्रत बाधो, सवरपाग शिर बाजे रे ॥ ए० ॥ २ ॥ दया डुप
टो किरियाको अंतर, धर्मध्यान सोला नेदो रे ॥ ए सोला शिणगार
सजणकी, चित्तमें राखो ठमेदो रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तंवो
ल सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें रे ॥ ज्ञानको दीपक नर्मकी वा
ती, कर्मको तेल पूरीजें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ उगणीसैं अढतिश रूप
चउदश दिन, एह सजाय वणार्ई रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप जो
चाहो, तो इम करो नार्ई वाई रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तेने पायो रे ॥ एवेशी ॥ दीपमाला
दीपमाला परव एसो करीयें रे, सि-६ लल्लमी वरीयें ॥ दीप० ॥ ए टेक ॥
इव्यातम घर निर्मल करीयें, कपायकी धूल परहरियें रे ॥ आश्रव
खाम पूरावो, त्याग लीपण लीपावो, गुण रग लगावो ॥ दी० ॥ १ ॥
पुष्य पापको लेखो लगावो, पापको खातो घटावो रे ॥ सुमतिगा

रे ॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता, सो नित नित आवरजो रे ॥ मं० ॥ ६ ॥

॥ अथ पष्ठ अनुजव सक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ न्यालदेकी देशीमें ॥ पर्व सक्रांति मनावियें जी१ कां३, अनु
जव दृष्टि लगाय ॥ जिम सधति लहे शाश्वती जी१ कां३, कमी
रहे नहि काय ॥ प० ॥ १ ॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी१ कां३, कुम
ति रयणी घटंत ॥ समकित किरण पसरें घणी जी१ कां३, मिथ्या हे
मालो गलत ॥ प० ॥ २ ॥ तृष्णाजलहानी होवे जी१ कां३, सतोप
नूनि ठेखाय ॥ धर्मदिवस महोदो हुवे जी१ कां३, नविजनने सुखदाय
॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी१ कां३, समता सकर मि
लाय ॥ प्रेमकी पापही वणावजो जी१ कां३, धीरजकी आली वनाय
॥ प० ॥ ४ ॥ कृमाको खीच वणावजो जी१ कां३, दयारूपी दूध
वनाय ॥ मेवो मिलावो गुन मन तणो जी१ कां३, हिरदे हांमीके
माय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तंडुल छुट्ट करो जी१ कां३, इडिय
मनरूपी दाल ॥ खिचडी इण विध राधजो जी१ कां३, धर्मरुचि
घृत माल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अन्नय नित दीजियें जी१ कां३, पालो
शीयल अखम ॥ वारेई जावना जावजो जी१ कां३, ठोडो मिथ्या
अफम ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसैं गुणचालीसका जी१ कां३, पौपद्यु
दपचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पुनासहेरमें जी१ कां३, धर्मस
क्रांति वखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वसतपचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी वसतमें ठे ॥ सदा वसत पंचमी एसी कर रे ॥ स० ॥
ए टेक ॥ काया नगर मनमहेलके माही, जावनाचित्र अदर रे ॥
केवल नूप सुमति पट्टरागणी, धर्म नामें मंत्रीसर रे ॥ स० ॥ १ ॥
चोकस चपडासी दान हलकारो, समकित कर तलवार रे ॥ साधुसा
धवी आवक आविका, तीर्थसज्जारही नर रे ॥ स० ॥ २ ॥ मन मादल

सुद्धध्यानकी जेरी, सुगुण वाजां विचित्र रे ॥ पंच सङ्काय सूत्र बधु
 रागें, धर्मकथासुं उच्चर रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सबर अंबके ज्ञान मंत्र
 री छे, सत्यवचन पत्र रे ॥ बंधनमाल कर त्याग मोरमें, बांध
 ले अपने घर रे ॥ स० ॥ ४ ॥ शील सिरपाव शरमको जूष, सुजस
 गुलाल प्रवर रे ॥ हिरदेको होद सतोपको पाणी, गुन
 लेश्या रंग धर रे ॥ स० ॥ ५ ॥ साधमीं अंग रंग ठिटकावो, बीजें
 अति आदर रे ॥ इण नवें शोजा परजव संपत, हिंसापर्व परिवर
 रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उंगणीसैं अडतिस बसंत पंचमी दिन, अह
 मद नाम नगर रे ॥ तिलोकरिख कहे एसी करे जो पंचमी, सो
 वसतपंचमी गत नर रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम अध्यात्म स्वाध्यायफाग प्रारंभ ॥

॥ देशी फागकी ठे ॥ ऐसो खेलजो द्वारे ॥ नविका ॥ ऐ० ॥ फाग
 सदा सुख पावो ॥ ऐसो खेलजो ० ॥ ए टेक ॥ धर्म बाग फुली सम
 कित सरदा, बिरति कोयलनाद करे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ कुमति होलि
 काने बीजो मगलायने, कर्मकी धूल उमावो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २
 ॥ समता सरोवरमें स्नान करो सुगुणा, पापको मेल परवालो ॥
 न० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धीरजको धोतियो रें पहेरो घणा प्रेमसुं, जय
 णाको जामो रें पहेरो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ परमारथ पाघडी अ
 पोगकी उपरणी, शीलको शिरपेच रें बाधो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥
 कृमारूप ठोगो मेली टाटो बांधो सांचको, तप रूपी तुररो फूका
 वो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ करुणाका कुमल चोकसीका चोकडा,
 नक्तिकी जमरकडी पहेरो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ दशविध धर्मको द्वार द्विये
 पहेरजो, दान मान कडा दाथ पहेरो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ वेयावच्च विंटी
 दश आगुलीमें पहेर लो, किरियाको कदोरो रें पहेरो ॥ न० ॥ ऐ० ॥
 ९ ॥ जावकी जागकु रें घुंठ घुंठ पीवजो, सतोपकी सक्कर मिला

वो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १० ॥ धरम कुटुंब संग सुमति सोहागण,
 हिल मिल गेर खूब खेलो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ सजायको
 ढफ लो ने जांफ लो नजनकी, प्रभुगुणि स्थाल खूब गावो ॥ न० ॥
 ऐ० ॥ १२ ॥ लोनरूपें लो जी महानिर्लेज जगमें, जिणके थें खु
 ब निरसावो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ जिनवाणी पानी वेराग रंग
 घोलजो, उपदेशकी पिचरकी जर मारो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ शु
 क्लेश्याकी जोली गुलाल गुनध्यानकी, जर जर मुठा उमावो ॥ न०
 ऐ० ॥ १५ ॥ विनय विवेकका थें वाजां रे वजावजो, नेमका निसा
 ए थें फररावो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १६ ॥ सवरकी सुखडीने गोठ करो
 ज्ञानकी, गेर काढो चार तीरथ ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ तेरे क्रियाको
 थें न्हावण करजो, दयाकी डुकान मान वेठो ॥ न० ॥ ऐ० ॥
 ॥ १८ ॥ एसो फाग रमो साल दर साल थें, सिद्धपुर पाटणमें व
 सो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ १९ ॥ जारी करमा जाके दाय नहि आवसी,
 हलुकरमी सो हरखावे ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २० ॥ जो नहि मानसो
 तो आगें पसतावसो, सतगुरु ज्ञान बतायो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २१ ॥
 ऊणीसैं सेंतीस फागणविदमें, बीज बुधवार दिन आयो ॥ न०
 ॥ ऐ० ॥ २२ ॥ तिलोकरिख कहे मिरज गाममें, धर्मको फाग स
 रसायो ॥ न० ॥ ऐ० ॥ २३ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम शीलासप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारम्भ ॥

॥ नावपूजा नित्य कीजीयें ॥ ए वेशी ॥ पूजो जिनवाणी माता
 शीतला, शीतल चित्त करो नावें जी ॥ ससारदावानल उपशमे,
 नविजन सुणी उलसावे जी ॥ पू० ॥ १ ॥ चतुराई चूलो थापजो,
 कर्म इगण करो नावो जी ॥ तप अग्नि सधूकजो, कायाकडाई
 चढावो जी ॥ पू० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पूरजो, निर्ममता करो
 मेंदो जी ॥ हमारूप खाजा करो, सुगुण गुजा उमेदो जी ॥ पू०

॥ अथ दशम अध्यात्मगिणगोर स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी तीजकीमें ठे ॥ शिवरमणीका साहेवा, थे तो देखोने
एह गिणगोर ॥ सुगतिका साहेवा रें तो, राचो ने एह गिणगोर ॥
ए टेक ॥ धीरजको करो सरावलो जी, कृमामिटी अनुनव नीर ॥
सत्यको बीज रें वोवजो कांइ, सुख अकूरा वृद्धि धिर ॥ शि०
॥ १ ॥ केवल ज्ञान सरोवर तणो जी, जल हिरदेकजशमाय ॥
अज्ञानारी सोहागणी कांइ, तिण सिर दीजो चढाय ॥ शि०
॥ २ ॥ नावना नार सोहातिणी कांई, नूपण सुअध्यवसाय ॥
गीतगुणी गुण गावणां कांइ, सुजसका बाजां वजाय ॥ शि०
॥ ३ ॥ इम काढो कलशा जणी, नित नित अधिक आणद ॥ ध
र्मतत्त्व तिलतिथि दिने काइ, तिज शणगारो गुणिवृंद ॥ शि० ॥ ४ ॥
सुमति विरति गोर वणाय लो कांइ, ड्वादश अंग शरीर ॥ उपांग
वारेइ दीपता कांइ, शीलको उढावो रें चीर ॥ शि० ॥ ५ ॥ लङ्काको
लेंगो पेरावजो कांइ, किरियाकी कंजुकी पहेराय ॥ महमद मारद
माथा तणो जी कांइ, राखडी रुचिकी वणाय ॥ शि० ॥ ६ ॥
समजकी विदी शिरें कही कांइ, अयोगका उंगन्यां कान ॥ पुण्यकी
पानडी जगमगे कांइ, तपस्याको तिलक वखाण ॥ शि० ॥ ७ ॥ विन
यको वोर विचारजो काइ, तत्त्वकी टोटी ने जाल ॥ फुमणा पहेरावो
विवेक कांइ, जेलो जयणाको रसाल ॥ शि० ॥ ८ ॥ चौप जडावो
चोखा वचनकी काइ, मिष्ट वचन मसी जाण ॥ निरवद्य सत्य वच
न तणां कांई, सुखतबोल वखाण ॥ शि० ॥ ९ ॥ शरमको काज
ल आंजवो कांई, नेमकी नथ सुखकार ॥ ज्ञानकी गलसीरी कठ
में काइ, दशविध धर्मको द्वार ॥ शि० ॥ १० ॥ तुसी सतोपकी जा
णजो काइ, तेढ्यो परतीतको जाण ॥ तणमन्यो देव गुरु धर्मको कां
॥ ११ ॥ चेतना चपकली ठाण ॥ शि० ॥ ११ ॥ चडहार सौम्यतापणो

कांई, बाजूबंध विवेक ॥ लुवा फूँदा तरंगका कांई, जवळ्यो करो
 तटेक ॥ शि० ॥ १२ ॥ करमदी करो शुन करणकी कांई, मुकला
 ककण सार ॥ चूढो वत्तिस जोग संग्रहको जी कांई, मणगत सुम
 न विचार ॥ शि० ॥ १३ ॥ वेयावच्च वींटी पहेरावजो कांई, अनु
 मोदना मेंदी लाल ॥ सुनय सांकला पायमें कांई, साहस कहां
 सुविशाल ॥ शि० ॥ १४ ॥ तोढा सजायका बाजणा काई, नीति
 नेवर ऊणकार ॥ हथपान पगपान प्रेमका कांई, विद्याका विठिया
 सार ॥ शि० ॥ १५ ॥ ईयाका अणवट सासता कांई, प्रीतिकी
 पोलरी जाण ॥ नग तरंगकी सांकली काई, घुघरी प्रभ बखान
 ॥ शि० ॥ १६ ॥ चेतनजी ईश्वर दीपता जी कांई, चार तीरथ परि
 वार ॥ धर्मबागमाही सचरो कांई, स्तवनगीत उच्चार ॥ शि० ॥
 ॥ १७ ॥ विज्ञानका बाजोठ पर थापिने काई, ज्ञानादिक चार
 प्रकार ॥ फेरा फेरावो तेदछ कांई, होमजो कर्मविकार ॥ शि० ॥
 ॥ १८ ॥ ध्यानकी धूप लगावजो कांई, प्रीतिका फूल चढाय ॥ मुकत
 नैवेद्य चढावजो कांई, थापो शिवमदिरमाय ॥ शि० ॥ १९ ॥
 ऐसी तीज मनावसी काई, जे नवियण नर नार ॥ ते सुख पावे
 सासता काई, शका नहिं ठे लगार ॥ शि० ॥ २० ॥ पाप तहेवार मना
 वता काई, कर्मको वधन थाय ॥ रुले चवगतिमें जीवडा कांई
 विप ए महा ड खदाय ॥ शि० ॥ २१ ॥ अनुनव ज्ञान लगावजो
 काई, सुगणा मनावो तहेवार ॥ तिलोकरिख कहे सुख पावशो काई,
 वर्तसी जय जयकार ॥ शि० ॥ २२ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश अखात्रीज अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ या रस सेलही, आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥
 येँ कर लो स्थाणा, धर्म तहेवार आखातीजको ॥ येँ ॥ ए
 टेक ॥ आखातीज तहेवार नलेरो, कर लो धर्मविचार ॥ इण

सरखो नहि उर जगतमें, वारा मासको सार रे ॥ थे० ॥ १ ॥ दा
न पुण्य सुकृतकी करणी, करजो मनशुद्ध चढ़ाय ॥ सदा तृप्त
रहो नूख न लागे, मिलसी सुख सवाय रे ॥ थे० ॥ २ ॥ अह्यगु
एका आखा लीजें, कखल धीरज धार ॥ मूसल लीजें ज्ञानको सो
कांइ, मोहणी तुष निवार हो ॥ थे० ॥ ३ ॥ शुद्धनावको सुपढो
करिने, ऊटको पापरज दूर ॥ ह्माचुलो सतोपकी हामी, कर्म
इधन जरपूर हो ॥ थे० ॥ ४ ॥ तपकी अग्नि सलगावजो जी
काइ, विनयको जल सुविचार ॥ उरो आखा खीच वणावो, सम
ता सकररस सार हो ॥ थे० ॥ ५ ॥ करुणा कडढी धिरमन था
ली, जीमो सुगुण लोक ॥ सदा तृप्त रहो सुख अनता, मिलसी
सारो थोक हो ॥ थे० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरिस्सण चारित्र निजगुण,
अखे आशातनमांय ॥ इनमें शका रंच न आणो, शोधो श्रीजि
नवाय हो ॥ थे० ॥ ७ ॥ ठगणीसैं अडतिस आखातिज दिन,
मिरी गामके मांय ॥ तिलोकरिख कहे सुगुण नरने, एसो पर्व
सुखदाय हो ॥ थे० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश राखीपर्व अध्यात्म स्वध्याय प्रारंभ ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ एदेशी ॥ राखी तहेवार
करो धर्म राखी, मिथ्याधर्मति द्यो दूर नाखी ॥ रा० ॥ १ ॥ सत
रूपी वधव महासुखकारी, सुबुद्धि नाम वेन गुणधारी ॥ रा० ॥
२ ॥ नावकी मोर रक्षा हीर जाणो, मन गुप्तिको व्यो मोतिको दा
णो ॥ रा० ॥ ३ ॥ नावको जोमल लेझ्या शुनरगी, धर्मरिद्धिकी
राखी शुन चगी ॥ रा० ॥ ४ ॥ त्यागकी गाठ दे कर माही बाधो,
समताकी सेवा नली विध राधो ॥ रा० ॥ ५ ॥ करुणा कसार करो
नलि जातें, समताको श्रीफल देवणो दाथे ॥ रा० ॥ ६ ॥ ध्या
नको नाणो सो रोकढो दीजें, किरियाकी कचुकीको खम दीजें ॥

माहा कहे महा शत्रु कर्म हे, इनमें फरक न कोय ॥ धर्म राजा
हे निपट जोरावर, सरणासुं सुख होय रे ॥ या० ॥ ११ ॥ फाग
ण कहे यें खेलजो फागण, कुमति होलिका बाल ॥ कर्म धूल
उमाय दीजीयें, गावो धर्मका ख्याल रे ॥ या० ॥ १२ ॥ वारे मास
कहे वारे अत्रत, ठोडो सुगुणा लोक ॥ वारे जेदे तप वारे जावना,
धाव्यासु शिवथोक रे ॥ या० ॥ १३ ॥ मधुमास उंगणीसैं अडति
श, पूनमतिथि गुरुवार ॥ तिलोकरिख कहे परवपगारें, पैठ आं
बोरी मजार रे ॥ या० ॥ १४ ॥ वारे मास इम सुन कर सरधे, न
विजन मन उल्लास ॥ कर्मजर्म सब दूर निवारी, पासी शिवपुर
वास्त रे ॥ या० ॥ १५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश पन्नर तिथि अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी उपर प्रमाणें ठे ॥ पढवा कहे एकनिश्वे राखो, धर्मथकी
सुख होय ॥ ठे आवलिका फरस्या सुगति, अर्थ पुजलके माय हो
॥ १ ॥ इम पंदरा तिथिको, अनुभव यें विचारो सूतर न्यावसु ॥
धु० ॥ दूज कहे दो त्रिय हे वधन, राग द्वेष ह स्वकार ॥ तप जप क
रिने काटो इणने, पामो नवजलपार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ तीज कहे
तिन तत्त्व आराधो, साधो गुप्ति तीन ॥ तीन शव्य तिन दम त
जीने, अनत प्राणी शिव लीन रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ चोथ कहे चौने
व सुगतका, आराधो नविलोक ॥ चार कपायकी लाय बुझाई, ल
हो अविचल शिवथोक रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ पचमी कहे पचमीगति
इष्टा, तो पच महाव्रत पाल ॥ पंच समिति शुद्ध जाव आराधो, पंच
प्रमाद यो टाल रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ ठठ कहे ठक्काय वचावे, ठ व्रत
लीजो धार ॥ वाज अर्पितर ठे ठे तप कर, उत्तरो नवजल पार रे ॥
इ० ॥ ६ ॥ सातम कहे नित साति वार यें, सात विसन दो ठो
ठ ॥ सात जय सब दूर निवारो, पामो अविचल गोर रे ॥ इ०

चङ्गवार कहे चङ्ग ज्यों शीतल, राखो सम परिणाम ॥ चार कपाय
को ताप निवारो, लहेशो शिवसुखधाम रे ॥ शृ० ॥ १ ॥ मंगल
वार कहे मंगल चारू, उत्तम सरणां चार ॥ धर्मको मंगल हिरदे
धारो, जिम होवे नवपार रे ॥ शृ० ॥ २ ॥ बुधवार कहे बुद्धि
पाय के, खरचो धर्म मजार ॥ पाप घटावो पुण्य बधावो, बुद्धिको
एहिज सार रे ॥ शृ० ॥ ३ ॥ गुरुवार कहे गुरुपद सेवो, जो
गुरुपदकी चहाय ॥ गुरुविन जगति सुगति न पावे, सेवो श्रीगुरु
पाय रे ॥ शृ० ॥ ४ ॥ शुक्रवार कहे सुकृत कर ले, ज्ञान ध्यान
मनरंग ॥ तप जप साधो धर्म आराधो, करो कर्मसुजग रे ॥ शृ०
॥ ५ ॥ शनिवार कहे थिर मन तन करिने, थापो समकित नीव ॥ पाप
पराज ढाल दे ठिनमें, लहिसो सुख अतीव रे ॥ शृ० ॥ ६ ॥ सा
तु वार वार वार चेतावे, वारेई सब कर्म ॥ वार वार नहिं आवे
जगतमें, ए जिन आगम मर्म रे ॥ शृ० ॥ ७ ॥ उंगणिसैं अढतिस
चेतकी पूनम, पेठ अवोरीमांय ॥ तिलोकरिख कहे गुरुसुपसार्ये,
पासी नविजन दाय रे ॥ शृ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश अध्यात्मवाग स्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ देशी केरवामें ठे ॥ वाग वगीचा देखण किम नटके, कर्मवं
धण ड खकार ॥ जज्ञां रे ज्ञानी ॥ क० ॥ १ ॥ धर्मका वाग बनाय लेनां,
तेरी कायामें गुह्रजार ॥ ज० ॥ ते० ॥ ध० ॥ १ ॥ मनका रे माली
कर ले म्याणा, उपशम सरोवर सार ॥ ज० ॥ ठ० ॥ ध० ॥ २ ॥
ज्ञानको पाणी निर्मलशीतल, धीरजकी धरती सुधार ॥ ज० ॥
॥ धी० ॥ ध० ॥ ३ ॥ कपट लोचकी खाम बूर दे, पावडी सतोष
समार ॥ ज० ॥ पा० ॥ ध० ॥ ४ ॥ दूठ खडा दो क्रोध मानका, ह्
मा कुदाली करो त्यार ॥ ज० ॥ ह्० ॥ ध० ॥ ५ ॥ किरियाकी क्यारी खा
त क्रोधका, समजकी धोरण धार ॥ ज० ॥ स० ॥ ध० ॥ ६ ॥ नि

॥ १ ॥ बाण वणावजो ज्ञानको जी कांइ, सतोप सैज रसाल ज्ञानी ॥ सजम झुलाई तुम पाथरो कांइ, विनय उंसीसो लाल ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समकित गालमछरीयां जी कांइ, विंजणो व्यो व्रत वारें ज्ञानी ॥ कृमाको खाट पढेवहो कांइ, लेश्या उज्ज्वल सुविचार ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धरम सीरख जली उठजो जी कांइ, पढपाया शुनध्यान ज्ञानी ॥ दश पञ्चकाणकी दावणी जी कांइ, सरधानां बंधण जाण ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दीपक रुचि चडवो जी कांइ, किरिया कसीबोकहावो ज्ञानी ॥ मछरदानी धीरज तणी जी कांइ, मिथ्या मछर जगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ काया नगर मनमहेजमें जी कांइ, ऐसी सैज बिठावो ज्ञानी ॥ विरति किमाड लगावजो जी कांइ, जिनशिखा सांकल लगावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ समता निदमें सोवजो जी कांइ, कुमति नार जगावो ज्ञानी ॥ जो चाहो निशदिस सपदा जी कांइ, सुमति सुहागण चहावो ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ ऐसी सुखसेजमें पोढिने जी कांइ, पाया ठे सुख अनत ज्ञानी ॥ तिलोकरिख कहे ते सही, जी कांइ, सो होसी जगवत ज्ञानी ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ श्री अध्यात्मज्वानी स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी नेरुजीका गीतरी ॥ या दया ज्वानी माता रे, देवे श्री सधने शाता रे ॥ या समता देवल ठाने रे, या विनय सिंहासन राजे ॥ १ ॥ यो सीयलको लेंगो जाणो रे, लज्जाको चीर वखाणो ॥ या क्रियाकबुकी सोहे रे, शिर तत्त्वतिलक मन मोहे ॥ २ ॥ क रुणाका कुमल जलके रे, संवर मुख अधिको मलके ॥ तिन गुप्ति त्रिगुल ज्युं सोवे रे, या शत्रु सर्व नमावे ॥ ३ ॥ मूलथानक श्रीजि नपासे रे, स्थापना निजहिरदे जासे रे ॥ जाप्री चछ तीरथ आवे रे, सो निरख निरख हरखावे ॥ ४ ॥ नियमव्रत नैवेद्य सो चढावे रे,

किवंध वेठा सब माह्या ॥ गंगोदक कचनकी ज़ारी, वेठा निमण
 सब दुसियारी ॥ १३ ॥ जब लग जोजन होवे त्यारी, मेवा परो
 से सुंदर नारी ॥ पेहली किसमिस शाख मनुका, केला कतली देश
 कोकनका ॥ १३ ॥ पिंम खजूर गुटली करी न्यारी, काजू कली
 वदाम सुप्यारी ॥ चिरोजी अजिर पिस्तां जलेरां, अंगुर वाडिम खो
 परां गहेरां ॥ १४ ॥ चटका करकें सकर मिलाइ, नर नर मूठा मे
 ले ठमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी घाली, पक्कान्नकी मनवारा चाली
 ॥ १५ ॥ लाडु सिंद केसरिया नीका, मोतिचूर चोंगणीका नीका
 ॥ जुटिया जुर्मा लाडु दालका, मगद मनोहर राय सालका ॥ १६ ॥
 वेसण ऊर घाटीका जाणो, मूंग दालका सरस बखाणो ॥ स
 कर चासणी ठढद दालका, जुवार मक्की सो ततकालका ॥ १७ ॥
 कंसारकिटीयां जुवार धाणीका, बतीसा संधाणा साणीका ॥ चा
 वल ऊर ऊंजाका ज़ारी, राजगारा तिष्ठिका जहारी ॥ १८ ॥ सुठ
 गुंदका और पिस्ताई, वदाम चिरोजी सकर मिलाई ॥ इत्यादिक
 वावन्न प्रकारी, कव लग नाम कहुं में न्यारी ॥ १९ ॥ दूधपैमा कुं
 दाका ताजी, धी सुकोमल खांम ने खाजी ॥ चरपरा गांठया सकर
 पारा, डुधरा बड्या मांही डुहारा ॥ २० ॥ बरफी केसरिया पिस्ता
 ई, कीनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, ठोढे
 नहि कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ फलाकंदमें मेवा जाजा, होय
 खुस्ती देखी सब राजा ॥ असल चिरोजी सेव सिंगोडां, ठावा नर
 नर मेली गोढा ॥ २२ ॥ सूत्रफेणी और चिरोजी दाणा, सांपसाई
 की अधिक रसाना ॥ अकवरी और अदरकजाणा, जुक्तिदाणा मध्य
 दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसां खांमका फीका, सुरकी पतासा पेढा
 नीका ॥ दहिंधरां और सुठ ने खुर्मा, धी सकर मेवाका चुर्मा ॥
 ॥ २४ ॥ दरावो दोर्ग पूरी फचोरी, मालपुवा और सेवडी सोरी
 ॥ ॥ सिरो सावुणी मिठी सुवाली, तिलकी पापडी सकर घाली ॥

ढीली ॥३७॥ घृतगायको नवो तपाई, धिलोडी मुख आडि नमाई
 ॥ व्यो व्यो करतां मुंडो थाके, कुण जोरावर जो फिर हा के ॥३८॥
 सकर बूरो गोल ने मिशरी, काकव मेलन रंचन बिसरी ॥ सेव
 रवीच और खीर वणार्, खिचडो घुघरी राव सवाई ॥ ४० ॥ खी
 च्यो पापड मुंग उडदका, चणा वटला रुयर विधविधका ॥ सेक्या
 तलिया पतला मोटा, थाली पीठ बाजरी मोठा ॥ ४१ ॥ मर्कीमा
 लक गुनी जब जाणी, रालोवरटी कुलथ वखाणी ॥ जालरो तिवडो
 सामो जाणो, कोदरा वरटी रोट वखाणो ॥ ४२ ॥ कर चतुराई मखा
 मसाला, धान्य चोविसकी जिनसरसाला ॥ रसोइवार केई देश देशका,
 अनेक रसोइ वडोत जेदका ॥ ४३ ॥ मिरची पकोडी चरमरी नावे, तलण
 वडी वडा अरवि आवे ॥ दाल मुंग और मठ मसुरकी, उडद चणा
 वटला विध तुयरकी ॥ ४४ ॥ पतली काठी सीसवांतलीया, मसाला
 नानाविध नलिया ॥ कटी ठाठ अमचूरकी जाणो, आवलां नाजी
 की पण मानो ॥ ४५ ॥ वेलां मवका रेलमाचूरकी, अमटी अ
 मरत्यो नाजी झुरकी ॥ वडी जोलकी उर कोरडी, निपजायो
 अति चतुर गोरडी ॥ ४६ ॥ झख वडी नाजीको रायतो, अ
 मलपाणी वघार घायतो ॥ कंनी ठाठ वघारी नारी, लुण मिरच
 राई ठमकारी ॥ ४७ ॥ ददिकोसीखरण मेशी वाणा, सकर सामल
 अमल वाणा ॥ खारावडी ठाठवडी नलेरी, पेंमा वडी और चि
 णी घडुतेरी ॥ ४८ ॥ पापडवडी खीचावडी जाणो, पतलापतो
 डकी अधिक रसाणो ॥ पाठवडी पतोड कुडलार्, रसो ठावो दहि
 णमांही ॥ ४९ ॥ अमृत्यो रसको ठमकाखो, पुरवो अंवाको सु
 धाखो ॥ करपटा नीला चणा करेलां, टीमोरी और काचां केलां
 ॥ ५० ॥ निला वेर केर खडबूजा, फूट काकडी फोग तरबूजा ॥ क
 लिंगडा और गिलकी तरौई, वगा काचरी मुहिमातोई ॥ ५१ ॥
 निमा जिमा कोवकी कोडा, खेलराटिडसी करमदा उंडा ॥ कोलां

ला करडा थावे ॥ ६५ ॥ मेलें शुनसुगंधिक पाणी, हाथ धोया स
 व हट अधिकाणी ॥ हलवे हलवे पुठे पुपु, गोडे हाथ देईने कठे
 ॥ ६६ ॥ पेट नराणां तंग मतंगा, सद्गु अघाणा ठोड वमगा ॥
 सथला हलवे हलवे चाले, वतावला फिर कोइ नहाले ॥ ६७ ॥
 बोले धीरें धीरें चालो, नोजण जिम तिमवैठो थालो ॥ एसी रीतें
 चल कर आया, जाजम गादी तकिया विठायी ॥ ६८ ॥ तिन
 अद्वारको कियो बखाणो, मुखशोधन मुखवास सुहाणो ॥ जाय
 पत्री और लविंग सुपारी, दालचिणी एलायची प्यारी ॥ ६९ ॥
 काली मिरच सुंव सवादी, कवावचणी पीपर हरे व्याधि ॥ कपू
 र सुवासिक कडो चूनो, नागरवेलीको दल दूनो ॥ ७० ॥ विडो
 बाल कें देवे आई, लेवे सथला चित्त हरवाई ॥ लिंमीपिंपर सरसो
 अजमो, चूरणसवादी आहार हजमो ॥ ७१ ॥ पहेराई फूजनकी
 माला, देवे पचरंगी जरी झुसाला ॥ केशने दूपट्टावर जोडी, केशने
 चीरा पाग पिठोडी ॥ ७२ ॥ पंच पोशाक पेरावे चंगी, जामो थं
 गरखी वर पचरंगी ॥ दीवि ममिलवालावंदी, देखत तन मन हो
 य आणंदी ॥ ७३ ॥ केशके कवीहारज दीना, केशने कुंमल अधिक
 नवीना ॥ बाळुवध अगुठी चंगी, सिर सिरपेच दीवी मनरंगी
 ॥ ७४ ॥ हाथी घोडा रथ पालखी, केशने दीना गाम नालकी ॥ ज
 थालोग सधने सन्माने, द्वादशमे दिन मोहवताने ॥ ७५ ॥ सिद्धा
 रथ नृप सद्धने बोले, कुवरनाम थापणने खोले ॥ जिण दिन राणी
 क्रुखें आया, तिण दिनथी दल बल सवाया ॥ ७६ ॥ दिन दिन वृद्धि
 कारण मानो, वर्द्धमान कुंवर झम ठाणो ॥ सद्गु सुणी हरखाणा
 गोती, नाम यथागुण कुमल मोती ॥ ७७ ॥ घर घर मंगलमाल
 बधावे, गोरडिया मिलमंगल गावे ॥ तिढकिढ तिढकिढ त्रांसां वाजे,
 धि धि धि धि नौवत गाजे ॥ ७८ ॥ वों वों धप मप मादल रंगी,
 कुण कुण कुणकुण करे सारंगी ॥ फालर वाजे ऊण ऊण ऊण ऊण,

॥ ढाल पहेली ॥

॥ धर्म पावेतो कोइ पुण्यवत पावे ॥ ए देशी ॥ जय जय सास
 ए स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी ॥ नयसार प्रथम न
 वमांही, उपशम समकितधारी जी ॥ ज० ॥ १ ॥ तिहांथी सुरज
 वथिति क्य करिने, थया जरतजीका नवो जी ॥ मिरियच ना
 म कहाणो तिण नव, सजम मद स्वढवो जी ॥ ज० ॥ २ ॥ ता
 पस व्रत पाली नव चोथे, लीनो सुर अवतारो जी ॥ तिहांथी
 तापस निर्जरनव, वली तापस व्रतधारो जी ॥ ज० ॥ ३ ॥
 तिहांथी अवर तापस किरिया, वली गया देव विभाणो जी ॥ ति
 हांथी तापस सुरपद पाया, तापसनाकने ठाणो जी ॥ ज० ॥ ४ ॥
 ए सोला नव महोटा करिने, रुलीयो वदुससारो जी ॥ विश्वचू
 तिजवे करे नियाणो, तिहांथी सुर अवतारो जी ॥ ज० ॥ ५ ॥ उं
 णीशमे जवें हरिपद पाया, नाम त्रिष्टु कहाणो जी ॥ सातमी पृ
 थिवी निकली तिहाथी, सिद्धतणो नव जाणो जी ॥ ज० ॥ ६ ॥
 नरक गया तिहांथी कर्मावश, चक्रवर्त्तिपद पाया जी ॥ सजम
 पाव्यो कोढि वरस लग, अंते अणसण ठाया जी ॥ ज० ॥ ७ ॥
 तिहांथी सातमे सरग सिधाया, चोविशमा नवमांय जी ॥ तिहां
 थी पञ्चिंशमा नवमांइ, दुवा नव महाराय जी ॥ ज० ॥ ८ ॥
 संजम ले कर तप आवरियो, मास मास तप ठाया जी ॥ एक
 सव सहस्र ने लाख अग्यारा, दोसैं अधिक वरसाया जी ॥ ज०
 ॥ ९ ॥ बीश बोल सेवन कर वाध्यो, गोत्रतीर्थकर तामो जी ॥
 तिहांथी दशमे सर्ग सिधाया, विश सागरथिति ठामो जी ॥ ज०
 ॥ १० ॥ तिहाथी नवथिति क्य करी स्वामी, मास अपाढ मऊ
 रो जी ॥ बुकलपद् ठठ मध्यनिशामें, फाल्गुणी उत्तरा विचा
 रो जी ॥ च० ॥ ११ ॥ खत्रीकुम सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे
 राणी सुजाणो जी ॥ चउदे सपना वेइने उपना, पुण्य तणो प

एक कम साढातिनसें, पारणे तास्या दातार ॥ जि०॥ध०॥४॥ देश
 अनारज विचरिया, सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कूतां लगाया
 मरामणां, वध बंधण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥ श्रवणे
 खीला खोडीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ मक दीयो चंमकोशी
 ये, रह्या अचलगिरिधीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ अजव्यसंगमो देव
 ता, आणी डुष्ट परिणाम ॥ जि०॥ठमास जर्गे डु ख दीयो, राखी स
 मता स्वाम ॥ जि०॥ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यचना सद्गु, सह्या
 परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम जावछु, रंच न आण्यो
 गर्जे ॥ जि०॥ध०॥११॥ चउविदार नपस्या सद्गु, निझा मुहूरत एक
 डूज आसण टेक ॥
 एी, धन करणी क
 या, धन जाया एह
 नायो एहवो, दूजो न
 ॥ उपमा सूत्रमजार ॥
 ॥, दूजी ढालमजार ॥
 ॥ जि०॥ध०॥ १५ ॥

रमाण ॥- वीर जिनेश्व

एक कम साढातिनसें, पारणे ताखा दातार ॥ जि०॥ध०॥४॥ देश
 अनारज विचरिया, सहा परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कूतां लगाया
 मरामणां, वध बंधण कहा चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणे
 खीला खोडीया, पग पर रांधी खीर ॥ जि० ॥ मंक दीयो चमकोशी
 ये, रह्या अचलगिरिधीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ९ ॥ अजव्यसंगमो देव
 ता, आणी डुष्ट परिणाम ॥ जि०॥ठमास लगे डु ख दीयो, राखी स
 मता स्वाम ॥ जि०॥ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यचना सद्गु, सहा
 परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम जावद्यु, रच न आण्यो
 गर्व ॥ जि०॥ध०॥११॥ चठविहार तपस्या सद्गु, निडा मुहूरत एक
 ॥ जि० ॥ तिणमांही सपनां दश लह्यां, गोदूज आसण टेक ॥
 जि० ॥ ध० ॥ १२ ॥ धन धीरज प्रहृजी तणी, धन करणी क
 रतुत ॥ जि० ॥ धन कुल जिहां प्रहृ जनमिया, धन जाया एह
 वा पुत ॥ जि० ॥ ध० ॥ १३ ॥ मावडी जायो एहवो, दूजो न
 रि पार ॥ जि० ॥ हमाशूरा अरिहंतजी, उपमा सूत्रमजार ॥
 ॥ १४ ॥ ध०॥ १४ ॥ करम जरम चकचूरिया, दूजी ढालमजार ॥
 जि० ॥ तिलोकरिख कहै धन प्रहृ, प्रणमुं वार वार ॥ जि०॥ध०॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुक्लदशमी वैशाखनी, दिन कगत परमाण ॥ वीर जिनेश्व
 र पामिया, निर्मल केवल नाण ॥ १ ॥

॥ ढाल प्रीजी ॥

॥ कर्मसमो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ जाणी लोकालोककी रच
 ना, खटख्य गुणपरजायो ॥ चोतिस अतिशय पेंतिस वाणी, जग
 तारक जिनरायो रे ॥ जविका ॥ श्रीजिनपर उपगारी ॥ ताखां बहु नर
 नारी रे ॥ जि०॥१॥ चोसठ इ आया तिण अवसर, त्रिगढो रच्यो तिण
 वारें ॥ स्फाटिक सिंहासन उपर विराजे, अमृतवेण उच्चारें रे ॥ जि०॥२॥
 ॥ मध्य पापापुरिमें तिणवेला, यह रचाणो ठे जारी ॥ बहु पंमि

तनो थयो समागम, जावे सुर गगनविहारी रे ॥ न० ॥ ३ ॥ महि
 मा देखी मानविशेषे, पंचसया परिवारें ॥ इन्द्रनूति चल आया प्रभु
 पें, सशय गर्व निवारी रे ॥ न० ॥ ४ ॥ सजम ले गणधर पद ली
 नो, अग्निनूति चल आवे ॥ ते पण सशय दूर नयासुं, संजमसुं
 चित्त लावे ॥ न० ॥ ५ ॥ इम अग्यारा गणधर रचना, जुम्मालि
 शसैं सख्या जाणो ॥ एकण दिनमें लीनी ज्यां दीक्षा, गुण रत्नागर
 खाणो रे ॥ न० ॥ ६ ॥ तिनसैं चौदा पूरवधारक, तेरशें रिख उ
 दिनाणी ॥ पांचशें मन परजव मुनि जाणो, बोले यथातथ वाणी
 रे ॥ न० ॥ ७ ॥ सातशें वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसैं चर्चावा
 दी ॥ आठशें अनुत्तरविमानें विराज्या, सातसैं रिख शिव साधीरें
 ॥ न० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र रिख संपदा सारी, ज्येष्ठ गौतम गण
 धारी ॥ चंदनवाजादिक सहस्र ठत्तिती, थइ समणी सुविचारी
 रे ॥ न० ॥ ९ ॥ एक लाख गुणसठ सहस्रभावक, आणदादिक व्र
 तधारी ॥ अठारा सहस्र तिन लाख आविका, सुजसादिक अधिका
 री रे ॥ न० ॥ १० ॥ विचक्षागाम नगर पुर पाटण, ताकां बहु
 नर नारी ॥ प्रथम चोमासो अस्थियाममें, दूजो प्रष्टवपा मोजारी रे
 ॥ न० ॥ ११ ॥ त्रीजो चंपा चतुरसावडी, विशाला वाणिक
 ह्या धारा ॥ चउदा चोमासा राजगृहीमें, मथुरामें खट सारा रे ॥
 ॥ न० ॥ १२ ॥ नदलपुरीमें दोय दिपाया, आठतीस एम जा
 णो ॥ एक आलविका एक सावडी, एक अनारज थाणो रे ॥ न०
 ॥ १३ ॥ ताका बहु नवियण नर नारी, विचरता श्रीजिनराया ॥
 अजुकमें आया पावापुरीमें, दस्तिपाल जिहा राया रे ॥ न० ॥ १४ ॥
 कर जोडी प्रभु करे अरजी, रथशालाने मजारो ॥ अक्के चो
 मासो इहा करो प्रभुजी, विनति ए अवधारो रे ॥ न० ॥ १५ ॥ हे
 व्रफरसना जाणी दयानिधि, कीनो चरम चोमासो ॥ धरम दिवा
 कर धर्म दीपायो, पूरी नविजन आशो रे ॥ न० ॥ १६ ॥ तिलोक

रिख कहे त्रीजी ढालें, धन धन अतरजामी ॥ गुण रतनागर पर
म उजागर, वड नित शिर नामी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो मास वरसातनो, पक्ष सातमो ठाण ॥ तेरश आधी
रातसुं, अणसण धाखो जाण ॥ १ ॥ देश अठारना नूपति, ठठ
तप पोपध कीध ॥ सोजा प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर वीध ॥
॥ २ ॥ सूत्र विपाकज उंचखो, उत्तराध्ययन ठत्तिस ॥ नविजीवां
हितकारणें, पूरी एह जगीश ॥ ३ ॥ गौतम मोहिणी टालवा,
जोइ अवसर सार ॥ पर उपगारी परमगुरु, शिवमुखना दातार ॥
॥ ४ ॥ कार्तिक वदि अमावस्या, कहे गौतमसुंस्वामि ॥ देवशर्मा
विप्र बोधवा, जावो तिणने ठाम ॥ ५ ॥ तहत्ति करी तिहां संचखा,
पीठें दीन दयाल ॥ जाय बिराज्या मोक्षमें, नवफेरा दिया टाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ ह्मावत जोय नगवतनो रे ज्ञान ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनशिव
पुर सचखा जी, ययो जगमें अधकार ॥ गौतमस्वामी जाणीयो जी,
आरत आइ अपार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुज कवण आधार ॥ १ ॥
ए टेक ॥ धतकी पख्या धरणी तवा जी, छुडि न रही जगार ॥ धिक
धिक मोहनी कर्मने जी, देखो कर्मविकार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुंजक
वण आधार ॥ २ ॥ एक मुदूरतने आतरे जी, आइ चेतना ताम
॥ मोहवर्षे करे फूरणा जी, बोही गया केम स्वाम ॥ जि० ॥ ६० ॥ ३ ॥
अतेवासी दु आपको जी, रहेतो जिम तन ठाय ॥ ठेले समे कियो
आतरो जी, एतुम छुगतुं नाथ ॥ जि० ॥ ६० ॥ ४ ॥ दु पछोनहि जालतो
जी, जातार् मोक्ष मजार ॥ जाग्या पण नहि रोकतो जी, किम आ
यो तुम खार ॥ जि० ॥ ६० ॥ ५ ॥ बाल ज्यो आमो न मांमतो जी, जाग
न मागतो ज्ञान ॥ अणख न करतो आपद्य जी, लागो तुमद्य ध्यान
॥ जि० ॥ ६० ॥ ६ ॥ कारमो राग होतो नहि जी, तुमद्य मादरो नाथ

॥ तुम सम माहरे दूसरी जी, होती नही कोइ आय ॥ जि० ॥
ह०॥४॥ एकपखी जे प्रीतही जी, पार पडे नहिं तेह ॥ आज जाणी
में परतिखे जी, इणमें नहिं सदेह ॥ जि०॥ह०॥५॥ गोयम गोबम
नाम जे जी, कुण वोलावसी मोय ॥ कुणकने लेखुं आइा जी,
चिता मुऊने सोय ॥ जि०॥ह०॥६॥ जो मुऊ मन शंका होती जी,
पूढतो सद्गु तत्काल ॥ नर्म सद्गु तुमें टालता जी, प्रत्यक्ष वीनर
याल ॥ जि०॥ह०॥७॥ तुम दरिसण अविलोकरां जी, रोमरोम
वहलसत ॥ हवे दरिसण किहां आपनां जी, जयजंजण नमवत ॥
॥ जि०॥ह०॥८॥ तुम वाणी अमृत समी जी, साकर दूध सवा
य ॥ हवे कणनी सुणखुं गिरा जी, जगतारक जिनराय ॥ जि० ॥
ह०॥९॥ वली मनमांही चितवे जी, धिक धिक मोहनी कर्म ॥
धन धन श्रीजिनरायने जी, साध्यो आतमधर्म ॥ जि०॥ह०॥१०॥
तुपकर्मपरजावधी जी, रुलियो चउगतिमांय ॥ एकाकी तिहुं काल
में जी, ए जिनशासन राय ॥ जि०॥ह०॥११॥ वीतराग प्रभुनी दि
शा जी, शका नहिं जगार ॥ तुं किम नूख्यो नर्ममें जी, सम सम
उपशम धार ॥ जि०॥ह०॥१२॥ ध्यान एकल तिहां ध्याइयो जी, वी
नां कर्म खपाय ॥ केवलज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रहि नहिं कांय
॥ जि०॥ह०॥१३॥ केवलमहोत्सव सुरपति कीयो जी, निर्वाण पख
तिण ठाम ॥ चार तीर्थ मली थापीया जी, पाटें सुधर्मा स्वाम ॥
जि०॥ह०॥१४॥ शिष्य थया जंबु जिस्या जी, रातें परणीया नार ॥
कोडि नन्याणुं त्यागिने जी, दिन कगां अत धार ॥ जि०॥ह०॥१५॥
तिन पाट थया केवली जी, श्रीजिन आगम वयण ॥ जे धारे नवि
प्राणीया जी, उघड़े अंतर नयण ॥ जि०॥ह०॥१६॥ वीपायो जिन
धर्मने जी, पूरव वर्षे हजार ॥ हवे तो सूत्र व्यवहार ठे जी, हवणां
परम आधार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे प्रवचन आधार ॥ ए टेक ॥१७॥
ए परमाणें चालसी जी, टालसी आतमवोप ॥ तो नवि प्राणी

जीवढा जी, अनुक्रमें जासी मोह् ॥ जि० ॥ ६० ॥ ११ ॥ सवत उंगणी
 रें जाणीयें जी, सेंतिस वर्षे मजार ॥ दीपमाला दिने एकप्योजी,
 तिलोकरिख सुविचार ॥ जि० ॥ ६० ॥ १२ ॥ अहमद नगर देश दक्षि
 रें जी, सुखे रहिया चोमास ॥ नणरो गुणरो जावहुं जी, लेहेरो
 शिवसुख वास ॥ जि० ॥ ६० ॥ १३ ॥ कलश ॥ समकीत पाया, नव
 घटाया, सत्ताविश धुल, जाणिया ॥ तेह वरणव, नवि कहे ते, चा
 र ढाल, बखाणीया ॥ सासण नायक, सुखदायक, प्रणमु वार, वा
 र ए ॥ तिलोकरिख कहे, नाथ अरजी, करजो नव, निस्तार ए ॥
 हु दीजो जेजे, कार ए ॥ १ ॥ इति श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर चौढा
 णीयु संपूर्ण ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ अथ खंधकजीको चौढालीयो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं जगनायक सदा, नयनजण नगवत ॥ आचारिज ठ
 राजाय जी, गौतमादिक सब सत ॥ १ ॥ श्रीगुरुचरणोंबुज नमुं, सम
 ५ सरस्वति माय ॥ खंधक मुनिगुण गावहु, सुणजो चित्त लगाय ॥ २ ॥

॥ ढाल पेहली ॥

॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देखी ॥ सावधि नामें न
 गरी जलेरी, गढ मठ पोल प्रकारो ॥ हाट हवेली महेज मालीयां,
 शोना विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥ १ ॥ कन
 ककेतु तिहा नूपति जाणो, धर्मकेतु गुणवतो ॥ शूरवीर महीमन
 लमांही, प्रजा जनक जसवतो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ मलया राणी
 पतिसुखदाणी, वाणी मधुर गजगमणी ॥ चड्चदन मृगनयणी
 शाणी, शीलरूप गुणरमणी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तस नदन सुखक
 द सकलने, खंधक नामें कुमारो ॥ गुण तस वदक चद ज्यों शीत
 ल, शूरवीर शिरदारो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ वोहोतेर कलामाही अधिक
 विचक्षण, दिन दिन कीर्ति सवाई ॥ मात पिताकी नक्ति कारक,

नइक जाव सगइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मुनि विख
 सेण रिख, गुणरतनाकर जारी ॥ परम वैरागी आश्रवत्यागी, धर्म
 रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंधमरण जर्म विहमण, बहु
 शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, नवि प्राणी बहु
 तारे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमांही, उतसा बाव
 मजारो ॥ आवक सुणके अधिक आणवे, बंदण गया अणगारो रे
 ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ नूपति निजसपति सब लेइ, मुनिबंदण परवरिया
 ॥ अवसर देखी देशना देवे, ज्ञानगुणका सो दरिया रे ॥ प्रा० ॥
 ॥ ९ ॥ ए ससार सुपनवत माया, देखतमें विरलावे ॥ धन संपत
 सब कारमी जाणो, ज्यों वादजदल ठावे रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ नी
 ट नीट एह नरनव पायो, रोटीसाटे मति हारो ॥ धर्मरतन राखो
 अतिजतने, परनव खरचिया लारो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कर्म नि
 वारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो ॥ केवल पावो मुक्ति सि
 धावो, उत्तरो नवजल पारो रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ इत्यादिक उपदे
 शना दीनी, प्रथम ढालके मांही ॥ तिलोकरिख कहे नविजन प्रा
 णी, सुणके हरख्या घणाइ रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ खंधक कुमर तव वीनवे, जोढी दोनुइ हाथ ॥ सतवाणी प्र
 छ ताहरी, धर्म बोलावु साथ ॥ १ ॥ आथ नहिं इण सारखी, में
 जाणी निर्धार ॥ मात पिता आह्वा लेई, लेछुं दु सजमनार ॥ २ ॥
 मुनिवर कहे जिम सुख होवे, तेम करो तत्काल ॥ धर्म दील न
 कीजियें, नांखी ए दीन दयाल ॥ ३ ॥ मुनि वदी घर आविया, खं
 धक नाम कुमार ॥ किणविध मार्गे आगना, ते सुणजो अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदन जसवारी, दुवा ठे देवकी मायना ॥ अथवा ॥ मात्रका
 दूहामें देशी ठे ॥ कुमर कहे करजोडिने सो काइ, यह ससार असार ॥

धन सपत सब कारमी स कांइ, राका नही लगार हो ॥ माताजी मो
 रां, आझा देवो तो संजम आदरुं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वचन सुणी
 इम पुत्रका स कांइ, मूर्खणी तत्काल ॥ शुद्ध बुद्ध सघली वीस
 री स कांइ, मोहकी महोटी जाल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ शीतल नीर
 समीर प्रजावें, कांइक थई दुसियार ॥ करुणा स्वरें नयणां जल व
 रसे, ज्यु आवण जलधार हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुं मुज नंद ए
 काकी कुलमें, जीवन प्राण आधार ॥ उवरफूल सम दरिसण था
 रो, मत ले सजमचार हो ॥ सुण नद हमारा, जोवन ढलिया
 सु लीजें जोगने ॥ ए टेका ॥ ४ ॥ विनय करीने कुमर प्रयंपे, काल
 आल विकराल ॥ हरि हर इष्ट चष्ट नहिं ठोढे, भिनमें करे बेहाल
 हो ॥ मा० ॥ ५ ॥ जिणने हेत होय कालरिपुसैं, नाग जाणे
 की पहोंच ॥ अथवा जाणे दु कदी न मरखु, ठणके तो न
 हि सोच हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ राजलक्ष्मी सपत वडुली, हय गय
 वल वल पुर ॥ ए जोगव फिर सजम लीजे, मान केणी जरूर हो
 ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन दोलत उर माल खजीना, ज्यों विजली ज्व
 कार ॥ चोर अग्नि सजन नय धनमें, नरकगति दातार हो ॥ मा०
 ॥ ८ ॥ कोमल काया कचन वरणी, तरुणीसु सुख जोग ॥ वृ
 ष्पणो जब आवे तनमें, तब आवरजे जोग हो ॥ सु० ॥ ९ ॥
 काया माया वादल ढाया, मल मूतरनमार ॥ रोग शोगको नाज
 न इणमें, तप जप सजम सार हो ॥ मा० ॥ १० ॥ जोग ह
 लादल जहेरसु जादा, फल किंपाक समान ॥ अल्प सुखसु दुःख
 अनर्ता, सहेतबुरी जिम जाण हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ रतनपिंजरे
 शुक नहिं राजी, तिम दु इण ससार ॥ जनम मरण दुख मो
 हनी वषण, कहेता न आवे पार हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ मोह ताता
 वश माता बोले, तु वत्स अति सुकुमाल ॥ पंच महाव्रत मेरु समा
 ना, तोढणो मोहजजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा, सजम लेवो जी

नइक जाव सगाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर सु
 सेण रिख, गुणरत्तनाकर जारी ॥ परम वैरागी आश्रव
 रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंधमंमण जर्म
 शिष्यने परिवारे ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, न
 तारे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमे आया तिण पुरमां
 मजारो ॥ आचक सुणके अधिक आणदे, वंदण ग
 ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ नूपति निजसंपति सब जेइ, मुनि
 ॥ अवसर देखी वेशना देवे, ज्ञानगुणका सो दा
 ॥ ए ॥ ए ससार सपनवत साधार ॥ मोह
 आझा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १० ॥ इति
 ॥ दोहा ॥

॥ कियो मोहव दीक्षा तणो, सूत्रमांहे विस्तार ॥ प
 आदर्यां, धन खंधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी
 चसया परिवार ॥ राख्या रक्षाकारणें, सुजट बडा हुसियार ॥ २ ॥
 जिहां जिहा मुनिवर सचरे, तिहां तिहां रहे सो जार ॥ वृष
 कावे नोकरी, जाणो नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधक
 नि गुणवदक जगमें, पंचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पाच समिति ति
 न गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ ख० ॥ १ ॥
 काया प्रतिपाल व्यानिधि, पांडु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा जे
 सजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ ख० ॥ २ ॥ चाकर वा
 शत्रु सङ्गन, सम जाणो रिखराया रे लो ॥ द्धमासागर
 ज्ञागर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ ख० ॥ ३ ॥ सहे परि
 शूर परिणामें, चार कपाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप
 निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ ख० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्र

मुनि ध्यानमें शूरा, एकाकी पडिमा विहारी रे लो ॥ ग्राम नगर
पुर पाटण विचरे, तारे बड्डु नर नारा रे लो ॥ खं० ॥ ५ ॥ एक
दा मासखमण तप करतां, कुति नगरीमें आया रे लो ॥ सुजट
विचारे इहा मुनिवरनां, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ खं० ॥ ६ ॥
इहा मर कारण नहिं जरा जर, उतखा वाग मजारो रे लो ॥ जागा
सड्डु जोजन करवाने, ते मुनिवर तिणवारो रे लो ॥ खं० ॥ ७ ॥
प्रथम पहेरमें सूत्र चित्तारे, डुजीमें ध्यानज ठाया रे लो ॥ त्रीजी
पहेरसी पारणा कारण, मुनि गोचरीयें सिधाया रे लो ॥ खं०
॥ ८ ॥ कोमल काया पग अणुवाणो, परसेवे नीज्यो शरीरो रे लो
॥ खड खड वाजे हाड मुनिनां, चाल चले अति धीरो रे लो ॥
खं० ॥ ९ ॥ चल आवे नृप महेलनी पासें, राजाजी तिणवारो रे
लो ॥ राणीसघातें चोपड खेले, दर्षवदन डुसियारो रे लो ॥
खं० ॥ १० ॥ राणीकी दृष्टि पढी रिख ठपर, मनमें ताम विचा
री रे लो ॥ मुज बधव पण संजम लीधो, सहेतो दोसी डुख जा
री रे लो ॥ खं० ॥ ११ ॥ कणारत आणी अति राणी, आंसु त
तद्वण आयां रे लो ॥ नृप पूढे सा कांइ न बोली, नीचें देख्यो त
ख राया रे लो ॥ खं० ॥ १२ ॥ मुनिवर देखी वेरज जाम्यो, अधिको क्रो
ध जराणो रे लो ॥ ए मोहो इण पयें क्यो आयो, चाकरसु कहेवाणो
रे लो ॥ खं० ॥ १३ ॥ पकड ले जावो जंगलमाही, सब तन खाल
उतारो रे लो ॥ मोहो मत एह कोइ प्रकारें, मानो दुकम ए माह
रो रे लो ॥ खं० ॥ १४ ॥ आधी पाढी कांइ न सोची, पूरव वै
रप्रनावें रे लो ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालें, राय दुकम फ
रमावे रे लो ॥ खं० ॥ १५ ॥

॥ बोहा ॥

॥ सुजट आया तद्वण तदा, ते मुनिवरनी पास ॥ ग्रहवा ला
ग्या कर नणी, तव पूढे मुनि तास ॥ १ ॥ सो कहे आहा राय

डुकरकार ठे ॥ एटेक ॥ १३ ॥ पग अणवाणो चालणो स कांइ, लोण
 सोच अपार ॥ वाविश परिसह जीतणा स कांइ, चलणो स्वांमावार
 हो ॥ सु० ॥ १४ ॥ घर घर जिह्वा मागणी स कांइ, दोष बइयालीस
 टाल ॥ कोइक देशो उलट प्रणामें, कोइक देशो गाल हो ॥ सु० ॥
 ॥ १५ ॥ वाय जरेवो कोथलो स कांइ, डुकर ठे जगमाय ॥ सिल्ल
 अज्जूणी चाटणी स कांइ, वीह्वा अति डुखदाय हो ॥ सु० ॥ १६ ॥
 कुवर पयपे सत्य कही सब, कायर नरने जाण ॥ शूरवीरने सहे
 ज ठे सजम, शका रच न आण हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख,
 कहे दूजी ढालें, बीजी दृढता धार ॥ मात पिता थाकां समजातां,
 आझा वी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कियो मोहव वीह्वा तणो, सूत्रमांहे विस्तार ॥ पंच महाव्रत
 आदखां, धन खंधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी वशें, पं
 चसया परिवार ॥ राख्या रह्याकारणें, सुनट बडा दुसियार ॥ २ ॥
 जिह्वा जिह्वा मुनिवर सचरे, तिह्वा तिह्वा रहे सो जार ॥ वृष चू
 कावे नोकरी, जाणो नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आज आणद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधकमु
 नि गुणवदक जगमें, पंचमहाव्रत पाळे रे लो ॥ पाच समिति ति
 न गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ ख० ॥ १ ॥ ठे
 काया प्रतिपाल क्यानिधि, पांचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा जेवें
 सजम पाळे, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ ख० ॥ २ ॥ चाकर ठाकर
 शत्रु सज्जन, सम जाणो रिखराया रे लो ॥ क्रमासागर गुणर
 न्नागर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ ख० ॥ ३ ॥ सहे परिसह
 शूर परिणामें, चार कपाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप करत
 निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ ख० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रवज

नाइ, शोधे नगर मजार रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ तिणसमे दासी राव
 ली रे, उलखिया असवार ॥ पूबधु कारण तिणे दाखीयुं नाइ, रा
 णीयी कहा समाचार रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ राणी कथु निजकतसुं
 रे, सुण राजा मुरजाय ॥ वीतक वात कही तदा नाइ, राणी प
 ढी मूर्खाय रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ फिट फिट कंता सुं कियो रे, महोढो
 एह अकाज ॥ मुजवीरो हीरो गुण तणो नाइ, महामहोढो रिखराज
 रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ कृण एक तो धरणी ढले रे, कृण एक नाखे निसास ॥
 कृण एक वे उलजहा नाइ, रुदन करे अति त्रास रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ रोवे
 राणी रावली रे, कानें सुणी नहिं जाय ॥ रोतां सहु रोवाडीयां
 नाइ, हाहाकार पुरमाय रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ फूरे सुनदा वेनडी रे,
 फूरे पुरिससेण राय ॥ महोढु अकारज ए थयु नाइ, घात करी
 मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २० ॥ तिणसमे केवल धारणा रे, समोसद्धा
 मुनिराय ॥ राय गयो वदण नणी नाइ, पूढे शीश नमाय रे ॥
 ध० ॥ २१ ॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुज द्वेप ॥
 पूरव वैर काइ दुतो नाइ, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ मु
 निवर कहे सुण जूपति रे, पूरव नवह मजार ॥ काचरानो जीव
 तुं हतो नाइ, नृपनद खधकुमार रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ ठाल उतारी
 हरखसु रे, आणद अग न माय ॥ कीधी सरावणा तिण तिहां
 नाइ, वार वार मन वाय रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ कर्म निकाचित वां
 धियो रे, तेरे कोढ जव मांय ॥ काचरानो जीव तु थयो नाइ, ते
 तो थयो मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ वैर जाग्यो रिख देखीने रे,
 कर्म न ढोढे कोय ॥ जिन चक्री हरि हर नणी नाइ, हिरदे विमा
 सी जोय रे ॥ ध० ॥ २६ ॥ कर्म समो शत्रु नहि रे, कर्म करो
 मत लोय ॥ रखवाला पाचर्षे सुनट था नाइ, आढो न आयो
 कोय रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ राणी राय अने सुनटा रे, साजली ए अ
 धिकार ॥ सजम छेइ मुक्ते गया नाइ, वरत्यो जयजयकार रे ॥ ध०

नो, खाल उतारण काज ॥ ले जावा समसानमें, तब बोझा रि
 राज ॥ १ ॥ हाथ ग्रहो मत माहरा, दु आबु तुम लार ॥ मुनि
 पढुता समसानमें, मनमें साहस धार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ बलती द्वारिका देखिने रे ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनि समसान
 में रे, आलोचना छुट कीध ॥ नमोबुण सिद्धने वियो, कुजो अ
 रिहताने दीध रे ॥ धन धन मुनिराया ॥ १ ॥ पाप अगारा त्या
 गीया रे, जावजीव चोविहार ॥ काया माया ममता तजी कीयो,
 पादोपगमन सथार रे ॥ ध० ॥ १ ॥ उजा मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों
 पाव्या जोषे सुतार ॥ राय सुजट लीया पाठणां जाइ, तीखी ठे ति
 एरी धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ खाल उतारी देहनी रे, चरड चरड ति
 ए वार ॥ तरड तरड रुधिर बहे जाइ, क्या न आणी लगार रे ॥
 ध० ॥ ४ ॥ शिरसू लगाइ पग लगे रे, ढोली मुनिवर खाल ॥ ना
 के सल लाया नहिं जाइ, मेटी क्रोधकी जाल रे ॥ ध० ॥ ५ ॥
 उजली वेदना कपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुख जाणे
 आतमा जाइ, के जाणे किरतार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ मुनिवर मनमें
 चितवे रे, उवे थया तुज कर्म ॥ समपरिणाम राख्या थका जाइ,
 निपजसी आतमधर्म रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ अज्ञानपणे अति हरससुं
 रे, बांध्यां निकाचित पाप ॥ नूक्त्या विण बूटे नहिं जाइ, जोगवे
 आपो आप रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ तु पुजलसु निजता रे, अजर अमर
 अविकार ॥ नारा नहिं त्रिहु कालमें जाइ, मनमांही साहसपार
 रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ थिरपरिणामें मुनिवरु रे, ध्यायो छुकलज ध्यान ॥
 अतगढकेवल पायने, पाया पद निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धन
 जननीजिणें जनमिया रे, धन धन ते अणगार ॥ पाठें देही पढी
 नूपरें जाइ, पहेली लह्यो जवपार रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ ह्वे वीतक
 सुणो पाठलु रे, सुजट जे मुनिवर लार ॥ वेख्या नहिं रिख नयणसुं

कदा गर्न रह्यो तेहने, चितवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं वालक
माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम सतति रहे कुल
विपे, तिम करु कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातंगणी, गर्नवती
सा देखाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिणने एकातें छेई करी, दीयो घणो सन
मान रे ॥ सपति ठे मुऊ घर घणी, जीवे नहिं मुऊनां सतान रे ॥ स०
॥ ५ ॥ जो तुऊ होवे नंदन कदा, गुसपणो घर मोय रे ॥
मेजजे तु निशिने समे, ठीक पढे नहिं कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इव्य
वेष्टु तुऊ सामटुं, होसी सुखी तुऊ घूत रे ॥ प्रेम हुं राखछुं अतिघ
णो, रहेसी मुऊ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणो
मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे ॥ प्रहन्नपणो तिणो मोकव्यो,
ठिक नहिं पुर नर नार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ जनम मोहव सबही कियो,
दिवस थया जव वार रे ॥ दीयो दशोदण जातमें, वरतियां मगल
चार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम मेतारज आपीयुं, प्रतिपालण करे पंच
धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रनावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥ १० ॥
कुलमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी
परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ बहोतेर क
जामें पंक्ति थयो, आवियो यौवनमाय रे ॥ तिलोकरिख कहे प
हेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इद्रिय
सुख नोगवे, आणदमें दिन रात ॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विपे,
पूर्वे कीनो करार ॥ ते सुर आई थपविशे, छे तुं सजम नार ॥ २ ॥
तलालीन ते नोगवे, माने नहिं लगार ॥ किनी सगाइ बली तिणें,
ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण भरवरीयारी पाल, उनी दोय रावली ॥ माहाराजाल उ०

॥ २६ ॥ संवत उंगणीजें गुणचालिशमें रे, ज्येष्ठशुक्ल छुज जाव ॥
 लक्ष्मणघोडनदीविपे जाइ, गुणि गुण कीयां वखाण रे ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥ खयक जिम कृमा करो रे, तो उतरो नवपार ॥ तिले
 करिव कहे चोथी ढालमें जाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ २९ ॥ ३० ॥

॥ अथ मेतारज मुनिनु चोढालीयुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरु जावछुं, सतगुरु लायु पाय ॥ कथाअनुता,
 रें गावछुं, मेतारज मुनिराय ॥ १ ॥ पूरवजव दो मित्र था, ब्राह्मण
 केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, सजम लियो सयात ॥ २ ॥
 सजम पाले जावछुं, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चितवे,
 पूरवपाप अकूर ॥ ३ ॥ जैनधर्म श्रीकार ठे, शका नहिंअ लगार ॥
 स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद झां
 ठा जावथी, नीच कुलबंधन कीन ॥ आलोचना विण सोचबी, सु
 रगति वोनू लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमां
 य ॥ जो पहेलो नरजव लहे, घालीजें धर्ममांय ॥ ६ ॥ संजम छे
 वाणो तिण नणी, करि कोइ वाय उपाय ॥ इम सकेत कीधो
 सुरजव आपस मांय ॥ ७ ॥ कुलमद जिण कीनो दुतो, ते पहेलो
 चष्यो तेथ ॥ मार्तण्डकुलमें अवतखो, उदय कर्मके हेत ॥ ८ ॥ शेष
 पुण्यप्रतापथी, पायो सपति सार ॥ किणविध तिण सजम लियो,
 ते सुणजो अधिकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ सोवन सिद्धासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सहेर राजगृही दीप
 तु, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शैव युगधर दीपतो, लक्ष्मीवत कहा
 य रे ॥ स० ॥ १ ॥ श्रीमतीनार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे
 ॥ अवगुण कर्म प्रनावथी, मृतबजणी ते थाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ ए

कदा गर्न रह्यो तेहने, चितवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बालक
माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुज
विपे, तिम करु कोइ उपाय रे ॥ एटले आवी मार्तंगणी, गर्नवती
सा देखाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिणने एकांतें छेई करी, दीयो घणो सन
मान रे ॥ सपति ठे मुऊ घर घणी, जीवे नहिं मुऊनां सतान रे ॥ स०
॥ ५ ॥ जो तुऊ होवे नदन कदा, गुप्तपणो घर मोय रे ॥
मेलजे तु निशिने समे, ठीक पढे नहिं कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इव्य
वेष्ट तुऊ सामटुं, दोसी सुखी तुऊ पूत रे ॥ प्रेम दु राखणुं अतिघ
णो, रहेसी मुऊ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणो
मानीयो, जनमीयो नद जिणवार रे ॥ प्रहन्नपणो तिणो मोकल्यो;
ठिक नहिं पुर नर नार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ जनम मोहव सबही कियो,
दिवस थया जब वार रे ॥ दीयो दशोदण जातमें, वरतियां मगल
चार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम मेतारज आपीयुं, प्रतिपालण करे पंच
धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रजावधी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥ १० ॥
कुंजमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी
परें दिन विने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ बहोतेर क
लामें पंमित थयो, आवियो यौवनमांय रे ॥ तिलोकरिख कहे प
हेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाइ सात ॥ पंच इडिय
सुख जोगवे, आणदमें दिन रात ॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विपे,
पूर्व कीनो करार ॥ ते सुर आर्य उपविशो, छे तु सजम नार ॥ २ ॥
तलालीन ते जोगवे, माने नहिं लगार ॥ किनी सगाइ बली तिणें,
ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण सरवरीयारी पाल, वजी दोय रावली ॥ माहाराजाल उ०

॥ १६ ॥ सवत उंगणीजें गुणचालिशमें रे, ज्येष्ठगुण डन जाव
लशकरघोहनदीविपे जाइ, गुणि गुण कीयां वखाण रे ॥ १७ ॥
॥ १८ ॥ खधक जिम कृमा करो रे, तो छतरो नवपार ॥ तिलो
करिख कहे चोथी ढालमें जाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ १९ ॥ १८ ॥

॥ अथ मेतारज मुनिनु चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरुं जावद्यु, सतगुरु लायु पाय ॥ कथाअनुता,
रें गावद्यु, मेतारज मुनिराय ॥ १ ॥ पूरवन्नव दो मित्र था, ब्राह्मण
केरी जात ॥ देशना सुणि खिराजकी, संजम लियो सघात ॥ २ ॥
सजम पाले जावद्यु, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे,
पूरवपाप अकूर ॥ ३ ॥ जैनधर्म श्रीकार ठे, शका नहिंथ लगार ॥
स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमव डुं
ठा जावथी, नीच कुलबधन कीन ॥ आलोचना विण सोचबी, सु
रगति दोनुं लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमां
य ॥ जो पहेलो नरन्नव लहे, घालीजें धर्ममाय ॥ ६ ॥ संजम छे
वाणो तिण जणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम सकेत कीधो जने,
सुरन्नव आपसमांय ॥ ७ ॥ कुलमव जिण कीनो दुतो, ते पहेलो
चव्यो तेथ ॥ मार्तंगकुलमें अवतसो, उदय कर्मके हेत ॥ ८ ॥ शेष
पुण्यप्रतापथी, पायो सपति सार ॥ कियविध तिण सजम लियो,
ते सुणजो अधिकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सदेर राजगृही दीप
तु, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शिव युगंधर दीपतो, लक्ष्मीवत कहा
य रे ॥ स० ॥ १ ॥ श्रीमतीनार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे
॥ अवगुण कर्म प्रजावथी, मृतवजणी ते थाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ ए

लोक, धोको सबने पढ्यो ॥ मा० ॥ धो० ॥ साची दीसे ए वात, जो
 ग इसडो घड्यो ॥ मा० ॥ जो० ॥ लोक गयां सब ठाम, विंद रह्यो
 एकलो ॥ मा० ॥ विं० ॥ अधिक खीसियाणो होय, देखे सो चूंइ त
 लो ॥ मा० ॥ दे० ॥ ७ ॥ तिणसमे सो सुरवेण, कहे शरवण विपे
 ॥ मा० ॥ क० ॥ लेहवे सजम ताम, कहे सो जूमी दीसे ॥ मा० ॥ क०
 हवे पाठो होय सुजस, परणु कन्या वणिकनी ॥ मा० ॥ प० ॥
 नवमी परणु नूप, धूया श्रेणिकनी ॥ मा० ॥ धू० ॥ ए ॥ वारा
 वर्ष गृहवास, रुहुं तदनतरें ॥ मा० ॥ त० ॥ लेणु पढें सजम
 नार, वचन ए नहिं फिरे ॥ मा० ॥ व० ॥ एम सुणी सुरवे
 ण, सेण मन फेरियो ॥ मा० ॥ से० ॥ जूठी मातंगनी वात, धींद
 वली हेरीयो ॥ मा० ॥ विं० ॥ १० ॥ दुइ सजाइ सर्व, तिहां वली
 व्यावनी ॥ मा० ॥ ति० ॥ आया सोही वजार, वात थइ न्यावनी
 ॥ मा० ॥ वा० ॥ महेतर आयो सो चाल, जानमाही दोडिने ॥
 मा० ॥ क० ॥ मदिरा पीध, बोले कर जोडिने ॥ मा० ॥ वो०
 ॥ ११ ॥ ए नहिं माहरो नद, खोटो दु बोलियो ॥ मा० ॥ खो० ॥
 माफ करो अपराध, कह्यो वे तोलीयो ॥ मा० ॥ क० ॥ न
 मे टड्यो सडु लोक, कन्या परणी सही ॥ मा० ॥ क० ॥ तिलोक
 रिख कहे दूजी ढाल, झुथा राखी नही ॥ मा० ॥ दु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजसुता परणावणी, सुर सोचीने तास ॥ दीनी बकरी
 रूयही, ठगले रतन उजास ॥ १ ॥ रत्नराशि जगमग करे, देखे
 बहु नर नार ॥ पुरमें पसरि वारता, मेतारज पुण्य सार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रोजी ॥

॥ वेदजीछुं मन वस्यो ॥ ए देशी ॥ राय सुणी इम वारता,
 मनमें विस्मय थाय हो लाल ॥ बकरी लावो वेगणु, जेज करो म
 ति काय हो लाल ॥ रा० ॥ १ ॥ सुनट सुणी चल आविया, युगध

॥ एश्चांकणी ॥ आठमी कन्या तेह, परणवा उम्मह्या ॥ माहारा जल
 परणवा ॥ कीनी सजाइ जान, जानी जेला थया ॥ मा० ॥ जा० ॥
 रीयो जामो पहेर, मुकुट शिरपर धखो ॥ मा० ॥ मु० ॥ माथे ।
 मोह, विंदनो वेश कखो ॥ मा० ॥ विं० ॥ १ ॥ शिरपर शिरपेच जडाव,
 तुरो जगजगे सही ॥ मा० ॥ तु० ॥ कलगी तिण उपर जाण, अ
 धिक नलकी रही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जगमगे कुंमल कान, हार ऊ
 गज्ज करे ॥ मा० ॥ हा० ॥ बासुबंध जुजदम, पढोंची कडां कर सि
 रे ॥ मा० ॥ प० ॥ २ ॥ मुडी अगुलीके मांय, जलके हीरातणी
 ॥ मा० ॥ ज० ॥ कमर कदोरो जडाव, सुवर्णकी खिखणी ॥ मा० ॥
 सु० ॥ अन्तर अंग लगाय, तिलक जालें कखो ॥ मा० ॥ ति० ॥
 कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं मखो ॥ मा० ॥ सु० ॥ ३ ॥
 घेवो हय असवार, जामो वण्यो सो सही ॥ मा० ॥ जा० ॥ गावे म
 गल नार, अधिक उछावही ॥ मा० ॥ अ० ॥ धप मप मादल ना
 व, के साव सुहामणो ॥ मा० ॥ के० ॥ धडिंदा धडिंदा डोल,
 तिड किड त्रांता तणो ॥ मा० ॥ ति० ॥ ४ ॥ चाब्या अधिक उस्ता
 ह, व्याव करवा जणी ॥ मा० ॥ व्या० ॥ आया मध्य बजार, बली
 शोजा घणी ॥ मा० ॥ व० ॥ तिणसमे सो सुर कीध, वात कौतु
 क तणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ ॥ मार्तंग मन दियो फेर, हेर अवसर
 अणी ॥ मा० ॥ हे० ॥ ५ ॥ लीनो हाथमें लठ, धठ धीठो घणो ॥
 मा० ॥ ध० ॥ आयो जानकेमांय, धरी कुजठणो ॥ मा० ॥ ध०
 ॥ माने नहिं कठु शक, धक एकी जणो ॥ मा० ॥ बं० ॥ आ
 यो सो विंद हजूर, काम नहिं दूर तणो ॥ मा० ॥ का० ॥ ६ ॥ स
 घलाही रहीया देख, घोले सुणो नदना ॥ मा० ॥ घो० ॥ हुं बु सगो
 तुज वाप, जाणे मत फदना ॥ मा० ॥ जा० ॥ सात कन्या व्याहि
 वणिक, परणाउं एक माहरी ॥ मा० ॥ प० ॥ पकही अश्व ल
 गाम, कोई नहिं वाहरी ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ बदलायो वित्त

॥ दोहा ॥

॥ नव कन्या परणी जली, नवनिधि पति जिम तेह ॥ जोग
वे सुख ससारनां, दिन दिन वधते नेह ॥ १ ॥ धारा वर्षे इम वी
तिया, सो सुर आयो चाल ॥ कहे लेहवे तु वेगछु, सजम चित्त
उजमाल ॥ २ ॥ नहिं तो वेवं संकट घणो, इणमें फेर न फार ॥
सियालपरें श्रीवीरपें, लीधोसजमजार ॥ ३ ॥ मनमें ताम विचारीयो,
धिक धिक कामविकार ॥ पायो हीनता लोकमें, महेतर घरअवतार
॥ ४ ॥ हवे करणी ड कर करु, कर्म करु सब ढार ॥ मास मास
तप धारीयो, नीरंतर चोविहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जमिकदमें रे जीव जाइ ठपनो ॥ ए वेशी ॥ नित नित प्रण
हुं रे मेतारज मुनि, तारण तरण ऊहाज ॥ परम वैरागी रे रागी
धर्मना, साथे आत्मकाज ॥ नि० ॥ १ ॥ थिविरापासैं रे शीख्या थिर
मनैं, नव पूरवको रे ज्ञान ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो, ध्यावे
निर्मल ध्यान ॥ नि० ॥ २ ॥ कोइसमे आया रे राजगृही वली, पा
रणो आयो रे ताम ॥ प्रभुआहा लेइ गोचरी पांशुखा, जिह्वा निर
वद्य काम ॥ नि० ॥ ३ ॥ मारग जातार् रे सुवर्णकारकें, उलखिया
रिखराय ॥ एह जमाइ रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय ॥
नि० ॥ ४ ॥ आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिरा
य ॥ बहोरो स्रुजतो आहार ठे मादरे, बोले ते एम उमाय ॥ नि०
॥ ५ ॥ इम सुणि मुनिवर तिहा बहोरण गया, उजा रहिया रे वा
र ॥ सोनी घरमें रे आयो वेगसुं, बहोरावण नणी आहार ॥ नि०
॥ ६ ॥ सोवन जव था रे राय श्रेणिकना, कुर्कुट आयो रे चाल ॥ सो
जव चूगिने रे गयो ते शीघ्रछु, मुनिवर रहिया रे जाल ॥ नि० ॥
॥ ७ ॥ बाहिर आयो रे आहार वेहेरायने, जवनहिं वीठारे नयण
॥ कहो किय लीधा रे कृण आयो इहा, कहे रोपें नखो वयण ॥

रने गेह हो लाल ॥ मागे बकरी शेठथी, उगले रत्नज जेह हो
 लाल ॥ रा० ॥ १ ॥ शेठ बदे सुनटा जणी, में नहिं मालक ता
 स हो लाल ॥ मेतारजने पूठिने, लेई जावो थें उध्वास हो लाल ॥
 रा० ॥ २ ॥ कुमर कने जाची तिका, सो बोले तिण वार हो लाल ॥
 बकरी जीवन प्राण ठे, रत्नपुज दातार हो लाल ॥ रा० ॥ ३ ॥
 सुनट गया फिर रायपें, दाख्या सद्धु समाचार हो लाल ॥ सु
 णि क्रोधातुर बोलियो, जेज न करो लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ४ ॥
 हलकाया सुनटा जणी, धसमस करता जाय हो लाल ॥ गली
 जाया ठोडिने, पूठयो तिणसुं नाय हो लाल ॥ रा० ॥ ५ ॥ राय
 कचेरी लाविया, हणथंतरनी माय हो लाल ॥ बकरी ठेरी तिण
 समे, डुर्गंध रहि फेलाय हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ सना सद्धु व्याड
 ल थइ, उठि चाब्या सद्धु लोक हो लाल ॥ पूठे चूप कारण कि
 स्थु, वात थइ ते फोक हो लाल ॥ रा० ॥ ७ ॥ सुनट कहे पूवी
 नहिं, एही रत्न दातार हो लाल ॥ पूठे कारण कुमरबां, सुनट
 गया तिण वार हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ पूठयो कारण कुमरथी, कि
 ण कारण डुर्गंध हो लाल ॥ उगले नहिं किम रत्न ते, दाखो तेह
 प्रबध हो लाल ॥ रा० ॥ ९ ॥ सो कहे मुज राजी करे, रत्न उ
 गले श्रीकार हो लाल ॥ नहिं तो एठे रे बूरी, शका नहिं लगार
 हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ राय कहे जे गलिका, देवे रत्न श्री
 मोय हो लाल ॥ मुख मागी वस्तु तिका, देखु डु खुशी होय हो
 लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ सो कहे कन्या तुम तणी, द्यो मुजने पर
 णाय हो लाल ॥ रत्न उगलसी ए जला, दाम जरी तब राय हो
 लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ गुणर्मजरी कन्या जली, कीधो व्याव उ
 त्साह हो लाल ॥ तिलोरिख कहे श्रीजी ढालमें, कुमरनो पूखो
 वमाह हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

गाया उमाय ॥ तिलोकरिखदाखे रे चोयी ढाल ए, सुणतां पातक
जाय ॥ नि० ॥ ११ ॥ सवत उंगणीशें रे गुणचालीशमें, अषा
ढ वदि पढवा वखाण ॥ दक्षिणदेशें रे पूना शहेरमें, नानाकी पेव
में जाण ॥ नि० ॥ १२ ॥ जोढ जमावी रे विपरीत जो कथ्यो, मि
ष्टामिडुक्कड मोय ॥ जणशे गुणशे रे विधि छुदनावद्युं, तस घर म
गल होय ॥ नि० ॥ १४ ॥ इति मेतारजमुनिनु चोढालीयुं सपूर्ण ॥

॥ अथ आणंदजी श्रावकनुं चोढालीयुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमुं परमात्म प्रभु, शासनपति वर्धमान ॥ तास ज्येष्ठ आ
वक जला, आणद आणदधाम ॥ १ ॥ नाम राम छुन काम जिण,
कीनां व्रत अगीकार ॥ सतमे अर्गे वर्णव्या, ते सुणजो विस्तार ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ तिण कालें तिण अवसरें जी १ कांइ, वा
णिय गाम मजार ॥ राय जितशत्रु जाणीयें जी १ कांइ, प्रजा
नणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणो जी १ कांइ, सूत्र
तयो अनुसार, समकित व्रत होवे निर्मलोजी १ कांइ, होवे ज्युं नवनिस्तार ॥ सु० ॥ १ ॥ तिण पुर आणद नामथी जी १ कांइ, गाथापति धनवान ॥
वारे कोढी सुनैया जी १ कांइ, कछुं तस धन परिमाण ॥ सु० ॥ १ ॥ दशसह
स्र गायां तणो जी १ कांइ, एक गोकुल इम चार ॥ धेनुवर्ग वखाणीयें जी
१ कांइ, शिवानदा तस नार ॥ सु० ॥ ४ ॥ पंच विषय सुख जोगवे जी १ कां
इ, माने वदुजन वाय ॥ इम करतां वदुज दिन गया जी १ कांइ, कोइक अव
सरमाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुतिपलाश नामें जलो जी १ कांइ, चैत्य मनोहर जा
ण ॥ समोसखा जगगुरु तिहा जी १ कांइ, जगनायक जगजाण ॥ सु०
॥ ६ ॥ चूप सुणी वंदण गयो जी १ कांइ, आणद श्रावक ताम ॥
पाय विहारें संचखा जी १ कांइ, जेव्या त्रिखवन स्वाम ॥ सु० ॥

नि० ॥ ७ ॥ मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहुं, फुलज लागे रे
 य ॥ कुंकुट चूगिया रे इम वच्चारतां, हिंसा पातक होय ॥ नि० ॥
 ॥ ८ ॥ देख्यो अदेख्यो रे कांइ न वोलाणो, निश्चय कियो अणगार
 मौनज पकडी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणानंभार ॥ नि०
 ॥ ९ ॥ मौनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आइ रीस अपार ॥ इह
 ना जेदमें अइ चोरी सही, पूढे वारं वार ॥ नि० ॥ १० ॥ मारे धर्मे
 टा रे कहे वलि चोर तुं, किम नहि बोले रे साच ॥ मुनिवर दूमा
 रे धारी तन मनै, बोले नहि मुख वाच ॥ नि० ॥ ११ ॥ तिम तिम
 अधिको रे सो क्रोधे जखो, सोचे ए अति धिछ ॥ कूट्या विण रस ए
 देवे नहि, मूरख चोल मजीठ ॥ नि० ॥ १२ ॥ मुनि कर पकडी
 रे ले गयो वाढामें, शिरपर आलो रे चर्म ॥ खेंचीने बांध्यारे ता
 वडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥ नि० ॥ १३ ॥ लोचन ठट
 कीरे बाहिर नीकझ्यां, तड तड टूटी रे नाड ॥ मुनिवर धिर मन ह
 ट करी राखियुं, जेम सुदर्शन पदाड ॥ नि० ॥ १४ ॥ केवल पा
 ई रे मुगत सिधाविया, अजर अमर अविकार ॥ देव वजावे रे डं
 डनि गगनमें, बोले जयजयकार ॥ नि० ॥ १५ ॥ तिणसमे मोली
 रे एक कठियारहे, नाखी धमकसू ताम ॥ बिटज कीनी रे कुंकुटन
 यवर्षो, जव पहिया तिण ताम ॥ नि० ॥ १६ ॥ सोनी देखी रे थर थर धूँ
 जीयो, कीधो महोटी अकाज ॥ में भूढनावें रे निरअपराधिया,
 घात करी रिखराज ॥ नि० ॥ १७ ॥ राजा अणिक जेव ए जाणो,
 करजो कुटुब सदार ॥ एम जाणीने रे सहु श्रीवीरपें, लीधो संज
 म नार ॥ नि० ॥ १८ ॥ तप जप करणी रे कीधी सहु जणा,
 पाया सुर अवतार ॥ अनुक्रमें जासी रे कर्म खपाइने, सहु ते मो
 क्क मजार ॥ नि० ॥ १९ ॥ नव कोटी धन नव कन्या तजी, न
 वविध ब्रह्मचर्यधार ॥ नव पूरवधर नव सवर करी, पाया जवज
 लपार ॥ नि० ॥ २० ॥ एदवा मुनिवर दूमासागरु, तस गुण

वाहण आठ ॥ उपनोग परिनोग व्रतकी विधि, कहु जिम सूत
 र पाठ हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ स्नान कीया पीठें अंग जूवणनो, रातो वस्त
 र जाण ॥ दातण कारण आलुं जेठीमध, अवरवीर आमलफल
 ठाण हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ शतपाक हजार औपधको, तेलमर्दन
 ने काज ॥ सुगंध सहित गोधूमकी पीठी, ए उवटणं साज हो ॥
 ज० ॥ ९ ॥ आठ लोटी प्रमाण घडो एक, स्नान करणने नीर ॥
 द्यौमयुगल कपासको निपनो, राख्यो उढण चीर हो ॥ ॥ ज० ॥
 ॥ १० ॥ अगर कुकुम वावनाचदन, विलेपन मरजाद ॥ धोलो
 कमल माजती कुसुम, सुंधणो नहि तस वाद हो ॥ ज० ॥
 ॥ ११ ॥ कुमल अने नामाकृत मुझ, राख्यो आनरण दोय ॥ अगर
 जेलारस धूपादिक सो, राखे इष्टा जोय हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ घृ
 त तैल तब्या तंदूल पडुवा, डुधकी रावढी जाण ॥ पेज विधि परि
 माण कह्यो ए, उपरतका पञ्चस्त्राण हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ घृत पू
 रित घेवर मन गमतां, खाम खाजां आगार ॥ कमल साल तंडुल
 उपरत सब, उदनको परिहार हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ मूग उढव मसूर
 र ए तीनु, उपरंत त्यागी दाल ॥ नितको निपज्यो घृतशरद क्रतु ते,
 प्रातसम्याको काल हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ तिण बेजाको घृत जिण
 राख्यो, उपरंत को कियो त्याग ॥ अगथीयो स्वस्तिक रायमोमी,
 उर नहिं खाणो साग हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ आमलरस युत पाल
 क सालणो, अवर तणो सब त्याग ॥ मूग दालका वडां कचोरी, उ
 परंत नहिं अनुराग हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ टाकाको नीर सो पीणो राख्यो, जे
 व्यो जेह आकाश ॥ कंकोल जायफल लविंग एलायची, कपूर ए पंच
 मुखवास हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ चार अनरथा दमका सोगन, इम अछ
 म व्रत धार ॥ शक्ति मुजव शिक्षा व्रत चारु, हरि हर देव परिहार
 हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ ज्ञानका चौदे पंच समकितका, पंच्योत्तर व्रत धार
 ॥ पांच सलेपणा ए सवि टालुं, नन्याण अतिचार हो ॥ ज० ॥ २० ॥

॥ ४ ॥ प्रभुजी दी उपदेशना जीश कांइ, यो संसार असार ॥ तद्व
न जोवन कारिमो जीश कांइ, कारिमो सद्गु परिवार ॥ सु० ॥ ४ ॥
ए जीव आयो एकलो जीश कांइ, परचव एकलो जाय ॥
सग्रह करो जीश कांइ, जो शिवसुखतणी चहाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ इत्यादि
क उपदेशना जीश कांइ, प्रथम ढाल मजार ॥ तिलोकरिख कहे आ
गलें जीश कांइ, सुणजो श्रेय अधिकार ॥ सु० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे आणद सुणि वेशना, बोले वयण विचार ॥ सत्य कहेणी प्र
भु ताहरी, यह ससार असार ॥ १ ॥ धन्य जे राजराजेश्वरु, जेवे संजम
नार ॥ मुळ शक्ति ए ठे नही, आदरहुं व्रत बार ॥ २ ॥ प्रभु कहे
जिम सुख तिम करो, जेज न करो लगार ॥ हवे व्रतकरणी सांन
जो, सूत्र तणे अणुसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ या रस शेलडी, आविजिणद कियो पारणो ॥ ए वेशी ॥ प्रथम
व्रतमें धारीयो जी कांइ, तस प्राणी जगमांय ॥ जाणी प्रीढी निर
अपराधी, सो सब हणवा नांय हो ॥ जगतारक पासें, श्रावक आ
णंदजी व्रत आदरे ॥ १ ॥ दूजो व्रत थूल सुधावादको, नूकन्या प
छ काज ॥ फूव न बोलुं उलुं न थापण, नहि लुं नोले व्याज हो ॥
ज० ॥ २ ॥ त्रीजो थूल अदत्त निवारुं, खात्र खणी गांठ ठोढा ॥ पडई
ची देइ न करु चोरी, त्यागुं विरुद्ध जे खोढ हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ चोपो
थूल मेढुण व्रतमें, सेवानवा निज नार ॥ वर्जोने त्यागी सकल
कांइ, ममता दीनी मार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ व्रत पंचमो इडा परि
माणे, चार कोढ चूर्मांय ॥ चार कोढि घरवखरी राखी, एतोही
व्याज कहाय हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ गोकुल चार घेनुका राख्या, से
वू वडू जाण ॥ पाचसैं हलकी सरुया धरणी, गाढा गाढी सहस्र
प्रमाण हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चार मोटी चार ठोटी जहाजां, राख्यां

ध चितवी, कांइ ज्येष्ठपुत्र घरनार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कां
इ कोलागनाम सनिवेशें, कांइ वाणिय पुरने वार ॥ आ० ॥ ३ ॥
कोलाग सन्निवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे
पोपधशाला मजार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखी परतेव
ए नूमिका, वली कीनो दर्जसथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली नां
ख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणदखु, काइ प्रथम पडिमा म
जार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वदे नहिं कोइ अन्य नणी,
कांइ ठै ठमी परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अ
धिकाइ वारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें छुइ सामा
धिक हो चित्त लाई पाले छुइपणे, कांइ वत्तिस दोष निवार ॥
आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामांइ हो चवदश ने आवम पूर्णिमा,
काइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते
छुइ निभ्रलपणे, कांइ वर्जित दोष अढार ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचमी
पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोना वली, कांइ दिवसें अब्रह्म
निवार ॥ जे जाणे जोजन आवे हो नहिं खावे आप मगायने,
करे कावस्सग पोपा मजार ॥ आ० ॥ ८ ॥ ठछी पडिमा लेवे हो
नहिं सेवे ते कुशीलने, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी प्रति
मा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो, काइ नहिं करे सचित्त
आहार ॥ आ० ॥ ९ ॥ आठमीमें आरंज बने हो ते मने प्रीति ब
कायसु, काइ तेविशके जागे विचार ॥ नवमीमें इम जांखे हो नहिं
राखे दासी दासने, काइ पोतें काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ द
शमी ड करकारी हो निज अरथें जोजन जे कखो, कांइ ते वरजे
निरधार ॥ शिरपर मुरु करावे हो परंपे जापा दोनजी, कांइ सत्य
अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ अग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं
सेवे आश्रवधारने, काइ वरते जिम अणगार ॥ मस्तक लोच क
रावे हो फरमावे दु साधू नहिं, कांइ जेख मुनिनोधार ॥ आ० ॥

पार्श्वसतानीया गोशालकर्म, जिम ते मिलीया जाय॥ तिम अन्य तीर्था
 ग्रहिया साधु, तिणने दुवडु नाय हो॥ ज० ॥ ११ ॥ बतलायं नहिं पहेलं
 उपति, धर्मबुद्धि सुविचार ॥ चार आहार नहिं देउ तिणने, ठ ठमी
 आगार हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ समण निर्ग्रथने देउ सुऊतो, चउवे प्र
 कारनु दान ॥ इम व्रतधारी प्रभुने वदी, आव्या ते निज थान हो ॥
 ज० ॥ १३ ॥ निजपत्नीसुं कहे प्रभु पासैं, में धार्यां व्रत बार ॥
 तुमें पण जाइ करो प्रभु वदण, सफल करो अवतार हो ॥ ज०
 ॥ १४ ॥ कंत वचन सुणी रथमें वेठी, वाद्या श्री जगदीश ॥ तिण
 पण श्रावक व्रतज धार्यु, पूरी मनह जगीश हो ॥ ज० ॥ १५ ॥
 ठै ठै पोसा करे मासमें, नव तत्त्वका जाण ॥ तिलोकरिख कहे
 ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वारे व्रत पाले जला, चउदा नियम विचार ॥ तीन मनोरथ
 चितवे, धारे शरणा चार ॥ १ ॥ निश्चल समकित दृढधर्मी, एक
 विश गुणका धार ॥ चउदे वर्ष एम वीतियां, करता धर्म उदार
 ॥ २ ॥ पंदरसु वर्ष वर्तता, एक दिन आधी रात ॥ जागरण क
 रे धर्मकी, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज नजो दिन उग्योजी, सीमधर स्वामीने वदसां ॥ ए रे
 शी ॥ आणदजी विचारी हो सुखकारी किरिया धर्मनी, कांइ नवजल
 तारण द्वार ॥ वाणिय ग्रामपुरमाइ हो प्रभुताइ ठावी मादरी,
 कांइ बहु नरने आधार ॥ मुऊ परममत सवाइ हो समरथाइ नाइ
 मादरी, काइ ड कर सजम जार ॥ आ० ॥ १ ॥ जब यावे दिन
 उगाइ हो निपजाइ चारी आहारने, कांइ बुजाइ निज परिवार ॥ सब
 ए सजन जीमाइ हो समलाइ कामज घर तणा, कांइ धारणी च
 हिमा ग्यार ॥ आ० ॥ २ ॥ यइ दिनकर उगाई हो कराई सहु वि

ध चितवी, काइ ज्येष्ठपुत्र घरजार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कां
इ कोलागनाम सनिवेगें, कांइ वाणिय पुरने वार ॥ आ० ॥ ३ ॥
कोलाग सन्निवेशने मांइ हो जिहां मित्र घणा कुलघर घणां, रहे
पोपधशाला मजार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी हो, कांइ देखी परतेव
ए जूमिका, वली कीनो दर्जसथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली नां
ख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणदद्युं, कांइ प्रथम पडिमा म
जार ॥ समकित निर्मल पाले हो कांइ वदे नहिं कोइ अन्य नणी,
कांइ ठै ठंमी परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामांइ हो अ
धिकाइ धारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीमें छुट सामा
यिक हो चित्त लाई पाले छुटपणे, कांइ वत्तिस दोष निवार ॥
आ० ॥ ६ ॥ चौथी पडिमामांइ हो चवदश ने आठम पूर्णिमा,
कांइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते
छुट निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोष अटार ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंचमी
पडिमा पाले हो ते टालें स्नान शोना वली, कांइ दिवसें अब्रह्म
निवार ॥ जे जाणो जोजन आवे हो नहिं खावे आप मगायने,
करे काउस्तग पोपा मजार ॥ आ० ॥ ८ ॥ ठी पडिमा लेवे हो
नहिं सेवे ते कुशीलने, कांइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी प्रति
मा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो, काइ नहिं करे सचित्त
आहार ॥ आ० ॥ ९ ॥ आठमीमें आरंज बने हो ते मने प्रीति ठ
कायसु, काइ तेविशके जागे विचार ॥ नवमीमें इम जांखे हो नहि
राखे दासी दासने, काइ पोतें काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ द
शमी ड करकारी हो निज अरथें जोजन जे कखो, काइ ते वरजे
निरधार ॥ शिरपर मुंम करावे हो परंपे जापा वोचजी, काइ सत्य
अने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ अग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं
सेवे आश्रवधारने, कांइ वरते जिम अणगार ॥ मस्तक लोच क
रावे हो फरमावे दु साधू नहिं, काइ जेख मुनिनोधार ॥ आ० ॥

१२ ॥ पहेले मास एकांतर हो कांइ डुजी पढिमा वो मासवी,
 कांइ ठठ ठठ तपस्या धार ॥ त्रीजी तिन मासमें तेलां हो चोषी ते
 चारज मासनी, कांइ चोले चोले आहार ॥ आ० ॥ १३ ॥ एक एक
 मास वधावे हो वढावे तप इम एमही, कांइ इम पढिमा अम्या
 र ॥ करता सुके छुके हो छुको अंग पडियो तदा, कांइ तन पयो
 पिजराकार ॥ आ० ॥ १४ ॥ आवक सो विचारे हो नहिं सारे मा
 दरी देहढी, कांइ शक्ति नहिं लगा ॥ आलोवि निदी आतम हो
 नि शब्द थया शूरापणे, कांइ प्रणमी जगकिरतार ॥ आ० ॥ १५ ॥
 पाप अगारा त्यागे हो कांइ वली जागे मोहनी निवसें, कांइ पा
 गे सवरदार ॥ धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो कांइ त्यागे चारी आहा
 रनें, कांइ जावजीव सुविचार ॥ आ० ॥ १६ ॥ इम निमल मन
 थापी हो तिण कापी ममता जालने, कांइ धाखो अणसण ता
 र ॥ तिलोकरिख कहे साची हो नहिं काची जाची जावमें, कांइ
 सफल कियो अवतार ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिष अवसर आणवजी, विद्युद लेख्या गुनध्यान ॥ झा
 नावरणी कृत्योपशमे, उपन्यु अवधिज्ञान ॥ १ ॥ पूरव लवण सधु
 इमें, पंचसे योजन जाण ॥ एतोही दक्षिण पश्चिमें, उत्तर हिमवत
 प्रमाण ॥ २ ॥ जाणो देखे कपरें, परथम सर्ग विचार ॥ नीचें आ
 णे रत्नप्रजा, स्थित घोरासी हजार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोषी ॥

॥ कीधा रे कर्म न बूटीयें ॥ ए देशी ॥ न्यायमार्ग जिनराज
 नो, जवड ख जजणदार लाल रे ॥ रिपुगजण दग अजणो, शिव
 पदनो दातार लाल रे ॥ न्या० ॥ १ ॥ तिणकारें तिण अवसरें, स
 मोसखा जगदीश लाल रे ॥ गौतम ठछतप पारणो, प्रभुने नमा
 यो शीश लाल रे ॥ न्या० ॥ २ ॥ कहे मुऊ ठछतप पारणो, जो

तुम आझा आय लाल रे ॥ वाणियगाम नगर विपे, गोचरी जा
 क चलाय लाल रे ॥ न्या० ॥ ३ ॥ अहासुह प्रभुजी कह्यो, गौत
 मजी तिण वार लाल रे ॥ आझा लेइने सचखा, जोवतां ईर्याविहार
 लाल रे ॥ न्या० ॥ ४ ॥ गोचरी करतां सांजब्यो, आणद अणसण
 लीध लाल रे ॥ चितवे दुं देखुं जई, इम निश्चें मन कीध लाल रे
 ॥ न्या० ॥ ५ ॥ पोपधशाला तिहा आविया, देखी आणद सोय
 लाल रे ॥ रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय लाल रे ॥
 न्या० ॥ ६ ॥ शक्ति नहि प्रभु माहरी, आवणरी तुम पास लाल
 रे ॥ उरहा पधारो नाथजी, मानो मुऊ अरदास लाल रे ॥ न्या०
 ॥ ७ ॥ चरणपें शीश नमाइने, प्रणम्या तीनज वार लाल रे ॥ पू
 ठे उपजे के नहिं, अवधि गृहवास मजार लाल रे ॥ न्या० ॥ ८ ॥
 गौतम सुणि हामी जणी, तव सो कहे सुविचार लाल रे ॥ मुऊ प
 ण अवधि उपनो, कह्यो ठएविशि विस्तार लाल रे ॥ न्या० ॥ ९ ॥
 इम निसुणी गोयम वदे, उहि उपजे गृहवास लाल रे ॥ पण एतो
 दीर्घ न उपजे, ए निश्चें वात विमास लाल रे ॥ न्या० ॥ १० ॥
 ए स्थानक तुमें आलवो, ब्यो तप प्रायश्चित्त अगीकार लाल रे ॥
 तव आणद बलता कहे, प्रभु सांजलो मुऊ समाचार लाल रे ॥
 न्या० ॥ ११ ॥ सत्य ठतां यथानाव ते, कहेतां नहिं दोष लगार
 लाल रे ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, सुणि शका पढी तिण वार ला
 ल रे ॥ न्या० ॥ १२ ॥ आर्य पूढे प्रभुष्टं तदा, आणद कह्यो जे
 विचार लाल रे ॥ नाथ कहे ते साची कहे, थें लो प्रायश्चित्त तप
 सार लाल रे ॥ न्या० ॥ १३ ॥ जाय खमावो तिण प्रत्यें, इम सां
 नली गौतम वाय लाल रे ॥ प्रायश्चित्त लीनो प्रभु कने, खमावाने
 गया उमाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १४ ॥ वीश वर्ष श्रावकपणो, धारी
 पढिमा अग्यार लाल रे ॥ एक मास अणसण कह्यो, सौधर्मक
 वप मजार लाल रे ॥ न्या० ॥ १५ ॥ सौधर्मावतंसक विमानथी,

કૂળ ફાળાને માંય લાલ રે ॥ અરુણવિમાનમેં કપના, ચાર પાંખો
 પમ આય લાલ રે ॥ ન્યા૦ ॥ ૧૬ ॥ સુખ જોગવી ત્યાંપણી
 ચવી, મહાવિદેહદેત્ર મજાર લાલ રે ॥ સંજમ હે કરણી કરી, ~~ક~~
 મેં કરી સદ્ગુ ઠાર લાલ રે ॥ ન્યા૦ ॥ ૧૭ ॥ કેવલજ્ઞાન હેઈ કરી,
 જાવસી મુગતિની માંય લાલ રે ॥ અજર અમર સુખ શાશ્વતાં, હે
 સી સુખ સવાય લાલ રે ॥ ન્યા૦ ॥ ૧૮ ॥ સર્વત ઝાળીશેં ગુણ
 ચાલીસે, પૌષ રુણ બુધવાર લાલ રે ॥ ત્રીજ તિથિ દિન રૂપડો,
 દક્ષિણવેશ વિચાર લાલ રે ॥ ન્યા૦ ॥ ૧૯ ॥ સહેર સતારો પ્રસિદ્ધ
 હે, પેઠ નવાની વચાણ લાલ રે ॥ જોશ્યો ચોઢાલિયો ચૂંપદ્મ, સાત
 મા અગ પ્રમાણ લાલ રે ॥ ન્યા૦ ॥ ૨૦ ॥ અધિકો ડંઠો જોશ્યો
 ડુવે, તે મિજામિ ડુકડ મોય લાલ રે ॥ તિલોકરિલ્લ કહે મુણિ પા
 રસી, તસ શિવ સપત દોય લાલ રે ॥ ન્યા૦ ॥ ૨૧ ॥ સ્તિ ॥

॥ અથ કામદેવ શ્રાવકનુ ચોઢાલીયુ પ્રારંભ ॥

॥ દોહા ॥

॥ અરિહત સિદ્ધ આચારજી, ઠવજાયા મુનિરાજ ॥ પ્રણમું ત
 તગુરુ દેવજી, પૂરો વઠિતકાજ ॥ ૧ ॥ સાતમે અર્ગે જાણ્યે,
 જા અધ્યયન મજાર ॥ કામદેવ શ્રાવક તણો, વારણ્યો હે અધિકાર
 ર ॥ ૨ ॥ તસ અનુસારેં વર્ણવું, કિંચિત તાસ સમાસ ॥ છુણો શ્રો
 તા છું-જાવણ, સમકિત રત્ન ઝનાસ ॥ ૩ ॥

॥ ઢાલ પહેલી ॥

॥ ઘોઢા વેશ કમોદના ॥ એ વેશી ॥ તિણ કાલેં તિણ અવસરેં,
 ચપાનગરી મજારો જી ॥ જિતશત્રુ તિહાં રાજવી, પ્રજા નણી મુ
 સ્વકારો જી ॥ ૧ ॥ ધન્ય શ્રાવક જે જીનમતિ, કામદેવ ગાથાપ
 તિ જાણો જી ॥ ઠકોઢી ડબ્બ ધરણી વિપે, ઠકોઢી વ્યાજ વચાણો
 જી ॥ ૧ ॥ ઠકોઢી ઘર વચરી અઢે, ઠ ગોકુલ વર્ગે હે તાસો જી ॥

जड़ा घरणी जाणीयें, जोगवे जोग उद्धासो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ अ
वररिद्धि आणव परें, दाखी ठे सूत्रके मांइ जी ॥ तिणकाले तिण
अवसरें, जगगुरु जगसुखदाय जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर पुर
विचरता, चपानगरी मजारो जी ॥ वीरजिणव समोसखा, करवा
परचपगारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ राजादिक गया वांदवा, कामदेव पा
यविहारो जी ॥ वदी वेठा प्रभु आगलें, मनमें हर्ष अपारो जी
॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ॥
जो आराधे जावहुं, उत्तरे नवजलपारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ कामदे
व सुणि ह्मस्वीया, कहे सत्यवेण ठे थारो जी ॥ संयमनी शक्ति न
हिं, धरावो व्रत वारो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ आणवनी पेरें जाणीयें,
धन उपरत पञ्चक्राणो जी ॥ त्याग कखा छुद् जावहु, वारा व्रत
परिमाणो जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ सेवानंदा तिम जडार्यें, धाखां व्रत रसालो जी
॥ तिलोकरिख कहे सुणो आगलें, ए थइ परथम ढालो जी ॥ ध० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कामदेव श्रावक जला, टाले व्रत अतिचार ॥ चउव वर्ष ६
म वीतियां, पन्नरमा वर्ष मजार ॥ १ ॥ जागरणा आणव जिम,
अप्येष्ठ पुत्र घरचार ॥ देईने धारी तदा, पढिमा छुद् इग्यार ॥ २ ॥
एक दिन पोपधशालमें, पोपध लीनो जाव ॥ धर्मध्यान ध्याई र
हा, तिण अवसर प्रस्ताव ॥ ३ ॥ शक्रेइ सौधर्मपति, वेठा सजा
मजार ॥ अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥ ४ ॥ मुख
जयणा करी बोलीयो, जरतक्षेत्रनी मांय ॥ धर्मिपुरुष निश्चलमति,
कामदेव अधिकाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धिक तेरा जीवडा न करता धरमकु ॥ ए देशी ॥ निश्चल
श्रद्धा समकित व्रतमांइ, इण अवसर कामदेव अधिकाइ ॥
॥ नि० ॥ १ ॥ देव दानव असुर सुर जाइ, तिणने कोइ न स

के चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन ति
 ण नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सु
 तिणवारें, सुण कर सो मनमांहे विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नको
 कीढो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक ढिनमें देवं चलाइ ॥ नि० ॥
 ५ ॥ एसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चला
 इ ॥ नि० ॥ ६ ॥ महत् पिशाचको रूप बणायो, महा विदूष नयंक
 रकायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शिश बनायो, झूकर सरि
 खा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो,
 तालीकी पूंढ जुं प्रमु विकरालो ॥ नि० ॥ ९ ॥ बाहिर बटक्या नेत्र
 का मोला, सूपडा सरिखा कान कुमोला ॥ नि० ॥ १० ॥ गामर छि
 म चपटी तत्त नासा, फालीया सरखा दत्तस त्रासा ॥ नि० ॥
 ११ ॥ लटके छट सा होत कुरगी, जिह्वा कतरणी जेम विचयी
 ॥ नि० ॥ १२ ॥ स्वध कथा मृदंग आकारो, पुरपोल किमाइ ज्यो
 हियो नयंकारो ॥ नि० ॥ १३ ॥ झुजा बीनत्त शिला सी हथेली,
 खल वतासी अगुलीकुं मेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुडसा तत्त न
 ख विस्तारो, नाइ पेटी समथण नयनारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ डीलो
 ठे सधी बंध सरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥
 कार्कीडा उदराकी तनमाला, कुंमल नोलका अति विकराला ॥ नि०
 १७ ॥ उत्तरासणजुजगको अंग धरंतो, अष्टाष्टदास गर्जरिव करंतो
 ॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्ष्ण स्वामो कर सायो, पोषधसाल
 तिहा चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो का
 लो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इहं नो कामदेव आह तुं, मृत्युनो घञ्जणहार ॥ खोटा लक्षण ताहरा,
 हिंसिरिर्वर्जणहार ॥ १ ॥ धर्म पुण्य सर्ग मोक्षनो, तु अठे वंछणहार ॥
 कल्पे नहिं तुजु खमवा, शीलादिक व्रत वार ॥ २ ॥ पण हुं आज

जंजावछुं, पोपधादिक व्रत जेह ॥ नहितो येहीखझछुं, खंम खंम
करुं देह ॥ ३ ॥ श्चारत रौइ ध्यानवश, मरसी श्चाज जरूर ॥ एक
दोय तिन वार ते, बोलेवेण करूर ॥ ४ ॥ वयण सुणी इम तेहनां, म
रिया नही लगार ॥ धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सूरिजन सांजलजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ क्रोधातुर मिस
मिस थको कांइ, त्रिगुल निलाहें चढाय ॥ तीक्ष्ण पाठणा धार
सो कांइ, खझछुं खमे काय ॥ नविकजनधनधन साहस धीर ॥ १ ॥
वजलीवेदना कपनी कांइ, कहेतां न आवे पार ॥ के तो जाणो
आतमा कांइ, के तो जाणो किरतार ॥ न० ॥ २ ॥ त्रास नहिं
एक रोममें कांइ, राख्या सम परिणाम ॥ कामदेव सोचे तदा
कांइ, मिथ्यात्वी सुरकाम ॥ न० ॥ ३ ॥ ए खमे मुज कायने
काइ, मुज समकित व्रतवार ॥ खंमवा समरथ ठे नहिं कांइ, जो
आवे देव हजार ॥ न० ॥ ४ ॥ आक्यो देव तिण अवसरें कांइ,
जोर न चाळुं लगार ॥ पोपधशालायी नीकली कांइ, पिशाचको
रूप निवार ॥ न० ॥ ५ ॥ सप्त अंग लागे धरणीछुं कांइ, धाखो
तिणें गजरूप ॥ अंजनगिरिनी कपमा कांइ, दीसे महा विडूप ॥
न० ॥ ६ ॥ पोपधशालामें आयीने कांइ, तीन वार वली जेह ॥
बोव्यो वचन पहेली तणा काइ, रंच मखा नहिं तेह ॥ न० ॥ ७ ॥
क्रोधातुर ग्रहा छुढमें कांइ, पोपधशालानी वहार ॥ वगळ्या आका
शमें कांइ, तीक्ष्ण दंत मजार ॥ न० ॥ ८ ॥ जालीने निज पगतलें
काइ, लोलव्या तीनज वार ॥ महावेदना तिणें अनुजवी कांइ, च
लिया नहीअ लगार ॥ न० ॥ ९ ॥ हस्तिरूप ठोढी करी कांइ, सर्प
वण्यो नयंकार ॥ लाल नेत्र मशीपुज सो कांइ, करतो फूंफूकार ॥
न० ॥ १० ॥ पूर्वपरें वचन कह्या काइ, अणवोव्या रह्या सोय ॥
निश्चलपण जाणी करी काइ, क्रोधातुर अति होय ॥ न० ॥ ११ ॥

के चलाइ ॥ नि० ॥ ३ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन
 ए नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सु
 तिणवारें, सुण कर सो मनमांहे विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नक
 कीढो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक ढिनमें देवं चलाइ ॥ नि० ॥
 ॥ ५ ॥ एसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चल
 इ ॥ नि० ॥ ६ ॥ महत् पिशाचको रूप बनायो, महा विडूष जयं
 रकायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शिश बनायो, शूकर सर्प
 खा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो,
 तालीकी पूंठ जुं घुं घुं विकरालो ॥ नि० ॥ ९ ॥ बाहिर बटक्या नेत्र
 का मोला, सूपडा सरिखा कान कुमोला ॥ नि० ॥ १० ॥ गामर जि
 म चपटी तस नासा, फालीया सरखा दतस त्रासा ॥ नि० ॥
 ॥ ११ ॥ लटके ठट सा होत कुरंगी, जिह्वा कतरणी जेम बिजंभी
 ॥ नि० ॥ १२ ॥ खंभ कखा सुदग आकारो, पुरपोल किमाइ ज्यो
 हियो जयंकारो ॥ नि० ॥ १३ ॥ जुजा बीजत्स शिला सी हथेली,
 खल वतासी अंगुलीकुं मेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुडसा तस न
 ख विस्तारो, नाइ पेटी समयण जयचारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ डीलो
 ठे सथी बध सरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥
 कार्कीडा उदराकी तनमाला, कुमल नोलका अति विकराला ॥ नि०
 ॥ १७ ॥ उत्तरासणजुर्जगको अंग धरंतो, अट्टाट्टहास गर्जरिव करंतो
 ॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्ष्ण खामो कर सायो, पोषधसाल
 तिहा चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो का
 लो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इह नो कामदेव श्राव तु, मृत्यु नो वधणहार ॥ खोटा लक्षण नाहरा,
 हिरिसिखिर्वर्जणहार ॥ १ ॥ धर्म पुण्य सर्ग मोहनो, तु अठे वधणहार ॥
 कल्पे नहिं तुज खमवा, शीलादिक व्रत वार ॥ २ ॥ पण हुं आज

चन करियां सद्गु, श्रमणादिक राखी उपयोग रे लाला ॥ का० ॥ ६ ॥
 प्रश्न उत्तर जगवतने, पूढी सद्गु गया निजगेह रे लाला ॥ आणव
 जिम पढिमा वही, श्रुते गयो अणसण तेह रे लाला ॥ का० ॥ ७ ॥
 एकमास सेलेपणा, प्रथम सरग मजार रे लाला ॥ अरुणाज विमा
 नें उपना, पिति दाखी पल्योपम चार रे लाला ॥ का० ॥ ८ ॥ च
 विने विदेहमें जावसी, तिहां लेसी नर अवतार रे लाला ॥ सज
 ले करणी करी, ते जावसी मुक्ति मजार रे लाला ॥ का० ॥ ९ ॥ स
 त उगणीशें गुणचालीशमें, पोपवदि चोथ तिथि जाण रे लाला ॥ वे
 दक्षिण कोकन विपे, शहेर सतारो वखाण रे लाला ॥ का० ॥ १० ॥
 तिलोकरिख कहे सूत्रन्यायशु, चोढालीयु रच्युं सुखकार रे लाला ॥
 जणसी गुणसी शुद्ध सरधसी, तस होवसी खेवा पार रे लाला
 ॥ का० ॥ ११ ॥ इति कामदेव श्रावकनु चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ एषणासमितिनुं चोढालीयुं प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धरम मगल उत्कृष्ट ठे, सयम तपस्या मांय ॥ प्रणमे सुर नर
 जेहने, सदा धर्म चित्त चदाय ॥ १ ॥ जिम मधुकर कुसुम जणी, छुख
 नहिं वेवे जगार ॥ रस ले तृप्त करे आत्मा, तिम जाणो अणगार ॥ २ ॥
 तप सजम प्रतिपालवा, जाडो वेत शरीर ॥ दोष वझ्यालीस टा
 जिने, आहार लहे गुणधीर ॥ ३ ॥ जिन जिन वर्णन तासको, कहुं
 सूत्र अणुसार ॥ ते सुणजो नवियण तुमें, आलस उंघ निवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिणे पाइ ॥ ए देशी ॥ त्रीजी समिति
 एषणा नामें, जाखी श्री जिनराया ॥ पाले मुनिवर शुद्ध रीतिसें, शि
 वसुख गरजी माह्या ॥ जोला श्रावक दोष लगावे, मुनिवर जाणे तो
 नट जावे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ समुचय साधू कारण कीनो, अस्वणादिक

तीन वींटा दिया कंठमें कांड़, विष सहित दिया मांथ ॥ मंक कियो
तिजोरसुं कांड़, तो पण चलिया नांथ ॥ ज० ॥ ११ ॥ थाको ते वे
देवतां कांड़, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी
कांड़, सुर कीधा वेदनी काम ॥ ज० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप ढोढी करी, निजरूप दिख्य ते धार ॥ कानें कुंमल ज
गमगे, सजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रजा करतो षको,
कटिबूधर घमकार ॥ हाथ जोढिने वीनवे, लुल लुल वार वार
॥ २ ॥ धन्यपुण्यकृत लक्षणा, सफल तुज अवतार ॥ इहें करी
प्रशंसना, सौधर्मसजामजार ॥ ३ ॥ में मिथ्यात्वतणें वशें, सत्य
नमानी वाय ॥ धर्म ढिगावण कारणें, दीयो परिसह आय ॥ ४ ॥
खमजो मुज अपराध थें, नहि करुं दूजी वार ॥ इम लजुता करी
देव ते, सचखो सर्गमजार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ मोने वालो जागे विठीयो ॥ ए देशी ॥ हारे लाला तिणका
जें तिण अवसरें, समोसखा वीर जिनव रे लाला ॥ कामदेव मुणि
धारीयो, पारणो करुं प्रछु पेत्ती वद रे लाला ॥ १ ॥ कामदेव श्रावक
सिरें, जिरें पदेखा सद्ध शिणगार रे लाला ॥ प्रछु प्रणम्या शुद्ध नाव
शुं, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का० ॥ १ ॥ प्रछु वीनी थप
वेशना, छादश परिपदाने मजार रे लाला ॥ कहे कामदेवथकी त
वा, आजे आधी रात मजार रे लाला ॥ का० ॥ ३ ॥ तीन थपसर्ग रे
वें दीया, ते खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ समरथने
के नहि, सो दाखे हंता ठे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ गौतमा
दिक साधु साधवी, आमत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ गृहस्था
अमें परिसह सहा, तुमें तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का० ॥ ५ ॥
छादश थंग नणीया तुमें, परिसह सहेवा जोग रे लाला ॥ तहति ब

जी॥विण मिलीयां मुखहो कुमलावे, जिम राजानो गयो राजजी॥सो ०
 ॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें, बोले निखारी जेम जी ॥ विणिम
 गदोप कह्यो जगदीशें, आहार भिल्या चित्तेम जी ॥ सो ० ॥ ४ ॥ उप
 ध नेपज करें पडिगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिहा दोप
 कह्यो जगदीशें, निपजे महोटी अकाज जी ॥ सो ० ॥ ५ ॥ क्रोधें
 नखो कहे रे रे रूपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हा
 एी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुज लार जी ॥ सो ० ॥ ६ ॥
 तुम दातार उदार नलेरा, उर नहिं तुम तोल जी ॥ थें नहिं देशो
 तो कुण वेशो, मान चढावे इम बोल जी ॥ सो ० ॥ ७ ॥ दूध द
 हीदिक वठना मनमें, मुखसुं मांगे ठास जी ॥ दाखे सीरादिक
 पातरामाही, नापा बढल कहे वाच जी ॥ सो ० ॥ ८ ॥ आहार स
 रस अधिको ते बहोरे, लोन जणावे दातार जी ॥ दान दियासु अधि
 को मिलशे, लोन दोप ए जहार जी ॥ सो ० ॥ ९ ॥ बहोरतां पदेजी
 अथवा पाठो, बडाइ दोप दातार जी ॥ अथवा दोप लगावे कोइक,
 इणविध बहोरे आहार जी ॥ सो ० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आ
 हार खुशामत, मत्र जंत्र करि छेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जडी बु
 ढी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो ० ॥ ११ ॥ ज्योतिष छुकन
 शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आ
 हारलोनपी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो ० ॥ १२ ॥ बिहवा
 कारण गर्न गलावे, मूलकरम एह दोप जी ॥ आहार लोलुपी
 करम करे इम, पाप तणो करे पोप जी ॥ सो ० ॥ १३ ॥ एसोला
 दोपसो लागे साधुपी, सजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख क
 हे दोप निवाखा, लहीयें अविचल वास जी ॥ सो ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पादन तणा, दोप कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन
 कठिया, टाळे विशवा वीश ॥ १ ॥ गृहस्थिघरे गोचरी गया, दश बली

चठ आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोठो दोष बि
 रो ॥ जोला ० ॥ १ ॥ एक साधुको नाम थापीने, करे सो
 जाणो ॥ सुजतामांही सीत मिछे सो, पूईकरम वखाणो ॥
 ॥२॥ गृहस्थी साधू दोइ अर्थें, जेलो करि निपजावे ॥
 कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ जोला ० ॥ ४ ॥ अवराने
 द्य दशने, थापे मुनिवर काजें ॥ पादुणा आधा पाठाने ते,
 आहारी रिख साजे ॥ जोला ० ॥ ५ ॥ अंधाराथी करे ठजवालो, ब
 ढी वेचातो लावे ॥ ठहारो मांगीने देवे, बदलोकर पलटावे ॥ जो
 ॥ ६ ॥ रिखजी काजें घरथी आणे, ठांदो ठघाडी देवे ॥ अबके ग
 में चढीने थापे, चढे ठाम तले ठेवे ॥ जोला ० ॥ ७ ॥ निबला पा
 सथी सबलो खोसे, अडिक्क दोस ते कहीयें ॥ सबकी पातीमें एकज
 देवे, अणिसिछ दोष ते लहीयें ॥ जोला ० ॥ ८ ॥ आंधणमांही अधि
 को उरे, वहिरावणने कामें ॥ ठवगमन ए सोला कहीयें, गृहस्थी
 को ठदो हे जामें ॥ जोला ० ॥ ९ ॥ असुजतो आहार वेरावे जो कोइ,
 उंठो आठखो पावे ॥ सूत्र जगवती तथा ठाणार्जे, श्रीजिनवर दर
 सावे ॥ जो ० ॥ १० ॥ देवावालो जेहेरको दाता, तिणसु अधिको जाणो ॥
 तिलोकरिख कहे सूजतो देवो, पावो पव निर्वाणो ॥ जोला ० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली छे आहार ॥

जिन्न जिन्नवर्णन करु, सुणजो सब नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव ऋमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ बाल रमावे
 चित्र बत्तावे, आहार कारण जिम धाय जी ॥ समाचार कहे सगा
 सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥ १ ॥ सोला दोष गुणीजन टाले,
 पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय सजम साधो, पावो वास बि
 शुद्ध जी ॥ सो ० ॥ २ ॥ जात जणावे गीत बत्तावे, आहार लेवणने काज

जी॥विण मिलीयां मुखडो कुमलावे, जिम राजानो गयो राजजी॥सो०
 ॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें, बोले निखारी जेम जी ॥ विणिम
 गदोप कह्यो जगदीशें, आहार भित्वा चित्तेम जी ॥ सो० ॥ ४ ॥ उप
 ध नेपज केरें पढिगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिष्ठा दोप
 कह्यो जगदीशें, निपजे महोदो अकाज जी ॥ सो० ॥ ५ ॥ कोयें
 नखो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ दोरो हा
 णी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुज लार जी ॥ सो० ॥ ६ ॥
 तुम दातार उदार जलेरा, ऊर नहिं तुम तोल जी ॥ ये नहिं देशो
 तो कृण देशो, मान चढावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध द
 हीदिक बढना मनमें, मुखसुं मांगे ठास जी ॥ दाखे सीरादिक
 पातरामांही, जाषा बदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार स
 रस अधिको ते बहोरे, लोच जणावे दातार जी ॥ दान दियासुं अधि
 को मिलशे, लोच दोप ए जहार जी ॥ सो० ॥ ९ ॥ बहोरतां पहेली
 अथवा पाबो, बढाइ दोप दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक,
 इणविध बहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आ
 हार खुशामत, मत्र जत्र करि छेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जढी बु
 ढी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शुक्रन
 शास्त्र प्रयुंजी, दाखे सुख दुख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आ
 हारलोचणी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ बिहवा
 कारण गर्न गलावे, मूलकरम एह दोप जी ॥ आहार लोचुपी
 करम करे ईम, पाप तणो करे पोप जी ॥ सो० ॥ १३ ॥ एसोला
 दोपसो लागे साधुषी, संजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख क
 हे दोप निवास्था, जहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ बोहा ॥

॥ सोला उत्पादन तणा, दोप कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन
 कठिया, टाले विशवा वीश ॥ १ ॥ गृहस्थिघरे गोचरी गया, दश वली

चउ आहारो ॥ आधाकर्मि आहार सो कहीयें, महोठो दोष रिख
 रो ॥ जोला० ॥ ५ ॥ एक साधुको नाम थापीने, करे सो उदेसि
 जाणो ॥ सुजतामांही सीत मिले सो, पुईकरम वखाणो ॥ जो
 ॥३॥ गृहस्थी साधू दोइ अरथे, जेलो करि निपजावे ॥ मित्रदो
 कह्यो जगदीशें, कर्मबंध दरसावे ॥ जोला० ॥ ४ ॥ अवराने अंत
 र्थ दशने, थापे सुनिवर काजें ॥ पादुणा आधा पागाने ते, सरस
 आहारी रिख साजे ॥ जोला० ॥ ५ ॥ अधाराथी करे उजवालो, ब
 दली बेचातो लावे ॥ उधारो मांगीने देवे, बदलो कर पजटावे ॥ जो
 ॥ ६ ॥ रिखजी काजें घरथी आणे, गांवो उघाडी देवे ॥ अबके ग
 में चढीने आपे, चढे गम तले ठेवे ॥ जोला० ॥ ७ ॥ निबला पा
 सथी सबलो खोसे, अश्लिष्ट दोस ते कहीयें ॥ सबकी पार्टीमें एकज
 देवे, अणिसिद्ध दोष ते लहीयें ॥ जोला० ॥ ८ ॥ आंधणमांही अधि
 को उरे, वहिरावणने कामें ॥ उदगमन ए सोला कहीयें, गृहस्थी
 को बंदो दे जामें ॥ जोला० ॥ ९ ॥ असुजतो आहार बेरावे जो कोइ,
 उठो आवखो पावे ॥ सूत्र जगवती तथा गाणंगें, श्रीजिनवर दर
 सावे ॥ जोला० ॥ १० ॥ देवावालो फहेरको दाता, तिणहुं अधिको जाणो ॥
 तिलोकरिख कहें सूजतो देवो, पावो पद निर्वाणो ॥ जोला० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली छे आहार ॥

निन्न निन्नवर्णन करु, सुणजो सब नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव ह्रमा गुण आदर ॥ ए वेशी ॥ बाल रमावे
 चित्र वतावे, आहार कारण जिम धाय जी ॥ समाचार कहे सगा
 सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥ १ ॥ सोला दोष गुणीजन टाछे,
 पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय संजम साधो, पावो वास बि
 शुद्ध जी ॥ सो ॥ २ ॥ जात जणावे गोत वतावे, आहार सेवणने काज

एकमितिनु चोढालीयु

अणगम तो करे च सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे जा
 वे, ताजा ताजा माज लावे ॥ नीरसने बहारे रे नई, वण रह्या
 कुदोलाल सदा ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने
 लाज न आवे ॥ मिलियाळुं शोचा रे करतो, अणमिलीया पर नि
 दा उचरतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ नाम जुं कहीये रे तेहने, परजव खटको
 रच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आया लागसी
 को ॥ ए० ॥ ४ ॥ दाल अछूणी रे आइ, छूण विनातो स्वाद न
 कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध सजोग मिलावे ॥ ए०
 ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दावी चांपीने अधिको खावे ॥
 जिनजी की आझा रे जगे, वली आशाता अति उपजत अर्गे ॥
 ए० ॥ ६ ॥ नोजन आयो रे जातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥
 सबडका जेहने रे खावे, चटपट चटपट मुंडो बजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥
 रम मशालो रे जारी, बघारी धुगारी रुडी तरकारी ॥ ब्रतुरणी ना
 रीरे बीसे, ठण घरे जावणो विशवाविशे ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता
 प्रशस्ता रे करतो, दिन उम्याथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाह
 ज रे लागे, अंगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥ ९ ॥ आहारज नी
 रसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचा छूणज रे ना
 इ, बडनारी ए नही ठमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखळुं रे खो
 टो, पाळे संजम धनको टोटो ॥ कारणविना आहारज रे खावे,
 पंचमो दोष ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ ममलदूपण रे पा
 ची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ ठगणीसैं ठत्तिस रे साले,
 ग्राम सोनइ वक्षिण सुविशाले ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूपण
 रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूपण रे सेवे,
 ते तो नवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ ठडु दूपण रे सारा,
 टाळे सो धनधन अणगारा ॥ इण नव शोचा रे जारी, अर्गे अ
 ञ्जु अमर सुख त्तारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

टाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, जांख्यो श्रीजगवत ॥ १

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नावपूजा नित कीजीये ॥ ए देशी ॥ शोला दोष
नना, एताही उतपातो जी ॥ उर कोइ दूषण तणी, शंका
कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेदरे नही ॥ ए टेक ॥

पसरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारने, शंका
णो जी ॥ तो ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुठाविक्रम

॥ चोटी पटा माढी मूठमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥
ता ॥ ३ ॥ सचित्त इव नीचें धखो, उपर इव अचेतो जी ॥

अचेत उपर सचित्त धखो, गृहस्थी सो इव वेतो जी ॥ तो ॥ ४ ॥

छूण खडी जल सचित्तछुं, गम जो खरडियो होवे जी ॥ तिएमें

सो लावे आहारने, एहवो जाजन जोवे जी ॥ तो ॥ ५ ॥ शतार

अधो ने पांगुलो, अथवा कंपण बाधी जी ॥ चालणकी शक्ति न

ही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो ॥ ६ ॥ पुरो शस्त्र नहि प

रगम्यो, अथकाचो रह्यो जेहो जी ॥ दोलावडी पुंखडा आव वे,

गृहस्थ वेदरावे तेहो जी ॥ तो ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आ

गणो, टपका पाढतो लावे जी ॥ एपणाना दश दोष ए, श्रीजिन

वर फरमावे जी ॥ तो ॥ ८ ॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेदरावे दातारो

जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, दोषण तेणो विचारो जी ॥ ९ ॥

॥ बोदा ॥

॥ दोष वझ्यालीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच म

मला उपरें, दोष करे परिहार ॥ १ ॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसना

वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वतां, सर्वसिद्धांतकी साख ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे ना

इ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे

एकमितिनुं चोढालीयुं

अणम तो करे च सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे जा
 वे, ताजा ताजा माज लावे ॥ नीरसने व्हारे रे नाई, वण रह्या
 कुदोलाल सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलंपटने
 लाज न आवे ॥ मिलियाळुं शोना रे करतो, अणमिलीया पर नि
 दा उचरतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ नांम ज्यु कहीयें रे तेहने, परजव खटको
 रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सकर आया लागसी
 को ॥ ए० ॥ ४ ॥ बाल अछूणी रे आइ, छूण विनातो स्वाद न
 कांइ ॥ चंटणी पापड रे लावे, नानाविध सजोग मिलावे ॥ ए०
 ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दावी चांपीने अधिको खावे ॥
 जिनजी की आहा रे जंगे, बली आशाता अति उपजत अर्गे ॥
 ए० ॥ ६ ॥ नोजन आयो रे नातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥
 सबडका लेंइने रे खावे, चटपट चटपट मुंडो वजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥
 गरम मशालो रे नारी, वधारी धुगारी रूडी तरकारी ॥ चतुरणी ना
 रीरे दीसे, उण घरे जावणो विशवाविशे ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता
 प्रशंसा रे करतो, दिन उम्याथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाह
 ज रे लागे, अगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥ ९ ॥ आहारज नी
 रसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेषी ॥ मिरचां छूणज रे ना
 इ, बडनारी ए नही ठमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ धोले मुखळुं रे खो
 टो, पाडे सजम धनको टोटो ॥ कारणविना आहारज रे खावे,
 पंचमो दोष ए स्वामि सुणवे ॥ ए० ॥ ११ ॥ ममलदूपण रे पां
 ची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसैं ठत्तिस रे साले,
 ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशाले ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूपण
 रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूपण रे सेवे,
 ते तो नवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ ठबु दूपण रे सारा,
 टाले सो धनधन अणगारा ॥ इण नव शोना रे नारी, आर्गे अ
 ञ्जु अमर मुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

ढाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, नांख्यो श्रीजगवत ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ जावपूजा नित कीजीर्यें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष
नना, एताही उतपातो जी ॥ ऊर कोइ दूषण तणी, शंका
कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेदरे नही ॥ ए टंक ॥

पसरका जाणो जी ॥ आप तथा वातारने, शंका अजिप्राय
णो जी ॥ तो ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुठाविकल

॥ चोटी पटा माढी मूठमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥

तो ॥ ३ ॥ सचित्त इव नीचें धखो, उपर इव अचेतो जी ॥

अचेत उपर सचित्त धखो, गृहस्थी सो इव वेतो जी ॥ तो ॥ ४ ॥

खूण खडी जल सचित्तद्यु, गम जो खरहियो होवे जी ॥ तिणमें

सो जावे आहारने, एहवो नाजन जोवे जी ॥ तो ॥ ५ ॥ वातार

अधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति न

ही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो ॥ ६ ॥ पुरो शस्त्र नहि प

रगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाखंबी पुखडा आव वे,

गृहस्थ वेहरावे तेहो जी ॥ तो ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आ

गणो, टपका पाहतो जावे जी ॥ एपणाना दश दोष ए, श्रीजिन

वर फरमावे जी ॥ तो ॥ ८ ॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे वातारो

जी ॥ तिलोकरिख कहे श्रीजी ढालमें, दोषण तेणो विचारो जी ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष वझ्यालीस टालीने, आहार जावे अणगार ॥ पंच मां
मला उपरें, दोष करे परिहार ॥ १ ॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसना

वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वता, सर्वसिद्धातकी साख ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख भारग रे नां
इ, स्वाव करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे

एक समितिनु चोढालीयुं

अणगम तो करे, चि सवाया ॥ ए० ॥ १ ॥ ताकी
 ताजा ताजा माज लावे ॥ नीरसने बहोरे रे न
 कुदोलाज सदाइ ॥ ए० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धात्रे,
 लाज न आवे ॥ मिलियाछुं शोना रे करतो, अणमिलीया पर
 वा उच्चरतो ॥ ए० ॥ ३ ॥ जांम ज्यु कहीयें रे तेहने, परज
 रंच न जेहने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आया जागरती
 को ॥ ए० ॥ ४ ॥ बाल अछूणी रे आइ, छूण विनातो स्वाद न
 कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध सजोग मिलावे ॥ ए०
 ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दावी चांपीने अधिको खावे ॥
 जिनजी की आझा रे जंगे, बली आशाता अति उपजत अंगे ॥
 ए० ॥ ६ ॥ नोजन आयो रे जातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥
 सबहका लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुंहो बजावे ॥ ए० ॥ ७ ॥
 गरम मशालो रे जारी, बघारी धुंगारी रूढी तरकारी ॥ चतुरणी ना
 रीरे दीसे, ठण घरे जावणो विशवाविज्ञो ॥ ए० ॥ ८ ॥ खाता
 प्रशस्ता रे करतो, दिन ठम्याथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाह
 ज रे लागे, अगारा सम उपमा सागे ॥ ए० ॥ ९ ॥ आहारज नी
 रसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विज्ञोपी ॥ मिरचां छूणज रे नां
 इ, बहनारी ए नही ठमकाइ ॥ ए० ॥ १० ॥ बोले मुखछुं रे खो
 टो, पाहे सजम धनको टोटो ॥ कारणविना अहारज रे खाये,
 पंचमो बोप ए स्वामि सुणावे ॥ ए० ॥ ११ ॥ भमलदूपण रे पां
 ची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें ठत्तिस रे साजे,
 ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशालें ॥ ए० ॥ १२ ॥ आहारनां दूपण
 रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूपण रे सेवे,
 ते तो नवजल मांहीज रेवे ॥ ए० ॥ १३ ॥ बनु दूपण रे साग,
 टाले सो धनवन अणगारा ॥ इण नव शोना रे जारी, आगे अ
 मर अमर मुख त्यारी ॥ ए० ॥ १४ ॥ इति ॥

ढाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, नांख्यो श्रीजगवत ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष उप
नना, एताही उतपातो जी ॥ ऊर कोइ दूषण तणी, शंका
कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥
पसरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारने, शंका अनिप्राव
णो जी ॥ तो ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुठाविक ठ
॥ चोटी पटा माढी मूठमें, आलो रहे कोइ जामो जी
ता ॥ ३ ॥ सचित्त ड्य नीचें धखो, उपर ड्य अचेतो जी ॥
अचेत उपर सचित्त धखो, गृहस्थी सो ड्य देतो जी ॥ तो ॥ ४ ॥
छूण खडी जल सचित्तछु, गम जो खरडियो होवे जी ॥ तिण
सो लावे आहारने, एहवो नाजन जोवे जी ॥ तो ॥ ५ ॥ दाता
अंधो ने पांगुलो, अथवा कंपण बाधी जी ॥ घालणकी शक्ति
ही, अथवा कंपण उपाधी जी ॥ तो ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहीं
रगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाखंबी पुंखडा आव
गृहस्थ वेहरावे तेहो जी ॥ तो ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो अ
गणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजि
वर फरमावे जी ॥ तो ॥ ८ ॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातार
जी ॥ तिलोकखिख कहे त्रीजी ढालमें, दोषण तेणो विचारो जी ॥ ए
॥ दोहा ॥

॥ दोष बझ्यालीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच म
मला उपरें, दोष करे परिहार ॥ १ ॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसन
वश करि राख ॥ तो सुख लक्ष्मि शो शाश्वतां, सर्वसिद्धांतकी साख ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नां
इ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे आग्र

० विनयआराधनानु गलीयुं.

॥ अ ॥ विनयआराधनानु चोढाएनु प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनराज प्ररूपीयो, विनयमूल जिनधर्म ॥ इम
वे आदरो, तूटे आतू कर्म ॥ १ ॥ विनय विना शोभा न
दिना जिम नूर ॥ जीवविना जिम वेहडी, सखविना
॥ २ ॥ नमस्ती सो सुख आपने, इणमें शंक न कोव ॥ ३ ॥
तगछ तोलीयें, नमे सो नारी होय ॥ ४ ॥ आंब आंबली
बुदिक, उत्तम वृद्ध नमंत ॥ तिम सुगुणी जन जाणीयें, मन्मस
नरु अकडत ॥ ५ ॥ मात पिताथी अधिकता, गुरुपगार अपार
टालो अशातना सर्वथें, जो तरणो ससार ॥ ६ ॥ धर्मगुरु
वीसरो, पल पल गुण करो याव ॥ सुगुणा जन सुणजो तमें,
गुण अगम ज्ञानाद ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पास जिनेश्वररे स्वामी ॥ ए देशी ॥ गुरुगुण समरो रे नारें,
क्षमार्ग गुरु विना नहि पावे ॥ गुरु गुण सागर रे बरिबा,
करण रत्नागर जरिया ॥ गु० ॥ १ ॥ मोति जेसा मेला रे
यें, सक्कर सरिखा खारा मनइयें ॥ सुमेरु ज्युं समजो रे न्हाना,
मता निज प्राण समाना ॥ गु० ॥ २ ॥ अधीरज कुंजर रे जेहवा
केसरीसिंह जेम कायर कहेवा ॥ गुणधर जेहवा रे विराधि,
रुपखी जिम परमावी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुरगुरु जेहवा रे
येभ्रमण जेहवा मुजि सो छुणीया ॥ क्रोधी पूरारे दीसे, टले
जे कर्म शत्रु अरिसैं ॥ गु० ॥ ४ ॥ शशिसम वष्यता रे जाणो,
प्रतापी जिम दिनकर मानो ॥ सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्री
जेहवा लोनी विख्याता ॥ गु० ॥ ५ ॥ शम दम वषशम रे करणी,
करे गुरुदेव सदा नउतरणी ॥ नवजल तारक रे वाणी, वे

